उजाले में अन्धेरा

उजाले में अन्धेरा

(लेखक की Darkness At Noon का अनुवाद)

आर्थर कॉस्लर

नई दिल्ली

आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया आठ आने

प्रकाशक :
आधुनिक साहित्य प्रकाशन
पोस्ट बॉक्स नं० ६६४, नई दिल्ली

मुद्रक :
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली

इस उपन्यास के सभी पात्र काल्पनिक हैं, किन्तु वे ऐतिहासिक परि-स्थितियां सत्य हैं जो उनके कार्यों को प्रभावित करती हैं। रुबाशोफ का जीवन उन सब व्यक्तियों के जीवन का प्रतीक है जिन्हें कुछ वर्ष हुए मास्को के न्यायाधीशों ने दोषी ठहराया था और प्राणदण्ड दिया था। उनमें कुछ लेखक से व्यक्तिगत रूप में परिचित भी थे। उन्हीं की स्मृति को यह पुस्तक समर्पित है।

सूची

पहली पेशी - - -	१
दूसरी पेशी - - -	६१
तीसरी पेशी - - -	१५७
व्याकरण-सम्बन्धी कल्पना - - -	२२६

पहली पेशी

: १ :

जेल की कोठरी का किवाड़ खटाक से बन्द हो गया और रुबाशोफ पीठ किये खड़ा रहा।

कुछ देर तक किवाड़ के सहारे खड़ा रहकर उसने सिगरेट जलाई। सिगरेट का धुंआ ज्यों-ज्यों कोठरी की सीमा में लीन होने लगा त्यों-त्यों उसके विचार भी उस सीमित कोठरी में उड़ने लगे। उसके दाईं ओर उसका बिस्तर था, जिस पर नई फूस का भरा गद्दा था और साफ-सुथरे दो कम्बल थे। उसके बाईं ओर हाथ-मुंह धोने की चिलमची थी, जिसमें डाट तो न था किन्तु नल से पानी आता था। उसके आगे संडास था, जो अभी-अभी साफ किया गया था और उसमें गन्ध नहीं थी। दोनों ओर की दीवारें पक्की ईंटों की बनी थीं। खटखटाने पर इनमें से आवाज आर-पार नहीं जा सकती थी, किन्तु जहां से पनाला और गरम नल निकाले गए थे, वहां यह बात न थी। पनाले की जगह खटखटाने से सहज ही खटखट की आवाज दूसरी ओर जा-आ सकती थी। इसके अतिरिक्त एक खिड़की थी, जो आँखों की ऊंचाई पर बनी थी। पंजों पर भार दिये बिना सहज ही कोई भी खिड़की की राह से बाहर देख सकता था। तात्पर्य यह कि सभी कुछ ठीक-ठाक था, सही था।

सिगरेट खत्म हो चुकी थी। उसका आखिरी सिरा नल की ओर फेंकते हुए रुबाशोफ ने जंभाई ली। कोट उतारा। उसे ढंग से लपेटकर तकिये की

जगह रख लिया। उसने सेहन में झांका। बर्फ पड़ी हुई थी और चांद और बिजली की रोशनी में जैसे पीली-सी हो गई थी। सेहन की चारों ओर नित्य के काम-काज के लिए बर्फ हटाकर छोटी-सी पगडंडी बनी हुई थी। अभी सवेरा नहीं हो पाया था। बिजली की झिलमिल रोशनी के बावजूद तारे साफ-साफ और धुंधले-से चमक रहे थे। रुबाशोफ की कोठरी के ठीक सामने की दीवार के अंतिम भाग पर एक सिपाही बन्दूक ताने सौ गज इधर और उधर जाता पहरा दे रहा था। प्रत्येक पग पर वह ऐसे रुकता जैसे परेड कर रहा हो। समय-समय पर बिजली की पीली-सी रोशनी उसकी किर्च को चमका देती थी।

रुबाशोफ ने खिड़की के पास खड़े-खड़े ही अपने जूते उतार दिये। उसने सिगरेट का डिब्बा निकाला और उसे सिरहाने की ओर फर्श पर रख दिया। कुछ देर वह गद्दे पर बैठा और एक बार फिर खिड़की तक चला गया। सेहन अब भी जैसे चुपचाप पड़ा था। सिपाही मुड़ने लगा और मशीनगन के मीनार पर निगाह डालते हुए उसे आकाश दीखा और आकाश में दीखी आकाशगंगा। रुबाशोफ लौटकर बिस्तर पर लम्बा लेट गया। एक कम्बल उसने अपने ऊपर डाल लिया। अभी रात-सी ही थी। पांच बजे होंगे। और इन जाड़े के दिनों में सात बजे से पहले जागना तो होता ही नहीं—सम्भव भी नहीं। नींद भी उसे बहुत आ रही थी। और उसे यह भी निश्चय था कि अगले तीन या चार दिन तक तो मेरी पेशी भी नहीं हो सकेगी। उसने नाक पर से चश्मा उतारा और सिगरेट के डिब्बे के पास फर्श पर रख दिया; ओंठों में मुस्कराया और आंखें बन्द कर लीं। अब कम्बल ने भी उसे गरमा लिया था और उसे ऐसा लगा कि कई महीनों के बाद मैं सपनों के भय से भी सर्वथा सुरक्षित हो गया हूँ।

चन्द मिनट के बाद वार्डर ने बाहर से बत्तियां बन्द कर दीं। और उसने रुबाशोफ की कोठरी के छेद में से भीतर झांका। उसने देखा, जन-संघ का भूतपूर्व कमिस्सार सोया पड़ा था। उसकी पीठ दीवार की ओर थी। उसकी बाईं बाँह फैली हुई थी, जिस पर उसने सिर रखा हुआ थी। बिस्तर

के बाहर उसका हाथ लटक रहा था और नींद में हाथ की मुट्ठी बन्द थी।

: २ :

एक ही घंटे की तो बात है। जन-संघ में दो अफसर रुबाशोफ के किवाड़ों पर मारामार कर रहे थे। रुबाशोफ अपने कमरे के किवाड़ बन्द किये सो रहा था। और उस समय उसे सपना आ रहा था कि उसे गिरफ्तार किया जा रहा है। और अफसर किवाड़ तोड़ रहे थे, रुबाशोफ को गिरफ्तार करने के लिए।

खटखटाने की आवाज़ बढ़ती ही गई और इतनी बढ़ गई कि रुबाशोफ को लाचार जागना पड़ा। उसकी नींद टूट गई। उसे बुरे-बुरे सपने तो आया ही करते थे। इन बुरे सपनों से पीछा छुड़ाने का भी अभ्यास उसने कर रखा था। कई बरस गए उसे अपनी पहली गिरफ्तारी का ऐसा ही सपना हुआ था और समय-समय पर उसे वह दुस्वप्न आता ही रहा। उसे सपना आता, तो जैसे घड़ी की सुई बढ़ती चली जाती है, वैसे ही ठीक ज्यों-का-त्यों सपना बढ़ता जाता। वह उस दशा में अचेतन-सा ही सपने के क्रम को रोक लेता था, किन्तु इस बार वह ऐसा न कर सका। वह पिछले कई हफ्तों के श्रम के कारण थका हुआ था, हारा हुआ था, और घड़ी की टक-टक के साथ जैसे सुई बढ़ती जाती है, वैसे उसका सपना भी बढ़ने लगा।

उसने सपना देखा, सदा की तरह ही उसके किवाड़ों पर ठोक-पीट हो रही है। बाहर तीन आदमी खड़े हैं, और वह उसे गिरफ्तार करना चाहते हैं। वह बन्द किवाड़ों में से उन्हें देख सकता था। वह बाहर खड़े थे और चौखट पर भारी चोटें कर रहे थे। उन्होंने नई-नई वर्दियां पहन रखी थीं। उनकी टोपियों और कफों पर अफसराना निशान लगे थे। उनके हाथों में बड़ी-बड़ी पिस्तौलें थीं। उनकी पेटियाँ और पिस्तौल के खोल नये-नये थे, जिनमें से चमड़े की ताजगी की गंध आ रही थी। और अब वे उसके कमरे में आ गए थे, उसकी खाट के पास खड़े थे। उनमें से दो तो

अधेड़ उमर के किसान बेटे थे। उनके ओंठ मोटे थे और आँखें मछली जैसी, और तीसरा ठिगना एवं मोटा था। वे उसकी खाट के पास खड़े थे। उनके हाथों में पिस्तौलें थीं और सब जैसे उस पर गहरी-गहरी साँसें ले रहे थे। तब, एकाएक किसी ने ऊपर की मंजिल में डाट निकाला और दीवारों में के नलों में से घर-घर करके पानी बहने लगा।

घड़ी की सुइयां जैसे पीछे की ओर घूम जाती हैं, सपने का सिलसिला भी फिर पीछे की ओर चला। रुबाशोफ के किवाड़ों की चोटों की आवाज तेज होती गई। जो दो आदमी बाहर थे और उसे गिरफ्तार करने आये थे, बारी-बारी से चोटें कर रहे थे। किन्तु रुबाशोफ की नींद नहीं टूट सकी। हालांकि वह जानता था कि आगे का दृश्य तो और भी दुखदायी है; तीनों अब भी उसकी खाट के पास खड़े हैं और वह अपना चोगा पहनने की कोशिश कर रहा है। किन्तु चोगे की बाँह अन्दर को चली गई है और वह बाँह डाल ही नहीं सक रहा। वह कितनी ही देर तक यह व्यर्थ का यत्न करता रहा और तब एकाएक, जैसे उसे लकवा मार गया हो, वह हिल-डुल भी नहीं सकता। हालांकि यह सारी स्थिति इसी कारण तो थी कि वह चोगे में बाँह नहीं डाल सक रहा था। रुबाशोफ की यह असहाय दशा कुछ ही क्षण रही होगी और इस बीच क्षुब्ध भाव से उसने अनुभव किया कि उसकी कनपटियाँ ठंडी हो गई हैं। उसके कमरे के किवाड़ पर जो हथौड़ेबाजी हो रही थी, उससे उसकी नींद दूर के ढोलों की ध्वनि की तरह टूट गई। तकिये के नीचे रखीउस की बाँह चोगे में हाथ डालने की निष्फल चेष्टा कर रही थी। और तब, अन्त में पिस्तौल के एक सिरे से उसके कान पर पहली बार गहरी चोट की गई और वह मानो इस सारी स्थिति से छुटकारा पा गया।

इस पहले प्रहार से उसने जो सनसनी अनुभव की; वह बारम्बार सौगुनी हो-होकर उसे अक्सर जगा देती। स्वप्नावस्था में, यही पहला प्रहार उसके बहरेपन का पहला दिन था। पल-भर के लिए जैसे उसे कंपकंपी आ जाती और उसके बाद उसका हाथ तकिये के नीचे जैसे अकड़-सा जाता। और

वह चोगे में बाँह डालने की निरन्तर चेष्टा करता रहता। पूरी तरह जागने के लिए, इसी तरह नियमतः उसके साथ होने लगा। हालांकि इसके बाद तो उसकी और भी गत बनने लगी। उसे अनुभव होता था कि यह जागरण तो वास्तव में सपना ही है और असलियत तो यह थी कि वह अंधेरी कोठरी के कठोर पत्थरों के फर्श पर पड़ा होता था, जहाँ उसके पाँव की ओर संडास होती थी, उसके सिर की ओर पानी का जग और रोटी के रूखे-सूखे टुकड़े पड़े होते थे······

इस बार भी, कुछ क्षणों के लिए, उसकी यह अचेतन अवस्था रही। उसे यह पता नहीं था कि इस अंधेरे में उसका हाथ संडास पर जा पड़ेगा या खाट के पास रखे लैम्प के स्विच पर। और तब रोशनी हो गई और अंधेरा जाता रहा। रुबाशोफ जैसे पुरानी बीमारी से एकाएक छुटकारा पा गया हो और उसने यह जान लेने के लिए ही लम्बे-लम्बे साँस लिये। उसके दोनों हाथ छाती पर जुड़े थे और वह आजादी तथा सुरक्षा का सुखद आनन्द ले रहा था। उसने माथे और गंजे सिर के भाग को चादर से पोंछा। तब उसका ध्यान गया पार्टी के लीडर नं० १ की ओर, जिसके रंगीन चित्र उसके कमरे की दीवार पर, और उसके आगे-पीछे, ऊपर-नीचे के सब कमरों की दीवारों पर टंगे थे। नगर-नगर और नगरों के घर-घर की दीवारों पर और समस्त देश में लीडर नं० १ के चित्र टंगे थे, जिसने अपने देश के लिए बेहद तकलीफें सहीं और जो अपने देश की भलाई के लिए लड़ा, अब उसी को इतने बड़े देश का फिर से संरक्षण प्राप्त हो गया है। वह लीडर नं० १ की लौटती लौह-धारणाओं के प्रति अपने को तुच्छ समझने लगा। और अब, वह पूरी तरह जाग गया था, किन्तु उसके किवाड़ों पर अब भी हथौड़े-बाजी जारी थी।

: ३ :

रुबाशोफ को जो दो आदमी गिरफ्तार करने आये थे, वह बाहर अंधेरे में खड़े थे। उन्होंने आपस में सलाह की। वेस्सिलिज चौकीदार ने ही उन्हें

ऊपर जाने का रास्ता बताया था। वह लिफ्ट के खुले किवाड़ में खड़ा था; डरा-सा यह सारा कांड देख रहा था। वेस्सिलिज़ दुबला-पतला बूढ़ा आदमी था। उसने फौजी ओवरकोट पहन रखा था और उसमें फटे कालर पर नाईट-शर्ट डाल रखी थी। उसके गले पर लाल रंग के घाव का निशान था। यह घाव उसे घरेलू लड़ाई में ही लगा था जिसमें वह रुबाशोफ की पार्टी रेजीमैंट का सिपाही होकर लड़ता रहा था। उस लड़ाई के बाद रुबाशोफ को तो देश-निकाला मिल गया, तिस पर भी वेस्सिलिज़ कभी-कभी अखबारों में उसका जिक्र सुन लेता। अक्सर वेस्सिलिज़ की लड़की ही उसे शाम के वक्त ये अखबार पढ़कर सुनाया करती थी। कांग्रेस के जलसों में रुबाशोफ जो तकरीरें किया करता था, उन्हें भी लड़की ही उसे सुनाती। और ये तकरीरें इतनी लम्बी और मुश्किल होती थीं कि वेस्सिलिज़ उन्हें समझ भी नहीं सकता था। अक्सर वह, इन तकरीरों के पढ़ने के दौरान में सो जाया करता, किन्तु ज्यों ही उसकी बेटी आखिरी वाक्य और तालियों की चर्चा का ज़िक्र पढ़ती, त्यों ही वह जाग जाता था। इन जलसों की समाप्ति पर 'अन्तर्राष्ट्रीयता जिन्दाबाद', 'इन्कलाब जिन्दाबाद', 'नं० १ जिन्दाबाद' के नारे लगाये जाते थे, और वेस्सिलिज़ जैसे छिपी-छिपी साँस में मन-ही-मन कहता—'आमीन'। वह नहीं चाहता था कि उसकी बेटी इसे सुन सके। और तब वह जाकिट उतारकर अपने को छिपाता हुआ-सा दुर्भावना के साथ सोने चला जाता। उसकी खाट के ऊपर भी नं० १ का चित्र टंगा था और उस चित्र के आगे की ओर टंगा था पार्टी कमाण्डर के रूप में रुबाशोफ का फोटो। यदि यह फोटो भी देख लिया जाता, तो संभवतः वह भी गिरफ्तार हो जाता।

बाहर जाड़ा था, अंधेरा था और जंगल सुनसान खड़ा था। कमिस्सरेट के दो आदमियों में से छोटे ने तजवीज की कि किवाड़ के ताले को गोली मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायं। वेस्सिलिज़ लिफ्ट के किवाड़ के सहारे खड़ा था। उसे बूट भी ढंग से पहनने का वक्त नहीं मिल सका था। उसके हाथ इतने काँप गए थे कि वह तस्मे भी न बाँध सका। दोनों में से बड़ा

गोली चलाने के विरुद्ध था और उसकी इच्छा थी कि ऐसे ही गिरफ्तारी की जाय। दोनों ने फिर से अपने हाथों को गरमाया और लगे किवाड़ पर चोटें करने। छोटे ने तो अपना रिवाल्वर निकाला और उसके सिरे से किवाड़ पीटने लग गया। इस पर नीचे की मंजिलों में से एक औरत चिल्ला उठी, किन्तु नौजवान ने वेस्सिलिज को कहा कि औरत से कह दो चुप रहे। और वेस्सिलिज चिल्लाया—चुप रहो। अफसर अपना काम कर रहे हैं। औरत ने सरकारी अफसरों का नाम सुना तो एकदम चुप हो गई। अब नौजवान ने अपने बूटों से किवाड़ पर हमला शुरू कर दिया। इससे सारा छज्जा गूंज उठा, और अन्त में किवाड़ खुल ही गया।

तीनों रुबाशोफ की खाट के पास खड़े थे। नौजवान अपनी पिस्तौल ताने खड़ा था, दूसरा बूढ़ा आदमी अकड़कर तना खड़ा था, और वेस्सिलिज़ दीवार के सहारे कुछ कदम हटकर पीछे की ओर खड़ा था। रुबाशोफ अब भी गर्दन को सुखा रहा था। उसने अधखुली और निंदयाई आँखों से उन्हें देखा। "नागरिक रुबाशोफ' निकोलस सामनोविच, हम आपको कानून के नाम पर गिरफ्तार करते हैं," नौजवान ने कहा। रुबाशोफ ने तकिये के नीचे से चश्मा निकाला और झुककर बैठ गया। अब वह चश्मा पहने था और उसकी आँखों के भाव साफ-साफ नज़र आ रहे थे। इन भावों को वेस्सिलिज़ और बूढ़ा अफसर पुराने फोटो और चित्रों के कारण भली प्रकार जानते थे। बूढ़ा अफसर और भी तनकर खड़ा हो गया, और नौजवान अफसर, जो अभी नया-नया ही बहादुर बनने जा रहा था, रुबाशोफ की खाट के और निकट हो गया। तीनों ने देखा कि वह ऐसा कुछ कहने या करने ही को है कि जिससे वह अपनी इस दुरावस्था से पिंड छुड़ा सके।

"इस बन्दूक को अलग हटाओ कामरेड," रुबाशोफ ने उससे कहा, "जो भी हो, आख़िर तुम करना क्या चाहते हो?"

नौजवान बोला, "तुमने सुना नहीं कि तुम गिरफ्तार किये जा चुके हो? उठो, अपने कपड़े पहनो और गड़बड़ करने की कोशिश न करो।"

"क्या तुम्हारे पास वारंट है?" रुबाशोफ ने पूछा।

बूढ़े अफसर ने वारंट का नाम सुनते ही जेब से एक कागज़ निकालकर रुबाशोफ के हाथ में दिया और फिर बाकायदा तनकर खड़ा हो गया।

रुबाशोफ ने गौर से पढ़ा और बोला, "बहुत अच्छा, चलो।"

"कपड़े पहनो और जल्दी करो," नौजवान ने कहा। उसकी तेजी बनावटी न थी, बल्कि स्वाभाविक ही थी। रुबाशोफ सोचने लगा, हमने तो विशुद्ध पीढ़ी को जन्म दिया था। उसे याद हो आया, हम अपने प्रचार पोस्टरों में युवक को सदा हँसमुख पेश किया करते थे। उसे जैसे बहुत ही बुरा लगा और वह नौजवान से बोला, अपनी पिस्तौल के साथ इधर-उधर कूदने के बजाय मुझे चोगा दो।

नौजवान ने सुना-अनसुना कर दिया; चुपचाप खड़ा रहा। बूढ़े अफसर ने रुबाशोफ को चोगा दिया और उसने उसमें बाँह डाली। मुसकराते हुए वह आप-से-आप बोला, 'इस बार तो बाँह झट चली गई।' तीनों ने इस बात का कुछ भी मतलब न समझा और चुपचाप खड़े रहे। वह देखते रहे; रुबाशोफ धीरे-से बिस्तर से निकलकर अपने बिखरे हुए कपड़ों को इकट्ठा कर रहा था।

उस औरत की चिल्लाहट के बाद सारा मकान चुपचाप था, किन्तु सभी जानते थे कि हर कोई अपने-अपने बिस्तर में पड़ा जाग रहा है, और सभी डर से साँस ले रहे है। तब उन्होंने सुना, ऊपर की मंजिल में किसी ने डाट खोल दिया है, और पनालों की राह पानी बहने लगा है।

: ४ :

दरवाजे के सामने ही मोटर खड़ी थी। इसी मोटर में दोनों अफसर आये थे। यह नयी-नयी अमरीका से आई थी। अभी अंधेरा ही था। ड्राइवर ने मोटर की बत्तियाँ जलाईं। दूर-दूर तक रोशनी फैल गई, किन्तु बाज़ार सुनसान था। वह मोटर में बैठ गए। पहले नौजवान दाखिल हुआ, तब रुबाशोफ और अन्त में बूढ़ा अफसर। मोटर चली। एक मोड़ पर घूमते ही मोटर रुकी। नयी मोटर नगर के बीच ही थी। दोनों ओर नौ-नौ, दस-

दस मंज़िल ऊँचे मकान थे। किन्तु सड़कें ऐसे थीं, जैसे देहातों की हों—दलदल और कीचड़ से भरी हुईं। जैसे छकड़े ही इन पर जाते-आते हों। कीचड़ में बर्फ भी मिली हुई थी। मोटर कदम-कदम चल रही थी और बैल-गाड़ी की तरह चर्र-चर्र करती हुई जा रही थी।

"तेज़ चलाओ," नौजवान बोला। उसे मोटर का सुनसान बहुत बुरा लग रहा था।

ड्राइवर ने इधर-उधर देखे बिना ही अपने कंधों को उमेठा। रुबाशोफ जिस समय मोटर में बैठा था, तब भी ड्राइवर ने उसकी ओर बड़ी लापरवाही और तीखी आँखों से देखा था। रुबाशोफ को ड्राइवर का यह भाव वैसा ही लगा, जैसा कि एक बार मोटर दुर्घटना के कारण एंबुलैंस कार में बैठते समय उसके ड्राइवर ने उसके प्रति प्रकट किया था। जो भी हो, मोटर एकदम धीरे-धीरे चल रही थी। "कितनी दूर है, वह अस्पताल ?" रुबाशोफ ने अपने साथियों की ओर देखे बिना ही पूछा। बूढ़ा अफसर बोला, "अभी आध घंटा और लगेगा।" रुबाशोफ ने सिगरेटकेस निकाला, फिर बूढ़े अफसर की ओर बढ़ाया। उसने दो लेकर एक ड्राइवर को दिया। नौजवान ने लेने से इनकार कर दिया। रुबाशोफ का दिल ऐसा करके हलका तो हुआ, किन्तु साथ ही उसे अपने ऊपर ग्लानि भी हुई। वह मोटर में छाई हुई चुप्पी को भंग करना चाहता था। उसे बुरा लग रहा था कि चार आदमी एक साथ बैठे हैं, किन्तु बोलते तक नहीं। और वह बोला, "कितनी रद्दी है यह मोटर। ये विदेशी मोटरें मिलती तो बहुत मंहगी हैं, किन्तु हमारे देश की सड़कों पर छः महीने चलकर छकड़ा हो जाती हैं।"

"आप ठीक ही कहते हैं। हमारे देश की सड़कें बहुत खराब हैं," बूढ़े अफसर ने कहा। रुबाशोफ उसके बोलने के ढंग से उसकी लाचारी को भी सहज ही समझ गया। उसने उस उत्तर को ऐसे महसूस किया, जैसे किसी ने कुत्ते को हड्डी डाल दी हो। और उसने और आगे बात न करने का निश्चय किया। किन्तु एकाएक नौजवान अफसर गुस्से के लहजे में बोल उठा, "क्या पूंजीवादी देशों में इनसे बेहतर सड़कें होती हैं ?"

रुबाशोफ खिसियाना-सा हुआ, किन्तु बोला, "क्या तुम कभी दूसरे देशों में गये भी हो ?"

"मैं सब जानता हूँ, जो कुछ वहाँ है। मुझे वहाँ की कहानियाँ सुनाने की चेष्टा करने की जरूरत नहीं", नौजवान ने रुखाई से कहा।

"मुझे तुम क्या समझते हो, सच-सच बताओ ?" रुबाशोफ ने शान्त भाव से पूछा। और इसके साथ ही वह यह कहना न रोक सका, "तुम्हें पार्टी का इतिहास भी थोड़ा-बहुत पढ़ लेना चाहिए।"

इस पर नौजवान जैसे चुप ही हो गया। वह एक-टक ड्राइवर की पीठ की ओर देखता रहा। कोई नहीं बोला। मोटर लकड़ी की टूटी-फूटी झोंपड़ियों में से होकर निकल रही थी और उनकी प्रतिछाया के ऊपर लटक रहा था चाँद—पीला-सा और शीतल-सा।

: ५ :

नये ढंग की बनी जेल के हर बरामदे में बिजली की रोशनी जल रही थी। यह रूखी-सी लोहे की बनी गैलरियों, नंगी-चिट्टी दीवारों और जेल कोठरियों के किवाड़ों पर पड़ रही थी, जिन पर नामों के कार्ड टंगे थे। यह रंगहीन रोशनी और टाइलों के बने फर्श पर उनके चलने की खट-खट रुबाशोफ की इतनी जानी-पहचानी थी कि पल-भर के लिए उसे ऐसा लगा कि जैसे वह फिर सपना ही देख रहा हो। उसने यह यकीन कर लेने की चेष्टा की कि ये सब कुछ जो है, वह असलियत नहीं। उसने सोचा, यदि मैं यह यकीन कर लूँ कि मैं सपना देख रहा हूँ, तो निश्चय ही यह सपना होकर रहेगा। उसने इस ओर इतनी अधिक चेष्टा की कि वह जैसे चेतनाहीन-सा हो गया, और तब एकाएक उसके अन्दर से मानो चेतना जाग उठी, और उसे आत्म-ग्लानि हुई। उसने सोचा, इस दशा में से भी निकला ही तो था और इस स्थिति का अन्त भी तो देखना ही था। और तब वह पहुँचे जेल की कोठरी नं० ४०४ पर। झाँकने के छेद के ऊपर उसके नाम का कार्ड था और उस पर लिखा था, "निकोलस सामनोविच रुबाशोफ।" तब उसने

सोचा, इन्होंने सब कुछ ठीक ही कर रखा है। कार्ड पर लिखे नाम को देखकर तो उसे कुछ अजीब-सा लगा। वह वार्डर को एक और कम्बल के लिए कहना ही चाहता था, किन्तु किवाड़ तो खटाक से बन्द हो चुका था, और वह उस ओर पीठ किये खड़ा था।

: ६ :

थोड़ी-थोडी देर बाद वार्डर आता और रुबाशोफ की कोठरी में छेद की राह झांककर चला जाता। रुबाशोफ खड्डी पर लंबा लेट रहा था और सोते में कभी-कभी उसका हाथ केवल मुड़-तुड़ जाता था। खड्डी के पास ही फर्श पर उसका चश्मा और सिगरेट का डिब्बा पड़ा हुआ था।

कोठरी नं० ४०४ में लाने के दो घंटे बाद यानी सात बजे सुबह बिगुल बजा और रुबाशोफ की नींद टूटी। उसने इस नींद में कोई सपना नहीं देखा और इसी कारण उसका दिल और दिमाग सही था। बिगुल तीन बार बजा और तीनों बार उसकी एक ही-सी ध्वनि थी। उसकी काँपती हुई आवाज़ प्रतिध्वनित हुई और लीन हो गई—जैसे डरावना-सा मौन शेष रह जाता है।

अभी पूरी-पूरी तरह दिन तो नहीं निकला था। संडास और चिलमिची के किनारों पर हलकी-हलकी रोशनी पड़ रही थी। खिड़की का चौखटा काले रंग का था और उसमें भूरे-भूरे शीशे लगे थे। ऊपर बाईं ओर एक शीशा टूट जाने के कारण उस जगह अखबार का काग़ज़ चिपका हुआ था। रुबाशोफ उठ बैठा। उसने चश्मा लिया और सिगरेट का डिब्बा उठाकर फिर लेट गया। उसने चश्मा नाक पर रखा और सिगरेट जलाया। अब भी सब ओर चुप्पी का राज था। सब कोठड़ियों में लोग अपनी-अपनी खड्डियों पर से उठ रहे थे और टाईलों पर इधर-उधर टटोलते-से जान पड़ते थे। किन्तु तनहाई कोठड़ियों से कोई कुछ नहीं सुन सकता था—केवल समय-समय पर बरामदे में आने-जाने की आवाज़ आ जाती थी। रुबाशोफ जानता था कि वह तनहाई कोठड़ी में रखा गया है और उसे तब तक वहाँ रहना होगा, जब

तक कि उसे गोली नहीं मार दी जाती। उसने अपनी छोटी-छोटी नुकीली दाढ़ी में अंगुलियाँ चलाईं, सिगरेट का कश लगाया और चुपचाप पड़ा रहा।

तो मुझे गोली मार दी जायगी, रुबाशोफ सोचने लगा। पलक झप-झपाते हुए उसने पाँव के अँगूठे की ओर देखा, जो लम्बे रूप में विस्तार के आखिरी छोर पर टिका हुआ था। उसे जैसे पसीना आ गया और बहुत थकावट-सी महसूस हुई। उसे वहीं और उसी क्षण मौत के मुँह में कूद जाने का रत्ती-भर भी एतराज़ न था, बशर्ते कि उसे कम्बल की गरमी-तले पड़े रहने दिया जाता। तो वे तुम्हें गोली मार देंगे, उसने अपने आप से कहा। उसने धीरे से अपने पंजे जुराब में डाले और तब एकाएक उसे एक पद्यांश याद हो आया, जिसमें ईसा और झाड़ी में फँसे सफेद हिरण के पाँवों की तुलना की गई थी। उसने चश्मे को बाँह पर रगड़ा। उसका यह हाव-भाव उसके सभी अनुयायी अक्सर पहचानते थे। उसे लगा कि कम्बल की गरमी में ही सम्पूर्ण सुख है। और उसे डर तो केवल एक ही था कि उसे कम्बल से बाहर निकलना होगा और चलना होगा। तो तुम्हें नष्ट कर दिया जायगा, उसने धीमे-से स्वर में अपने-आप से कहा और, एक और सिगरेट सुलगाई, हालांकि बाकी तीन ही रह गये थे। खाली पेट जब वह सिगरेट पिया करता था, तो कभी-कभी उसे जैसे थोड़ा-सा नशा हो जाता था। और मौत के निकट होने के पूर्व अनुभवों के कारण उसे ऐसी परिचित सन-सनी की अजीब-सी हालत महसूस भी हो ही चुकी थी। इसमें साथ ही वह यह भी जानता था कि उसकी यह हालत निन्दनीय भी है, और कुछेक बातों के कारण अनुचित भी है, किन्तु इस अवसर पर वह ऐसे नजरिये को अपनाने के लिए तैयार न था। इसे छोड़कर, वह जुराब में पड़े अपने पाँव के अँगूठे के खेल को देखने लगा। वह मुस्कराया। अपने शरीर के प्रति सहा-नुभूति की लहर-सी उसमें दौड़ गई। और उस शरीर को तो उसने कभी चाहा भी नहीं था, किन्तु सहानुभूति का विचार उस पर हावी हो गया और उसके विनाश के प्रति आत्म-दयार्द्रता की खुशी से उसका अन्तरात्मा सराबोर हो

गया। 'पुराना सन्तरी मर चुका है', उसने अपने आप से कहा। 'आखिरी हम बचे हैं। हमारा भी नाश होने जा रहा है। क्योंकि सोने-से सुन्दर लड़के और लड़कियों का भी नाश होना ही है, जैसे चिमनियाँ साफ करने वाले, धूल हटाने आये हैं...... ।' उसने 'धूल हटाने आये हैं' गीत की कड़ी याद करनी चाही, किन्तु इतने ही शब्द याद आकर रह गए। 'पुराना सन्तरी मर चुका है', उसने दोहराया और उनके चेहरों को याद कर लेने की कोशिश की।

उनमें से कुछेक ही उसे याद आ सके। उन्हीं में एक था इंटरनेशनल का चेयरमैन, जो गद्दार ठहराकर फाँसी पर लटका दिया गया था। रुबाशोफ उसकी बाबत इतना-भर ही याद कर सका कि वह अपने गोल-गोल पेट पर धारीदार वास्कट पहना करता था। उसे यह भी याद हो आया कि वह गैलिस कभी नहीं लगाता था, सदा चमड़े की पेटी बाँधा करता था। उसे दूसरे एक और व्यक्ति की याद आई, जो क्रान्तिकारी राज्य का प्रधान-मंत्री था। उसे भी फाँसी दे दी गई थी। उसकी बाबत उसे याद आया—खतरे के समय उसने अपने नाखून काट लिये थे।

तब रुबाशोफ अपनी बाबत सोचने लगा—इतिहास तो तुझे बिना किसी विशेष धारणा के पहले-सा ही समझेगा। भला इतिहास नाखून काट लेने की बात को क्या जानेगा? उसने सिगरेट का कश लगाया और मरे हुओं को याद करने लगा और उसे याद हो आई वह पशुता, जिसके द्वारा उन्हें मौत के घाट उतारा गया था। जो भी हो वह अपने को नं० १ के प्रति ऐसी घृणा करने वाला न बना सका, जैसा कि उसे बनना चाहिए था। उसने अपने पास की दीवार पर टंगे नं० १ के रंगीन चित्र को कई बार देखा था। और उसके प्रति नफ़रत करने की कोशिश भी की थी। उन्होंने आपस में तय करके उसके कई नाम रखे थे, किन्तु आखिर में जो जँचा, वह नं० १ ही था। नं० १ ने जो आतंक उत्पन्न किया था, वह अन्य सब बातों को छोड़कर इस संभावना पर आश्रित था कि उसका पक्ष सही था। और, कि जिन्हें उसने मार डाला था, यहाँ तक कि जिन्हें गरदन के पीछे की ओर से गोली मारी गई थी, उन्हें भी यह मानना ही पड़ा कि सम्भव है,

वह सही ही था। इस बाबत कोई निश्चित बात भी नहीं थी, केवल इतना ही था कि धोखे से पूर्ण दैवी शक्ति के सामने अपील-भर की जा सके कि जिसे इतिहास कहा जाता है। और उस इतिहास ने अपना दंड तब घोषित किया, जब कि अपील करने वाला कब का धूल में मिल चुका था।

रुबाशोफ ने महसूस किया कि उसे छेद में से झांका जा रहा है। बिना देखे ही वह जानता था कि आँख की पुतली छेद में से कोठड़ी में झांक रही है। और उसके एक क्षण ही बाद भारी-भरकम ताले में घूमती हुई चाबी का शब्द हुआ। कुछ ही देर में दरवाजा खुल गया। एक बूढ़ा वार्डर किवाड़ में खड़ा रहा—

"तुम अभी तक उठे क्यों नहीं?" उसने पूछा।

"मैं बीमार हूँ," रुबाशोफ ने उत्तर दिया।

"क्या बीमारी है तुम्हें? कल से पहले तो तुम्हें डाक्टर के पास भी नहीं ले जाया जा सकता।"

"दाढ़ दर्द है," रुबाशोफ ने कहा।

"दाढ़ दर्द?" वार्डर ने दोहराया; और वह बाहर हो गया। दरवाजा खटाक से बन्द हो गया।

रुबाशोफ ने सोचा, और न सही, अब कम-से-कम आराम से तो पड़ा रह सकूंगा। लेकिन इससे बढ़कर उसे अन्य कोई सुख न मिला। और कम्बल की सारहीन गरमी भी उसके लिए असहनीय हो उठी। उसने कम्बल को उतार फेंका। उसने पुनः अंगूठे की गतिविधि को देखने की चेष्टा की। किन्तु इससे जैसे उसके मस्तिष्क पर बोझ पड़ा हो। उसकी जुराबों की एड़ियों में छेद थे। वह उन्हें रफू करना चाहता था, किन्तु किवाड़ को खटखटाने और वार्डर से सुई-धागा माँगने के विचार ने उसे रोक लिया, क्योंकि वह जानता था कि उसे सुई तो किसी भी दशा में दी नहीं जा सकती।

तब एकाएक अखबार के लिए उसमें तृष्णा-सी जगी। वह इतनी प्रबल थी कि उसे लगा जैसे वह छापाखाने की स्याही की गंध सूंघ रहा

है, और उसे पृष्ठों की खड़खड़ और मुड़तुड़ की आवाज आने लगी। और अखबार में जैसे छपा था—शायद कल रात क्रान्ति शुरू हो गई हो, अथवा देश का मुखिया मारा गया हो, अथवा किसी अमरीकन ने आकर्षण-शक्ति की प्रतिक्रिया का आविष्कार कर लिया हो। उसकी गिरफ्तारी की खबर तो अभी उसमें छप नहीं सकती, क्योंकि देश में, अभी इसे गुप्त ही रखा जायगा, किन्तु बाहर तो यह सनसनीपूर्ण खबर छप ही जायगी। और अखबारों वाले दस साल पुराने फोटो जहां-तहां से लेकर छापेंगे, और उसके तथा नं० १ के विषय में अनेक उलूल-जलूल बातों को प्रकाशित करेंगे। अब उसे अखबार पा लेने की चाह बाकी नहीं रही, किन्तु यह जान लेने की वैसी ही गहरी तृष्णा उसमें जगी कि नं० १ के दिमाग़ में क्या हो रहा है। उसने अपने को डैस्क पर बैठे देखा—कोहनियों को टिकाकर, भारी और खिन्न भाव से, जैसे धीरे-धीरे अपने स्टैनो को कुछ लिखा रहा हो। और लोग, जब अपने स्टैनो को लिखा रहे होते हैं, तो धुंए के चक्कर बनाया करते हैं अथवा हाथों में पैमाना उछालते रहते हैं। किन्तु नं० १ न तो हिलता है, न खेल करता है और न ही चक्कर बनाता है.......रुबाशोफ ने एकाएक देखा कि वह पिछले पांच मिनटों से खुद ही इधर-उधर घूम रहा था; वह अनजाने ही बिस्तर पर से उठ खड़ा हुआ था। किन्तु इस बीच एक भी सैकिंड के लिए नं० १ उसके विचारों से जुदा नहीं हो सका था—नं० १, जो अपने डैस्क पर बैठा गतिहीन-सा लिखता जा रहा था। धीरे-धीरे उसे लगा कि वह बैठा हुआ खुद उसी की मूर्ति है, उसी का वह जाना-पहचाना रंगीन चित्र है, जो प्रत्येक बिस्तर के ऊपर टंगा है अथवा देश-भर में जो जहां-तहां चिपके हुए हैं, और जिनमें वह लोगों पर जमी-सी निगाहों से एकटक देखता रहता है।

रुबाशोफ कोठड़ी में इधर-उधर टहल रहा था—किवाड़ से खिड़की तक और खिड़की से किवाड़ तक। वह टहल रहा था—खड्डी, चिलमची और संडास के बीचोंबीच, साढ़े छः कदम इधर और साढ़े छः कदम उधर। किवाड़ के वह दाईं ओर मुड़ा और खिड़की से बाईं ओर। दाएँ-बाएँ

मुड़ते रहना जेल की पुरानी आदत में शामिल है, क्योंकि यदि यहाँ कोई दिशा बदल लेने की आदत नही डालता, तो वह एकाएक उकता जाता है; वह थक जाता है।

रुबाशोफ ने बरामदे में बहुत से आदमियों के चलने की आवाज़ सुनी। पहला ख्याल उसके मन में आया, अब मारपीट शुरू होगी। वह कोठरी के बीच ठुड्डी आगे किये खड़ा हो गया—जैसे कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो। चलने वालों के कदम पड़ोस की एक कोठरी के पास आकर रुक गए। धीरे-से हुकमराना लहजे की आवाज़ सुनाई दी, और चाबियों की खड़खड़ाहट हुई। तब एकाएक जैसे सुनसान हो गया।

रुबाशोफ बिस्तर और संडास के बीच तनकर खड़ा था। उसकी साँस जैसे रुकी हुई थी और वह पहली चीख को सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे याद थी वह पहली चीख जिस पर शारीरिक दर्द का आतंक अब भी छाया हुआ था। अक्सर वह कितनी भयंकर होती है, और उसके बाद जो होता है वह तो पहले की अपेक्षा अधिक सहनीय होता ही है। इस प्रकार सहज ही कोई भी इसके लिए अभ्यस्त हो जाता है और वक्त पाकर तो चीख के लहजे और प्रभाव से सताने के तरीकों की बाबत भी झट फैसला किया जा सकता है। अन्त में भी कई लोग वैसे ही ढंग से पेश आते हैं, चाहे भले ही उनकी आदत और आवाज पहले की-सी हो; चीखें कमजोर पड़ जाती हैं और उनका रूप टीस तथा उसे दबा लेने में बदल जाता है। और अक्सर फौरन ही इसके बाद किवाड़ खटाक से बन्द कर दिया जाता है। अब फिर चाबियों की झनझनाहट होती है। किवाड़ में आदमियों की शक्ल देखते ही और बहुधा छूने से पहले ही अगले शिकार की चीख सुनाई दे जाती है।

रुबाशोफ अपनी कोठरी के मध्य में खड़ा था और पहली चीख की इन्तजार में था। उसने अपने कमीज की बाँह पर चश्मे को रगड़ा, और अपने-आप से बोला, चाहे कुछ भी हो, मैं इस बार तो हरगिज नहीं चीखूंगा। वह इस वाक्य को माला की तरह दोहराता रहा। वह खड़ा था

और इन्तजार कर रहा था; किन्तु चीख सुनाई न दी। तब उसने धीमी-सी भन-भन की आवाज सुनी, फुसफुसाहट हुई और कोठरी का किवाड़ बन्द हो गया। चलने वाले आगे की कोठरी की ओर बढ़े।

रुबाशोफ ने छेद में से बरामदे को झाँका। वे लोग उसी कोठरी के लगभग सामने रुक गए, यानी नं० ४०७ पर। उनमें था एक बूढ़ा वार्डर, दो अर्दलियों के साथ, जिन्होंने चाय का टब उठा रखा था, और तीसरा था, जिसने काली-काली डबल रोटियों के टुकड़ों की टोकरी उठा रखी थी। और उनके साथ दो अफसर, जो पोशाक में थे और जिनके पास पिस्तौल थे। मतलब यह कि वह मारपीट का जलूस नहीं था, बल्कि वह लोगों के लिए प्रातराश ला रहे थे।

नं० ४०७ को रोटी दी जा रही थी। रुबाशोफ उसे देख तो नहीं सकता था, किन्तु अन्दाज किया जा सकता है कि नं० ४०७ बाकायदा किवाड़े से एक कदम हटकर खड़ा था। रुबाशोफ उसकी बाँहों और हाथों को ही देख सकता था। उसकी बाँहें नंगी और बहुत ही पतली थी—जैसे दो लकड़ियाँ-सी हों। वह किवाड़ से बरामदे में निकली हुई थी। उसने हाथों को जोड़ रख' था—जैसे कटोरा बना रखा हो। जब उसने रोटी ले ली, उसने दोनों हाथ जोड़ लिये और कोठरी के अन्धेरे में जैसे वे लोप हो गए। खटाक करके किवाड़ बन्द हो गया।

रुबाशोफ ने झाँकना बन्द कर दिया और लगा इधर-उधर टहलने। उसने चश्मे को रगड़े बिना एक जगह पर रख दिया और सुख की जैसी गहरी साँस ली। वह सीटी बजाते हुए प्रातराश की इन्तजार करने लगा। पतली-पतली बाँहों और गोलाकार हाथों की याद से वह कुछ अनमना-सा हुआ। उसे लगा, जैसे कुछ याद हो आया हो, किन्तु वह उसे प्रकट नहीं कर सकता था।

इस जलूस ने कई कोठरियों के ताले खोले और बन्द किये, किन्तु उसकी बारी अभी नहीं आई थी। रुबाशोफ छेद के पास झाँकने गया कि जलूस उसकी ओर आ रहा है या नहीं। वह गरम-गरम चाय पीना चाहता था! टब में से भाप उठ रही थी और चाय के ऊपरी भाग पर नींबू की पतली-सी पपड़ी तैर रही थी। उसने चश्मा उतारा और आँख को छेद में लगाया। उसकी नजर सामने की चार कोठरियों पर गई—४०१, ४०३, ४०५, ४०७। इन कोठरियों के ऊपर लोहे का बरामदा था। उसके पीछे कोठरियाँ थीं, यानी दूसरी मंजिल की कोठरियाँ। जलूस बरामदे में दाईं ओर से लौट रहा था अब वह नं० ४०८ के पास रुका। रुबाशोफ केवल उन दो आदमियों की पीठ देख सका, जो पोशाक में थे। बाकी का जलूस नजर से बाहर था। किवाड़ बन्द हुआ, और अब वे नं० ४०६ पर आये। रुबाशोफ ने चाय के टब और थोड़े-से बचे डबल रोटी के टुकड़ों को फिर देखा। ४०६ एकाएक बन्द हो गया, क्योंकि वहाँ कोई न था। जलूस चला, चलकर उसके किवाड़ से निकल गया और जा रुका नं० ४०२ पर।

रुबाशोफ ने मुट्ठियों से किवाड़ को भड़भड़ाना शुरू किया। उसने देखा कि जिन दो ने टब उठा रखा था, उन्होंने एक-दूसरे के साथ आँखें मिलाईं और उसके किवाड़ की ओर भी झाँका। वार्डर ने नं० ४०२ के किवाड़ के ताले में अपने को व्यस्त कर लिया और ज़ाहिर किया कि जैसे उसने सुना ही नहीं। दोनों अफसर भी रुबाशोफ की ओर पीठ किये खड़े थे। अब नं० ४०२ को रोटी दी जा रही थी। जलूस और आगे बढ़ने लगा। रुबाशोफ ने अब और भी जोर से भड़भड़ाहट की। उसने पाँव से जूता निकाला और लगा किवाड़ को पीटने।

दोनों अफसरों में से बड़ा उस ओर मुड़ा। उसने रुबाशोफ के किवाड़ को भावपूर्ण नेत्रों से देखा, और फिर लौट गया। वार्डर ने ४०२ नं० को बन्द किया। अर्दली टब उठाये असमंजस में खड़े थे। जो अफसर पहले मुड़ा था, उसने बूढ़े वार्डर को कुछ कहा। वार्डर कन्धों को उचकाता हुआ

रुबाशोफ के किवाड़ पर चाबियाँ झनझनाने लगा। टब वाले अर्दली भी पीछे-पीछे आये। जिसने रोटी की टोकरी उठा रखी थी उसने नं० ४०२ के साथ कोई बात की।

रुबाशोफ एक कदम पीछे हट गया और किवाड़ के खुलने की प्रतीक्षा करने लगा। उसके अन्दर जैसे युद्ध छिड़ गया था। उसे परवाह न थी कि उसे चाय दी जायगी या नही। चाय अब ठंडी भी हो चुकी थी। उसके किवाड़ में ताली घूमी। छेद में आँख की पुतली दिखाई दी और फिर गायब हो गई। और किवाड़ खुल गया। रुबाशोफ अपने बिस्तर पर बैठ गया था और फिर से जूता पहन रहा था। वार्डर किवाड़ को थामे खड़ा था और बड़ा अफसर कोठरी में दाखल हुआ। उसकी गोल-गोल घुटी हुई खोपड़ी थी, और आँखें जैसे एकदम भावहीन। वह संडास के पास खड़ा हो गया और उसने कोठरी में निगाहें घुमाईं।

रुबाशोफ से वह बोला—"तुमने अपनी कोठरी साफ नहीं की। निश्चय ही तुम्हें जेल के नियमों का तो पता ही है।"

रुबाशोफ ने चश्मे में से झाँकते हुए अफसर से पूछा, "मुझे प्रातराश क्यों नहीं दिया गया?"

"यदि तुम मुझसे बहस करना चाहते हो, तो तुम्हें पहले खड़ा हो जाना चाहिए," अफसर ने कहा।

"मुझे तुम्हारे साथ बहस करने और यहाँ तक कि बोलने तक की भी रत्ती-भर इच्छा नहीं," रुबाशोफ ने जवाब दिया और अपने जूते के तस्मे बांधने में लगा रहा।

"तो आइंदा किवाड़ को न खटखटाना, वरना तुम्हारे खिलाफ़ कानूनी कार्रवाई की जायगी," अफसर ने कहा। उसने कोठरी को फिर देखा। और वार्डर से बोला, "कैदी के पास सफाई के लिए झाड़ू नहीं?"

वार्डर ने रोटी वाले को कुछ कहा और वह बरामदे से चला गया। चाय वाले अर्दली किवाड़ में खड़े थे और वह हैरानी से कोठरी को देख रहे थे। दूसरा अफ़सर बरामदे में पीठ पर हाथ किये खड़ा था।

रुबाशोफ अभी भी तस्मे बाँध रहा था। वह बोला, "कैदी के पास खाने के लिए तसला भी नहीं। मैं समझता हूँ कि-आप लोग मुझे भूख हड़ताल के कष्ट से बचाना चाहेंगे। मैं आप लोगों के नये तरीकों की दाद देता हूँ।"

"यह तुम्हारी भूल है," अफसर ने कहा। उसकी खोपड़ी पर घाव का निशान था। उसने बटन के छेद में 'रैवोल्यूशनरी आर्डर' का रिबन पहन रखा था। और रुबाशोफ ने सोचा, आप भी गृहयुद्ध में शामिल थे। किन्तु यह पुरानी बात हो गई और अब तो इससे कोई फर्क नहीं होता···। "तुम्हारी भूल है। तुम्हें प्रातराश इसलिए नहीं मिला कि तुमने अपने को बीमार बताया था।"

"दाढ़ दर्द," बूढ़ा वार्डर बोला। वह किवाड़ के सहारे खड़ा था। और उसकी पोशाक पर जहाँ-तहाँ चिकनाई के धब्बे लगे हुए थे।

"जैसी तुम्हारी इच्छा," रुबाशोफ ने कहा। वह और भी कुछ कहना चाहता था, किन्तु उसने अपने ऊपर काबू किया। किन्तु यह सारा कांड उसे बहुत ही बुरा लगा।

इसी बीच रोटी वाला अर्दली एक चीथड़ा लेकर दौड़ा आया। वार्डर ने उसके हाथ से चीथड़ा लिया और संडास के पास झटका कर फेंक दिया।

"क्या तुम्हें और भी कुछ कहना है?" अफसर ने पूछा।

"मुझे मेरे रहम पर छोड़ दो, और इस कांड को यहीं खत्म करो।" रुबाशोफ बोला। अफसर जाने लगा और वार्डर ने चाबियाँ झनझनाईं। रुबाशोफ खिड़की के पास चला गया। उसकी पीठ उनकी ओर थी। और वह एक खास बात तो कहना भूल गया था। वह लपककर किवाड़ तक आया और छेद में से चिल्लाया, "काग़ज और पेंसिल।" उसने चश्मा उतारा और झांकने लगा कि वे लोग आते भी हैं या नहीं। वह जोर से चिल्लाया था, लेकिन जलूस बरामदे से नीचे उतर गया, जैसे उसने सुना ही नहीं।

: ८ :

रुबाशोफ फिर तेजी से इधर-उधर कोठरी में घूमने लगा। इस सारे कांड के कारण जैसे वह आपे में नहीं रहा था। फिर भी एक ही मिनट में वह सँभल-सा गया। उसने चश्मे को बाँह पर रगड़ा। उसने कोशिश की थी कि घाव-लगे अफसर के प्रति जो नफरत चन्द मिनटों के लिए उसके दिल में पैदा हुई थी, वह बनी रहे। और उसने सोचा कि इससे आने वाले संघर्ष के वक्त वह और भी मजबूत बना रह सकेगा।

लेकिन वह ऐसा कर न सका। अपनी पुरानी आदत के मुताबिक उसने अपने को विरोधी की नजरों से आँकना चाहा। तब रुबाशोफ खड्डी पर बैठ गया। वह रुबाशोफ—ठिगना, दाढ़ी जिसकी बढ़ी हुई थी, उद्दंड—जो स्पष्टतः उत्तेजनापूर्ण ढंग से जूते पहन रहा था, बेशक, यही रुबाशोफ कभी अपनी अच्छाइयों के कारण मान्य था और बीते दिनों में तो इसने बड़े-बड़े काम भी किये थे; लेकिन कांग्रेस के जलसों में उसका रूप और ही था, और अब जेल की कोठरी में बिलकुल उससे उलटा है। रुबाशोफ ने अफसर की निगाहों में अपने को ठहराया—यह रुबाशोफ तो केवल कहावती रुबाशोफ है, जो प्रातराश के लिए बच्चों की तरह छटपटाता है, चिल्लाता है और उसे लज्जा तक नहीं आती। कोठरी भी इसने साफ नहीं की। उसकी जुराबों में छेद हैं। शिकायतें ही करनी आती हैं इसे। कानून के खिलाफ इसने जहाद किया है, चाहे भले ही पैसे के लिए या सिद्धान्तों के लिए किया, इससे कोई अन्तर नहीं आता; है तो जहाद ही। ऐसे झक्की लोगों की खातिर तो हमने क्रान्ति नहीं की थी। यह सच है, उसने उसमें मदद भी की, लेकिन उस वक्त वह आदमी था। लेकिन अब वह सठिया गया है, अपने को भूल गया है और जैसे दिवालिया होने जा रहा है। सम्भव है, उस समय भी वैसा ही हो, क्योंकि उस क्रान्ति में बहुत से साबुन की झाग की तरह उठे थे और बाद में एकाएक नष्ट हो गए थे। अब भी अगर उसमें आत्म-सम्मान है, तो उसे अपनी कोठरी साफ करनी ही चाहिए, करनी ही होगी।

रुबाशोफ कुछ लहमों के लिए तो हैरान रह गया और सोचने लगा,

क्या मुझे फर्श को रगड़ना ही चाहिए ? वह अनमना-सा कोठरी के बीचोबीच खड़ा हो गया। उसने नाक पर चश्मा रखा और खिड़की के सहारे जा खड़ा हुआ। उसने देखा, सेहन में अब दिन की रोशनी हो चुकी थी। इस कोठरी में आये उसे तीन घंटे हो चुके थे—यानी आठ बज चुके थे। सेहन के चारों ओर बैरकें-ही-बैरकें थीं—कैदियों की। बर्फ पड़ी हुई थी। सारे सेहन में बर्फ नजर आती थी—कुछ-कुछ जमी हुई।

और रुबाशोफ ने सोचा, फिर वही पुरानी बीमारी! क्रान्तिकारियों को दूसरों के नज़रिये से कभी नहीं सोचना चाहिए। या शायद उन्हें सोचना ही चाहिए। या, शायद ही क्यों, बल्कि ज़रूरी है कि वे सोचें।

और तब उसके सामने फिर सवाल आये—यदि कोई दूसरों के नज़रिये से ही सोचेगा, तो वह दुनिया में तबदीली-जैसी चीज़ कैसे ला सकेगा ? क्योंकर वह तबदीली होगी ? और जो समझौता कर सकता और बिसार सकता है वह कहाँ क्रियाशील हो सकता है और कहाँ नहीं ?

वे मुझे गोली मार देंगे, रुबाशोफ ने सोचा। मेरे उद्देश्य उनके लिए किसी मतलब के नहीं। सोचते-सोचते उसने अपना माथा खिड़की की चौखट पर रख लिया। सारा सेहन सफेद और चुपचाप था।

बिना सोचे वह कुछ देर तक खड़ा रहा। और तब धीरे-धीरे, वह जैसे जागा। और उसने सुना, उसकी कोठरी में खट-खट की आवाज़ आ रही है। वह घूमा। खट-खट की आवाज़ इतनी मद्धम थी कि वह जान नहीं सका किस दीवार से आ रही है। जब वह सुन लेने की कोशिश कर रहा था, तो वह रुक गई। अब उसने खुद ही संडास के पास खड़े होकर नं० ४०६ की दिशा की ओर खट-खट की, लेकिन कोई जवाब न मिला। फिर उसने नं० ४०२ की ओर खटखटाया। यहाँ से उसे जवाब मिला। रुबाशोफ सम्हलकर खड्डी पर बैठ गया। यहाँ से वह झाँकने के छेद पर भी निगाह रख सकता था। उसका दिल धक्-धक् करने लगा, क्योंकि जेल में इस प्रकार की पहली-पहली मुलाकात बहुत उत्तेजक-सी होती है।

नं० ४०२ लगातार टक-टक कर रहा था—रुक-रुककर तीन बार, फिर

विराम, तब फिर तीन बार और फिर विराम, और तब फिर तीन बार। रुबा-शोफ भी वैसा ही करके जतला रहा था कि वह सुन रहा है। वह यह जान लेना चाहता था कि दूसरी ओर वाला इस वर्गात्मक वर्ण माला को जानता भी है या नहीं। और अगर नहीं जानता, तो उसे सिखाने में तो बहुत मेहनत पड़ेगी। दीवार भी मोटी है और इसी कारण उससे आवाज भी मद्धम ही आ सकेगी। और इसके साथ ही छेद पर भी निगाह रखना, यह सब बहुत तकलीफ देगा। किन्तु नं० ४०२ को तो काफी अभ्यास था। वह लगातार खट-खट कर रहा था, पैंसिल जैसी कड़ी चीज से। परन्तु रुबाशोफ इस वर्ण-माला को याद करने में लगा हुआ था। धीरे-धीरे उसे याद आ गई। वह अक्षर-अक्षर करके, वर्गीकरण करता हुआ पहचानने लगा। और नं० ४०२ ने पूछा था—"कौन ?"

रुबाशोफ ने सोचा, है तो सुलझा हुआ आदमी। वह पहले जान लेना चाहता है कि वह कैसे आदमी से बातें करने जा रहा है। किन्तु क्रान्ति-कारी चलन के मुताबिक तो पहले कोई राजनीतिक संकेत करना चाहिए था, तब कोई खबर देनी चाहिए थी, तब खाने-पीने की चर्चा करनी चाहिए थी, और ऐसे बहुत-बहुत दिन बीत जाने के बाद, यदि जरूरत ही हो तो अपना परिचय दे देना चाहिए था। और रुबाशोफ को तो अनुभव था कि पार्टी के सदस्यों के नाम तो इतने बदले रहते हैं कि उनके असली नाम का मतलब ही खब्त हो जाता है। किन्तु यहां स्थिति और ही थी। रुबाशोफ अपना नाम बताने में संकोच करने लगा। लेकिन नं० ४०२ तो अधीर हो रहा था। उसने फिर टकटकाया—"कौन ?"

"तो बताना ही ठीक है," रुबाशोफ ने सोचा। और उसने टक-टक करके अपना पूरा नाम—निकोलस सामनोविच रुबाशोफ—बता दिया। तब वह उत्तर का इंतजार करने लगा।

बहुत देर तक उसे कोई जवाब न मिला। रुबाशोफ मुसकराया। उसका नाम सुनकर उसके पड़ोसी को जो धक्का लगा होगा, उसे वह भली प्रकार जानता था। फिर भी उसने इंतजार की, और अन्त में, फिर कोठरी में

टहलने लगा। वह रुक-रुक जाता और टक-टक सुन लेना चाहता था। किन्तु दीवार जैसे गूंगी हो गई थी। उसने अपनी बाँह पर चश्मा रगड़ा। चुपके से किवाड़ की ओर गया। छेद में से झांका। बरामदा खाली था। सब ओर सुनसान था। उसने अपने आप से पूछा—'४०२ चुप क्यों हो गया ?'

शायद वह डर गया है। रुबाशोफ के साथ बात करने में उसे डर लगा होगा। शायद नं० ४०२ राजनीतिक कैदी नहीं। डाक्टर होगा, इंजीनियर होगा, और मुझ सरीखे खतरनाक पड़ोसी को पाकर काँप गया होगा। निश्चय ही उसे राजनीतिक अनुभव नहीं था, तभी तो उसने नाम जान लेने से ही शुरुआत की। सम्भव है, किसी तोड़-फोड़ के मामले में पकड़ा गया हो। और जेल में रहते उसे कई दिन हो गए जान पड़ते हैं और इस वर्ण माला का अभ्यास कर लिया है। और उसने जो कुछ भी किया है, वह केवल सरलतावश किया है—किसी ख़ास मतलब से नहीं, महज़ सरसरी तौर पर। इन्हीं संभावनाओं में जैसे वह खड्डी पर बैठ गया हो। बैठे-बैठे वह अधिकारियों को विरोध रूप में सौवाँ खत लिख रहा था। वह जानता था कि इसे कोई नहीं पढ़ेगा, अथवा सौवां ख़त वह अपनी पत्नी के नाम लिख रहा था, जिसकी बाबत वह जानता था कि उसे कभी नहीं पहुँचेगा। इस निराशा में उसकी दाढ़ी बढ़ गई थी। उसने नहाना-धोना भी छोड़ दिया था, और उसे अपने नाखून काट लेने की आदत हो गई थी और दिन में उसे मुहब्बत-भरे सपने आने लगे थे। जेल में ऐसी सरल दशा बहुत ही भद्दी होती है और ऐसी स्थिति वाला व्यक्ति न तो जेल की आबोहवा के मुताबिक अपने को बना सकता है और न ही अपनी नैतिकता के स्तर को बनाये रह सकता है······तब अचानक फिर टक-टक शुरू हो गई।

रुबाशोफ तेज़ी से खड्डी पर बैठ गया। नं० ४०२ ज़ोर से टक-टक कर रहा था—जैसे अधीर हो गया हो—"तुम्हारे लिए यही उचित है।"

रुबाशोफ को ऐसी आशा न थी। नं० ४०२ अंग्रेज़ी गिरजे का ईसाई था। वह नास्तिकों से नफरत करता था। उसका विश्वास था कि नं० १

सरीखे भ्रान्तिरहित व्यक्तियों के सिर पर ही इतिहास बनता है। अपनी गिरफ्तारी को भी वह केवल गलतफ़हमी का नतीजा समझता था। उसका यह पक्का विश्वास था कि पिछले बरसों में जो भी बवंडर हुए हैं—चीन से स्पेन तक, अकाल से लेकर पुराने संतरियों को फाँसी देने तक—ये सब रुबाशोफ और उसके साथियों की गंदी हरकतों के नतीजे हैं। नं० ४०२ की दाढ़ी का सफाया हो चुका था। वह अपनी कोठरी को साफ रखता था और कानून कायदों पर चलता था। इसलिए इस बारे में उसके साथ बहस करना बेमानी था। लेकिन दुनिया के साथ इस रह गये आख़िरी नाते को भी बिलकुल तोड़ देना उसे ठीक न जंचा।

"कौन?" रुबाशोफ ने बहुत ही साफ लेकिन धीरे से टक-टक किया।

खीझे हुए की तरह इसका उत्तर मिला—"इससे तुम्हे कोई मतलब नहीं।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा," रुबाशोफ ने टकटकाया। और यह सोचकर कि बातचीत तो खत्म हो चुकी है, वह फिर टहलने के लिए खड़ा हो गया। लेकिन फिर टक-टक शुरू हो गई। इस बार तो बहुत ही तेज आवाज़ आ रही थी। नं० ४०२ ने अपना जूता उतार लिया था और उसके ज़रिये वह अपने शब्दों को जैसे ज़ोरदार बनाने लगा—"सम्राट चिरजीवी हो।"

"तो यह बात है," रुबाशोफ ने सोचा। अभी तो यहाँ क्रान्ति के सच्चे विरोधी मौजूद हैं। और हम तो सोचते थे कि वह इन दिनों नं० १ के भाषणों में ही उसकी भूलों के लिए बलि के बकरों की तरह महज़ ज़ाहिर होते हैं। लेकिन यहाँ तो हाड़-मांस का जीता-जागता पुतला मौजूद है, जो नं० १ की तरह ग़ुर्रा रहा है—"सम्राट चिरजीवी हो।"

दांत पीसते हुए रुबाशोफ ने टकटकाया, "आमीन।"

फौरन ही जवाब मिला, और भी ऊँचा—"सूअर।"

अब रुबाशोफ अपना दिल बहला रहा था। उसने अपना चश्मा उतारा और तेजी के लहजे को बदलने के लिए उसने उसी की नोक से टकटकाया—"मैं पूरी तरह मतलब नहीं समझ सका।"

नं० ४०२ जैसे बहुत गुस्से में आ गया। उसने ज़ोर-ज़ोर से खट-खटाया—"कुत्ता।" किन्तु पूरा-पूरा न कह गया और इसी बीच जैसे उसका गुस्सा जाता रहा और उसने टकटकाया—"तुम गिरफ्तार क्यों किये गए हो?"

"कितना भोलापन है।" नं० ४०२ के चेहरे ने नया रूप धारण कर लिया था, जैसे नौजवान अफसर का हो—खूबसूरत, लेकिन शरारत-भरा। शायद उसने भी चश्मा पहन रखा हो। रुबाशोफ ने चश्मे से टकटकाया—

"राजनीतिक मत-भेदों के कारण।" अब फिर रुकावट-सी हो गई। ज़ाहिर ही था कि नं० ४०२ ताने-भरा कोई जवाब तलाश कर रहा था और उसने खटखटाया—"बहादुर हो। भेड़िये अक्सर एक-दूसरे को काटते ही हैं।"

रुबाशोफ ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। वह काफी दिल बहला चुका था और वह फिर टहलने लगा। लेकिन ४०२ तो अभी गप-शप करना ही चाहता था। उसने टकटकाया—"रुबाशोफ........."

परिचय के नाते रुबाशोफ ने उत्तर दिया—"हां।" पहले तो नं० ४०२ ने संकोच किया, किन्तु तब काफी लम्बा फिकरा आया—"तुम्हें औरत के साथ सोये कितने दिन हो चुके हैं?"

रुबाशोफ ४०२ के इस प्रश्न से उसकी असलियत जान गया। उसे यह भी पता लग गया कि ४०२ चश्मा पहने है, क्योंकि चश्मे की डंडी से ही तो उसने टकटकाया था। कुछ सोचकर रुबाशोफ ने टकटकाया—'तीन हफ्ते हो गए हैं।"

उत्तर मिला—"मुझे उसका सारा हाल सुनाओ।"

रुबाशोफ को पहले तो यह बात कुछ ज्यादती-सी मालूम हुई और बातचीत का सिलसिला तोड़ देना चाहा। लेकिन सोचा, 'और न सही, नं० ४०० की कोठरी अथवा अन्य कोठरियों से मेल-जोल बनाने के लिए यह ४०२ नं० काम देगा और उसने अपने चश्मे से टकटकाया—"गोल-

गोल और सख्त छातियां, जैसे सोने के कटोरे उलटे रखे हों……"

उसे आशा थी कि यही लहजा ठीक है, क्योंकि नं० ४०२ ने भी प्रेरणा की—"ज़रा और विस्तार से कहो।" वह अपनी बलदार मूँछों को हड़बड़ाया-सा नोच रहा था। रुबाशोफ सोचने लगा—"कितना वाहियात है यह। लेकिन दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाना है, इसलिए इसे हाथ से निकलने नहीं देना चाहिए। और आखिर खाने के कमरे में बैठे अफसर किस बाबत गप-शप करते हैं? औरतों और घोड़ों की बाबत ही। रुबाशोफ ने बाँह पर चश्मा रगड़ा और टकटकाया—"उसकी जांघें जंगली घोड़ी-सी थीं।" वह रुक गया, जैसे थक गया हो। सारी सदिच्छाओं के रहते हुए भी वह और न कह सका। लेकिन नं० ४०२ को पूरी-पूरी तसल्ली थी।

"बहुत अच्छे," उसने उत्साह से टकटकाया। वह खिलखिलाकर हँस रहा था, किन्तु किसी ने सुना नहीं। उसने अपनी रानों पर हाथ मारा और मूँछों को मरोड़ा, लेकिन किसी ने देखा नहीं। रुबाशोफ की राह में गूंगी दीवार खड़ी थी।

"और आगे कहो," नं० ४०२ ने प्रेरणा की।

"बस इतना ही," रुबाशोफ ने टकटकाया और नं० ४०२ से माफी चाही। लेकिन नं० ४०२ को अच्छे-बुरे का ज्ञान न था। उसने अपने चश्मे से टकटकाया—"बराये मेहरबानी, और आगे कहो।" लेकिन रुबाशोफ इस चर्चा को यहीं खत्म कर देना चाहता था। और नं० ४०२ तो बार-बार प्रार्थना कर रहा था—"बराये मेहरबानी," "मेहरबानी करो……"

ऐसा जान पड़ता था कि नं० ४०२ अभी जवान ही है। सम्भवतः निर्वासन में ही बड़ा हुआ है। सम्भव है, किसी फौजी परिवार से उसका नाता हो और झूठे पासपोर्ट से अपने देश को भेज दिया गया हो। और वह अपने को इस बुरी तरह कोस रहा है। निस्सन्देह वह अपनी छोटी-छोटी मूँछों को नोच रहा था। उसने आँखों पर चश्मा फिर चढ़ा लिया था, और नाउम्मीद-सा सफेद दीवार पर आँखें गड़ाये था। जैसे उसकी आँखें कह रही थीं—कृपा कर और बताओ, कृपा करो।

········निराश भाव से गूंगी, सफेद दीवार पर उसकी आँखें गड़ी थीं। नमी के कारण जो धब्बे दीवार पर हो गए थे, उन्हें ललचाई आँखों से वह देख रहा था, और धीरे-धीरे शकल दीखने लगी—जिसकी गोल-गोल सख्त छातियाँ थी, जैसे सोने के उलटे कटोरे रखे हों और जिसकी रानें जंगली घोड़ी जैसी थी।

"कृपा कर मुझे और बताओ।" शायद वह खड्डी के पास घुटने टेके, हाथ जोड़े बैठा था। और अब रुबाशोफ को यह सारी स्थिति ऐसी लगी जैसे हाथ फैलाये हुए मरियम ईसा के शव का आलिंगन कर रही हो।····

: ६ :

आलिंगन·········· सोमवार बाद-दोपहर दक्षिण जर्मनी के एक कस्बे की चित्रशाला में। वहाँ रुबाशोफ और उस नौजवान के सिवा, जिसे रुबाशोफ मिलने आया था, कोई भी नहीं था। एक खाली कमरे के मध्य में मखमली सोफा पर उन दोनों में बातचीत हुई थी। उस कमरे की दीवारों पर फ्लैंडर चित्रकारों के बने चित्र टंगे थे, जिनमे औरतों के नंगे चित्रों का प्रदर्शन किया गया था। यह सन् १९३३ की बात है, आतंक के पहले-ही-पहले महीनों में, जब कि कुछ ही दिन पूर्व रुबाशोफ की गिरफ्तारी हुई थी। आन्दोलन का तो खात्मा हो ही चुका था और आन्दोलनकारी खिलाफ-कानून करार दे दिये गए थे और उन्हें पकड़कर मार डाला जाता था। इस वक्त यह पार्टी राजनीतिक संगठन न रहकर केवल एक हज़ार सशस्त्र खूंखारों की जमात-भर रह गई थी। जिस तरह मरने के बाद आदमी के बाल और नाखून बढ़ते रहते हैं, उसी तरह यह आन्दोलन मृत पार्टी से व्यक्तिगत अंग-प्रत्यंगों और छिद्रों में साँस ले रहा था। देश-भर में छोटी-मोटी टुकड़ियाँ मौजूद थीं, जिन्होंने इस भयानक स्थिति को जीवित बना रखा था और जो छिपे-छिपे मंत्रणा करती-फिरती थी। ये लोग तहखानों, जंगलों, रेलवे स्टेशनों, चित्रशालाओं और खेल-क्लबों में परस्पर मिलते थे। इनमें रहने-सोने का ठिकाना नहीं था; आज यहाँ, कल वहाँ। और यही हालत थी इनके नाम-धाम की;

यहाँ कुछ और वहाँ कुछ। एक दूसरे को महज़ जताये गए नाम से जानते-भर थे और कोई किसी से एक दूसरे का पता तक न पूछता था। हर कोई अपनी जान को तो दूसरे के हाथ में सौंप देता था, किन्तु कोई भी दूसरे पर रत्ती-भर यकीन नहीं करता था। रात के वक्त बस्तियों की तंग गलियों में ये चुपके से निकलते और दीवारों पर अपने पुराने नारे लिख जाते, जिनसे वे साबित करते थे कि अभी वे जिन्दा हैं। वे लोग इश्तिहार छापते थे, जिनमें अपने-आपको उचित ठहराने की कोशिश भी की जाती थी और दूसरों को जतलाया जाता था कि अभी वे जिन्दा हैं। पौ फटते ही वे लोग कारखानों की चिमनियों पर चढ़ जाते थे और वहाँ अपना झंडा फहरा देते थे—यह साबित करने के लिए कि वे अभी जिन्दा हैं। कुछ ही लोग ऐसे थे, जो इश्तिहारों को देखकर फौरन ही उन्हें फेंक देते थे, क्योंकि वे लोग उन मरे हुओं के संदेशों को सुनकर काँप जाते थे। दीवारों पर लिखे नारे मुर्गे की आवाज़ के साथ ही साफ कर दिये जाते थे और चिमनियों पर से झंडे उतार दिये जाते थे, किन्तु हमेशा ही वह फिर वहाँ दिखाई दे जाते। देश-भर में ऐसे लोगों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ थीं, जो अपने को कफ़न बांधे बातलाते थे और जिन्होंने अपनी जानें कुर्बान कर रखी थीं—यह साबित करने के लिए कि अभी उनमें जिन्दगी है।

आपस में मिलने-जुलने या लेन-देन अथवा आपस में बातचीत आदि का कोई भी इंतजाम इनके पास नहीं था। पार्टी की नस-नस को जैसे तोड़ डाला गया था और हर टुकड़ी अपने ही तक जिम्मेदार थी। लेकिन, धीरे-धीरे उन्होंने फिर से संगठन शुरू किया। बाहर देशों से व्यापारी और यात्री आने लगे। उनके पास झूठे पासपोर्ट और तेहरी तहों वाले ट्रंक होते थे। ये लोग हरकारों का काम करने लगे। अक्सर ये लोग पकड़े जाते। उन्हें पीड़ा दी जाती और उनका सिर उड़ा दिया जाता, लेकिन दूसरे उनकी जगह पर आ जाते। पार्टी तो मर चुकी थी। उसमें साँस लेने की भी ताकत नहीं थी, लेकिन उसके बाल और नाखून बढ़ते ही रहे। बाहर देशों में पड़े नेता इस पार्टी की निर्जीव देह में जैसे-तैसे बिजली की तारों का संचार करते और उसी

शक्ति के कारण उन अंगों में जैसे मुड़ने-तुड़ने की शक्ति आ जाती।

आलिंगन······ रुबाशोफ ४०२ नं० को भूल गया और लगा साढ़े छः कदम इधर जाने और साढ़े छः कदम उधर। और उसने अपने को फिर से चित्रशाला के मंखमली सोफा के पास पाया, जहाँ धूल और फर्श के रोग़न की गंध आ रही थी। वह स्टेशन से सीधा चलकर मिलने की जगह पर चंद मिनट पहले ही पहुँच गया था। उसे पूरा-पूरा यकीन था कि उसे किसी ने देखा नहीं। वह अपना सूटकेस स्टेशन पर सामान रखने के कमरे में छोड़ आया था। उसके सूटकेस में डच फर्मों के दंदानसाज़ी के नये-नये नमूने थे। वह मखमली सोफा पर बैठ गया। नाक पर लगे चश्मे की राह दीवारों पर टंगे मनो रक्त-मांस की लोथों के नज़ारों को देखने लगा, और इन्तज़ार करने लगा।

एक नौजवान जिसका नाम रिचर्ड था और जो उस वक्त उस कस्बे की पार्टी का नेता था, चंद मिनट में ही वहाँ पहुँचा। न तो रुबाशोफ रिचर्ड को जानता था और न रिचर्ड रुबाशोफ को। दोनों ही एक दूसरे से ना-वाकिफ थे। वह दो खाली बरामदों को पार कर चुका था; और आगे बढ़ा तो उसकी निगाह रुबाशोफ पर पड़ी। वह सोफे पर बैठा था। और उसके घुटनों पर एक किताब रखी थी। नौजवान ने किताब देखी और जैसे इधर-उधर देखता हुआ वह रुबाशोफ के पास बैठ गया। उसे जैसे शर्म लग रही थी और वह सोफे के किनारे पर, रुबाशोफ से दो फुट हटकर बैठ गया। टोपी को घुटनों पर रख लिया। वह ताले बनाता था और उसने काला सूट पहन रखा था।

"ठीक," उसने कहा, "देर हो जाने के लिए आप अवश्य ही मुझे माफ करेंगे।"

"बहुत अच्छे," रुबाशोफ बोला, "तो पहले तुम्हारे यहाँ के लोगों के नाम ही देख लूँ। है कोई ऐसी सूची?"

रिचर्ड ने सिर हिलाते हुए कहा, "मैं सूची तो अपने साथ नहीं

रखता। लेकिन सब सदस्यों के नाम पते और सब बातें मेरे दिमाग में ज़रूर हैं।"

"बहुत अच्छे," रुबाशोफ ने कहा, "लेकिन अगर कहीं तुम पकड़े जाओ तो?"

"और इसी बात के लिए तो मैंने सूची आन्नी को दे रखी है। आन्नी मेरी पत्नी है," रिचर्ड ने कहा। और इतना कह रिचर्ड रुक गया। उसने थूक निगला और गले का काग जैसे ऊपर-नीचे हिलने लगा। और तब पहली बार उसने रुबाशोफ का चेहरा पूरी-पूरी तरह से देखा। रुबाशोफ ने भी देखा, उसकी चमकती आँखें थीं, जिनकी पुतलियाँ भूरी-भूरी थीं और लाल-लाल नसों का जाल उन पर छाया हुआ था। उसकी ठोडी और गालों पर छोटे-छोटे बाल थे। "आन्नी कल रात गिरफ्तार हो चुकी है", उसने कहा और रुबाशोफ की ओर देखा। रुबाशोफ ने उसकी आँखों में झाँका और पढ़ा। निर्जीव-सी और बच्चों-सी आशा उनमें झलक रही थी। उसने सोचा, 'यह नौजवान सेंट्रल कमेटी का दूत बनकर आया है, और समझता है कि जैसे मुझे जादू करके कुछ कर दिखायगा! भला, यह मेरी क्या मदद कर सकेगा?'

"सच ही?" रुबाशोफ ने चश्मे को बाँह पर रगड़ते हुए कहा, "तो इसका मतलब यह हुआ कि पुलिस के पास सारी सूची पहुँच गई।"

"नहीं," रिचर्ड बोला, जिस समय वे आन्नी को गिरफ्तार करने आये थे, उस समय मेरे मकान में मेरी साली मौजूद थी। आन्नी ने वह सूची उसी को सौंप दी थी। वह उसी के पास सुरक्षित है। और मेरी साली एक पुलिस कान्स्टेबल के साथ ब्याही हुई है, लेकिन है वह हमारे ही साथ।"

"बहुत ठीक," रुबाशोफ ने कहा, "जिस समय तुम्हारी पत्नी गिरफ्तार हुई, उस समय तुम कहाँ थे?"

रिचर्ड बोला, "यह सारा मामला इस प्रकार है, सुनिये! पिछले तीन महीनों से मैं अपने मकान में नहीं सोया। मेरा एक दोस्त, सिनेमा में ऑपरेटर है। मैं उसके पास जा सकता था और सिनेमा ख़त्म होने पर वहीं

सो जाता था। मकान के पिछले राह से मै दाखिल होता, और सीधा सिनेमा के अन्दर मुफ्त मे पहुँचता ...।" वह कुछ रुका और उसने थूक निगली। फिर बोला, "आन्नी को मेरा दोस्त बिना पैसे टिकट देता, और जब रात हो जाती तो वह मशीन के कमरे की ओर देखती। वह मुझे तो देख नही पाती थी, लेकिन मै कभी-कभी पर्दे पर पड़ती हुई रोशनी मे उसका मुँह देख लेता था।......"

वह रुका। उसके ठीक सामने ईसा की सूली का चित्र टँगा था जिसमे कुंडलदार बालो वाले फरिश्ते गोलाकार होकर नगाड़े बजाते हुए आकाश-मार्ग की ओर उड़ रहे थे। और उसकी बाईं ओर एक जर्मन चित्रकार का रेखा-चित्र था। रुबाशोफ को उसका एक हिस्सा ही दीख रहा था। शेष भाग सोफे और रिचर्ड के कारण ओझल था। रुबाशोफ को दीख रहा था—मरियम के पतले-पतले हाथ, खाली कटोरे की तरह ऊपर को मुड़े हुए, और खाली-खाली आसमान, जो समानान्तर रेखाओं से छाया हुआ था। और कुछ भी नही दिखाई देता था, क्योकि बोलते हुए भी रिचर्ड का सिर एक ही जगह पर स्थिर रहता था।

"सच ही?" रुबाशोफ ने पूछा, "तुम्हारी पत्नी की क्या उम्र होगी?"

"सत्रह बरस।"

"सच ही? और तुम्हारी क्या उम्र है?"

"उन्नीस बरस।"

"कोई बच्चा?" रुबाशोफ ने पूछा और अपना सिर थोड़ा-सा आगे की ओर किया, किन्तु वह उस चित्र को तब भी अधिक न देख सका।

"पहला होने वाला है", रिचर्ड ने उत्तर दिया और स्थिर भाव से बैठ गया।

इसके बाद कुछ देर ठहरकर रुबाशोफ ने रिचर्ड को मैम्बरों की सूची सुनाने को कहा। तकरीबन ३० मैम्बर थे। उसने कुछेक सवाल किये और डच फर्मों के दन्दानसाजी के औजारों के लिए अपनी आर्डर बुक में बहुत से पते लिख लिये। उसने इससे पहले टेलीफोन डाइरेक्टरी में से भी शहर

के डैंटिस्टों और कई प्रतिष्ठित नागरिकों के नाम-पते जगह छोड़-छोड़कर लिख रखे थे। उन्हीं छूटी जगहों में ये नाम-पते उसने भरे। जब यह हो चुका तो रिचर्ड बोला, "कामरेड, अब मैं आपको अपने काम का भी छोटा-सा व्यौरा दे देना चाहता हूँ।"

"ठीक है," रुबाशोफ ने कहा, "मैं सुन रहा हूँ, कहिये।"

रिचर्ड ने अपनी रिपोर्ट सुनाई। वह रुबाशोफ से चन्द फुट हटकर सोफे पर थोड़ा-सा झुका बैठा था। उसके लाल-लाल लम्बे हाथ घुटनों पर थे। बोलते समय वह एक बार भी हिला-डुला नहीं, स्थिर बैठा रहा। उसने चिमनियों पर झँडे फहराने और दीवारों पर नारे लिखने की चर्चा की; और उसने इश्तिहारों का जिक्र किया, जिन्हें वे फैक्टरियों की टट्टियों में छोड़ आते थे, जैसे वह जगह किताबों की दुकान का काम देती हो। उसके सामने के चित्र में नगाड़े बजाते हुए फरिश्ते आकाश मार्ग की ओर उड़ रहे थे, और उसके सिर के पिछली ओर मरियम का चित्र था, जिसमें उसने अपने पतले-पतले हाथ फैला रखे थे, और सब ओर की दीवारें जैसे भीमकाय छातियों, रानों और चूतड़ों से उन्हें झाँक रही थीं।

सोने के उलटे प्यालों-सी कठोर छातियाँ रुबाशोफ के दिमाग़ में आईं। वह अपनी कोटरी की खिड़की से हटकर तीसरे काले टाइल पर खड़ा था। वह सुनने लगा—क्या अभी भी नं० ४०२ टकटका रहा है? उसे कुछ भी सुनाई न दिया। रुबाशोफ झाँकने के छेद के पास गया और ४०७ की ओर देखने लगा, जिसने रोटी के लिए हाथ फैलाये थे। उसने भूरा-सा लोहे का किवाड़ देखा जिसमें झाँकने का छोटा-सा छेद था। सदा की तरह बरामदे में बिजली जल रही थी। सब ओर जैसे सन्नाटा था, और यह यकीन नहीं होता था कि इन किवाड़ों के पीछे जीते-जागते कोई प्राणी भी होंगे।

जिस दौरान में रिचर्ड नाम का नौजवान अपनी रिपोर्ट सुना रहा था, रिचर्ड ने जिन ३० स्त्री-पुरुषों की टोली का जिक्र किया था, उनमें से केवल १७ ही बचे थे। गिरफ्तारी के वक्त एक कारखाने का मजदूर और एक उसकी बेटी, खिड़की से कूदकर मर गए थे। एक पार्टी को छोड़

भाग गया था और कस्बा छोड़कर न जाने कहाँ गायब हो गया था। दो पर पुलिस के भेदिया होने का शक था, लेकिन यह सही हो, यह बात न थी। तीन ने सैंट्रल कमेटी की नीति के विरोध में पार्टी छोड़ दी थी। इनमें से दो तो विरोधी दल में जा मिले और एक नरम दल में जा मिला। पाँच कल रात गिरफ्तार हुए हैं; जिनमें एक आन्नी है, और सुना है कि इन पाँच में से दो तो अब जिन्दा ही नहीं रहे। इस तरह १७ बाकी बचे हैं, जो इश्तिहार बाँटने और दीवारों पर नारे लिखने का काम कर रहे हैं।

रिचर्ड जैसे यह सारा व्यौरा एक ही मिनट में कह गया। ऐसा करने का उसका मतलब यह था कि रुबाशोफ यह समझे कि जो कुछ भी हो रहा है, वह सब रिचर्ड के ही कारण और उसी के निजी सम्बन्धों से हो रहा है। वह यह नहीं जानता था कि सैंट्रल कमेटी ने भी उस दल में अपना एक आदमी छोड़ रखा है, जो बहुत पहले ही रुबाशोफ को सब बातें बता चुका था। वह नहीं जानता था कि वह आदमी वही सिनेमा आपरेटर है, जो उसका मित्र है, और जिसके कैबिन में वह सोता था। और उसे यह भी पता नहीं था कि इस आदमी का उसकी पत्नी, आन्नी के साथ बहुत पुराना गहरा ताल्लुक है, जो कल ही रात गिरफ्तार हुई थी। रिचर्ड इन दोनों बातों से बेखबर था, लेकिन रुबाशोफ जानता था। यह आन्दोलन तो नष्ट हो चुका था, लेकिन उसके जासूसी और इंतजामिया विभाग अभी काम कर रहे थे। यही दो हिस्से थे, जो क्रियाशील थे; और उस वक्त रुबाशोफ इस जमात का मुखिया था। काला सूट पहने बेचारा नौजवान यह सब नहीं जानता था। उसे तो महज़ यह पता था कि आन्नी गिरफ्तार कर ली गई है और हमें इश्तिहार बाँटते रहना चाहिए, दीवारों पर नारे लिखते रहना चाहिए। और जो रुबाशोफ है, वह पार्टी की सैंट्रल कमेटी से आया हुआ महज एक साथी था, जिस पर पिता की तरह भरोसा किया जा सकता था। उसे यह सब भी याद था कि किसी को किसी भी हालत में कमजोरी या भावुकता जाहिर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जो भी कोई भावुक और कोमल दिल वाला होगा, वह उस काम के लायक नहीं समझा

जाता था, और उसे एकदम बाहर कर दिया जाता था—आन्दोलन से बाहर अकेले में, जहाँ उसके लिए अँधेरा-ही-अँधेरा होता था।

बरामदे के बाहर जैसे कदमों की आवाज़ उसी की ओर आ रही थी। रुबाशोफ किवाड़ के पास गया, चश्मा उतारा और उसने छेद में पुतली लगाई। दो अफसर चमड़े की रिवाल्वर की पेटियां पहने बरामदे में से एक नौजवान किसान को ले जा रहे थे। उनके पीछे-पीछे तालियों का गुच्छा लिये बूढ़ा वार्डर जा रहा था। किसान की एक आँख सूज रही थी और उसके ऊपर के ओंठ पर लहू सूख गया था। जब वह निकल रहा था, तो उसने अपनी कमीज़ की बाँह से नाक से बहते खून को पोंछा था। चेहरा उसका रूखा-सा था और भावहीन। और आगे, बरामदे के नीचे, जो रुबाशोफ की नज़र से बाहर था, एक कोठरी का ताला खुला और बंद हो गया। तब अफसर और वार्डर वापिस चले गए। उनके साथ और कोई नहीं था।

रुबाशोफ अपनी कोठरी में इधर-उधर टहलने लगा। उसने अपने को देखा रिचर्ड से आगे की ओर मखमली सोफे पर बैठे हुए। रिचर्ड के रिपोर्ट सुना देने के बाद जैसे सन्नाटा छा गया था, उसे फिर उसी का अनुभव हुआ। रिचर्ड हिला-डुला नहीं, अपने घुटनों पर हाथ रखे बैठा था और इंतज़ार में था। वह ऐसे बैठा था, जैसे किसी ने अपना अपराध मंज़ूर कर लिया हो, और इंतज़ार कर रहा हो मंज़ूर करा लेने वाले से सज़ा सुनने की। काफ़ी देर तक रुबाशोफ कुछ नहीं बोला। और तब उसने कहा, "अच्छा, तो तुम सब कह चुके?"

लड़के ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया। उसके कंठ का भाग ऊपर-नीचे जा-आ रहा था।

"तुम्हारी रिपोर्ट में बहुत-सी बातें साफ नहीं हैं," रुबाशोफ ने कहा, "तुमने बार-बार इश्तिहारों का ज़िक्र किया है, उन्हें तुमने खुद ही तैयार किया था। उनकी बाबत हमें पूरी जानकारी है, और उनके मज़मून पर कड़ी

नुक्ताचीनी भी हुई थी। उनमें बहुत से ऐसे अंश हैं, जिन्हें पार्टी हरगिज मंजूर नहीं कर सकती।"

रिचर्ड ने डरते हुए उसकी ओर देखा। उसका चेहरा लाल हो गया था। रुबाशोफ ने देखा, उसके गालों की चमड़ी जैसे गरम हो गई है और उसकी आँखों की लाल-लाल नसों का जाल और भी गहरा हो गया है।

"और इसके अलावा बात यह है," रुबाशोफ ने बोलना जारी रखते हुए कहा, "हमने तुम्हे बार-बार अपना छपा सामान बाँटने के लिए भेजा। और उसमे एक खासा छोटे साइज का पार्टी का अपना अखबार था। तुम्हें यह सारा सामान मिल गया था?"

रिचर्ड ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया। उसके चेहरे पर अब भी गरमी थी।

"लेकिन तुमने हमारा भेजा सामान नहीं बाँटा, यहाँ तक कि तुमने अपनी रिपोर्ट में भी उसका जिक्र नही किया। इसके बदले तुमने अपना तैयार किया सामान बाँटा, और पार्टी से न तो उसकी मंजूरी ही ली और न ही उस पर पार्टी का हक माना।"

"ले······लेकिन हम लाचार थे," रिचर्ड बड़ी कठिनाई से इन शब्दों को कह सका। रुबाशोफ ने बड़े ग़ौर से अपने चश्मे की राह उस पर नजर डाली। वह पहले ही जान गया था कि लड़का अब हकलाने लगा है। आश्चर्य है, उसने सोचा, एक ही पखवाड़े में यह तीसरा मामला है। तिसपर हमारी पार्टी मे जासूसों की इतनी भरमार है। या तो यह उन हालात की वजह से हो रहा है कि जिनमें हम काम कर रहे हैं और या इस आन्दोलन में से ही खुद-बखुद बुराइयां पैदा होती जा रही हैं।········

रिचर्ड जैसे और भी दबा-सा जा रहा था। वह बोला, "आपको अ···· अवश्य समझना चाहिए, कामरेड। आपके प्रचार का ल····लहजा ग़लत था, क्योंकि···········"

"धीरे से बोलो," रुबाशोफ ने एकाएक सख्ती के लहजे में कहा, "और अपना सिर किवाड़ की ओर न घुमाओ।"

और एक लंबा जवान शाही सवारों की काली वर्दी पहने एक लड़की को लेकर कमरे में दाखिल हुआ—गोरी-गोरी लड़की, जो चंचल थी और जिसके बाल सुनहरे-से थे। जवान ने लड़की की कमर में बाँह डाल रखी थी और लड़की की एक बाँह जवान के कंधे पर थी। उन्होंने रुबाशोफ और उसके साथी की ओर देखा तक नहीं और जा रुके नगाड़े बजाते हुए फरिश्तों के सामने—सोफा की ओर पीठ किये।

"तुम बोलते जाओ," रुबाशोफ ने धीमी-सी आवाज़ में कहा और अनजाने में, उसने जेब में पड़े सिगरेट-केस को निकाल लिया और तब उसे याद आया, चित्रशाला में तो सिगरेट पीना मना है। उसने सिगरेट-केस को जेब में डाल दिया। लड़का बैठा था, जैसे बिजली के धक्के से डर गया हो, और उन दो पर उसकी नज़र टिकी हुई थी। धीमे से रुबाशोफ ने कहा, "तुम बोलते जाओ। क्या तुम बच्चों की तरह हकलाते हो? जवाब दो और उधर मत देखो।"

"क···कभी क···कभी," रिचर्ड ने बहुत कोशिश करके ये शब्द कहे।

उधर वह जोड़ा तस्वीरों की पंक्तियों को देखता हुआ बढ़ रहा था। दोनों एक बहुत ही मोटी औरत की नंगी तस्वीर के सामने जाकर रुक गए। चित्र था, एक स्त्री रेशमी कौच पर बैठी है, और अपने चाहने वालों की ओर ताक रही है। उस जवान ने लड़की के कान में, सम्भवतः, भद्दे-से मज़ाक की बात कही, क्योंकि लड़की कुछ तो कहकहा उठी, और तिस पर उसने सोफे पर बैठी दोनों मूर्तियों को भागती-सी निगाहों से झाँक भी लिया। कुछ और आये वे गये। उन्होंने देखा—तीतरों का जोड़ा मरा हुआ—निर्जीव, किन्तु उनके पास पड़े थे फल।

"क···क्या हमें चलना नहीं चाहिए?" रिचर्ड ने पूछा।

"नहीं," रुबाशोफ ने कहा। उसे डर था कि चूँकि लड़का आपे में नहीं, सो मुमकिन है कुछ कर ही बैठे। "वे लोग जल्दी ही चले जायंगे। रोशनी

की तरफ हमारी पीठ है ही, और वे हमें साफ-साफ नहीं देख सकते। धीरे-धीरे और गहरी-गहरी साँस लो—बार-बार। इससे आदमी को सम्हलनें में मदद मिलती है।"

लड़की कहकहे लगाती ही रही और वह दोनों धीरे-धीरे बाहर जाने के किवाड़ की ओर गये। बाहर निकलते हुए दोनों ने रुबाशोफ और रिचर्ड की ओर सिर घुमाया। और ज्यों ही बाहर जाने को थे कि लड़की ने मरियम के आलिंगन के रेखाचित्र की ओर इशारा किया। दोनों उसे देखने के लिए खड़े हो गए। रिचर्ड ने धीमी आवाज़ में फ़र्श की ओर देखते हुए कहा, "जब मैं ह···हकलाता हूँ, तो मुझे बहुत ही बु····बुरा लगता है।"

"हर किसी को अपने पर काबू पाना चाहिए," रुबाशोफ ने थोड़े में कह दिया। वह नहीं चाहता था कि अब बातचीत के दौरान में किसी तरह का अपनापन ज़ाहिर हो।

"एक ही मिनट में यह क····करना बे···बेहतर होगा," रिचर्ड ने कहा और उसके गले का भाग काँपता हुआ-सा ऊपर-नीचे जा-आ रहा था। "आन्नी सदा ही इस पर मेरी हँसी करती है, आप सच जा-जानिये···।"

जब तक लड़का-लड़की कमरे में रहे रुबाशोफ बातचीत का सिलसिला चला नहीं सका। पोशाक पहने आदमी की पीठ रिचर्ड की पीठ से आ मिली और इस तरह दोनों का साँझा भय जैसे उसे अपनी लज्जाशीलता पर विजयी होने में सहायक हो गया; और रिचर्ड रुबाशोफ के पास तक खिसक गया।

"इसके सा···साथ ही वह मुझे चाहती भी बहुत थी," रिचर्ड ने फुसफुसाते हुए कहा, "मैं यह नहीं जानता था कि कैसे उसके साथ पेश आना चाहिए। वह बच्चा पैदा करना नहीं चाहती थी, ले···लेकिन वह इससे पीछा न छुड़ा सकी। श····शायद वे लोग उसे कुछ नहीं कहेंगे, क्योंकि वह ग····गर्भवती है। आपको सहज ही सारा पता हो गया है। क्या आप समझते हैं कि वे लोग गर्भवती औरतों को भी पी····पीटते है?"

ठुड्डी को पकड़ते हुए रुबाशोफ ने पोशाक पहने नौजवान की तरफ

इशारा किया। और उसी कारण उस नौजवान ने भी फौरन ही रिचर्ड की तरफ निगाहें दौड़ाईं। पल-भर को दोनों की नज़रें मिलीं। उस नौजवान ने धीमी-सी आवाज़ में लड़की को कुछ कहा और उसने भी उस ओर कनखियों से देखा। रुबाशोफ को फिर सिगरेट की हाजत हुई, किन्तु इस बार उसने जेब में ही उसे रहने दिया। लड़की ने नौजवान से कुछ कहा और उसे खींचती हुई बाहर ले गई। चित्रशाला से दोनों गये तो, किन्तु आदमी कुछ संकोच के साथ गया। बाहर से लड़की के कहकहाने की आवाज़ आ रही थी, और लग रहा था जैसे उनके कदम वापिस आ रहे हैं। रिचर्ड ने भी सिर घुमाया और उसकी आँखें दूर तक उनके पीछे-पीछे चली गईं।

रुबाशोफ ने घड़ी देखी और बोला, "हमें अब किसी फैसले पर पहुँच जाना चाहिए। यदि मैं तुम्हें सही-सही समझ सका हूँ, तो तुम्हारा यही कहना है कि तुमने जान-बूझकर हमारी छपी चीजें नहीं बाँटीं, क्योंकि तुम उसमें छपी हुई बातों के साथ सहमत नहीं थे। लेकिन यह भी तो है कि हम भी तुम्हारे इश्तिहारों के मज़मून से सहमत नहीं थे। सो कामरेड, इस कारण इसके नतीजे तो कुछ भुगतने ही होंगे।"

रिचर्ड ने अपनी लाल-लाल आँखें उसकी ओर कीं। और तब सिर नीचा करके बोला, "आप खुद ही जानते हैं कि जो सामान आपने भेजा था, वह किस कद्र वाहियात था।" एकाएक उसका हकलाना बन्द हो गया था।

"उसकी बाबत मैं कुछ नहीं जानता," रुबाशोफ ने उत्तर दिया।

रिचर्ड जैसे फिर थमी-सी आवाज़ में बोला, "आप लोगों ने लिख रखा था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। उन लोगों ने पार्टी की धज्जियाँ उड़ा दी थीं, और आप लोगों ने लिखे थे चन्द फ़िकरे, जिनमें प्रकट किया था कि हम विजयी होकर रहेंगे। ये तो वैसी ही झूठी बातें थीं, जैसी महायुद्ध के वक्त सरकारी विज्ञप्तियों में होती हैं। जिसे भी हमने उसे दिखाया, उसी ने उस पर थूक दिया। आपको भी तो यह सब ख़ुद ही मालूम है।"

रुबाशोफ ने लड़के की ओर देखा और रुखाई से उत्तर दिया, "यह दूसरी बार है जब कि तुमने उस राय को, जो मैं रखता नहीं, मेरे मत्थे

चिपकाया है। मेरा तुमसे कहना है कि तुम ऐसा करना बन्द करो।" रिचर्ड जैसे अविश्वास-भरी आँखों से देखता रहा, और रुबाशोफ कह रहा था, "पार्टी इस वक्त अग्नि-परीक्षा में से निकल रही है। अन्य क्रान्तिकारी पार्टियाँ तो इससे भी अधिक कठिनाइयों में पड़ गई हैं। हमारी न झुकने वाली धारणा ही हमें सफल बना सकती है। जो भी कोई इस वक्त कमजोरी दिखायगा, वह हमारा साथी नहीं रह सकता। जो भी कोई इस वक्त घबराहट फैलायगा, वह हमारे दुश्मनों के हाथों में खेलने वाला कहलायगा। उसके उद्देश्य चाहे कितने ही भले हों, ये सब बेईमानी है। उसका वैसा दृष्टिकोण रखना ही हमारे आन्दोलन के लिए खतरनाक है, और उसके साथ वैसा ही सलूक भी किया जायगा।"

रिचर्ड ने रुबाशोफ की ओर मुँह करते हुए पूछा, "तो मैं इस आन्दोलन के लिए खतरा हूँ ? मैं दुश्मनों के हाथों में खेलता हूँ ? सम्भवतः ऐसा करने का मुझे फल मिल गया है। और आन्नी को भी........"

रुबाशोफ उसी सूखे लहजे में बोलता रहा, "तुमने अपने इश्तिहारों में, जिनका तुम अपने को लेखक मानते हो, लगातार ऐसे फ़िकरे लिखे, कि हमारी हार हो गई है, कि पार्टी उत्पातों के कारण भ्रष्ट हो गई है, कि हमें नये सिरे से चलना चाहिए और हमें मूलतः अपनी नीति में परिवर्तन करना चाहिए। यह हार की मनोवृत्ति है। इससे नैतिक पतन होगा और पार्टी की लड़ने की ताकत पंगु हो जायगी।"

"मैं तो केवल यह सीखा हूँ," रिचर्ड ने कहा, "कि लोगों से सच बात ही कही जाय, क्योंकि लोग पहले ही उसे जानते हैं। उन्हें धोखे में रखना बहुत बुरा है।"

रुबाशोफ और आगे बोला, "पार्टी की पिछली कांग्रेस ने अपने प्रस्ताव में बताया था कि पार्टी ने हार नहीं खाई, बल्कि सैनिक दृष्टिकोण से ही केवल पीछे हटा गया है। और ऐसा कोई कारण नजर नही आता कि हम अपनी नीति में परिवर्तन करें।"

"लेकिन यह तो बेहूदगी है," रिचर्ड ने कहा।

"अगर तुम यही ढंग बनाये रहोगे," रुबाशोफ बोला, "तो मुझे यहीं सारी बातचीत खत्म कर देनी होगी।"

रिचर्ड कुछ देर के लिए चुप हो गया। कमरे में अन्धेरा हो रहा था। दीवारों पर फरिश्तों और औरतों की तस्वीरें जैसे बुझी-बुझी जा रही थीं।

रिचर्ड ने कहा, "माफ कीजिएगा, मेरा मतलब था कि पार्टी के नेताओं ने भूल की है। आप जिसे सैनिक दृष्टिकोण कहते हैं, उसकी असलियत तो यह है कि हमारे आधे लोग मारे जा चुके हैं और जो आधे बचे हैं, वे दूसरी ओर जा रहे हैं। इसके अलावा आप लोग जो प्रस्ताव पास करते हैं, उनकी यहाँ कोई कीमत नहीं।........"

कुछ देर ठहरकर वह फिर बोला, "मेरा अनुमान है, कल रात आन्नी ने भी सैनिक दृष्टिकोण ही अपनाया हो........। कृपाकर आप सही-सही समझिए। यहाँ हम सब लोग तो जंगल में रह रहे हैं।........"

रुबाशोफ ने सोचा, रिचर्ड को जी-भर कह लेने दिया जाय। और वह कहता रहा। फिर वह चुप हो गया। अन्धेरा बढ़ रहा था। रुबाशोफ ने चश्मा उतारा और बाँह पर रगड़ा। फिर कहने लगा, "पार्टी कभी ग़लती नहीं करती। तुम और मैं ग़लती कर सकते हैं, पार्टी नहीं। कामरेड, तुम्हारे और मेरे, और यहाँ तक कि तुम और मुझ जैसे हजारों से बढ़कर पार्टी है। इतिहास में क्रान्तिकारी विचारों की प्रतिमूर्ति पार्टी ही है। इतिहास की दृष्टि में न्यूनताएँ और संकोच कोई महत्व नहीं रखते। इतिहास सदा ही, चेतन और बिना ग़लती किये अपने ध्येय की ओर बहता चला जाता है। अपने प्रवाह के प्रत्येक मोड़ पर वह कीचड़ छोड़ता है, और प्रवाह बढ़ते ही डूबे हुओं के शव और दलदल भी वह बहा ले जाता है। इतिहास को अपना मार्ग मालूम है। वह कोई भूल नहीं करता। जिसे इतिहास में विश्वास नहीं, वह पार्टी में रहने लायक नहीं।"

रिचर्ड अब भी चुपचाप बैठा रुबाशोफ की ओर ताक रहा था। रुबाशोफ ने फिर कहना शुरू किया, "तुमने हमारे छपे साहित्य को नहीं बाँटा। तुमने पार्टी की आवाज को दबाया है। तुमने वह इश्तिहार बाँटे हैं जिनका

प्रत्येक शब्द नुकसान देने वाला और झूठा था। तुमने लिखा था कि हमें आपसी मतभेद छोड़कर मिलकर काम करना चाहिए। यह ग़लत है। पार्टी किसी के साथ नहीं मिल सकती। समझौता करना मानो क्रान्ति की कब्र खोदना है। तुमने यह भी लिखा था कि जब किसी मकान में आग लगे तो उसे बुझाने के लिए सबको पानी लेकर दौड़ना चाहिए; यदि हम आपस में लड़ते रहे तो हमारा सर्वथा नाश हो जायगा। पार्टी के नज़रिये से यह भी ग़लत है, क्योंकि हम आग बुझाने के लिए पानी लाते हैं, लेकिन दूसरे तेल लेकर पहुँचते हैं। इसलिए हमें पहले तेल और पानी में से सही उपाय को चुन लेना होगा। तभी आग बुझाने की योजना बनानी चाहिए। उत्ते-जना और निराशा में नीतियाँ बनाना असंभव है। पार्टी का मार्ग धार की तरह पैना होता है, जैसे पहाड़ में सँकड़ा-सा राह बना होता है। तनिक-सी दायें या बायें की फिसलन अथवा ग़लत कदम सर्वनाश के लिए काफ़ी होता है। जिस किसी ने भी होश खोये वह गया।"

अंधेरा बढ़ गया था। रुबाशोफ अब रेखाचित्र के हाथ नहीं देख सक रहा था। एक घंटी दो बार बजी और वह समझ गया, १५ मिनट के अन्दर-अन्दर चित्रशाला बंद हो जायगी। रुबाशोफ ने भी अपनी घड़ी देखी। उसे अभी अपना आख़िरी फैसला रिचर्ड को सुनाना है, जो घुटनों पर कोहनियाँ रखे चुपचाप बैठा था।

"तो मेरे पास इस सबका तो कोई उत्तर नहीं," रिचर्ड ने रूखे और थके स्वर में कहा, "जो आप कहते हैं वह बेशक सच है। और जो आपने पहाड़ी रास्ते की कही है, वह भी लाजवाब है। लेकिन जो कुछ भी मैं जानता हूँ, वह यही है कि हम हार गए हैं। जो बचे हैं वह हमें छोड़ते जा रहे हैं, क्योंकि शायद हमारे पहाड़ी रास्ते पर हद से ज्यादा ठंडक है। दूसरों के पास जैसे सुखद संगीत और चमकीले झंडे हैं और वे लोग उनकी गरमी में चारों ओर बैठकर सुख मानते हैं। शायद यही कारण है कि वे जीत गए हैं और हम अपनी गरदनें तुड़वा रहे हैं।"

रुबाशोफ चुपचाप सुनता रहा। अपनी निश्चित सज़ा की घोषणा से

पहले वह नौजवान को सब कुछ कह लेने देना चाहता था। जो कुछ भी रिचर्ड कह रहा था, उससे उसकी सजा में तो कोई अन्तर आना ही नहीं था। अब रिचर्ड सोफे पर और भी परे सरक गया। उसका मुँह हाथों से ढँपा हुआ था। और रुबाशोफ तनकर सीधा बैठा था। उसे ऊपर की दाढ़ में कुछ दर्द-सी महसूस हुई और इस चुप्पी को तोड़ते हुए रिचर्ड ने कहा, "अब मेरा क्या होगा ?"

रुबाशोफ का दाढ़-दर्द बढ़ रहा था। उसने उस ओर ध्यान न देकर गंभीरता से कहा, "सैंट्रल कमेटी के फैसले के मुताबिक मैं तुम्हें सूचित करता हूँ कि तुम अब से पार्टी के सदस्य नहीं रहे।"

यह सुनकर भी रिचर्ड उत्तेजित नहीं हुआ। रुबाशोफ कुछ रुककर खड़ा हो गया। रिचर्ड बैठा रहा। उसने सिर उठाया और ऊपर देखते हुए बोला, "क्या यही सुनाने-भर को आपने यहाँ आने की तकलीफ की थी ?"

"खासकर इसीलिए," रुबाशोफ ने कहा। वह जाना चाहता था, किन्तु रिचर्ड के सामने खड़ा रहा। "अब मेरा क्या होगा ?" रिचर्ड ने फिर पूछा। रुबाशोफ ने कोई जवाब नहीं दिया और कुछ देर बाद रिचर्ड ने पूछा, "शायद, अब तो मैं अपने मित्र के कैबिन में भी नहीं रह सकूंगा ?"

"न रहना ही बहतर होगा," रुबाशोफ ने कहा। इतना कहकर फौरन ही उसे अपने से ग्लानि-सी हुई और वह यह यकीन नहीं कर सका कि रिचर्ड ने इस वाक्य के अर्थ समझे भी हैं या नहीं। उसने रिचर्ड की ओर देखते हुए कहा, "हम दोनों के लिए बेहतर होगा कि हम इस मकान से अलग-अलग निकलें। तो नमस्कार।"

रिचर्ड तन तो गया, किन्तु बैठा रहा। रुबाशोफ चल पड़ा, किन्तु उसके मस्तिष्क में रिचर्ड की याद जैसे सदा के लिए मूर्ति बनकर रह गई। उस कमरे से निकल वह दूसरे कमरे में से होकर बाहर पहुँचने को ही था कि उसे मरियम के आलिंगन की याद हो आई। उसने रवाना होने से पहले उस चित्र को भली प्रकार नहीं देखा था, और अब तो उसे जुड़े हाथों,

और कोहनी तक पतली बाँहों के हिस्से-भर की याद रह पायगी। और इतने ही हिस्से को वह उस सारे वक्त में देख सका था।

चित्रशाला में प्रवेश करने की सीढ़ियों से वह नीचे की ओर जाते हुए रुक गया। उसके दाँत की दर्द बढ़ गई थी। बाहर काफी जाड़ा हो गया था। उसने गलूबन्द को लपेट लिया। वह सोच रहा था, उसे यहाँ टैक्सी मिल भी सकेगी या नहीं।

और जब वह आखिरी सीढ़ी पर था, तो रिचर्ड भी उस तक पहुँच गया। रुबाशोफ रुका नहीं, मुड़ा नहीं, बढ़ता ही जा रहा था। रिचर्ड उसकी अपेक्षा लम्बा था, कदावर था, लेकिन जैसे वह उससे छोटा बन गया था। वह सिमटा-सा, छोटे-छोटे कदमों से रुबाशोफ के पीछे-पीछे चल रहा था। कुछ कदम जाकर उसने पूछा, "जब आपने मुझसे कहा था कि 'न रहना ही बेहतर होगा,' तो क्या यह केवल चेतावनी ही थी?"

रुबाशोफ ने आती हुई टैक्सी को देखा। वह खड़ा हो गया। रिचर्ड भी पास ही खड़ा था। "मुझे तुमसे और कुछ भी नहीं कहना," रुबाशोफ ने कहा और टैक्सी को रोका।

"कामरेड' ल····लेकिन आप मुझे इस तरह द्····दोषी नहीं ठहरा सकते। कामरेड··············" रिचर्ड ने कहा। उनसे बीस कदम परे टैक्सी धीमी हो गई थी। रिचर्ड रुबाशोफ के सामने झुका खड़ा था। उसने रुबा-शोफ के ओवरकोट की बाँह पकड़ रखी थी। रुबाशोफ को लगा जैसे उसकी साँस फूल गई है और माथे पर जैसे जल-कण आ गए हैं।

"मैं पार्टी का दुश्मन नहीं," रिचर्ड ने कहा, "तुम मुझे भेड़ियों की नांद में नहीं फेंक स्····सकोगे, क्...कामरेड ················"

टैक्सी रुकी। निश्चय ही ड्राइवर ने अन्तिम शब्द सुन लिया होगा। ड्राइवर ठिगने कद का बूढ़ा आदमी था। उसने चमड़े की जाकट पहन रखी थी।

"चलो स्टेशन," रुबाशोफ ने कहा और टैक्सी में बैठ गया। ड्राइवर ने किवाड़ बन्द किया। रिचर्ड पटरी के किनारे खड़ा था—हाथ में टोप लिये,

उसका काग तेज़ी से ऊपर-नीचे जा-आ रहा था। टैक्सी चली, और चली गई। रुबाशोफ ने मुड़कर देखना अनुचित समझा, तिस पर भी वह जानता था कि रिचर्ड उसी पटरी पर खड़ा है, और उसकी नज़र टैक्सी की पिछली लाल-लाल बत्ती पर ही होगी।

चन्द मिनट टैक्सी भीड़ में से होकर निकलती रही। ड्राइवर ने मुड़-मुड़कर कई बार देखा। जैसे वह जान लेना चाहता था कि उसका मुसाफिर अभी टैक्सी में ही बैठा है या नहीं। रुबाशोफ भी सोचता था, सच ही हम स्टेशन की ओर जा भी रहे हैं या नहीं। और अन्त मे जगमग-जगमग करती बड़ी-सी इमारत के पास टैक्सी रुकी। यह स्टेशन था।

रुबाशोफ टैक्सी से निकला। टैक्सियों पर मीटर तो थे नहीं, सो उसने ड्राइवर से पूछा, "क्या दे दूँ ?" "कुछ नहीं," ड्राइवर ने कहा, "आप-जैसे लोगों के लिए तो हमेशा मुफ्त ही है।" और वह अपने काम में लग गया। वह ब्रेक को ठीक कर रहा था और उसका एक हाथ बाहर को था। रुबाशोफ ने उसका हाथ देखा और वह देखने के साथ ही उसने एक चौकीदार को भी देखा। उसने जल्दी में ड्राइवर के हाथ में रुपया थमाया और स्टेशन की ओर चल दिया—बिना बोले।

रेल के लिए उसे घंटा-भर राह देखनी पड़ी। उसने रद्दी-सी काफी पी। उसका दाँत फूल गया था। रेल मे उसे खुमारी आ गई। उसने सपना देखा : उसे इंजन के आगे-आगे दौड़ना पड़ रहा था। रिचर्ड और टैक्सी ड्राइवर इंजन में खड़े थे, और वे उसे पकड़ लेना चाहते थे, क्योंकि उसने टैक्सी का किराया देने में उनके साथ धोखा किया था। इंजन के पहिये घर-घराते पास-ही-पास आते जा रहे थे, और उसे लगा, जैसे उसके पाँव जम गए हों। उसकी नींद खुल गई। उसके माथे पर पसीना-सा था। उसे जैसे कै आने को थी। डिब्बे में बैठे और लोगों ने उसे देखा—कुछ-कुछ हैरानी के साथ। बाहर अँधेरा था। रेल एक शत्रु-देश में से होकर निकल रही थी; रिचर्ड का मामला खत्म किया जा चुका था; और उसकी दाढ़ में दर्द था। एक हफ्ते बाद वह गिरफ्तार हो गया।

रुबाशोफ खिड़की पर सिर झुकाये खड़ा था। उसने सेहन में झाँका। उसकी टाँगें थक गई थीं, और दिमाग जैसे ठस्स हो गया था। उसने घड़ी देखी, सवा बारह बजे थे। लगभग चार घंटे की बात है, तब उसे पहली बार आलिंगन का ध्यान आया था और तभी से लेकर वह अपनी कोठरी में टहलने लगा था। लगातर चार घंटे टहलता रहा। वह परेशान नही हुआ। जेल में दिवा-स्वप्नों की बाबत वह भली प्रकार जानता था। उसे एक नौजवान कामरेड का किस्सा याद था। वह नाई था। उसने बताया था कि तनहाई कैद के दूसरे साल में तो एक बार ऐसा हुआ कि वह सात घंटे तक अपनी कोठरी में टहलता रहा। लगातार उसकी आँखें खुली थीं और पाँच कदम लम्बी कोठरी में वह लगभग १७ मील का सफर कर गया। उसके पाँव में छाले तक हो गए थे, किन्तु उसे उनका पता भी न लगा।

खैर, इस बार पहले ही दिन रुबाशोफ इस बीमारी का शिकार हो गया। और इससे पूर्व तो कई-कई हफ्तों के बाद वह इसका शिकार हो पाता था। इसके अलावा उसे एक बात और हैरान कर रही थी। जेल में जिन्हें दिवा-स्वप्नों की बीमारी होती है, उन्हें अक्सर भविष्य के सपने आया करते हैं, किन्तु उसने भूतकाल का सपना देखा था। उसका दिमाग़ अभी क्या-क्या दिखायगा, इसी में जैसे वह खो गया।

आसमान अभी भी जैसे भारी था, और बर्फ पड़ने ही वाली थी। सेहन में दो आदमी टहल रहे थे। उन दोनों में से एक बार-बार रुबाशोफ की खिड़की की ओर देख रहा था, जिसके मानी थे कि उसकी गिरफ्तारी की खबर फैल ही चुकी थी। वह दुबला-पतला आदमी था, उसकी चमड़ी का रंग पीला पड़ गया था और उसका ऊपर का ओंठ फटा हुआ था। उसने पतली-सी बरसाती कंधों पर डाल रखी थी। दूसरा व्यक्ति कुछ बूढ़ा था, और उसने कम्बल लपेट रखा था। वे टहल रहे थे, किन्तु उन्होंने आपस में कोई बात नहीं की। दस मिनट के बाद उन्हें फिर कोठरी में वापिस ले जाया गया। जिस कोठरी में अफसर उनकी इंतज़ार कर रहा था,

उसका किवाड़ रुबाशोफ की खिड़की के ठीक सामने था। किवाड़ बंद होने से पहले फटे ओंठ वाले आदमी ने रुबाशोफ की ओर फिर एक बार देखा। निश्चय ही वह रुबाशोफ को नहीं देख सका था, क्योंकि सेहन से खिड़की के भीतर अंधेरा दीखना स्वाभाविक था। तिस पर भी उसकी आँखें खिड़की में से जैसे कुछ खोज रही थीं। रुबाशोफ सोचने लगा—मैं तुम्हें देख रहा हूँ और तुम्हें जानता नहीं, तुम हो कि मुझे देख नहीं सकते और फिर भी मुझे जानते हो। वह बिस्तर पर बैठ गया और उसने नं० ४०२ को टकटकाया—"ये कौन हैं?"

रुबाशोफ ने सोचा था कि नं० ४०२ नाराज़ हो गया है और उत्तर नहीं देगा। किन्तु उसके दिल में कोई शिकायत नहीं थी; उसने फौरन जवाब दिया, "राजनीतिक।"

रुबाशोफ को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसने ओंठ-फटे आदमी को तो साधारण अपराधी समझा था।

"तुम्हारी ही तरह के?" उसने पूछा।

"नहीं, तुम जैसे," नं० ४०२ ने टकटकाया। और उससे अगला फिकरा कुछ ऊँचा था, उसने चश्मे से शायद टकटकाया था।

"ओंठ-फटा मेरा पड़ोसी, नं० ४०० है। कल उसे पीड़ा पहुँचाई गई थी।"

एक मिनट तक रुबाशोफ चुप रहा। उसने चश्मे को बाँह पर रगड़ा, हालांकि वह उससे टकटका ही रहा था। पहले तो उसने 'क्यों' कहना चाहा, किन्तु उसकी जगह टकटकाया—"कैसे?" नं० ४०२ ने टकटकाया—"भाप स्नान।"

पिछली कैद के वक्त रुबाशोफ को बराबर पीटा गया था, किन्तु यंत्रणा के इस ढंग की बाबत तो उसने केवल सुन ही रखा था। वह जानता था कि किसी भी शारीरिक पीड़ा को सहन किया जा सकता है, बशर्ते कि किसी को भी पहले से उस पीड़ा का ज्ञान करा दिया जाय। मान लो, किसी का आपरेशन होना हो, जैसे कि दाढ़ निकाली जानी हो। अनजाने में तो यह

असह्य हो उठेगा, किन्तु जाने-बूझे यदि कोई दाढ़ निकलवाने जायगा, तो असह्य पीड़ा होने पर भी वह उसे सह तो जायगा ही। पूर्व ज्ञान के मानी हैं, अपनी विरोधात्मक शक्तियों को आने वाले कष्ट के लिए संजो लेना, इकट्ठा कर लेना, ताकि उसका मुकाबला किया जा सके।

"क्यों ?" रुबाशोफ ने पूछा।

"राजनीतिक मत-भेदों के कारण," नं० ४०२ ने व्यंग्य में टकटकाया।

रुबाशोफ ने फिर चश्मा पहन लिया और उसे सिगरेट की हाजत हुई। उसके पास केवल दो सिगरेट रह गए थे। उसने टकटकाया—"और सुनाओ, तुम्हारा क्या हाल-चाल है ?"

"शुक्रिया, बहुत अच्छा," नं० ४०२ ने टकटकाया और बातचीत बंद कर दी।

रुबाशोफ को बुरा-सा लगा। उसने सिगरेट सुलगाई। उसके पास अब एक ही रह गई थी। उसने फिर से कोठरी में टहलना शुरू कर दिया और एकाएक, उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जैसे वह खुश-खुश हो गया। उसे महसूस हुआ, उसका पुराना झक्कीपन जाता रहा है उसका दिमाग साफ हो गया है। उसके नसें सही-सही तन गई हैं। उसने चिलमची में हाथ-मुँह, बाँह और छाती को ठंडे पानी से धोया ; रूमाल से पोंछ लिया। उसने सीटी बजाते हुए एक गीत की दो-एक कड़ियां गाई, और मुस्कराया। वह बुरी तरह बेसुरा हो जाता था, और कुछ ही दिन पहले किसी ने उससे कहा था 'यदि नं० १ को गाना आता, तो वह तुम-से बेसुरे को किसी-न-किसी बहाने गोली मरवा देता।'

उसने बिना सोचे-समझे उत्तर दिया था, "सो तो वैसे ही हो जायगा।"

उसने अपनी आख़िरी सिगरेट जलाई और वह सही-सही दिमाग़ से सोचने लगा कि जब उसे जिरह के लिए बुलाया जायगा, तो वह कैसे और क्या-क्या कहेगा। ऐसा सोच-सोच, जैसे उसमें आत्म-विश्वास भर गया, और उसे याद आई अपनी विद्यार्थी अवस्था, जब कि एक बार उसे बहुत मुश्किल इम्तिहान का सामना करना पड़ा था। और तब वह आत्म-विश्वास के सहारे

लाने तक बैठा रहा। उसे सिगरेट चाहिए थे, वरना, वह अपने को सम्हाल भी नहीं सकेगा। दस मिनट तक वह बैठा रहा; तब उसने नं० ४०२ को टकटकाया—

"तुम्हारे पास तम्बाकू है क्या?"

उसे उत्तर के लिए कुछ देर इंतजार करनी पड़ी। तब साफ-साफ जवाब मिला—"तुम्हारे लिए नहीं।"

रुबाशोफ धीरे से उठकर खिड़की तक चला गया। उसने देखा, छोटी-छोटी मूँछों वाले एक अफसर को। वह चश्मा पहने था। वह दाँत पीसता हुआ, बेवकूफों की तरह उस दीवार को देख रहा था जो उन्हें जुदा करती थी। उसकी आँखें चमक-सी रही थीं, और उसने लाल-लाल पलकों को ऊपर उठाया। क्या आ-जा रहा था उसके दिमाग में? शायद, वह यह सोच रहा था, 'मैंने तुम्हारे साथ ठीक ही सलूक किया है।' शायद, वह यह भी सोच रहा था, 'नीच कुत्ते, तूने मेरे कितने आदमियों को मार डाला था?' रुबाशोफ ने श्वेत दीवार को देखा, उसने महसूस किया कि वह उसकी ओर मुँह किये दीवार के पीछे खड़ा था। उसने सोचा कि उसने उसके दिल की धड़कन को सुन लिया है। हाँ, तो मैंने तुम्हारे कितने आदमियों को गोली मार दी, मैं अन्दाज कर रहा हूँ। सच ही रुबाशोफ को यह याद नहीं। वह तो बहुत-बहुत दिनों की बात है, महायुद्ध के दिनों में, ऐसा ख्याल है कि सत्तर और सौ के बीच की संख्या रही होगी। तो फिर क्या हुआ? वह ठीक ही था, रिचर्ड के मामले से उसका रूप बिलकुल जुदा था। और वह आज भी फिर से वैसा कर जायगा, चाहे भले ही, उसे पहले से ही यह भी पता हो कि अन्त में उस क्रान्ति का सारा श्रेय नं० १ को ही मिलेगा, तब भी।

रुबाशोफ जैसे दीवार के पार की ओर देख गया हो कि जहाँ दूसरा खड़ा था, और जिसने शायद इस बीच सिगरेट भी जला ली थी और जो दीवार पर उसका धुँआ छोड़ रहा था। उसकी बाबत उसने सोचा, 'तुम्हारे साथ तो मेरा कोई हिसाब-किताब है नहीं। मेरी ओर तुम्हारा कोई किराया भी नहीं चाहिए। तुम्हारे और हमारे बीच न तो लेन-देन का साँझापन है

और न ही हमारी भाषा साँझी है।""तो खैर, तुम अब क्या चाहते हो?'

अब नं० ४०२ ने फिर से टकटकाना शुरू किया था। रुबाशोफ दीवार के पास गया। "तुम्हारे लिए तम्बाकू भेज रहा हूँ," उसने सुना। तब बड़ी मद्धम-सी खट-खट सुनाई दी। उसने सुना, नं० ४०२ वार्डर का ध्यान खींचने के लिए किवाड़ भड़भड़ा रहा है।

रुबाशोफ ने जैसे साँस रोक ली हो। चन्द मिनट बाद बूढ़े वार्डर के पहुँचने की ध्वनि उसने सुनी। वार्डर ने नं० ४०२ का ताला न खोला, किन्तु छेद में से ही पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए?"

रुबाशोफ उत्तर तो न सुन सका, हालांकि वह नं० ४०२ के स्वर को सुन लेना चाहता था। तब बूढ़ा वार्डर ऊँची आवाज़ में बोला, ताकि रुबाशोफ भी सुन सके, "इसकी इजाज़त नहीं है। यह जेल के नियमों के विरुद्ध है।"

इस पर भी रुबाशोफ उस उत्तर को न सुन सका। और तब वार्डर ने कहा, "तुमने मेरी बेइज्ज़ती की है, मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा।" टाइलों पर खट-खट करते उसके पाँवों की ध्वनि जैसे बरामदे में ही लोप हो गई।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। तब नं० ४०२ ने टकटकाया—"तुम्हारी तो बुरी चौकसी होती है।"

रुबाशोफ चुप रह गया। वह टहलने लगा। उसे बुरी तरह तम्बाकू की तलब लग रही थी। निराहार रहकर उसके गले की नसें अकड़ने-सी लगी थीं। उसे नं० ४०२ का खयाल आया। उसने अपने आपसे कहा, 'अब भी फिर मैं वही करूँगा। यह ज़रूरी है और सही है, किन्तु क्या मेरी और तुम्हारा कुछ किराया चाहिए? क्या सही और आवश्यक कामों के लिए भी किसी को फल भुगतना ही पड़ता है?'

उसके गले का रूखापन बढ़ने लगा। उसे लगा कि उसके माथे पर बोझ पड़ रहा है; वह अधीर-सा टहलने लगा।

रुबाशोफ खिड़की से परे तीसरे टाइल पर खड़ा था।

यह क्या था? क्या यह धार्मिक पागलपन था? वह सजग हो गया

ही कामयाब हुआ था। उसने भाप-स्नान विषय की सारी जानकारी को याद कर लेना चाहा। उसने सारी स्थिति का अन्दाजा करके उसका विश्लेषण किया और ठहराया कि मुख्य बात तो यही है कि किसी को असावधानी में भी ऐसे भेद नहीं खोल देने चाहिएँ। और अब, उसे यकीन हो गया था कि वे लोग ऐसा करने में कामयाब नहीं हो सकेंगे। उसे भरोसा था कि जो वह कहना नहीं चाहेगा, वह उससे बका नहीं सकेंगे। उसकी तो यही इच्छा थी कि जो पीड़ा वे लोग देना चाहते हैं, उसे वे शुरू कर दें।

उसे अपने सपने का ध्यान हो आया। रिचर्ड और टैक्सी-ड्राइवर उसका पीछा कर रहे हैं, क्योंकि उन्होंने महसूस किया है कि रुबाशोफ ने उन्हें धोखा दिया है।

"मैं अपना केराया दूँगा," उसने अटपटी मुस्कराहट के साथ सोचा।

उसका सिगरेट खत्म होने को था। वह उसकी अँगुलियों की कोरों को जला दे रहा था, उसने उसे गिरा दिया। वह उसे मसल देना चाह रहा था। लेकिन उसने उसे फिर उठा लिया और जलते हुए हिस्से को हाथ की पीठ पर छू लेने लगा। आध मिनट तक वह उसकी गरमी हाथ की पीठ पर एक साथ सहन कर गया। इस बीच उसका हाथ जरा भी हिला-डुला नहीं। और उसे अन्दर-ही-अन्दर बहुत खुशी महसूस हुई। तब वह उठा और फिर टहलने लगा।

किवाड़ के छेद में से जो आँख उसे बहुत देर से झाँक रही थी, वह भी लोप हो गई।

दोपहर के खाने का जलूस बरामदे में से होकर निकल गया, रुबाशोफ की कोठरी फिर छोड़ दी गई। वह चाहता था कि वह छेद में से झाँकने तक की बेइज्जती से बचा रहे और इसीलिए उसने यह भी देखने की तकलीफ नहीं की कि खाने में क्या-क्या चीजें हैं। लेकिन इतना तो जरूर था कि भोजन की सुखकर सुगन्धि से कोठरी महक-सी उठी।

वह सिगरेट के लिए बहुत ही तलमला रहा था। जैसे भी हो, उसे सिगरेट मिलना चाहिए। सिगरेट से वह एकाग्रचित्त हो सकता

था और इसी कारण भोजन से भी ज्यादा सिगरेट का महत्व उसके लिए था। खाना बँटने के आध घंटा बाद तक उसने राह देखी। तब उसने किवाड़ भड़भड़ाने शुरू किये। लगभग पन्द्रह मिनट के बाद वार्डर ने भनभन करते हुए ताला खोला। "तुम्हें क्या चाहिए?" उसने रूखे स्वर में पूछा।

"सरकारी दुकान से मेरे लिए सिगरेट ला दो।" रुबाशोफ ने कहा।

"क्या तुम्हारे पास जेल का वाउचर है?"

"जेल में पहुँचते ही मुझ से मेरे रुपये ले लिये गए थे।"

"तब तो, तुम्हें उन्हें वाउचरों में बदलने तक प्रतीक्षा करनी होगी।"

"तुम्हारा आदर्श महकमा इस काम को कब तक कर पायेगा?" रुबाशोफ ने व्यंग्य से पूछा।

"तुम शिकायती पत्र लिख सकते हो।" बूढ़े वार्डर ने कहा।

"मेरे पास न तो कागज़ है और न ही पैंसिल।"

"लिखने का सामान लेने के लिए भी तुम्हारे पास वाउचर होना चाहिए।"

रुबाशोफ को लगा कि उसका मिजाज तेज होने जा रहा है। उसकी छाती धक-धक करने लगी और गले में जैसे खिंचावट पैदा होने लगी। लेकिन उसने अपने को वश में रखा। बूढ़े वार्डर ने देखा, रुबाशोफ की आँखों की पुतलियाँ सुर्ख हो गई हैं। उसे याद आ गई फौजी पोशाक में रुबाशोफ के रंगीन चित्रों की, जो बीते दिनों में हर कोई सब जगह देखता था। वह नफरत-भरे लहजे से मुस्कराया और एक कदम पीछे को हट गया।

"साला गोबर कहीं का!" रुबाशोफ ने धीरे से कहा और पीठ फिराकर पुनः खिड़की के पास चला गया।

"मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा, तुमने मुझे गाली दी है," बूढ़े वार्डर ने कहा। और किवाड़ बंद हो गया।

रुबाशोफ ने चश्मे को बाँह पर रगड़ा और अपने को सही हालत में

हम लोगों के लिए तो सच्चाई लाये, और पार्टी ने हमारे मुँह में झूठ की गूँज पैदा की। हम लोगों के लिए आजादी लाये, और पार्टी हमारे हाथों मे कोड़े-जैसी बन गई है। हम लोगों के लिए जिंदगी-जैसी चीज लाये, यानी हमने उनमें जीवन को पहचानने की शक्ति दी, और हमारी यह हालत है कि पेड़ तक भी जहाँ-कहीं हमारी आवाज सुन लेते हैं तो वहाँ सूखे पत्तो की खड़खड़ाहट होने लगती है। हम लोगों के लिए भविष्य का सुखद सपना लेकर आये, किन्तु हमारी जिह्वा हकलाती और जैसे भौंकती है।.......

उसे कँपकँपी आई। उसके दिल में जैसे एक तस्वीर उतरी—एक बहुत बड़ा फोटो, जो लकड़ी के फ्रेम में जड़ा था, और वह पार्टी की पहली कांग्रेस में आये डैलीगेटों का था। वे सब एक लकड़ी की लम्बी मेज पर बैठे थे, कुछ ने उस पर कोहनियाँ टिका रखी थीं और कुछ घुटनों पर हाथ रखे बैठे थे—दाढ़ियों वाले और सच्ची लगन वाले। उनकी नजरें कैमरे के लैंस की ओर थीं। सब पवित्र भावना से आये थे। केवल एक बूढ़ा व्यक्ति, जो सभापति था, वह धूर्त जान पड़ता था; और उसकी लम्बी और कठोर आँखें कुछ अजीब-सी सूरत में नजर आ रही थीं। रुबाशोफ उसके दायें दूसरे नम्बर पर बैठा था और नाक पर चश्मा पहने था। नं० १ चार वर्गफुट की भारी मेज के निचले भाग में कहीं बैठा था। यह सारा दृश्य प्रान्तीय कौंसिल के अधिवेशन-सा लग रहा था और ये लोग मानव इतिहास में सबसे बड़ी क्रान्ति लाने की तैयारी कर रहे थे। उस समय यह एक ऐसे थोड़े से नये ढंग के आदमियों की जमात थी, जो लड़ाई के दार्शनिक माने जाते थे। वे लोग यूरोप की जेलों के साथ इतने परिचित थे, जितने कि व्यापारी यात्री होटलों के साथ होते हैं। वह सत्ता को नष्ट कर देने के उद्देश्य से सत्ता प्राप्त करने के सपने देखते थे। वह लोगों पर शासन करने के सपने देखते थे, ताकि लोग शासित होने की आदत से विमुख हो जायें। उनमें सब विचारों ने क्रियात्मक रूप धारण किया और उनके सपने भी पूरे हुए। किन्तु आज वे कहाँ हैं? दुनिया की जिन्होंने शक्ल ही बदल डाली थी, उनके दिमागों को गोलियों से दागा गया। किसी की छाती में गोली मारी गई और किसी की

पीठ पर। केवल दो या तीन ही उनमे से बाकी रह गए हैं जो थके-हारे-से दुनिया मे छितरे से पड़े हैं—एक मैं खुद; और दूसरा नं० १।

रुबाशोफ जैसे ठंडा पड़ गया और सिगरेट के लिए वह बहुत ही व्याकुल हो उठा। उसने अपने को पुनः पुरानी बेल्जियम की बंदरगाह मे देखा। उसके साथ लिटल लुई था। उसे बंदरगाह की-सी गंध आई, जिसमें समुद्री पानी और पैट्रोल की महक थी। उसने देखी, तंग गलियाँ और बाजार, जिन पर जालीदार छज्जे बने हुए थे। और बंदरगाह की वेश्याएँ उन छज्जों पर दिन में सुखाने के लिए कपड़े डालती थीं। रिचर्ड के मामले से दो साल बाद की यह बात है। वे लोग उसके विरुद्ध कुछ भी साबित नही कर सके थे। जब उन्होंने उसे पीटा था, तो वह चुप रहा था। वह तब भी चुप रहा था, जबकि उन्होंने उसका ऊपर का दाँत तोड़ दिया था, उसके कानों को जख्मी कर दिया था और उसके चश्मे के काँच तोड़ दिये थे। वह चुप ही रहा था, और हर बात के लिए इनकार ही करता रहा था और निर्जीव-सा होकर अजीब-सी हालत मे लेटा रहा था। वह अपनी कोठरी में टहलने लगा था और वह उस सजा दी जाने वाली अन्धेरी कोठरी के चबूतरे पर कराह रहा था। वह डरा दिया गया था, किन्तु वह अपनी सफाई के लिए काम करता रहा;और जब उसे ठंडे पानी ने जैसे जगा दिया था, तो वह सिगरेट टटोलने लगा, और पड़ा रहा। उन दिनों में यंत्रणा पहुँचाने वालों की घृणा के प्रति उसे कोई आश्चर्य भी नही होता था और न ही उसे इस बात की हैरानी थी कि वे उसका इतना तिरस्कार क्यों करते हैं। तानाशाही की सारी कानूनी मशीनरी ने अपने दाँत पीसे, किन्तु वे उसके विरुद्ध कुछ भी साबित न कर सके। रिहाई के बाद उसे हवाई जहाज से उसके देश, क्रान्ति के जन्म-स्थान ले जाया गया। वहाँ उसका शानदार स्वागत हुआ और खुशी में बड़ा भारी जलसा किया गया और फौजी परेडें भी हुईं। यहाँ तक कि नं० १ उसके साथ बार-बार जनता के सामने आया।

कई बरसों से वह अपने जन्म-स्थान में नहीं गया था। और अब तो उसने वहाँ बहुत परिवर्तन देखा था। फोटो में जो दाढ़ियों वाले बैठे थे,

और उसने जान लिया कि कई मिनटों तक वह अपने-आपसे बड़बड़ाता रहा था। और जब वह अब सावधान था, तब भी उसके ओंठ, उसकी इच्छा के बिना ही हिले और बोले, 'मैं अदा करूँगा।'

जब से रुबाशोफ गिरफ्तार हुआ था, पहली ही बार उसे डर लगा। उसे सिगरेट की इच्छा हुई। किन्तु सिगरेट उसके पास नहीं थी।

तब उसे दीवार टकटकाने की कोमल-सी ध्वनि फिर सुन पड़ी। नं० ४०२ ने उसे संदेश दिया, "ओंठ-फटे ने तुम्हें नमस्कार भेजा है।"

उसकी आँखों की पुतलियों में पीली-सी सूरत उस आदमी की आ गई। इस संदेश को पाकर वह कुछ अनमना-सा हुआ। उसने टकटकाया— "उसका नाम क्या है?"

नं० ४०२ ने जवाब दिया—"वह नहीं बतायगा। किन्तु उसने तुम्हें अभिवादन कहा है।"

: १२ :

दोपहर बाद तो रुबाशोफ की हालत और भी बिगड़ी। रह-रहकर उसे कँपकँपी आने लगी। उसके दाँत में फिर दर्द होने लगा। उसकी ऊपर की दाईं दाढ़ दर्द कर रही थी। गिरफ्तारी के समय से लेकर अब तक उसे खाने को कुछ नहीं मिला था। तब भी उसे भूख महसूस नहीं हो रही थी। उसने अपनी सजग चेतनाओं को इकट्ठा करने की कोशिश की, किन्तु ठंडी जूड़ियों ने, जो उसे बार-बार आ रही थीं; और गले की दर्द और खुश्की ने उसे ऐसा न करने दिया। उसके विचार केवल दो ही बातों पर जमे जा रहे थे—सिगरेट की भारी तलब और सजा।

स्मृतियों ने जैसे उसे छा लिया हो। भन-भन करती हुई उसके कानों पर छा रही थीं। कई-कई सूरतें और उनकी आवाजें आ-आकर लोप होने लगीं। जहाँ-जहाँ भी उसने उन्हें पकड़ना चाहा, उन्होंने उसे डंक मारा। उसका सारा भूतकाल टीसों से भरा था और जहाँ-कहीं भी उसे वह छूकर जाता, तो वह जलन पैदा करता। उसका भूतकाल था आन्दोलन, यानी

पार्टी; वर्तमान और भविष्य भी पार्टी के थे। पार्टी के भाग्य के साथ उनका अटूट सम्बन्ध था, किन्तु उसका भूतकाल तो पार्टी ही था। और अब एका-एक उसी भूतकाल के विषय मे प्रश्न उठ खड़ा हुआ था। पार्टी का गरम किन्तु सिसकियाँ लेता हुआ शरीर उसे जख्मो से भरा नजर आता था—और वह घाव जैसे सड़ गए हो और उनमें से पीप बह रही हो। इतिहास मे कब और कहाँ ऐसे दोष-युक्त सन्त पैदा हुए हैं। सद्कार्यों को कब बुरी तरह पेश किया गया है? यदि पार्टी मे इतिहास की वह इच्छा सन्निहित है, तब तो स्वतः इतिहास ही दोष-युक्त है।

रुबाशोफ ने कोठरी की दीवार पर के सीलन के धब्बों की ओर नजर फिराई। उसने खड्डी पर रखे कम्बल को फाड़ा और अपने कंधों पर लपेट लिया। वह छोटे-छोटे कदमो से, किन्तु तेजी के साथ, इधर-उधर टहलने लगा। वह तेजी से किवाड़ तक पहुँचता और मुड़ जाता; और मुड़कर खिड़की तक जाता और लौटता, किन्तु उसकी कमर तोड़ देने के लिए ज्वड़ियाँ तो अब भी आ ही रही थी। उसके कानों मे अब भी भन-भन हो रही थी—धीमी-धीमी आवाजों के साथ, किन्तु वह जान न सक रहा था कि ये आवाजे बरामदे से आ रही हैं या किसी ने उस पर जादू कर दिया है, या उसकी बुद्धि ही नष्ट हो गई है। और तब, अपने-आपसे उसने कहा, 'आँख का गड्ढा ही तो इसकी जड़ है और यह आवाजें टूटी दाढ़ की जड़ से निकल रही हैं। कल मैं इसकी बाबत डाक्टर को कहूँगा, किन्तु अभी काफी काम मुझे करने को पड़ा है; पार्टी की बुराई का कारण अवश्य ही खोजना चाहिए। हमारे सिद्धान्त तो सब ठीक थे, किन्तु उनके नतीजे गलत निकले। यह सदी जैसे रोगो से भरी हुई है। हमने बीमारी को तो पहचान लिया और उसके कारणों को भी खुर्दबीन की तरह सख्ती से झाँका; किन्तु ज्यों ही हमने उसे ठीक करने वाला नश्तर चुभाया, तो एक नया ही जख्म पैदा हो गया। हमारी धारणा दृढ़ थी और पवित्र थी, लोगों को हमें प्यार करना चाहिए था, किन्तु वे तो हमसे घृणा करते हैं। हमें लोगों ने इतना घृणित और तिरस्कृत क्यों समझा?

लुई ने रुबाशोफ का परिचय कराया—"उच्चतम कामरेड।" बस केवल इतना ही। लुई ही ऐसा व्यक्ति था जो उसकी बाबत सही-सही जानकारी रखता था। मेज पर के अन्य साथियों ने देखा कि रुबाशोफ बातचीत करने के मूड में नहीं अथवा करना ही नहीं चाहता, तो उन्होंने उससे कोई बहुत से सवाल भी नहीं किये। केवल ऊपर-ऊपर की दो-चार बातें कीं और बस। जिस उच्चतम स्थान का वह था, वहाँ के राजनीतिक वातावरण अथवा आम स्थिति की बाबत कोई चर्चा ही न हुई। मतलब यह कि जो भी पूछा गया, वह ऐसा था, जैसे बच्चे कभी बिजली की बाबत पूछ लेते हैं, तो कभी अंगूरों की बाबत। वहाँ एक और मजदूर खड़ा था। लुई ने उसे पीने के लिए बुलाया। वह रुबाशोफ से हाथ मिलाते हुए बोला—"तुम तो बूढ़े रुबाशोफ जैसे दीखते हो।" उत्तर में रुबाशोफ ने कहा, "ऐसा मुझे कई बार बताया गया है।" उस मजदूर ने गिलास खाली करते हुए कहा, "बूढ़ा रुबाशोफ तुम ही-सा मिलता-जुलता एक आदमी था।" रुबाशोफ को रिहा हुए एक महीना भी नहीं हुआ था, और छः ही हफ्ते पहले तो उसे पता लगा था कि वह जीवित रह जायगा। शराबखाने का मोटा मालिक बाजा बजा रहा था। रुबाशोफ ने सिगरेट जलाई और सबके लिए शराब को कहा। सबने उसके एवं उस उच्चतम स्थान के लोगों की सद्कामना करते हुए शराब पी। और पाल अपने कानों से अपने टोप को इधर-उधर डुलाता रहा।

उसके बाद रुबाशोफ और लुई एक भोजनालय में कुछ देर साथ-साथ रहे। भोजनालय का मालिक तो बत्तियाँ बुझाकर और कुरसियों को मेजों पर रखकर सो गया। और लुई रुबाशोफ को अपने जीवन की कहानी सुनाने लगा। रुबाशोफ ने उसे कहा तो नहीं था, और एकाएक उसने सोचा, यदि कल सभी कामरेड अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाने बैठ जायंगे, तो क्या होगा। वह कुछ अनमना-सा हुआ और सच तो यह था कि वह चलना चाहता था, किन्तु उसे लगा कि वह बहुत थक गया है। थका था भी वह, क्योंकि ताकत से अधिक वह पी भी गया था, इसलिए वह रुका और लुई की कहानी सुनने लगा।

कहानी सुनते समय रुबाशोफ को पता चला कि लुई उस देश का रहने वाला नही, फिर भी वही के लोगो-सी उसकी बोलचाल है और वहा के हर किसी को वह जानता भी है। असल मे वह दक्षिण जर्मनी मे पैदा हुआ था, और उसने बढ़ई का काम सीख रखा था। उसे सितार भी आती थी और वह अक्सर क्रातिकारी युवक क्लबो मे रविवार के दिन डारविन की थ्यूरी पर लैक्चर भी दिया करता था। तानाशाही के ताकत मे आने से कुछ महीने पहले की हलचलो के दिनो मे पार्टी को एक बार शस्त्रो की ज़रूरत आ पड़ी। इसी नगर मे तब एक ऐसी साहसपूर्ण चालाकी की गई कि सब दंग रह गए। एक रविवार को बाद दोपहर शहर के एक पुलिस थाने से ५० राइफले, २० रिवाल्वर और दो छोटी मशीनगने सामान की लारी मे भरकर निकाल ली गई। लारी वालो ने एक आज्ञापत्र भी दिखाया था, जिस पर सरकारी मोहर लगी थी और उनके साथ प्रकट रूप मे दो बावर्दी पुलिस वाले भी थे। फिर तलाशी के समय एक दूसरे शहर मे पार्टी के सदस्य के यहाँ से यह सारा सामान मिला था। यह घटना पूरी तरह तो स्पष्ट नही हो सकी, किन्तु इतना अवश्य था कि घटना से अगले ही दिन लुई नगर से गायब हो गया। पार्टी ने उसे पासपोर्ट और परिचयपत्र देने का वादा किया था, किन्तु सब प्रबन्ध गड़बड़ा गए। जिस व्यक्ति ने रुपया और पासपोर्ट लेकर पहुँचना था, वह नियत समय और स्थान पर पहुँचा ही नही।

"प्रायः हमारे साथ ऐसा ही होता था," लुई ने दार्शनिक की तरह कहा; किन्तु रुबाशोफ चुप रहा।

तिस पर भी लुई भाग निकला और सीमा पार चला गया। चूंकि उसकी गिरफ्तारी के वारंट थे और थानो मे हर जगह उसके फोटो लगे थे, इसलिए उसे कई महीने इधर-उधर मारा-मारा फिरना पड़ा। और अन्त में जैसे-तैसे फ्रास की सीमा मे वह दाखल हो गया। उसके पास पासपोर्ट नही था, सो गिरफ्तार कर लिया गया। और कुछ दिनो बाद यह कहकर छोड़ा गया कि किसी दूसरे देश में चले जाओ। लुई ने व्यंग्य करते हुए कहा,

उनमें से आधे अब नहीं रहे थे। सम्भवतः उनके नामों का उल्लेख भी न होता, किन्तु उनकी याद केवल कोसने से ही हो जाती है। उन बूढ़ों में से केवल उसी एक को नहीं कोसा जाता, जिसकी लम्बी और कठोर आँखें थीं, और जो प्राचीनतम काल का नेता था, कि जिसकी मृत्यु समयान्तर हो गई थी। उसकी पूजा पिता परमात्मा की तरह होती थी और नं० १ को उसका पुत्र माना जाता था। किन्तु सभी जगह लोग कानाफूसी करते थे कि नं० १ ने अपने को बूढ़े आदमी का वारिस बनाने के लिए उसकी वसीयत में धोखा किया है। फोटो के जो बूढ़े बच गए थे, अब उन्हें कोई पहचान भी नहीं सकता। अब वे दाढ़ी मूँछ सफा हैं, थके हुए और समाप्त होने जा रहे हैं। उनका मिजाज झक्की हो गया है। समय-समय पर नं० १ उनमें से किसी एक को अपना शिकार बना लेता है। तब वे सब अपनी छातियाँ पीटते हैं और अपने गुनाहों के लिए जार-जार रोते हैं। लगभग १५ दिन के बाद, जब वह अभी लकड़ियों के सहारे ही चलता था, रुबाशोफ ने विदेश में एक नये मिशन पर जाना चाहा। तब धुँए के बादलों में से झाँकते हुए नं० १ ने कहा था, तुम तो बहुत जल्दी करने लगे हो। बीस साल तक पार्टी की नेतागिरी करने के बावजूद भी उनका पारस्परिक व्यवहार एक निश्चित सीमा में बंधा था। नं० १ के सिर पर उस बूढ़े आदमी का चित्र टंगा था। थोड़ी-सी बातचीत हुई, केवल कुछ ही मिनट, किन्तु चलते वक्त नं० १ ने कुछ अजीब से दबाव के साथ हाथ मिलाया। रुबाशोफ इस हाथ मिलाने के ढंग पर और सिगरेट के धुँए में से नं० १ की परिचित लौह दृष्टि पर, जिसका उसने अभी-अभी ही अनुभव किया था, विचार करता रहा। रुबाशोफ अपनी टेकनियों पर लंगड़ाता हुआ कमरे से बाहर आ गया। नं० १ किवाड़ तक भी उसके साथ न आ सका। अगले ही दिन वह बैल्जियम रवाना हो गया।

रास्ते में, जहाज पर वह कुछ-कुछ ठीक हो गया। उसने इस बीच अपने भावी कार्यक्रम पर भी विचार किया। रुबाशोफ की अगवानी के लिए लिटल लुई ही पहुँचा। सदा की तरह उसके मुँह में जहाजी पाइप था।

लुई बन्दर के मजदूरों का नेता था, और बन्दर मज़दूर संघ की पार्टी का एक हिस्सा ही था। रुबाशोफ को वह आदमी बहुत पसन्द आया। लुई ने रुबाशोफ को बन्दरगाह दिलचस्पी के साथ दिखाई, जैसे उसी ने उसे बनाया हो। लुई को हर कोई जानता था; बंदर के मजदूर, जहाजी और वेश्याओं तक, जहाँ कहीं भी वह गया, उसे शराब के प्याले पेश किये गए और लोगों ने उसका अभिवादन किया। लुई अपना पाइप कान तक उठा-उठाकर अभिवादन का उत्तर देता। और आगे बढ़े, तो पुलिसमैन तक ने मुस्कराते हुए आँख का इशारा किया, विदेशी जहाजों के जहाजी साथी भी उससे हँस-हँस मिलते और कोई-कोई तो प्यार से उसकी पीठ पर धप्पा भी लगा जाता। रुबाशोफ ने सब कुछ देखा, और उसे थोड़ा आश्चर्य-सा हुआ। किन्तु उसने सोचा, नहीं, लुई ईर्ष्या करने योग्य नहीं। उसे लगा, इस शहर का बंदर मजदूर संघ पार्टी का ऐसा संगठित हिस्सा है कि जैसा दुनिया में और नहीं हो सकता।

शाम को रुबाशोफ, लिटल लुई और दो-चार और बन्दरगाह के एक शराबखाने में बैठे थे। उनमें एक पाल नाम का व्यक्ति था, जो इस विभाग का संगठन-मन्त्री था। वह पहले कुश्ती किया करता था। सिर गंजा था और मुँह पर सीतला के दाग़ थे और बाहर को निकले लम्बे-लम्बे कान। कोट के नीचे नीली स्वेटर और सिर पर काला टोपा पहने था। उसे अपने कान हिलाने का अभ्यास था और उनसे वह टोप को उठाकर गिरा तक लेता था। उसके साथ ही बिल नाम का एक और व्यक्ति था, जिसने जहाजी जिन्दगी पर एक उपन्यास लिखा था, जो बरस-भर के लिए तो बहुत ही प्रसिद्ध हुआ, किन्तु बाद में एकाएक खत्म हो गया। इन दिनों वह पार्टी के अखबारों में लेख लिखा करता था। बाकी के बन्दर के मजदूर, जो मज़बूत थे और गहरे पियक्कड़ थे, कई नये-नये आ रहे थे और बैठकर या खड़े-खड़े ही पीकर चलते जा रहे थे। शराबखाने का मोटा-सा मालिक खाली होते ही रह-रहकर उनकी मेज पर बैठ जाता। उसे मुँह का बाजा बजाना आता था। उसने तो खूब पी रखी थी।

जो भी हो, लुई की कहानी का अन्त आशा के विपरीत, सुखद ही निकला। जिन दिनों वह एक कैद का दंड भोग रहा था, उन्ही दिनों पुराना पहलवान पॉल भी उसी जेल मे आ गया। उसने एक पुलिसमैन को हड़ताल-दंगे के दिनों में गरदन-तोड़ दॉव मे जकड़ लिया था और इसी अपराध मे उसे जेल जाना पड़ा था। पॉल लुई को जानता था और चूँकि वह बन्दर मजदूर यूनियन का संगठन मन्त्री था, इसलिए उसने लुई के कागजात पार्टी को भेजकर उसे काम भी दिला दिया और फिर से पार्टी के साथ उसका सम्बन्ध भी करा दिया। लुई अब सब कुछ भूल गया। अब उसे बिल्लियो के सपने भी नही आते थे, न ही पार्टी की नौकरशाही के विरुद्ध उसे कोई गुस्सा था। ६ मास बाद वह स्थानीय विभाग का पोलिटिकल सैक्रेटरी बन गया। अन्त भला सो भला।

और रुबाशोफ की भी यही इच्छा थी कि लुई की कहानी का अन्त सुखद ही हो। किन्तु उसे मालूम था कि वह किस काम से यहाँ भेजा गया है। क्रान्तिकारियो के अनेक गुणो मे से एक ही गुण था, जिसे वह नही सीख सका था, और वह गुण था आत्म-प्रवंचना, यानी अपने को धोखा देना। उसने लुई की ओर देखा और चूँकि लुई उसके इस देखने के अर्थ को तो समझ नही सकता था, इसलिए वह कुछ अचकचाया और मुस्कराते हुए उसने पाईप से सैल्यूट किया। रुबाशोफ बिल्लियो की बाबत सोच रहा था। उसे लगा कि उसकी नसे अकड़ी जा रही है। और इसका कारण शायद यह था कि वह ज्यादा पी गया था। उसके दिमाग मे आ रहा था कि लुई को वह भी बिल्लियो की ही भांति मारकर उसकी चमड़ी खींच ले। उसे लगा, जैसे उसकी तबियत बिगड़ रही है। वह जाने के लिए खड़ा हो गया। लुई उसे घर तक पहुँचाने गया। उसे मालूम हुआ कि रुबाशोफ की हालत एकाएक बिगड़ गई थी और वह आदरपूर्वक चुप रहा। इसके एक ही सप्ताह बाद लिटल लुई ने गले मे फंदा डालकर आत्महत्या कर ली थी।

उस शाम और लुई की मृत्यु के बीच पार्टी की कई बेसिलसिले की मीटिंगें

हुईं। किन्तु इस आत्महत्या से सम्बन्धित तथ्य बहुत ही साधारण थे।

दो साल पहले, पार्टी ने दुनिया-भर के मजदूरों को यूरोप के मध्य में स्थापित नई-नई तानाशाही के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा की थी। इस लड़ाई के दो साधन थे—राजनीतिक और आर्थिक बहिष्कार। शत्रु-देशों से जो भी माल आये, उसे खरीदने न दिया जाय, और लड़ाई का सामान बनाने के लिए भेजा जाने वाला माल बन्दरों से निकल न सके। पार्टी के इस विभाग ने इन आशाओं पर बहुत उत्साह के साथ अमल किया। बन्दरगाह के मज़दूरों ने आने-जाने वाले जहाजों से माल उतारने अथवा उन्हें भरने से इनकार कर दिया। अन्य कई ट्रेड यूनियनों ने इस काम में उनका साथ दिया। पुलिस के साथ मुकाबले हुए और फलस्वरूप अनेक घायल हुए और मारे गए। इससे हड़ताल की सफलता में भी सन्देह होने लगा। इस हड़ताल का आखिरी नतीजा अभी अनिश्चित ही था कि इस बीच पुरानी किसम के पाँच जहाजों का एक छोटा-सा बेड़ा बन्दरगाह में आया। हर एक जहाज का नाम क्रान्तिकारी नेताओं के नाम पर रखा गया था और नाम भी उस वर्ण-माला के अक्षरों में लिखे गए थे, जो उस उच्चतम स्थान में प्रयोग की जाती थी। क्रान्ति का झण्डा उन पर फहरा रहा था। हड़ताली मजदूरों ने उन जहाजों का खुले दिल से स्वागत किया। उन्होंने एकाएक उन्हें खाली करना शुरू कर दिया। कई घंटों के बाद इस बात का पता चला कि इन जहाजों में तो ऐसा सामान था जो बहिष्कृत देश के युद्ध-उद्योग के लिए लाया गया था।

पार्टी के बन्दरगाह विभाग की कमेटी की मीटिंग बुलाई गई, तो उसमें हाथापाई की नौबत आ गई। इसी आन्दोलन की राह से देश-भर में झगड़े फैल गए। प्रतिगामी अखबारों ने इस मौके से लाभ उठाया और खूब ऊट-पटांग लिखा। पुलिस ने भी इसमें पड़ने से इनकार कर दिया। इसका कहना था कि मजदूर स्वयं इसका फैसला करें कि जहाज खाली किये जायं या नही। और तब पार्टी के नेताओं ने हड़ताल वापिस ले ली और जहाजों का माल उतारने की आज्ञा दे दी। उन्होंने ऐसा करने के सिलसिले में एक

"यह तो ऐसी बात थी कि कोई किसी से कह दे कि तुम चन्द्रलोक में चले जाओ। उसने इस देश की पार्टी से मदद माँगी, किन्तु उन्होंने टालमटोल की। वह मारा-मारा फिरता रहा और कुछ दिन बाद फिर गिरफ्तार कर लिया गया। तीन महीने की कैद का दंड उसे मिला। एक और कैदी के साथ एक कोठरी में उसे भी रख दिया गया। इस साथी को लुई ने पार्टी के सम्बन्ध में कई बातें समझाईं। और बदले में उसने उसे बिल्लियां पकड़कर उनकी खाल बेचने का सहज व्यापार सिखाया। तीन महीने बाद, एक रात को बैल्जियम की सीमा के जंगलों में उसे ले जाकर छोड़ दिया गया। पहरे-दारों ने उसे रोटी, पनीर, और फ्रांसीसी सिगरेट देते हुए कहा, 'सीधे भाग जाओ। आध ही घंटे में तुम बैल्जियम में पहुँच जाओगे। और अबके इधर आये तो तुम्हारा सिर ही फोड़ दिया जायगा।'

कई सप्ताह तक लुई बैल्जियम के सीमा प्रदेश में घूमता रहा। वहाँ भी पार्टी से मदद माँगी, पर उसे न मिली। यहाँ उसने व्यापार शुरू किया। वह बिल्लियां पकड़ता और उन्हें मारकर एक खाल के बदले उसे आधी रोटी और सिगरेट पाईप के लिए तंबाकू का एक डिब्बा मिल जाता। काम तो बहुत ही गन्दा था, लेकिन लाचारी थी। वह ज्यों-त्यों पेट भरता रहा और दुर्भाग्यवश, कुछ सप्ताह बाद बैल्जियम में भी वह गिरफ्तार हो गया। इसके बाद उसे देश-निकाला, रिहाई, दूसरी गिरफ्तारी और सज़ा—सब कुछ मिला। और तब एक रात को बैल्जियम के सिपाही उसे फ्रांसीसी सीमा पर ले गए। उन्होंने उसे रोटी, पनीर और बैल्जियम के सिगरेट देते हुए कहा, 'सीधे भाग जाओ। आध ही घंटे में तुम फ्रांस की सीमा में पहुँच जाओगे। यदि अब तुम पकड़े गए, तो तुम्हारा सिर फोड़ दिया जायगा।'

तात्पर्य यह है कि एक बरस के दौरान में लुई को तीन बार फ्रांसी-सियों और तीन बार बैल्जियम वालों ने इधर-से-उधर और उधर-से-इधर ढकेला। और पता चला कि उसके-जैसे कइयों के साथ बरसों से यही होता आ रहा है। इस बीच वह पार्टी को बराबर लिखता रहा, क्योंकि उसे भय था कि कहीं पार्टी के आन्दोलन से मैं अलग न हो जाऊं। लेकिन पार्टी वाले

यही जवाब देते, अभी जाँच का उत्तर नहीं आया, हमें तुम्हारे पहुँचने की बाबत पार्टी से कोई सूचना नहीं मिली। यदि तुम पार्टी के सदस्य हो तो तुम्हें पार्टी के नियंत्रण में रहना चाहिए। इस बीच लुई बिल्लियों की खाल का व्यापार करके गुजर करता रहा, और तभी उसके देश में भी तानाशाही सत्ता हो गई। एक बरस और बीत गया। घूम-घूमकर वह थक चुका था और उसे खून की कै होने लगी और बिल्लियों के सपने आने लगे। उसकी हालत यह हो गई कि अपने खाने, अपने पाइप और हर चीज में से उसे बिल्लियों की गंध आने लगी। उसे उन वेश्याओं में से भी बिल्लियों की गंध आने लगी, जो दया करके उसे आश्रय देती थीं। और पार्टी वालों का जवाब मिलता, 'अब तक हमें जांच का उत्तर नहीं आया'। एक और साल बीता और उस बरस में, उन सब साथियों को या तो मार डाला गया, या कैद हो गए और या वे भाग गए कि जो लुई के विषय में कुछ भी बता सकते थे। और पार्टी का जवाब आया, 'हम तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकते। ऐसा जान पड़ता है कि तुम पार्टी को सूचित किये बिना ही निकल गए। तुम्हें पार्टी को इत्तिला दिये बिना नहीं निकलना चाहिए था। हमें यह सब क्योंकर मालूम हो सकता है, हमारे दल में बहुत भेदिये घुसने की कोशिश में हैं और ऐसी दशा में पार्टी को सावधान रहना ही चाहिए।'

"तुम किस मतलब से मुझे ये सब बता रहे हो?" रुबाशोफ ने पूछा। उसे लगा कि उसे पहले ही यहाँ से चला जाना चाहिए था।

लुई उठा और स्वयं जाकर बियर ले आया और अपने पाइप से सैल्यूट बजाते हुए बोला, "चूंकि यह आलोचना रचनात्मक है, चूंकि यह एक अजीब तरह का उदाहरण है, इसलिए। और भी सैकड़ों उदाहरण मैं आपको बता सकता हूँ। हमारे अच्छे से अच्छे आदमी इसी तरह बरसों पिलते रहे हैं। पार्टी को तो जैसे गठिया हो गया है और उसके प्रत्येक अंग की नसें खिंच-सी गई हैं। कोई भी उस तरह से काम नहीं कर सकता।"

'मैं तुम्हें इससे भी अधिक बता सकता हूँ,' रुबाशोफ ने मन-ही-मन सोचा, किन्तु बोला कुछ नहीं।

बयान प्रकाशित किया, जो चालाकियों और युक्तियों से भरा था, किन्तु उससे कुछ ही को विश्वास हो सका। फलतः इस विभाग में फूट पड़ गई और पुराने सदस्यों की बहुत संख्या निकल गई। महीनों तक पार्टी की छाया ही जैसे शेष रह गई थी, किन्तु देश में औद्योगिक कष्ट बढ़ जाने के कारण धीरे-धीरे पार्टी फिर पनपने लगी और उसमें जान-सी आ गई।

दो बरस बाद दक्षिण यूरोप में एक और भूखी तानाशाही ने जन्म लिया। इसने अफरीका में लूट-मार की लड़ाई का श्रीगणेश किया। इस बार तो दुनिया की लगभग सभी सरकारों ने आक्रान्ता को कच्चा माल न देने का स्वतः ही निर्णय कर दिया था, क्योंकि कच्चे माल और पैट्रोल के अभाव में आक्रान्ता खड़ा नहीं रह सकता था। इन्हीं अवस्थाओं में पाँच छोटे और काले जहाज़ों का बेड़ा फिर निकला। सबसे बड़े जहाज पर उस व्यक्ति का नाम था, जिसने युद्ध के खिलाफ आवाज उठाई थी, और जिसे मार डाला गया था। उनके स्तम्भों पर क्रान्ति का झंडा फहरा रहा था और नीचे की तहों में आक्रान्ता के लिए पैट्रोल भरा हुआ था। इस बन्दर से ये बेड़ा केवल एक दिन की यात्रा के फासले पर था और लुई तथा उसके साथियों को इसकी पहुँच के बारे में कुछ भी पता नहीं था। इसी काम के लिए उन्हें तैयार करने का भार रुबाशोफ को सौंपा गया था।

पहले दिन तो वह कुछ नहीं बोला, केवल वहाँ के हालात देखता रहा। दूसरे दिन सुबह पार्टी के मीटिंग के कमरे में इस पर चर्चा शुरू हुई। यह कमरा था तो काफी बड़ा, लेकिन गन्दा था। अक्सर दुनिया-भर में पार्टी के दफ्तरों का यही हाल था। इसका एक कारण तो ग़रीबी था ही किन्तु मुख्य कारण-निराशापूर्ण परम्परा थी। दीवारों पर चुनाव-सम्बन्धी पुराने पोस्टर लगे थे, राजनीतिक नारे और टाईप किये नोटिस चिपके थे। एक ओर पुराने कपड़ों का ढेर था, जो हड़तालियों के परिवारों के लिए जमा किये गए थे। उसी के आगे पुराने इश्तिहारों का ढेर था। एक लम्बी मेज़ थी, जो फट्टों को जोड़कर बनी थी। मेज़ के ऊपर छत से एक बिजली का बल्ब लटक रहा

था। इस मेज़ के आसपास बैठे थे लिटल लुई, पूर्व पहलवान पॉल, लेखक बिल और तीन अन्य।

रुबाशोफ थोड़ा ही बोला। उसने सरसरी तौर पर उस समय की स्थिति की व्याख्या की। और सही-सही तौर पर अपने आने का उद्देश्य प्रकट नहीं किया। उसने कहा कि "आक्रान्ता का दुनिया-भर के देशों ने जो बहिष्कार किया था, वह तो यूरोप की सरकारों की लोलुप-वृत्ति और नीचता के कारण असफल हो चुका है। कुछेक ने केवल अपना रूप बहिष्कार का-सा बना रखा है और कइयों ने तो वह भी नहीं। आक्रान्ता को पैट्रोल चाहिए। भूतकाल में प्रगतिशील देश ने इस आवश्यकता की पूर्ति में पर्याप्त हिस्सा लिया है। इस समय यदि उसने पैट्रोल देना बन्द किया तो दूसरे देश फौरन आगे बढ़ आयंगे और वास्तव में उनका उद्देश्य भी यही है कि इस प्रगतिशील देश को दुनिया के बाजारों से निकाल दिया जाय। इसका नतीजा होगा उद्योग-सम्बन्धी उन्नति का खातमा; और उसके साथ ही दुनिया-भर में क्रान्ति उत्पन्न करने की भावना का भी अन्त। इसलिए इसका इलाज भी स्पष्ट है।"

पॉल और तीन मज़दूरों ने सिर हिला दिये। वे लोग इतनी लम्बी-चौड़ी व्याख्या को न तो समझते थे, न समझ सकते थे। वे लोग वास्तविक तथ्य तक पहुँच ही नहीं सके। उनके बन्दर पर जो बेड़ा आने वाला था, उसकी बाबत भी वह कुछ न समझे। केवल लुई और बिल ने आँखों-ही-आँखों में जैसे भाँप लिया। रुबाशोफ ताड़ गया, फिर भी उसने शान्तिपूर्वक अपना कहना इस प्रकार समाप्त किया—"सिद्धान्त रूप में इतना कुछ ही मैंने आप लोगों को बताना था। आप लोगों से आशा की जाती है कि आप लोग सी० सी० के फैसलों का पालन करेंगे और अपने से कम-समझ साथियों को इस मामले के भीतरी और बाहरी रूपों को समझा देंगे। बस, इतना ही मुझे कहना था।"

इसके बाद वहाँ मिनट-भर के लिए शान्ति रही। रुबाशोफ ने चश्मा उतारा और सिगरेट सुलगाई। लुई अपने साधारण लहजे में बोला, "हम वक्ता को धन्यवाद देते हैं। क्या किसी को कोई प्रश्न करना है?"

कोई न बोला, किन्तु कुछ देर बाद मजदूरों में से एक जैसे संकट के साथ बोला—"इसकी बाबत बहुत-कुछ नहीं कहा जा सकता। उच्चतम स्थान के कामरेड जानते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, हम बहिष्कार जारी रखेंगे। आपको हम पर भरोसा करना चाहिए। हमारी बन्दरगाह की राह से उस सूअर के लिए कुछ नहीं जा पायगा।"

उसके दो साथियों ने भी सिर हिला दिया। पहलवान पॉल ने भी 'यहाँ से नहीं' कहकर समर्थन किया और हँसी के तौर पर अपने कान हिलाये।

एक क्षण के लिए रुबाशोफ को लगा कि विरोधी पक्ष उसके सामने आ गया है, किन्तु धीरे-धीरे वह यह भी जान गया कि उन्होंने सही बात को समझा ही नहीं। उसने लुई की ओर इस आशा से देखा कि वह ग़लतफ़हमी को दूर कर देगा, किन्तु लुई ने नज़रें नीची कर लीं और चुप रहा। तब एकाएक लेखक बिल ने कुछ घबराई-सी हालत में कहा—"क्या आप इस बार अपने छोटे-से कारोबार के लिए कोई दूसरी बन्दरगाह नहीं ढूँढ सकते? क्या सदा हमारी ही बन्दरगाह आपको पसन्द आती है?"

मजदूरों ने हैरान होकर उसकी ओर देखा। वे इस 'कारोबार' शब्द को भी न समझ सके। और उस काले बेड़े के पहुँचने की बात तो उनकी समझ से कोसों दूर थी। किन्तु रुबाशोफ को ऐसे प्रश्न की आशा थी। उसने कहा, "राजनीतिक और भौगोलिक दोनों ही दृष्टियों से यही हितकर था। यहाँ से सामान भूमि मार्ग से भेजा जायगा। बेशक, हमें कोई बात गुप्त नहीं रखनी, तिस पर भी यह आवश्यक है कि उस सनसनी से तो बचना ही चाहिए कि जिसके द्वारा प्रतिगामी अखबार सम्भवतः अहित कर सकते हैं।"

लेखक बिल ने फिर लुई के साथ आँख मिलाई। और मजदूरों ने रुबाशोफ की ओर नासमझों की तरह देखा। एकाएक पॉल बोला, "आप असल में किसकी बाबत चर्चा कर रहे हैं?" सब उसी की ओर देखने लगे। पॉल रुबाशोफ को आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। लुई ने ज़रा दबी-सी हालत में कहा, "क्या तुम अब जाकर समझ सके हो?"

रुबाशोफ ने एक से लेकर अन्त तक सबको देखा और तब धीरज से

बोला, "मैंने इस बात का विस्तार आपको नहीं बताया। असल बात यह है कि विदेश व्यापार के कमिस्सरियट के पाँच जहाज़, यदि मौसम ठीक रहा तो, कल सुबह यहाँ पहुँचेंगे।"

इतनी स्पष्ट बात कह देने पर भी उन लोगों को समझने में काफी देर लगी। कोई भी एक शब्द न बोला। सबने रुबाशोफ की ओर देखा। तब धीरे से पॉल खड़ा हो गया। उसने ज़मीन की ओर अपनी टोपी लपकाई और कमरे से चला गया। उसके पीछे-पीछे उसके दो साथी भी चल दिये। सब चुप थे। तब लुई ने गला साफ करते हुए कहा, "हमारे वक्ता कामरेड ने इस व्यापार का कारण हमें समझाया है कि यदि वे पैट्रोल नहीं देंगे, तो दूसरे दे देंगे। कोई और बोलना चाहता है?" जो मज़दूर पहले बोला था, उसी ने कहा, "हम ये रंग समझते हैं। हड़ताल के दिनों में लोग यह कहा ही करते हैं, 'यदि मैं काम पर न गया, तो कोई और चला जायगा।' हमने ऐसी बातें बहुत सुन रखी हैं। बुज़दिल ऐसे ही बका करते हैं।"

फिर कुछ देर तक सन्नाटा रहा। पॉल ने बाहर जाते हुए किवाड़ बन्द किया, और तब रुबाशोफ कहने लगा, "सब बातों से आगे हमारी औद्योगिक उन्नति का प्रश्न है। भावुकता से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इस पर अच्छी तरह विचार कीजिए।"

मज़दूर ने अपनी ठुड्डी आगे की ओर की और कहा, "हमने पहले से ही इस पर सोच रखा है। हमने इस बारे में काफी सुन भी रखा है। आपको उच्च स्थान में ही ये मिसाल देनी चाहिए। सारी दुनिया आपकी ओर देख रही है। आप एक ओर एकता, बलिदान और नियंत्रण की चर्चा करते हैं और दूसरी ओर उसी समय आप अपने बेड़े से उन सबको नष्ट करने पर तुले हैं।"

इस पर लुई ने एकाएक अपना सिर ऊँचा किया। वह पीला पड़ गया था। उसने रुबाशोफ को अपने पाईप से सैल्यूट किया। वह धीमी-सी आवाज़ में बहुत जल्दी-जल्दी बोला, "जो कुछ कामरेड ने कहा है, वही मेरी राय है। क्या किसी को कुछ और कहना है? मीटिंग समाप्त की जाती है।"

रुबाशोफ अपनी लकड़ियों के सहारे कमरे से बाहर चला गया। घटना-क्रम चलता रहा। जिस समय पुराने दर्रे का बेड़ा बन्दरगाह में दाखल हो रहा था, रुबाशोफ ने उच्च अधिकारियों से तार द्वारा विचार-विनिमय किया। तीन दिन बाद बन्दर विभाग के नेता पार्टी से निकाल दिये गए और लिटल लुई की पार्टी के अखबार में निन्दा की गई। तीन दिन बाद लुई ने अपने-आप गले में फंदा डाल लिया।

: १३ :

रात तो और भी भयानक रही। रुबाशोफ सबेरा होने तक न सो सका। लगातार, रह-रहकर उसे जूड़ियाँ आती रहीं। उसकी दाढ़ में तो चीसें उठ रही थीं। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके दिमाग़ की सारी नसें जख्मी हो गई हैं और सूज गई हैं। तब भी वह दर्द-भरी लाचारी में तसवीरों और आवाज़ों को पहचानने में लगा हुआ था। काला सूट पहने नौजवान रिचर्ड का उसे ख्याल आया। उसकी आँखें फूली हुई थीं। 'किन्तु आप मुझे भेड़ियों की नाँद में नहीं फेंक सकते, कामरेड।'.........उसे कुबड़े लुई का भी ख्याल आया। 'और कौन बोलना चाहता है?' वहाँ कितने ही थे, जो बोलना चाहते थे। चूँकि पार्टी का आन्दोलन संशयरहित था, इसलिए पार्टी अनवरत गति से अपने मक़सद की ओर बढ़ती चली जाती थी। जो लोग उसके बदलते हुए प्रवाह में डूब जाते थे, उनके शवों को ठिकाने लगाते हुए बढ़ना ही उसका ध्येय था। उसके प्रवाह में अनेक पेच और बल थे। और यही उसके अस्तित्व की विधेयता थी। और जो कोई उसके टेढ़े मार्गों का अनुसरण नहीं कर सकता था, उसे वह किनारे पर छोड़ देती थी; क्योंकि यही उसका कानून था। व्यक्ति की इच्छाएँ या धारणाएँ उसके लिए महत्वहीन थीं। उसकी जागरूकता उसके लिए महत्वहीन थी। उसके दिल या दिमाग में क्या होता है, इसकी उसे चिन्ता नहीं थी। पार्टी एक ही अपराध को जानती थी, अर्थात् उसकी निगाह में निश्चित मार्ग से हटना ही एक मात्र अपराध था; और वहाँ एक ही सज़ा थी—मृत्यु। पार्टी के

आन्दोलन में मृत्यु कोई बहुत बड़ी गहरी बात न थी, और न ही इसे कोई महत्व दिया जाता था; यह तो राजनीतिक मतभेदों का एकमात्र युक्तियुक्त निराकरण था।

रात-भर की थकावट के कारण रुबाशोफ को प्रातः समय नींद आ गई। वह अपनी खड्डी पर गहरी नींद में सो गया। फिर तभी उसकी नींद टूटी, जब बिगुल ने नये दिन की घोषणा की। थोड़ी ही देर बाद एक वार्डर और दो बावर्दी अफसरों के साथ उसे डाक्टर के पास ले जाया गया।

रुबाशोफ को आशा थी कि वह ओंठ-फटे और नं० ४०२ के कार्डों पर लिखे नामों को पढ़ जायगा, किन्तु उसे दूसरी ओर से ले जाया गया। उसके दाईं ओर की कोठरी खाली थी। तनहाई की कोठरियों वाली पंक्ति को कंकरीट से बने फाटक से बंद किया जाता था। बूढ़े वार्डर ने काफी धक्के से उसे खोला। अब वे एक लम्बे बरामदे में से होकर निकल रहे थे। रुबाशोफ के आगे-आगे वार्डर और उसके पीछे-पीछे दो बावर्दी अफसर चल रहे थे। यहाँ के किवाड़ों पर लगे कार्डों में कई-कई नाम थे। इन कोठरियों के लोग बातें कर रहे थे, हँस रहे थे और यहाँ तक कि गा रहे थे। रुबाशोफ जान गया कि छोटे-मोटे इखलाकी कैदी हैं। वे नाई की दुकान के पास से निकले। वहाँ तीन कैदी हजामत बनवा रहे थे। और आगे बढ़कर वे डाक्टर के फाटक पर पहुँचे। वार्डर ने बामुलाहिज़ा उसे खटखटाया। वह और रुबाशोफ भीतर गये। दोनों बावर्दी अफसर बाहर खड़े रहे।

डिस्पैंसरी का छोटा-सा कमरा था। हवा भी घुटी-सी थी वहाँ। कारबालिक और तम्बाकू की गंध आ रही थी। एक बालटी और दो चिलमचियां मुँह तक भरी थीं—गंदी पट्टियों, रूई और कूड़े से। डाक्टर साहब उनकी ओर पीठ किये बैठे थे; अखबार पढ़ रहे थे और रोटी खा रहे थे। अखबार औज़ारों के ढेर पर पड़ा था। ज्यों ही वार्डर ने किवाड़ बंद किया तो डाक्टर साहब ने मुड़कर देखा। उसका सिर गंजा था और उसकी खोपड़ी असाधारण रूप से छोटी थी और उसके ऊपर बालों की एक फुनगी-सी थी। उसे देखकर रुबाशोफ को शतुर्मुर्ग की याद आ गई।

"यह कहता है, इसके दांत में दर्द है," बूढ़े वार्डर ने कहा।

"दाँत-दर्द?" डाक्टर ने कहा, "अपना मुँह खोलो। और देर न करो।"

रुबाशोफ ने डाक्टर को अपने चश्मे में से झाँका। "मुझे आपसे निवेदन करना है," उसने शांति से कहा, "कि मैं राजनीतिक कैदी हूं। मेरा इलाज सही-सही करने की कृपा करें।"

डाक्टर ने वार्डर की ओर देखते हुए पूछा, "यह कौनसी चिड़िया है?"

वार्डर ने रुबाशोफ का नाम बताया। रुबाशोफ ने महसूस किया कि एक सैकिंड-भर को उस शतुर्मुर्ग की आँख उस पर गड़ी रही। तब वह बोला, "आपका गाल सूजा हुआ है। अपना मुँह खोलिये।" रुबाशोफ का दाँत उस वक्त दर्द नहीं कर रहा था। उसने अपना मुँह खोला।

"तुम्हारे बाँये जबड़े के ऊपरी हिस्से में तो कोई दाँत ही नहीं," डाक्टर ने रुबाशोफ के मुँह में अँगुली डालते हुए कहा। एकाएक रुबाशोफ पीला पड़ गया और उसे दीवार का सहारा लेना पड़ा।

"यह बात है," डाक्टर ने कहा, "दाईं ऊपरी दाढ़ की जड़ टूटकर जबड़े में रह गई है।"

रुबाशोफ ने कई बार लम्बी-लम्बी साँस ली। जबड़े में से आँख तक और आँख से ठीक सिर की ओर दर्द बढ़ा जा रहा था। डाक्टर पुनः बैठ गया था और उसने अपना अखबार फैला लिया था। "अगर तुम चाहो तो मैं जड़ का टुकड़ा निकाल सकता हूं," उसने कहा, "हमारे यहाँ बेहोश करने वाली दवायें नहीं हैं, यह ठीक है, लेकिन आपरेशन में आधे से एक घंटे तक तो लग ही जायगा।"

रुबाशोफ ने जैसे अँधेरे में से डाक्टर की आवाज़ सुनी हो। वह दीवार के सहारे खड़ा था और लम्बे-लम्बे साँस ले रहा था। "धन्यवाद," उसने कहा, "इस वक्त नहीं।" उसे खयाल आया ओंठ-फटे और भाप-स्नान का, कल की मूर्खतापूर्ण भावुकता का, जबकि उसने हाथ की पीठ पर सिगरेट का जलता हुआ टुकड़ा लगाया था। उसने सोचा, ये बुरे हालों से ही बीतेगी।

और जब वह अपनी कोठरी में लौटा तो जैसे आप-से-आप खड्डी पर जा पड़ा हो। उसे एकाएक नींद आ गई।

दोपहर के वक्त जब खाना बँटने लगा तो उसे छोड़ा नहीं गया। अब उसे नियमपूर्वक राशन मिलने लगा था। दाँत का दर्द भी कम हो गया था। शायद उस जड़ का मुँह आप-से-आप खुल गया था।

इसके तीन दिन बाद उसे पहली बार बयान देने के लिए पेश किया गया।

: १४ :

११ बजे सुबह उसे वे ले गए। वार्डर के हाव-भाव से ही रुबाशोफ झट जान गया था कि उसे कहाँ जाना होगा। वह वार्डर के पीछे-पीछे हो लिया। सदा की तरह, खतरे के समय, जैसे गम्भीर-सी उदासी उस पर छा गई। और यह थी विधाता की देन।

वे लोग उसी राह से निकले, जिससे तीन दिन पहले डाक्टर के यहाँ जाना हुआ था। कंकरीट का फाटक फिर खुला, और बन्द हो गया। रुबाशोफ ने सोचा, कितनी जल्दी कोई इस भयंकर वातावरण से भी घुल-मिल जाता है; उसे लगा कि बरसों से मैं इस बरामदे की हवा पी रहा हूँ और जैसे उसकी सब परिचित जेलों का पुराना फीका-सा वातावरण यहीं आ सिमटा है।

वे नाई की दुकान और डाक्टर के कमरे के पास से निकले, जहाँ तीन कैदी अपने वार्डर के साथ बारी लेने के लिए खड़े थे।

डाक्टर के किवाड़ से परे रुबाशोफ के लिए नया मैदान था। वे टेढ़े-मेढ़े ज़ीने को पार कर गए, जो नीचे की तहों तक जा रहा था। वहाँ क्या था—स्टोर, कमरे, सज़ा देने की कोठरियाँ, रुबाशोफ ने जैसे विशेषज्ञ की तरह जान लेने की कोशिश की। किन्तु वह उस सीढ़ी की ओर झाँकना भी पसन्द नहीं करता था।

इसके बाद वे एक तंग और अँधेरे-से सेहन से निकले, जिस पर आसमान खुला था। इस सेहन के पार के बरामदों में रोशनी थी। कंकरीट के किवाड़ भी नहीं थे। लकड़ी के किवाड़ थे—रोग़न किये हुए। उन पर पीतल की

मुठियाँ लगी हुई थीं। अक्सर लोग उनमें से जा-आ रहे थे। एक किवाड़ के भीतर बेतार के तार की मशीन थी और एक और के पीछे टाइप करने की आवाज़ आ रही थी। अब वे जेल के प्रबन्धक विभाग में आ गए थे।

बरामदे के उस सिरे पर, आखिरी किवाड़ पर वे रुके। वार्डर ने खटखटाया। भीतर कोई टेलीफोन कर रहा था। एक शान्त-सी आवाज़ में जवाब मिला—"कृपया, एक मिनट" और वह फिर स्थिरता से कह रहा था—टेलीफोन में—"हाँ, ठीक है।" रुबाशोफ को यह आवाज़ पहचानी-सी लगी, किन्तु वह ठीक-ठीक न जान सका। निश्चय ही वह परिचित पुरुष की आवाज़ थी—कुछ रूखी-सी। उसने पहले भी कहीं इसे सुन रखा था। "भीतर आओ," आवाज़ आई; वार्डर ने किवाड़ खोला और रुबाशोफ की पीठ पीछे एकाएक बन्द कर दिया। रुबाशोफ ने एक डैस्क देखा। उस पर बैठा था उसका कालेज का पुराना सहपाठी और भूतपूर्व बटालियन कमांडर, इवानोफ; जो रुबाशोफ को मुस्कराता हुआ देख रहा था और टेलीफोन पर रिसीवर रख रहा था। "तो यहाँ हम फिर आ मिले," इवानोफ ने कहा।

रुबाशोफ अभी किवाड़ पर ही खड़ा था। "कितनी खुशी की बात है।" उसने सूखी-सी भावना से कहा।

"बैठो," इवानोफ ने कहा। वह उठ गया था, खड़ा था, रुबाशोफ से ३-४ इंच लम्बा था। उसने मुस्कराते हुए देखा। दोनों बैठ गए—इवानोफ डैस्क के इधर और रुबाशोफ सामने। दोनों लहमे-भर को एक-दूसरे की ओर देखते रहे। इवानोफ चकित-सा नम्र मुसकराहट के साथ देख रहा था और रुबाशोफ की आँखें जैसे आशापूर्ण और सजग-सी थीं। और इसी सिलसिले में उसकी नजर इवानोफ की दाईं टाँग पर पड़ी, जो मेज़ के नीचे थी।

"ओह, यह सब ठीक है," इवानोफ ने कहा, "बनावटी टाँग है, जोड़ भी लगे हैं, जंग भी नहीं लग सकता; मैं तैर भी सकता हूँ, घुड़सवारी भी कर सकता हूँ, मोटर भी चला सकता हूँ और नाच भी सकता हूँ। सिगरेट पियोगे क्या?"

उसने रुबाशोफ की ओर लकड़ी का सिगरेट-केस बढ़ाया।

रुबाशोफ ने सिगरेटों को देखा और उसे याद आ गया उसका पहली बार फौजी अस्पताल में जाना कि जहाँ इवानोफ की टाँग काटदी गई थी। इवानोफ ने कहा था कि वह उसके लिए ज़हर ला दे। और सारी दोपहर की बहस में उसने यह साबित करना चाहा था कि हर किसी को आत्महत्या कर लेने का हक है। अन्त में रुबाशोफ ने इस पर और विचार करने का समय चाहा था। तब उसी रात को एक-दूसरी जगह उसकी बदली हो गई थी। केवल कुछ बरसों बाद ही इवानोफ से फिर उसकी भेंट हुई थी।

उसने लकड़ी के सिगरेट-केस के सिगरेटों को देखा। वह अमरीकी तम्बाकू के बने थे।

"क्या यह अभी गैर-सरकारी भूमिका का ही क्रम है या यह समझूँ कि दुश्मनी शुरू हो गई है?" रुबाशोफ ने पूछा। "यदि बाद वाली बात है, तो मैं नहीं लूँगा। आप शिष्टाचार को जानते ही हैं।"

"क्या फिजूल सोचते हो," इवानोफ ने कहा।

"अगर फिजूल है, तो ठीक है," रुबाशोफ ने कहा और इवानोफ की सिगरेट लेकर जलाई। अन्दर-ही-अन्दर उसे बहुत अच्छा लगा, किन्तु उसने कोशिश की कि उसकी खुशी प्रकट न हो जाय। "और तुम्हारे कन्धों का गठिया कैसा है?" उसने पूछा।

"बिलकुल ठीक है, धन्यवाद," इवानोफ ने कहा, "और तुम्हारे जले हुए का क्या हुआ?"

वह मुसकराया और उसने भोलेपन से रुबाशोफ के बाँये हाथ की ओर इशारा किया। उसके हाथ की पीठ पर नीली-नीली नसों के बीच, तीन दिन पहले उसने जहाँ सिगरेट से जलाया था, एक पैसे-भर का चकत्ता बना हुआ था। मिनट-भर को दोनों ने रुबाशोफ के हाथ को देखा, जो उसकी झोली में रखा था। 'इसे कैसे पता लगा,' रुबाशोफ ने सोचा। वह मुझे छेद में से झाँकता रहा होगा। गुस्से की बजाय उसे शर्म-सी अधिक लगी। उसने सिगरेट का लम्बा कश खींचा और बाकी को फेंक दिया। "जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरी तरफ से गैर-सरकारी बातें खत्म हुईं," उसने कहा।

इवानोफ ने धुँए के चक्कर बनाते हुए उसी कोमलतापूर्ण मुस्कराहट से उसकी ओर देखा। "पहल नहीं करो," उसने कहा।

"ज़रा ध्यान से सोचो," रुबाशोफ ने कहा, "क्या मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया है, या तुम लोगों ने मुझे गिरफ्तार किया है?"

"हमने तुम्हें गिरफ्तार किया," इवानोफ ने कहा। उसने सिगरेट बुझाई और दूसरी जलाते हुए डिब्बा रुबाशोफ की ओर किया, जो अचल-सा बैठा रहा। "हत्-तेरी ऐसी-तैसी," इवानोफ ने कहा। "क्या तुम्हें ज़हर की कहानी अब भी याद है?" वह आगे को झुका और उसने सिगरेट का धुँआ रुबाशोफ के मुँह पर छोड़ा।

"मैं तुम्हें गोली का निशाना नहीं बनाना चाहता," इवानोफ ने धीरे से कहा। वह फिर कुरसी पर लम्बा हो गया। "हत्-तेरी ऐसी-तैसी," उसने मुस्कराते हुए फिर कहा।

"मैं तुम्हें बीच ही में टोकता हूँ," रुबाशोफ ने कहा, "तुम लोग मुझे क्यों मार डालना चाहते हो?"

पल-भर को इवानोफ चुप रहा। वह सिगरेट पीता रहा और काग़ज तथा स्याहीचूस पर पैंसिल से तस्वीरें-सी बनाता रहा। जान पड़ता था, वह सही-सही जवाब ढूँढ रहा था।

"सुनो, रुबाशोफ," उसने कहा, "मैं तुम्हें एक बात बता देना चाहता हूँ। तुमने अभी बार-बार 'तुम लोग' कहा है, यानी राज्य और पार्टी, और उसके मुकाबिल 'मैं', यानी निकोलस सामनोविच रुबाशोफ, का प्रयोग किया है। जनता के लिए, बेशक, यह ज़रूरी है कि मुकदमा चलाया जाय और कानूनी तौर पर इन्साफ किया जाय। जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, उसकी बाबत मैं अभी जो कुछ कह चुका हूँ, वही काफी है।"

रुबाशोफ ने इस पर विचारा—जैसे वह भूतकाल को सोचने लग गया। पल-भर को उसे लगा कि जैसे इवानोफ ने उसके दिल की सारंगी के तारों को उमेठा हो, कि जिसका प्रत्युत्तर उसका मन आप-से-आप ही देने लग जाता था। गत चालीस बरसों में, जिस सब पर उसे विश्वास था, जिस सब

के लिए वह लड़ा था और जिस सब का वह प्रचार करता रहा था, वह सब उसके दिल पर से जैसे एक ही भीषण-से प्रवाह से साफ हो गया। व्यक्ति का कोई महत्व नहीं, पार्टी ही सब-कुछ है; पेड़ से टूटी हुई शाखा सूखकर रहेगी।···रुबाशोफ ने अपना चश्मा बाँह पर रगड़ा। इवानोफ कुरसी पर पड़ा था, सिगरेट पी रहा था, और अब वह मुस्करा नहीं रहा था। एकाएक रुबाशोफ की नजर दीवार पर गई। उसमें एक वर्गाकार जगह मैली-सी रह गई थी। उसे पता था, कभी यहाँ एक तस्वीर टँगी होगी, जो दाढ़ी वाले सिरों की थी और जिस पर क्रम से नाम लिखे हुए थे। इवानोफ ने भी उसकी नजर का पीछा किया, लेकिन उसने अपने चहरे का भाव बदला नहीं।

"तुम्हारी युक्ति कुछ-कुछ समय के विपरीत है," रुबाशोफ ने कहा। "जैसा कि तुमने सही ही कहा है, हमें सदा बहुवचन 'हम' में ही बोलने का अभ्यास था और यथासम्भव एक वचन 'मैं' का हम प्रयोग नहीं करते थे। मुझे तो वैसे रूप में बोलने की आदत जाती रही है और तुम अभी उस पर जमे हो। लेकिन ये 'हम' है कौन और किसके नाम पर तुम आज ऐसे बोलते हो? इसकी फिर से व्याख्या करने की जरूरत है। यह है असली नुक्ता।"

"यह पूर्णतः मेरी निजी राय है," इवानोफ ने कहा। "मुझे खुशी है कि हम इतनी जल्दी मामले की असली तह पर पहुँच गए हैं। दूसरे शब्दों में, तुम यह मानते हो कि 'हम', यानी पार्टी, राज्य और उसकी जनता अब क्रान्ति के हितों का प्रतिनिधित्व नहीं करते।"

"मैं जनता को इसमें से निकाल देना चाहता हूँ," रुबाशोफ ने कहा।

"जनता-जनार्दन के प्रति कब से यह वृहत्तम हीन भाव तुममें आ गया?" इवानोफ ने पूछा। क्या इसका सम्बन्ध भी एक वचन की तरह व्याकरण-विषयक परिवर्तन से ही है?"

वह प्रेमपूर्वक मजाक-सा करता हुआ डैस्क के एक ओर झुक गया। अब दीवार की वह मैली-सी जगह उसके सिर के पीछे आ गई। और रुबाशोफ

को चित्रशाला का नज़ारा एकाएक याद हो आया—जबकि मरियम के आलिंगन में जुड़े हाथों और उसके बीच रिचर्ड का सिर आ गया था। ठीक उसी क्षण उसके जबड़े से चीख उठकर माथे और कान तक चली गई। पल-भर को उसने आँखें बन्द कर लीं। 'मैं अदा कर रहा हूँ,' उसने सोचा। एक ही पल में उसे यह खयाल हुआ कि मैंने ये शब्द प्रकट रूप में तो नहीं कहे।

"तुम यह कैसे कहते हो?" इवानोफ ने पूछा।

दर्द जाता रहा था, और उसके दिल पर जैसे शान्ति हो गई थी। "जनता को इससे बाहर ही रहने दो," उसने दोबारा कहा। तुम उसकी बाबत कुछ भी नहीं समझते। न ही, संभवतः, इससे अधिक मैं भी। एक समय था जब कि बड़े 'हम' अभी विद्यमान थे, हम जनता को इतना समझते थे, जितना हमसे पहले किसी ने नही समझा था। हम उसकी गहरी तहों तक पहुँच गए थे। हम उसकी सब समस्याओं तक पैठ गए थे, और इतिहास की रूप-रेखा के बिना ही हमने उनके लिए काम किया था। और रुबाशोफ ने अनजाने ही इवानोफ के डिब्बे का सिगरेट उठा लिया। इवानोफ ने आगे बढ़कर उसकी सिगरेट सुलगा दी।

"उस समय," रुबाशोफ कहता जा रहा था, "हमें जनता-जनार्दन की पार्टी कहा जाता था। और लोग इतिहास को क्या समझते हैं? यही तो समझते हैं—छोटी-मोटी लहरों का गुज़र जाना, छोटे-छोटे भँवरों का पड़ना और लहरों का टूट जाना। वे लोग धरती की रूप-रेखा के परिवर्तन को चकित हो-होकर देखते हैं, किन्तु उसकी व्याख्या नहीं कर सकते। किन्तु हम थे, जो स्वत्वहीन उस जनता की सतह तक उतर गए थे, जो सभी वक्तों पर इतिहास के लिए ठोस सामग्री के रूप में रही है; और हम ही पहले थे, कि जिन्होंने उसकी प्रगति के नियमों की खोज की। हमने ही उसके शरीर में जिन्दगी पैदा करने के नियमों की खोज की, हमने ही उसके शरीर के परमाणुओं के रूप को बदलने के नियम निकाले और हमने ही इसके लिए ऐसे नियमों को ढूंढ निकाला जिससे उसके जीवन में विस्फोट-सी गति आ जाय। यही थी हमारे सिद्धान्तों की महत्ता। हम अनुभव-सिद्ध थे। हमने

ही इतिहास की पहली-पहली कीचड़ को खोदा था और उसमें जनता की जिन्दगी के नियमों की प्राप्ति की थी। हमें मनुष्य जाति के विषय में जैसी जानकारी है, वैसी कभी किसी को नहीं हो सकी। और हमारी क्रान्ति की सफलता का एकमात्र यही कारण था। और अब, तुम लोगों ने उसे पुनः दफना दिया है।......"

इवानोफ टाँगे फैलाकर बैठा हुआ था। सुन रहा था और स्याहीचूस पर पैंसिल से तस्वीरें उतार रहा था।

"कहे जाओ," उसने कहा, "मैं यह जानना चाहता हूँ कि आखिर तुम्हारा कहने का मतलब क्या है।"

रुबाशोफ कश-पर-कश लगा रहा था। उसे तम्बाकू की अधिकता के कारण खुमारी-सी मालूम हुई, तिस पर वह काफी लम्बी तकरीर भी कर चुका था।

"जैसे कि तुम देखते हो, मैं अपनी शक्ति से बाहर बातें कर रहा हूँ," उसने कहा, और मुस्कराते हुए दीवार के उस वर्गाकार को देखा कि जहाँ कहीं बड़े बूढ़ों का फोटो टँगा हुआ था। इस बार इवानोफ ने उसकी नजर का पीछा न किया। "तो खैर," रुबाशोफ ने कहा, "यदि इतनी बातों में एक और बढ़ जाय, तो कोई खास फर्क नहीं पड़ता। सब कुछ दफन हो चुका है, यानी आदमी, उनके गुण और उनकी आशाएँ। तुमने 'हम' को मार डाला है, तुमने उस 'हम' को सर्वथा नष्ट कर दिया है। क्या तुम सच ही यह कह सकते हो कि जनता अभी भी तुम्हारे साथ है? यूरोप के दूसरे नीतिज्ञ भी उतने ही अधिकार से इस बात को कहते हैं, जितने कि तुम।......"

उसने एक और सिगरेट उठाकर स्वयं ही जला ली, क्योंकि इवानोफ स्थिर बैठा था।

"मेरी डींग के लिए मुझे माफ करना," वह कहता गया, "लेकिन क्या तुम्हें यकीन है कि अभी भी लोग तुम्हारे पीछे हैं? तुमने उसे अन्य देशों की तरह ही मूक और त्यक्त बना दिया है। जन-जन बहरा और गूँगा

हो गया है। यही इतिहास का 'अ' मानो सबसे बड़ा मौन है। वह तुम लोगों से ऐसे विमुख है, जैसे समुद्र कि जिसमें जहाज चलते हैं। प्रत्येक निकलती हुई चमक उसकी सतह को चकाचौंध तो करती है, किन्तु उसके तले में अँधेरा है और चुप्पी है। एक बीते समय की बात है, जब कि उसके तले तक में हमने चकाचौंध पैदा कर दी थी, किन्तु वह खत्म हो चुका। दूसरे शब्दों में," वह कुछ रुका और उसने चश्मा पहना, "उस समय हमने इतिहास का निर्माण किया था, और तुम लोग नीति-निर्माण करते हो। यही है सादा अन्तर।"

इवानोफ अपनी कुरसी पर फैल गया और धुँए के गोले निकालते हुए ब ला, "मुझे खेद है, मैं इस अन्तर को साफ-साफ समझ नहीं सका। ज़रा इसकी अधिक व्याख्या करो।"

"बेशक," रुबाशोफ ने कहा, "एक बार एक गणितज्ञ ने कहा था कि बीजगणित में 'अ' क्या है, इसे समझे बिना ही हर कोई इसका प्रयोग करने लगता है, जैसे वह 'अ' को समझता ही हो। यही बात हम पर घटती है, 'अ' मानो समूह है, यानी जनता। राजनीति के मानी हैं, इस 'अ' के साथ, इसकी वास्तविकता को जाने बिना, प्रश्नों का हल करना। और इतिहास-निर्माण इस 'अ' की स्वीकृति है, कि जो सवाल के समीकरण के लिए आधार रुप में स्थिर कर लिया जाता है।"

"बहुत सुन्दर," इवानोफ ने कहा। "किन्तु इतने सार रूप से कहने का क्या लाभ! क्योंकि इसे अधिक विस्तार से यूँ कहा जाय, तुम्हारा मतलब है, कि हम, यानी पार्टी और राज्य अब क्रान्ति, जनता या तुम्हारे शब्दों में मनुष्यता की प्रगति का प्रतिनिधित्व ही नहीं करते।"

"इस बार तुम मेरा मतलब ठीक समझ गए," रुबाशोफ ने मुस्कराते हुए कहा, किन्तु इवानोफ ने उसकी मुस्कराहट का उत्तर नहीं दिया।

"कितने समय में तुम यह धारणा बना सके हो?"

"काफी धीरे-धीरे, पिछले चन्द बरसों के दौरान में," रुबाशोफ ने कहा।

"क्या तुम सही-सही नहीं कह सकते? एक बरस या तीन बरस?"

"तुमने भी क्या मूर्खों-सा प्रश्न किया है ? अजीब-सा," रुबाशोफ ने तत्परता से कहा। "क्या तुम बता सकते हो, तुम कब बालिग़ हुए थे ? सत्रह बरस मे, साढ़े अठारह बरस मे या उन्नीस बरस में ?"

"यह तो तुम हो जो अपनी मूर्खता जाहिर कर रहे हो," इवानोफ ने कहा, "एक निश्चित अनुभव के फलस्वरूप ही पग-पग करके कोई आध्यात्मिक उन्नति कर पाता है। यदि तुम सच ही जानना चाहते हो मैं सत्रह वर्ष की उम्र में बालिग़ यानी आदमी बना था कि जब मुझे पहली बार देश-निकाला मिला था।"

"उस समय तुम बहुत भले आदमी थे," रुबाशोफ ने कहा, "लेकिन अब भूल जाओ।" उसने पुनः दीवार के वर्गाकार को देखा और सिगरेट फेंक दी।

"मेरा सवाल वही है," इवानोफ ने कुछ आगे झुकते हुए कहा। "कितने समय से संगठित विरोधी बने हो ?"

टेलीफोन की घंटी बजी। इवानोफ ने उठाया और कहा, "मैं काम में लगा हूँ," और उसे रख दिया। वह फिर कुरसी पर फैल गया, टाँगें फैला ली और रुबाशोफ के जवाब की इन्तजार करने लगा।

"तुम भी जानते हो और मैं भी," रुबाशोफ ने कहा, "मैं कभी किसी विरोधी दल मे शामिल नही हुआ।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा," इवानोफ ने कहा, "आख़िर तुमने मुझे अफसराना कार्यवाही के लिए लाचार कर ही दिया।" उसने मेज़ का दराज़ खोला और फाइलों का एक पुलिंदा निकाला।

"अच्छा, चलो सन् १९३३ से," उसने कहा और सब काग़ज़ात उसके सामने फैला दिये। "उसी देश में, जहाँ विजय निकटतम दीख रही थी, पार्टी को रौंदकर तानाशाही का जन्म। गैर कानूनी तौर पर तुम वहाँ भेजे जाते हो, और तुम्हें सौंपा गया फौजों के सुधार और पुनःसंगठन का काम।......"

रुबाशोफ ने कुरसी पर पीठ लगा ली और अपनी जीवन-कहानी सुनने

लगा। उसे खयाल आया रिचर्ड का और चित्रशाला के सामने बिजली की रोशनी में टैक्सी रोकने का।

"......तीन महीने बाद तुम गिरफ्तार हो जाते हो। दो साल की कैद। आदर्श चलन; तुम्हारे खिलाफ कुछ भी साबित न हो सका। रिहा हुए और शानदार वापसी।......"

इवानोफ कुछ रुका, जल्दी से उसने उसकी ओर देखा और आगे कहने लगा—"वापसी पर तुम्हें भोज दिये गए। हम तब नहीं मिले। उस समय, शायद तुम बहुत व्यस्त थे......, लेकिन इसमें मेरा दोष नहीं। क्योंकि, चाहे जो भी हो, किसी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि उसके सभी पुराने दोस्त किसी ऐसे वक्त पर मिल ही जायँगे। किन्तु मैंने तुम्हें जलसों में प्लेटफार्म पर दो बार देखा। अभी तुम लकड़ियों के सहारे ही चलते थे और तुम्हारी हालत बहुत खराब थी। अक्ल की बात तो यह थी कि चार बरस तक विदेशी मिशन पर रहने के बाद तुम कुछ महीनों के लिए किसी स्वास्थ्यालय में चले जाते और उसके बाद किसी सरकारी पद को ग्रहण करते। किन्तु १५ ही दिन बाद तुमने विदेश जाने के लिए एक दरख्वास्त दे दी थी।......"

एकाएक वह आगे की ओर झुका, उसका मुँह रुबाशोफ के काफी पास आ गया था। "जानते हो क्यों?" उसने पूछा, और पहली बार उसकी आवाज़ में तेज़ी आई। "संभवतः, तुम्हें यहाँ अच्छा नहीं लगता था। तुम्हारी गैरहाज़िरी में देश में कतिपय परिवर्तन हो गए थे, जिन्हें तुम जाहिरा पसंद नहीं करते थे।"

उसने इन्तज़ार की कि रुबाशोफ कुछ कहे, लेकिन रुबाशोफ चुप रहा। वह अपनी बाँह पर चश्मा रगड़ रहा था; उसने कोई जवाब न दिया।

"पहले-पहल विरोधी दल को सजा देने और उसे कुचलने के थोड़े ही दिनों बाद की बात है। उनमें तुम्हारे गहरे दोस्त थे। जब यह पता हो गया कि विरोधियों को किस बुरी तरह हार खानी पड़ी है, तो देश-भर में रोष

की लहर उमड़ उठी। तुम चुप रहे। एक पखवाड़े बाद ही तुम विदेश चले गए, हालांकि तुम लकड़ियों के सहारे बिना चल भी नहीं सकते थे।"

रुबाशोफ को लगा कि उसे फिर बंदरगाह, गंदले पानी और पैट्रोल की गंध आ रही है, पहलवान पॉल अपने कानों को हिला-डुला रहा है, लुई पाइप से सैल्यूट बजा रहा है······उसने ऊपर के कमरे की कड़ी के सहारे अपने गले में फन्दा डाल लिया है। वह छिन्न-भिन्न पुराना मकान लारी के निकलने से काँप-काँप जाता है; क्योंकि रुबाशोफ को बताया गया था कि सवेरे लुई को देखा गया तो उसका शरीर धीरे-धीरे अपने पाँवों पर खड़ा हो गया था, और उस वक्त पहले उन्होंने खयाल किया था कि अभी वह हिल-डुल रहा है······

"तुम्हारा विदेश-गमन कामयाब हुआ। और 'ब' में ट्रेड डेलिगेशन भेजते समय तुम उसके नेता मनोनीत किये गए। इस बार भी, तुमने असाधारण ढंग से कर्तव्य-पालन किया। 'ब' के साथ नई व्यापारिक संधि निश्चय ही बड़ी कामयाबी थी। जाहिरा तौर पर तुम्हारा व्यवहार आदर्श और बेदाग़ रहा। लेकिन इस पद पर आने के ६ मास बाद तुम्हारे दो निकट सहयोगियों को विरोधी षड्यंत्र करने के संदेह में बुलाया गया। उनमें से एक तुम्हारी सैक्रेटरी, आरलोवा थी। जाँच पर यह संदेह पक्का हो गया। तुमसे आशा थी कि तुम सार्वजनिक रूप से उसकी निन्दा करोगे। तुम चुप रहे।······"

"और छः मास बाद खुद तुम्ही को बुलाया जाता है। विरोधी पक्ष के दूसरे मुकदमे की तैयारी हो रही है। मुकदमे के दौरान में बार-बार तुम्हारा नाम आता है। आलोवा अपनी सफाई में तुम्हारा नाम लेती है। इन अवस्थाओं में तुम्हारा चुप रहना, दोष को स्वयं मानना ठहराया गया। तुमने जानते हुए भी सार्वजनिक घोषणा करने से इनकार किया और तब पार्टी ने तुम्हें अल्टीमेटम यानी आखिरी बार चेतावनी दी। महज़ तभी, जब तुम्हारे ही सिर की बाज़ी लग गई, तुम झुके, तुमने भक्ति की घोषणा की, जिसके फलस्वरूप आरलोवा का अन्त हो जाता है। उसके साथ जो बीती, तुम जानते हो।······"

रुबाशोफ चुप था। उसे फिर दाँत दर्द होने लगा। वह जानता था जो उसके साथ बीती है; रिचर्ड के साथ भी, और लिटल लुई के साथ भी। उसने दीवार पर वर्गाकार स्थान को देखा, जो उन आदमियों की याद में एक धब्बा-सा बनकर रह गया था। उनके साथ जो बीती थी, उसे भी वह जानता है। क्योंकि इतिहास ने एक बार तो ऐसा पलटा खाया ही था कि जिसमें मानव को अधिक सम्मानित ढंग से जिंदगी बसर करने का वचन दिया गया था। किन्तु अब वह जाता रहा है। तो फिर यह चर्चा और सारा ढोंग किस-लिए है? यदि मानव में से विनाश जैसी किसी वस्तु को जीवित रखा जा सकता है, तो बेचारी आरलोवा इस महान् विश्व की रिक्तता में कहीं-न-कहीं मिल ही जायगी। और जैसे वह कामरेड रुबाशोफ की ओर असहाय गाय की भांति निहार रही हो—रुबाशोफ, जो उसकी मूर्ति था, और उसी रुबाशोफ ने ही उसे उसकी मृत्यु तक पहुँचा दिया था।...उसके दाँत का दर्द और बढ़ने लगा।

"तुमने उस समय जो सार्वजनिक बयान दिया था, कहो तो पढ़कर सुनाऊँ?" इवानोफ ने पूछा।

"नहीं, धन्यवाद," रुबाशोफ ने कहा और उसे लगा कि उसका स्वर कुछ-कुछ रूखा हो गया है।

"जैसा कि तुम्हें याद है, तुम्हारा बयान, जिसे कोई भी स्वतः-स्वीकारिता कह सकता है, विरोधी पक्ष की कड़ी निन्दा और पार्टी तथा नं० १ की ओर बिना शर्त के लगावट की घोषणा के शब्दों के साथ समाप्त होता था।"

"इसे यहीं छोड़ दो," रुबाशोफ ने भर्राई-सी आवाज़ में कहा। "तुम जानते हो, किस तरीके से यह बयान तैयार किया गया था। यदि नहीं, तो तुम्हारे लिए यह अच्छा ही है। परमात्मा के लिए, इस दुःख-गाथा को यहीं छोड़ दो।"

"अब तो लगभग खत्म ही समझो," इवानोफ ने कहा। "अब से दो साल पहले का ही वक्त तो बाकी रह गया है। इन दो बरसों में तुम सरकारी एल्यूमीनियम ट्रस्ट के बड़े अफसर थे। एक बरस हुआ, जबकि विरोधी पक्ष

का तीसरा मुकदमा हो रहा था, तो उसके मुख्य अभियुक्त ने किसी सिलसिले में बार-बार अप्रकट रूप से तुम्हारा नाम लिया था। कोई ठोस बात तो पता नहीं चली, लेकिन पार्टी के सदस्यों में तुम्हारे खिलाफ शक पैदा हो गया। तुमने एक नया सार्वजनिक बयान दिया, जिसमें तुमने पार्टी नेता की नीति के प्रति नये सिरे से स्वीकारिता की घोषणा की और विरोधी पक्ष की बर्बरता की अधिक कठोर शब्दों में निन्दा की।······यह छः मास पहले की बात है। और आज तुम मानते हो कि बरसों पहले ही तुम पार्टी नेता की नीति को ग़लत और नुकसान देने वाली समझते थे।"

वह रुका और कुरसी पर कुछ ज्यादा आराम से बैठ गया। उसने आगे कहा, "इसलिए तुम्हारी भक्ति की पहली घोषणा किसी निश्चित ध्येय की साधन-मात्र थी। मैं तुमसे माफी चाहता हूँ कि मैं तुम्हें नैतिकता का उपदेश नहीं दे रहा। हम दोनों समान अवस्थाओं में ही बड़े हुए हैं और इन मामलों पर हमारी राय भी समान ही रही है। तुम यह मानते थे कि हमारी नीति ग़लत थी और तुम्हारी सही। उस समय इस बात को प्रकट रूप में कह देने के मानी थे कि तुम पार्टी से निकाल दिये जाते। और उसका फल यह होना था कि जिन अपने विचारों को लेकर तुम काम करना चाहते थे, वह असम्भव हो जाते। इसीलिए तुम्हें उस नीति के अनुकूल बनने के लिए घोषणाएँ करनी पड़ीं कि जिन्हें तुम अपनी राय में ठीक समझते थे। बेशक, यदि मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं भी यही करता। यहाँ तक तो हर एक बात ठीक ही है।"

"और उसके आगे क्या है?" रुबाशोफ ने पूछा।

"जो मैं समझ नहीं सक रहा," उसने मुस्कराते हुए कहा, "वह यह है। तुम अब खुल्लमखुल्ला मानने लगे हो कि बरसों से तुम्हारी ये मान्यता थी कि हम क्रान्ति को नष्ट कर रहे हैं, और उसी क्षण में तुम इस बात से भी इनकारी हो कि तुम किसी विरोधी दल में शामिल थे और तुमने हमारे विरुद्ध कोई मंत्रणा की। क्या तुम मुझसे यह आशा करते हो कि मैं यह विश्वास कर लूँ कि तुम उस दशा में भी हाथ-पर-हाथ रखे बैठे थे,

जब कि तुम्हारी मान्यता के अनुसार हमने देश और पार्टी को विनाश की ओर ढकेला।"

रुबाशोफ ने अपने कंधों को उमेठते हुए कहा, "शायद मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ और खत्म हो चुका हूँ।······किन्तु जैसा चाहो, यकीन करो।"

इवानोफ ने एक और सिगरेट सुलगाई। उसका स्वर गंभीर और तेज-सा हो गया—"क्या मैं यह यकीन कर लूं कि तुमने आरलोवा को कुरबान कर दिया और अपनी चमड़ी बचाने के लिए तुम उन सब आरोपों से इनकारी हो गए?"

रुबाशोफ चुप था। काफ़ी देर तक दोनों चुप रहे। और तब इवानोफ अपनी मेज़ पर काफ़ी झुककर बोला, "मैं तुम्हें समझ नहीं सक रहा। आध ही घंटा पहले तुमने हमारी नीति के विरुद्ध एक तकरीर की है और उसमें हम पर भीषण आरोप लगाये हैं। तुम जानते ही हो, उसका एक अंश भी तुम्हारा काम तमाम करने के लिए काफ़ी हो सकता है। और अब तुम ऐसी साधारण-सी युक्ति से इनकारी हो कि तुम विरोधी पक्ष में शामिल थे, हालांकि उसके लिए हमारे पास पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं।"

"निश्चय ही," रुबाशोफ ने कहा, "अगर तुम्हारे पास सब सबूत हैं तो तुम मुझसे ही 'हाँ' क्यों कराना चाहते हो? ज़रा यह तो बताओ, किस बात के सबूत हैं।"

इवानोफ धीरे से बोला, "अन्यों के अतिरिक्त, हमारे पास इस बात के सबूत हैं कि तुमने नं० १ की जान लेने की निर्धारित चेष्टा की।"

"इसके बदले मैं भी तुमसे एक सवाल करना चाहता हूँ। क्या सच ही तुम इस पागलपन में यकीन करते हो या ये महज़ तुम्हारा खयाल ही है?"

"मैंने कहा न, हमारे पास सबूत हैं। और स्पष्ट सुनो, कुछ लोगों ने स्वीकार किया है। और इससे भी ज्यादा साफ कह दूँ, उसी आदमी ने माना है जिसने तुम्हारी प्रेरणा पर ही यह चेष्टा करनी थी।"

"तुम्हें बधाई," रुबाशोफ ने कहा, "उसका नाम क्या है?"

इवानोफ मुस्कराता रहा और बोला, "यह असंगत-सा प्रश्न है।"

"क्या मैं स्वीकृति-पत्र पढ़ सकता हूँ ? अथवा उस आदमी से मुकाबला करा सकते हो ?"

इवानोफ मुस्कराया। उसने दोस्ती के नाते सिगरेट का धुँआ रुबाशोफ के मुँह पर फेंका। रुबाशोफ को अच्छा तो न लगा, किन्तु वह स्थिर बैठा रहा।

"ज़हर का तुम्हें याद है ?" इवानोफ धीरे से कहने लगा। "मेरा खयाल है, मैं पहले भी उसकी बाबत तुमसे चर्चा कर चुका हूँ। अब हमने एक-दूसरे की स्थिति को अदल-बदल लिया है; आज तुम हो, जो अपने को खड़ी चट्टान से सिर के बल गिरा लेना चाहते हो। किन्तु इसमें मैं सहायक नहीं हूँ। तब तुमने मुझे यह मानने के लिए लाचार कर दिया था कि आत्म-हत्या तो बाग़ियों का-सा विचार है। अप की बार मैं भी अब यह चाहता हूँ कि तुम ऐसी आत्महत्या करने में सफल न हो सको। और तब हम दोनों ही बराबर हो जायँगे।"

रुबाशोफ चुप था। वह सोच रहा था, इवानोफ झूठ कह रहा है या सच। उसी समय उसमें अजीब-सी इच्छा जागी कि मैं दीवार पर के वर्गाकार धब्बे को अपनी अँगुलियों से छू लूँ। उसे खयाल हुआ, 'अपने ज्ञान-तंतुओं का। फिर उसे लगा, अनंत पीड़ा-सी हो रही है। काले टाइलों पर कदम-कदम चलने का; अर्थहीन बड़बड़ाहट कर रहा हो; चश्मे को बाँह पर रगड़ने की क्रिया—अरे, ये सब बातें मैं फिर किये जा रहा हूँ।

और तब वह सस्वर बोला, "मैं यह जानने को उत्सुक हो रहा हूँ कि तुमने मेरे छुटकारे का कौन उपाय किया है। जिस ढंग से अब तक तुमने मेरा बयान लिया है, वह तो सर्वथा विपरीत नजर आता है।"

इवानोफ जैसे खुलकर मुस्करा उठा और गहरी आँखों से देखता हुआ मेज़ के पार तक चला गया। "अरे ओ बेवकूफ," उसने कहा और रुबाशोफ के कोट के बटन को मुट्ठी में ले लिया, "मेरी इच्छा थी कि तुम आखीर में ही समझो और चेतो। यदि मैं ऐसा न करता तो तुम ग़लत समय पर फट

जातें। क्या तुम देखते नहीं कि मेरे पास कोई मुंशी भी मौजूद नहीं ?"

उसने एक सिगरेट उठाई और रुबाशोफ का कोट छोड़े बिना ही उसके मुँह में ठोंस दी। कहा, "तुम तो बच्चों-सी बातें कर रहे हो—जैसे कोई प्यारा-प्यारा बच्चा हो। अच्छा तो अब हम एक छोटा-सा स्वीकृति पत्र बनाते हैं, और उसके बाद आज का काम समाप्त करेंगे।"

रुबाशोफ ने अपना कोट छुड़ा लिया और सख्ती के साथ चश्मे में से इवानोफ को देखा। "और इस स्वीकृति-पत्र में क्या होगा ?" उसने पूछा।

"स्वीकृति-पत्र में लिखा जायगा," उसने कहा, "कि तुम मानते हो कि अमुक वर्ष से तुम अमुक विरोधी दल में शामिल थे, किन्तु तुम दृढ़ता-पूर्वक इनकार करते हो कि तुमने हत्या के लिए कोई षड्यन्त्र रचा; बल्कि इसके विपरीत, जब तुम्हें विरोधियों की बर्बरतापूर्ण इस इच्छा का पता चला, तो तुम विरोधी दल से अलग हो गए।

जब से बातचीत चल रही थी, यह पहला ही मौका था कि रुबाशोफ भी मुस्कराया। "अगर इस बातचीत का यही उद्देश्य है," उसने कहा, "तो हम इस चर्चा को फौरन ही यहाँ खत्म कर सकते हैं।"

"जो मैं कह रहा था, मुझे वह कह लेने दो," इवानोफ ने धीरज से कहा, "मैं जानता था कि तुम चौंक जाओगे। जरा, इस मामले के नैतिक या भावुक पहलू पर भी, आओ विचार कर लें। तुम जो कुछ मान लोगे, उससे किसी का भी अहित नहीं होता, पहली तो यह बात है। और दूसरी, तुम जानते ही हो कि सारा-का-सारा दल तुमसे बहुत पहले पकड़ा जा चुका था, और उनमें से आधे बक भी चुके हैं। और बाकियों से, तुम्हारे इस साधारण से स्वीकृति-पत्र के आधार पर, अन्य बातें मनवा ली जा सकती हैं······मैं समझता हूँ कि तुम मुझे समझ गए होगे और साथ ही मेरी स्पष्टवादिता भी तुम्हें अखरेगी नहीं।"

"दूसरे शब्दों में, तुम स्वयं ही नं० १ के विरुद्ध रचे गए षड्यंत्र की कहानी में यकीन नहीं करते हो," रुबाशोफ ने कहा। "तो फिर तुम मुझे

उस भेद-भरे 'अ' के सामने क्यों करना चाहते हो कि जिसने वह कथित स्वीकृति-पत्र तुम्हें दिया है ?"

"इस पर कुछ और सोचो," इवानोफ ने कहा। "अपने को मेरी स्थिति में डालकर देखो; हमारी स्थितियां एक-दूसरे के विपरीत ही हैं, स्वयं ही उसका उत्तर निकाल देखो।"

रुबाशोफ कुछ क्षण सोचकर बोला, "मेरा मामला तुम अपने हाथ में लो, क्या ऊपर से यह हिदायत तुम्हें मिली थी ?"

"यह बहुत टेढ़ा-सा प्रश्न है। वास्तव में बात तो यह है कि अभी तक यह निश्चय नहीं हो सका कि तुम्हारा मामला शासन-प्रबन्ध-विभाग को सौंपा जाय या उसकी सार्वजनिक पेशी हो। तुम जानते ही हो कि राजनीतिक कैदियों की बहुसंख्या के मुकदमे शासन-प्रबन्ध-विभाग द्वारा ही निपटाये जाते हैं, यानी मतलब यह कि जो सार्वजनिक हित की दृष्टि से ठीक नहीं होते।.......अब यदि तुम्हारा मुकदमा इस विभाग के पास गया, तो तुम निश्चय ही मेरे अधिकार से बाहर हो जाओगे। इस विभाग के मुकदमे बन्द अदालतों में होते हैं और किसी हद तक संक्षिप्त भी। इनमें किसी के आमने-सामने होने या कराने जैसी कोई बात नहीं होती।......की जो दशा हुई थी, उसे सोच लो।" इवानोफ ने तीन-चार नाम गिनाये और दीवार पर के वर्गाकार धब्बे पर से नजर फिरा ली। और जब दोबारा उसने रुबाशोफ को देखा, तो उसे लगा, कि उसके चेहरे पर अभूत-सी कठोरता है और आँखों में दृढ़ता है। उसने रुबाशोफ को ऐसे देखा कि जैसे वह उसे न देखकर कुछ दूरी पर की दूसरी ही चीज को देख रहा हो।

इवानोफ ने अपने साँझे मित्रों के दोबारा नाम गिनाये और कहा, "मैं भी उन्हें जानता हूँ और तुम भी, किन्तु मुझे यह कहने की इजाजत दोगे और जैसा कि हमारा यकीन भी है कि तुम्हारा और उनका ध्येय क्रान्ति को नष्ट करना था; क्योंकि तुम लोग विरोधी तो थे ही। यही है महत्वपूर्ण प्रश्न। और उसके मार्गों का अनुमान तुम कर ही सकते हो। हम अपने को

इन अदालती झंझटों में डालना पसन्द नहीं कर सकते। और क्या तुमने अपने समय में ऐसा किया था?"

रुबाशोफ चुप रहा।

"यह सब निर्भर करता है," इवानोफ कह रहा था, "कि वे तुम्हारा सार्वजनिक मुकदमा करें और तब भी शर्त यह है कि तुम्हारा मामला मेरे हाथ में रहे। तुम जानते ही हो कि सार्वजनिक मुकदमों के लिए क्या दृष्टिकोण रखा जाता है। मुझे साबित करना होगा कि तुम्हारे अंदर किसी खास बात की दिलचस्पी है। और उसके लिए मुझे चाहिए तुम्हारा भेद, जिसमें आंशिक स्वीकृति भी हो। यदि तुम शहीद ही बनना चाहते हो और तुम यह जतलाना चाहते हो कि ऐसी कोई बात ही नहीं कि जिसके कारण तुम्हारा कुछ बिगड़ सकता है, तो यह समझ लो कि 'अ' की मान्यता के आधार पर ही तुम्हारा खात्मा हो सकेगा। और यदि दूसरी ओर तुम आंशिक स्वीकृति-पत्र दे दोगे, तो उसके आधार पर अधिक जांच की गुंजाइश हो सकती है। इसी आधार पर मैं आमना-सामना कराने की मंजूरी भी ले सकूंगा, और तब तुम्हें निश्चित सीमा में दोषी करार देने का ढंग किया जा सकेगा। इस प्रकार कर लेने से मुझे विश्वास है, दो-तीन बरस लगेंगे रिहाई में और तब ५ बरस के अन्दर-अन्दर तुम फिर पार्टी में आ जाओगे। सो अब उत्तर देने से पहले भली प्रकार सोच लो।"

"मैंने पहले ही इस पर विचार कर रखा है," रुबाशोफ ने जल्दी से कहा, "मुझे तुम्हारा समाधान पसन्द नहीं। युक्तियुक्त ढंग से, शायद, तुम ठीक ही होगे। किन्तु ऐसी युक्तियां मैंने बहुत सुन रखी हैं। मैं घिस-पिट चुका हूँ, और अब ऐसे खिलवाड़ और नहीं करना चाहता। कृपा कर मुझे मेरी कोठरी में पहुँचवा देने का कष्ट करें।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा," इवानोफ ने कहा। "मुझे भी आशा नहीं थी कि तुम एकाएक मान ही जाओगे। इस प्रकार की बातचीत का उलटा असर तो होता ही है। तुम्हें १५ दिन की मोहलत है। इस बीच जब चाहो, तुम अपने को यहाँ लाने के लिए कह भी सकते हो या अपनी इच्छा

लिखकर भेज सकते हो। और मुझे यकीन है, तुम इनमें से एक-न-एक काम करोगे ही।"

रुबाशोफ खड़ा हो गया; इवानोफ भी। उसने घण्टी का बटन दबाया। वार्डर के आने तक भी प्रतीक्षा में खड़े-खड़े इवानोफ ने कहा, "चन्द महीनों की बात है, तुमने अपने आखिरी लेख मे कहा था कि आगामी दस बरसों में दुनिया के भाग्य का निर्णय हो जायगा। क्या तुम वह देखने के लिए जीते नही रहना चाहते?"

उसने रुबाशोफ की ओर मुस्कराते हुए देखा। बरामदे मे किसी के पहुँचने की आवाज हुई; किवाड़ खुला। दो वार्डर दाखिल हुए और उन्होने सैल्यूट बजाया। बिना कुछ बोले, रुबाशोफ दोनों के बीच हो गया, और कोठरी की ओर सब रवाना हो गए। सब बरामदे सुनसान थे; किसी-किसी कोठरी से खर्राटों की आवाज आ रही थी। सारी इमारत पीली-सी, हलकी-सी बिजली की बत्तियों से ढकी हुई थी।

दूसरी पेशी

रुबाशोफ की डायरी का सार : : कैद का पन्द्रहवां दिन

: १ :

............जब अन्त तक हम पहुँच जाते हैं, तो उसी अन्तिम को हम सत्य कहते हैं। और इस अन्तिम सत्य के निष्कर्ष तक पहुँचने से ठीक पहले की बात तो सदैव असत्य होती है। जिस किसी को सही प्रमाणित किया जायगा, वह अन्त में ग़लत दीखता है और उसके समक्ष वह हानिकर ठहरता है।

किन्तु किसे सही साबित किया जायगा, यह तो बाद में पता लगेगा। और इस बीच, उसे इतिहास से मुक्ति पा लेने की आशा में अपना सर्वस्व दे डालना होगा। जो कोई ग़लत होगा, उसे उसका फल मिलेगा; जो कोई सही होगा, वह मुक्त हो सकेगा। यही हमारा कानून था।

इतिहास में हमने पढ़ा है कि सत्य की अपेक्षा बहुधा झूठ सफल हो जाता है। मनुष्य स्वभावतः आलसी है और उसे उन्नति-पथ की ओर बढ़ने के लिए चालीस-चालीस बरस तक रेगिस्तान की ख़ाक छाननी पड़ती है। और उस रेगिस्तान में उसे आशा और निराशा का सामना करना होता है। कई-कई बार वह डर जाता है और कई-कई

बार उसे जैसे सान्त्वना-सी मिल जाती है। ऐसा इसलिए तो होता है कि वह कहीं समय से पूर्व ही निश्चल न हो जाय।

हमने औरों की अपेक्षा तीखी नज़र से इतिहास को पढ़ा है। हमारी तर्क-विषयक दृढ़ता औरों से जुदा है। हम जानते हैं कि इतिहास में गुणों को स्थान नहीं और उसमें अपराधी दंडविहीन रह जाते हैं; किन्तु प्रत्येक ग़लती का दुष्परिणाम तो सातवीं पीढ़ी तक भी चला जाता है। इसीलिए हमने अपनी शक्तियों को ग़लतियां रोकने और उसके बीज को नष्ट करने में केन्द्रित किया। इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं जबकि मानव के भविष्य को इतनी शक्ति के साथ हथिआया गया हो, जितना कि हमने। हमारी धारणा रही है कि प्रत्येक ग़लत विचार एक घोर अपराध है कि जो भावी संतति की ओर किया जाता है। इसीलिए हम ग़लत विचारों के लिए भी मृत्यु-दंड ही देते थे। हमें पागल समझा जाता था, क्योंकि हम प्रत्येक विचार को उसके अन्तिम परिणाम तक देख जाते थे और उसी के अनुसार कार्यवाही करते थे। हमारा खोजियों के साथ मुकाबला किया जाता था, क्योंकि उन्हीं की तरह हम व्यक्ति के भावी जीवन की जिम्मेदारी के बोझ को अपने ऊपर महसूस करते थे। हमारी धारणा थी कि न केवल मनुष्य के कामों में बुराई के बीज बोये हैं बल्कि उनके विचारों में भी। हमने व्यक्ति के अस्तित्व को कभी नहीं माना। हमें प्रत्येक बात को उसके अन्तिम निर्णय तक ले जाना होता था। हमारी धारणा थी कि व्यक्ति की ज़रा-सी भूल समाज के लिए भयंकर हो सकती है। इस प्रकार हम पारस्परिक विनाश के लिए अधिकार-सम्पन्न हो गए थे।

मैं भी उनमें से एक था। मैंने जैसा समझा, वैसा ही कर दिया। मैंने उनका नाश किया, जिन्हें मैं चाहता था और जिन्हें नहीं चाहता था, उन्हें मैंने शक्ति-सम्पन्न किया। और इतिहास ने मुझे वहीं ला खड़ा किया है जहाँ मैं था; उसने मुझे जो पूँजी दी थी, वह मैं ख़त्म कर

चुका हूँ। यदि मैं ठीक ही था, तो मुझे पछताना नहीं; और यदि मैं ग़लत था, तो मुझे उसका फल भोगना ही होगा।

किन्तु भविष्य ने जिस सचाई का निर्णय करना है, उसका निर्णय वर्तमान कैसे कर सकता है ? हम देवताओं के गुणों बिना ही उनके जैसे काम कर रहे हैं। आरम्भ में हमारा दृष्टि-बिन्दु तो एक ही था, किन्तु नतीजे हमने अलग-अलग निकाले। प्रमाण द्वारा प्रमाण को रद्द कर दिया गया और अन्त में हमें किसी एक के तर्क को ही विश्वस्त धारणा यानी मत मानना पड़ा। और यही है वह घातक स्थिति।

हमने जहाज़ के पाल तो सब गिरा दिये हैं और एक ही लंगर का हमें साहस रह गया है, यानी एक ही व्यक्ति पर हमने पूर्ण विश्वास जमा लिया है।

नं० १ को अपने ऊपर विश्वास है; वह अडिग है, वह कठोर है, वह हठी है। उसी के अँगूठे-तले जैसे सबकी गरदन दबी है। पिछले कुछ बरसों से मुझ में जैसे वह शक्ति नहीं रही।........

सचाई तो यह है—अपने निश्चय की ओर मुझमें भरोसा नहीं रहा। इसलिए मैं नष्ट-सा हो गया हूँ।

: २ :

रुबाशोफ की पहली पेशी के दूसरे दिन इवानोफ और उसका सहयोगी ग्लैटकिन रात के खाने के बाद भोजनशाला में बैठे थे। इवानोफ थका हुआ था; उसने अपनी नकली टाँग को दूसरी कुरसी पर फैला लिया और अपनी पोशाक के बटन खोल लिये। उसने गिलासों में शराब डाली और ग्लैटकिन को आश्चर्यपूर्ण नेत्रों से देखा। ग्लैटकिन अकड़ी-सी पोशाक में तनकर बैठा था। उसके हिलने-डुलने से पोशाक में से खर-खर, सर-सर की आवाज़ आ रही थी। वह भी थका तो होगा ही, लेकिन उसने रिवाल्वर तक की पेटी भी नहीं उतारी थी। ग्लैटकिन ने गिलास खाली कर दिया। उसके घुटे सिर की चोट का निशान लाल-सा दीख रहा था। उन्हें छोड़, भोजनशाला

में केवल तीन और अफसर थे; दो शतरंज खेल रहे थे और तीसरा देख-भर रहा था।

"रुबाशोफ का क्या होने जा रहा है?" ग्लैटकिन ने पूछा।

"वह कुछ ग़लत ही रास्ते पर है," इवानोफ ने उत्तर दिया, "किन्तु वह हमेशा की तरह अब भी तर्कशील ही है। इसलिए काबू में आ ही जायगा।"

"यह मैं यकीन नहीं करता," ग्लैटकिन ने कहा।

"सोचकर अपने तर्कपूर्ण नतीजे पर पहुँचेगा तो उसे झुकना ही होगा। इसलिए आवश्यक यही है कि उसे शान्त रहने दिया जाय। उसकी शान्ति भंग न की जाय। मैंने उसे कागज़, पैंसिल और सिगरेटों की मंज़ूरी दे दी है और उनसे वह जल्दी ही सोच सकेगा।"

"मैं यह तरीका ग़लत समझता हूँ," ग्लैटकिन ने कहा।

"कुछ दिन हुए, मेरा यकीन है, तुम्हारी उसकी झड़प हो गई थी।"

ग्लैटकिन को वह दृश्य याद आया जब कि रुबाशोफ खड्डी पर बैठा था और फटी जुराबों पर जूता पहन रहा था। "उसकी कोई बात नहीं," उसने कहा, "उसका व्यक्तित्व कोई माने नहीं रखता। मैं तो इस तरीके को ग़लत समझता हूँ। इस तरीके से वह कभी भी काबू में नहीं आयगा।"

जब भी रुबाशोफ को काबू में किया जायगा," इवानोफ ने कहा, "तो बुज़दिली से नहीं, बल्कि तर्क से। उसके साथ सख्ती करने का कोई फायदा नहीं। वह उस मिट्टी का बना हुआ है कि जिसे ज्यों-ज्यों चोट लगाई जायगी, त्यों-त्यों वह कड़ी होती जायगी।"

"यह तो कहने की ही बात है," ग्लैटकिन ने कहा। "मनुष्य उतनी ही यंत्रणा सह सकता है, जितनी उसकी शारीरिक सहन-शक्ति बरदाश्त करती हो, उसके बाद नहीं। उससे बाहर जाने वाला मैंने कोई नहीं देखा। अनुभव यह जतलाता है कि प्रकृति ने मनुष्य की नसों में विरोध की सीमित शक्ति पैदा कर रखी है।"

"मैं तुम्हारी इस बात को ऐसे मान जाने वाला नहीं हूँ," इवानोफ ने

हँसते हुए कहा । "जो भी हो, तुम्हारा भी अपना एक मत है ।"

पल-भर को उसकी हँसती हुई निगाह ग्लैटकिन की खोपड़ी के घाव पर रुकी । इस घाव की कहानी सबको मालूम थी । गृहयुद्ध के दिनों में, जब ग्लैटकिन शत्रुओं के हाथ पड़ गया, तो उन्होंने उसके हाथ-पाँव बाँध दिये और उसकी खोपड़ी पर एक मोमबत्ती जला कर जमा दी । ग्लैटकिन को वह बका लेना चाहते थे; और उससे कोई सूचना ले लेने के लिए उसके साथ ऐसी कठोरता की थी । चन्द घंटों बाद उसी के साथियों ने उस जगह पर फिर अधिकार कर लिया था और उसे बेहोशी की हालत में पड़ा पाया । मोमबत्ती जल चुकी थी; ग्लैटकिन चुप ही रहा ।

उसने इवानोफ को भावहीन नेत्रों से देखा । "यह तो महज़ बात-ही-बात है," उसने कहा । "मैं नहीं बका, इसलिए कि मैं बेहोश हो गया था । यदि एक मिनट भी और मैं होश में रह जाता तो बक जाता । यह तो केवल शारीरिक शक्ति की बात है ।"

उसने गिलास को खाली किया और ऐसा भाव दिखाया कि बड़ा अक्लमन्द हो । उसने खाली गिलास मेज़ पर रखते हुए कहा, "जब मैं होश में हुआ तो मुझे ऐसा खयाल हुआ कि मैं सब बक गया हूँ । किन्तु मेरे दो साथियों ने जो मेरे ही साथ बरी हुए थे, बताया कि तुम चुप रहे थे । सो मुझे खूब इनाम मिला । वास्तव में है यह सारी शारीरिक शक्ति की बात; बाकी तो महज़ परियों की कहानी ही समझो ।"

इवानोफ बहुत पी रहा था । पहले भी वह काफी पी चुका था । उसने अपने कन्धों को उमेठा ।

"कब से तुमने इस शारीरिक शक्ति के सूत्र की रचना की है ? यह सब होने पर भी, पहले वर्षों में तो ये तरीके मौजूद नहीं थे । उस समय तो इनमें भी बहुत-सा मायाजाल था । हम भी दण्ड आदि हटाने के पक्षपाती थे । ये सब व्यर्थ की बकवाद है ।"

"लेकिन मैं तो इसमें यकीन नहीं करता," ग्लैटकिन ने कहा । "तुम हर जगह बुराइयाँ ही निकालते हो । सौ बरस ठहरो, हमारे यहाँ भी वह सब होगा ।

लेकिन पहले हमें आगे तो बढ़ने दो। और यह काम जितनी जल्दी हो, उतना अच्छा है। भ्रम तो केवल यही है कि हम यकीन न कर ले कि वह समय आ गया है। जब मैं भी पहले-पहले यहाँ आया था, तो मैं भी इसी भ्रम में था। हम में से ऊपर से लेकर नीचे तक बहुतों का यही हाल था। हम एकाएक फूलों से लहलहाते बागों का निर्माण कर लेना चाहते थे। और यही थी हमारी भूल। सौ साल बाद ही हम अपराधी को तर्क और सामाजिक भावनाओं से प्रेरित कर सकेंगे। आज तो हमें, अभी उसके शारीरिक ढांचे को ठीक बनाना है, और यदि आवश्यक हो, तो उसे शारीरिक और मानसिक रूप में नष्ट कर देना है।"

इवानोफ को लगा कि ग्लैटकिन ज्यादा पी गया है। किन्तु उसकी स्थिर और भावहीन मुद्रा को देखकर उसका मन बदला। इवानोफ ने कहा, "मतलब की बात तो यह है कि मै छिद्रान्वेषी हूँ और तुम उपदेशक।"

ग्लैटकिन कुछ देर चुप रहकर बोला, "कई बरस की बात है। जिरह के लिए एक किसान मेरे सामने पेश किया गया। यह, तुम्हारे कहे मुताबिक, उन दिनों की बात है, जब हम बागो में यकीन करते थे। एकदम नरमी और मनुष्यता के नाते मैने उससे सवाल पूछे। किसान ने अपनी पैदावार को कही गाड़ दिया था। यह उन दिनों की बात है, जब शुरू-शुरू में जमीनों की पैदावार को साँझा बनाने का आन्दोलन हुआ था। मैं बड़ी शिष्टता से उसके साथ पेश आया। उसे समझाया कि 'बढ़ती हुई आबादी के लिए हमें अन्न चाहिए, और हमें अपने उद्योगों की उन्नति के लिए उसे बाहर भी भेजना है। सो भई, बतला दो कि तुमने अन्न कहाँ दबाया है।' जब उस किसान को मेरे कमरे में लाया गया था, तो उसने जैसे अपना सिर कन्धों में छिपा लिया था, और उसे खयाल था कि उसे मार पड़ेगी। मैं ऐसों को अच्छी तरह पहचानता था, क्योंकि मैं भी तो गाँव का ही रहने वाला था। लेकिन जब पीटने के बजाय मैंने उसके साथ तर्क करना शुरू किया और उसके साथ बराबरी में बातें करने लगा, तो उसने मुझे बेवकूफ समझा। मैंने उसकी आँखों से यह भाँप लिया था। आध घंटे तक मैं उससे बातचीत

करता रहा, लेकिन बोलने की बजाय वह लगा नाक और कानों को छूने। मैं जान गया था कि वह इस चर्चा को मजाक समझ रहा है और मेरी बात का जवाब नहीं देता। फिर भी मैं बातचीत करता रहा। तर्क का उस पर क्या असर होता, वह तो सदियों के मानसिक अधरंग के कारण जैसे बहरे हो गए थे। फिर भी मैं नियमों के अनुसार ही उसके साथ पेश आता रहा। मुझे बिलकुल पता नहीं था कि कोई और भी उपाय हो सकते हैं।······

"उन दिनों, मेरे पास २० से ३० तक इस तरह के मामले आया करते थे। यही हाल मेरे साथियों का था। इन लोभी किसानों के कारण क्रांति के नष्ट होने का भय हो गया था। कार्यकर्ता अधपेट रह रहे थे। सब जिलों में भुखमरी का तूफान-सा आ गया था। जमा पूँजी के बिना हमारा शस्त्र-निर्माण का कार्य भी रुक गया था। हर महीने हम पर हमलों का भय बढ़ता ही जाता था। इन किसानों ने अपने भण्डार और आधी से अधिक पैदावार को दबा लिया था, जिसकी कीमत लगभग २ करोड़ थी। और जब हम उनसे जिरह करते थे, तो हम उन्हें 'नागरिक' कहकर संबोधित करते थे। और बदले में वे हमें नाक-कान को छू-छूकर बेवकूफ बनाने की कोशिश किया करते थे।

"इस आदमी की तीसरी पेशी रात के दो बजे हुई। इस बीच अठारह घंटे मैं पहले ही काम कर चुका था। उसे जगाया गया। वह बहुत गहरी नींद में था और जगाने पर जैसे कांप गया। इसी भयभीत दशा और खुमारी में वह अपने को खो बैठा और सब बक गया। तब से लेकर, मैं मुख्यतः रात को ही ऐसे आदमियों की जांच-पड़ताल करने लगा।······एक बार एक स्त्री ने मुझे शिकायत की कि उसे रात-भर मेरे कमरे के बाहर खड़ा रहना पड़ा तब जाकर उसकी बारी आई थी। उसकी टाँगें थकावट के कारण काँप रही थीं और पेशी के दौरान में उसे नींद आ गई। मैंने उसे जगाया, और वह नींद की खुमारी में ही सब बक गई। उसे पता भी न चला कि वह सब कुछ बता रही है; और उसके बाद पुनः सो गई। मैंने उसे फिर जगाया और तब वह सब मान गई और उसने खुशी-खुशी बयान

पर दस्तखत कर दिये। ताकि उसे सोने दिया जाय। किस्सा यह था कि उसके पति ने अपने खलिहान में दो मशीनगनें छिपा ली थीं। इसके अलावा वह अपने गाँव के किसानों को प्रेरणा करता था कि खेतों को जला दो क्योंकि उसने सपने में ईसा-विरोधियों को गाँव पर छापे मारते देखा है। यूँ तो उस किसान की पत्नी मेरे सिपाही की लापरवाही से ही रात-भर खड़ी रह गई थी, लेकिन भविष्य में इस लापरवाही को मैंने प्रोत्साहन दिया। इस के बाद तो, कई हालतों में ४८-४८ घंटे तक एक ही जगह पर आदमी को खड़ा रखा गया। जब इतनी सख्ती की जाती तो उनके कानों की मैल पिघलती और वे सीधे मुँह बात करने योग्य होते।......"

उस कमरे में जो दो आदमी शतरंज खेल रहे थे उन्होंने पहली बाजी खत्म करके दूसरी शुरू की। तीसरा काफी पहले जा चुका था। इवानोफ ग्लैटकिन की बातें सुनता हुआ उसे देख रहा था। उसकी आवाज़ पूर्व-सी स्थिर थी।

"मेरे साथियों ने भी ऐसे ही अनुभव किये थे। किसी नतीजे पर पहुँचने के लिए यही संभव उपाय है। नियमों का हमने भी पालन किया, यानी कैदी को हाथ तक नहीं लगाया। किन्तु यह तो हुआ ही कि उन्होंने साथी कैदियों की उस हालत को अपनी आँखों देखा, और वह आप-से-आप बकने लगे। इन दृश्यों का प्रभाव, कुछ तो मानसिक और कुछ शारीरिक होता है।"

"अच्छा चलो, काफी हो गया," इवानोफ ने कहा।

"तुमने पूछा था कि मैंने क्योंकर यह मन्त्र सीखा तो मैं उसकी व्याख्या ही दे रहा हूँ," ग्लैटकिन ने कहा। "जो बात इसमें ध्यान देने की है, वह है तर्क की आवश्यकता को दृष्टि में रखने की, अन्यथा कोई भी तुम्हारी ही तरह दोष निकालने लग जा सकता है। बहुत देर हो चुकी है और अब मुझे चलना चाहिए।"

इवानोफ ने अपना गिलास खाली किया और अपनी नकली टाँग को कुरसी पर स्थिर किया। कटी टाँग में उसे पुनः दर्द-सी महसूस हुई। उसे

अपने ऊपर खीझ हो रही थी कि उसने यह चर्चा क्यों शुरू की।

ग्लैटकिन बिल के पैसे दे चुका तो पूछा, "रुबाशोफ का अब क्या करना है?"

"मैं तुम्हें अपनी राय बता चुका हूँ," इवानोफ ने कहा। उसे शान्ति में ही छोड़ देना चाहिए।"

ग्लैटकिन खड़ा था। उसके बूट चर-चर कर रहे थे। वह उस कुरसी के पास खड़ा था, जिस पर इवानोफ ने टाँग रखी हुई थी।

"मैं उसके पुराने गुणों का प्रशंसक हूँ," उसने कहा, "लेकिन आज वह उतना ही नुकसान पहुँचा रहा है, जितना कि मेरा वह लोभी किसान। और किसी सीमा तक तो यह अधिक खतरनाक है।"

इवानोफ ने ग्लैटकिन को सिर से पाँव तक देखते हुए कहा, "मैंने उसे विचार करने के लिए पन्द्रह दिन का समय दिया है। जब तक वह समय खत्म नहीं हो जाता, मैं उसे शान्ति में पड़े रहने देना चाहता हूं।"

इवानोफ अफसराना लहजे में बोल रहा था। ग्लैटकिन उसके अधीन था। उसने सैल्यूट किया और चरचराते बूटों के साथ वह भोजनशाला से चला गया।

इवानोफ बैठा रहा। उसने एक और गिलास पिया। तब सिगरेट जलाई। कुछ देर बाद वह खड़ा हो गया और शतरंज का खेल देखने की ओर बढ़ा।

: ३ :

पहली पेशी के बाद से, रुबाशोफ के जीवन का स्तर काफी ऊँचा हो गया था। उससे अगले ही दिन सबेरे बूढ़ा वार्डर उसे कागज, पैन्सिल, साबुन और तौलिया दे गया था। उसके साथ ही उसने रुबाशोफ को उस नकदी के वाऊचर दिये, जो गिरफ्तारी के समय रुबाशोफ के पास थी। वार्डर ने बताया कि अब वह उन वाऊचरों से तम्बाकू भी ले सकता है और कैदी भोजनशाला के अतिरिक्त भोजन भी मंगा सकता है।

रुबाशोफ ने कुछ सिगरेट और खाना लाने को कहा। बूढ़े वॉर्डर ने रुबाशोफ का आदेश सुना और आज्ञाकारी की भाँति लेने चल दिया। तभी उसे ख्याल हुआ कि जेल के बाहर से डाक्टर को बुलाया जाय। लेकिन उसके दाँत में उस समय दर्द नहीं था। सो वह चुप रह गया।

सेहन से बर्फ हटाई जा चुकी थी और कैदियों के कारण यह सिलसिला टूट गया था। ओंठ-फटा और उसका साथी केवल दस मिनट के लिए टहलने निकलते थे, क्योंकि डाक्टर ने उनके लिए खास हुक्म दे रखा था। सेहन में आते और वहाँ से जाते समय दोनों ही बार ओंठ-फटा रुबाशोफ की खिड़की को झाँकता।

और इधर जब रुबाशोफ न ही कुछ लिख रहा होता था और न ही कोठरी में टहल रहा होता था, तो वह कैदियों की कसरत देखने के लिए खिड़की के पास जा खड़ा होता। बारह-बारह कैदी एक साथ सेहन में लाये जाते थे और हरेक दस-दस कदम के फासले पर रखकर गोला-सा बना लिया जाता था। गोले के बीच चार अफसर खड़े रहते थे, जो देखते थे कि कोई कैदी बात न करे। बस, कैदी केवल २० मिनट तक कदम-कदम चल सकते थे। तब कैदियों को दाईं ओर से उनकी कोठरियों में भेजने के लिए निकाल दिया जाता था और बाईं ओर से बारह कैदियों का नया दल दाखिल हो जाता था। इसी तरह सब कैदियों के लिए यह क्रम जारी रहता।

पहले कुछ दिन तक रुबाशोफ जानी-पहचानी सूरतों को देखने की टोह में रहा, किन्तु उसे कोई न मिला। इससे जैसे उसे बहुत सांत्वना मिली। वह भूत और भविष्य को समक्ष रखते हुए अपने लिए निर्णय कर लेने में व्यस्त था। इवानोफ ने जो समय दे रखा था, उसमें अभी १० दिन बाकी थे।

वह उस निर्णय पर पहुँचने के लिए लिखता रहता था, और दिन में एक या दो घंटों से अधिक तक लिखते रहने की उसमें सामर्थ्य भी नहीं थी। बाकी वक्त उसका दिमाग़ इस लिखाई के अतिरिक्त अन्य कामों में लगा रहता।

रुबाशोफ को हमेशा यह यकीन रहा है कि वह अपने-आपको बहुत

अच्छी तरह जानता है। 'प्रथम पुरुष-एक वचन'-जैसी घटना की बाबत उसे किसी प्रकार का भ्रम भी नहीं। इस विषय में वह पक्षपात-रहित होकर यकीनी तौर पर कह सकता है कि उसने किसी भावुकता-विशेष के बिना ही कतिपय प्रवृत्तियों के साथ इस घटना को अपना लिया था। और अक्सर लोग स्वीकारने में अनिच्छुक होते हैं। अब, जिस वक्त वह अपना सिर खिड़की के सहारे रखकर खड़ा हो जाता था, एकाएक तीसरे काले टाईल पर रुक जाता, तो वह ऐसी-ऐसी बातें जान लेता, जिसकी उसे आशा भी नहीं होती। उसने जान लिया था कि वे बोलने के तरीके, जिन्हें गलत संज्ञा देकर 'स्वतः-सम्भाषण' का नाम दिया गया है, वास्तव में एक खास किस्म के संवाद हैं। ये संवाद ऐसे हैं, जिनमें एक पक्ष तो चुप रहता है और दूसरा, व्याकरण के सब नियमों के विपरीत अपने को 'मैं' की बजाय 'तुम' से सम्बोधित करता है। और वह चाहता है कि उसके विश्वास में वह अपनी जड़ जमा ले और साथ ही उसकी इच्छाओं की गहराई को भी नाप ले। इतने पर भी चुप रहने वाला पक्ष तो चुप ही रहता है। वह अपनी धारणा को छोड़ता नहीं और यहाँ तक कि समय और स्थान की सीमा में स्थिर होने से भी इनकारी हो जाता है।

और अब, रुबाशोफ को महसूस होता है कि स्वभावतः चुप रहने वाला पक्ष सम्बोधन के बिना ही, और बिना किसी जाहिरा छल के कभी-कभी बोलने लग जाता है। रुबाशोफ उसके स्वर को तो कतई नहीं पहचानता, किन्तु वह निहायत ईमानदारी के साथ चकित-सा होकर उस आवाज को सुनता है, और उसे पता लगता है कि उसी के ओंठ तो हिल रहे हैं। उसके इन अनुभवों में कोई छिपा भेद भी नहीं। ये तो एक तरह से खासे ठोस ढंग के हैं। इन्हीं धारणाओं या अनुभवों से धीरे-धीरे रुबाशोफ को यकीन हो गया था कि यह 'प्रथम पुरुष-एक वचन' निश्चय ही कोई व्यक्त अंग है, जो इन सब वर्षों में चुप्पी साधे रहा, किन्तु अब वह बोलने लग गया है।

रुबाशोफ इवानोफ के साथ हुई बातचीत के विवरण को न सोचकर इस अपनी खोज के विषय में अधिक तल्लीन रहता। उसने निश्चित रूप से सोच

लिया था कि वह इवानोफ के प्रस्ताव को नहीं स्वीकारेगा, और इस खिलवाड़ से इनकारी भी हो जायगा। उसे यह मालूम था कि यह करने से उसके जीने के दिन सीमित हो जायेंगे। साथ ही उसकी यही धारणा उसके विचारो का आधार भी बन गई थी।

उसने नं० १ के विरुद्ध प्रकट की गई व्यर्थ-सी कहानी पर कतई विचार नही किया। वह तो इवानोफ के व्यक्तित्व पर ज़्यादा दिलचस्पी के साथ विचार कर रहा था। इवानोफ ने कहा था कि उनका अभिनय सर्वथा अदल-बदल गया है; और निश्चय ही उसका कहना ठीक था। अपनी प्रगति की दृष्टि से इवानोफ और स्वयं वह जैसे जुड़वॉ थे। एक ही गर्भ से तो उनका जन्म नही हुआ था, तिस पर भी सॉझी धारणाओ की एक ही नाड़ी से उन्हे भोजन मिला था। पार्टी के तीव्र वातावरण ने उन्हे गोद मे खिलाया था और उसी ने प्रगति के पूर्व-वर्षों मे उनके जीवन को एक ढॉचे मे ढाला था। उनका समान हो नैतिक-सार था, समान ही फिलासफी थी, और समान ही विचार-धारा मे वह विचरते थे। उनकी स्थितियॉ विपरीत भी तो हो सकती थीं। तब रुबाशोफ डैस्क पर बैठता और इवानोफ उसके सामने; और उस स्थिति मे रुबाशोफ भी सम्भवतः वही युक्तियॉ पेश करता, जो इवानोफ ने भी की। इस खेल के नियम तो निश्चित ही थे।

दूसरो की दृष्टि से अपने को विचारने की पुरानी बीमारी फिर उस पर हावी हो गई। उसने अपने को इवानोफ की जगह बिठा लिया और अपने को इवानोफ की ऑखो से परखने लगा। उसने अपने को अभियुक्त की स्थिति मे देखा, जैसे एक बार उसने रिचर्ड और लिटल लुई को देखा था। उसने देखा यह गिरा हुआ रुबाशोफ, जो पुराने साथी की छाया-सा था। वह उस प्यार और घृणा के मिश्रण को समझ गया कि जिससे इवानोफ उसकी तरफ पेश आया था। परस्पर बातचीत के समय उसने बार-बार अपने से प्रश्न किया था कि इवानोफ सच्चा है या झूठा; क्या वह उसे जाल मे फॅसाने जा रहा है, अथवा सच ही वह उसे मुक्ति की राह दिखाना चाहता है। अब, अपने को इवानोफ की स्थिति मे रखकर उसने महसूस कर लिया कि

इवानोफ सच्चा था—उतना ही ज्यादा या उतना ही कम जैसा कि वह रिचर्ड और लुई की ओर स्वयं था।

इन विचारों ने भी 'स्वतः-सम्भाषण' का रूप धारण कर लिया था; किन्तु नई खोज के अनुसार; अर्थात् चुप रहने वाला पक्ष उसमें भाग ही नहीं लेता था। यद्यपि इन स्वतः-सम्भाषणों में जिस व्यक्ति को सम्बोधित करने का अनुमान किया जाता, वह गूंगा बना रहता और उसका अस्तित्व व्याकरण की परिभाषा के अनुसार 'प्रथम पुरुष-एक वचन' की सीमा में बँध जाता। सीधे प्रश्न और तर्कपूर्ण चिन्तन उसे बोलने की प्रेरणा नहीं करते; उसकी बड़बड़ाहट बिना किसी व्यक्त कारण के हो जाती है, और आश्चर्य है कि हमेशा उसके साथ ही दाँत में तेज़ दर्द का प्रहार भी हो जाता है। उसका मानसिक क्षेत्र कुछ ऐसे बेमेल और विकृत हिस्सों से बना जान पड़ता है, जैसे कि मरियम के आलिंगन के चित्र में दोनों जुड़े हाथ थे, जैसे लुई की बिल्लियाँ, जैसे 'सफाई करने आये हैं' गीत की ध्वनि अथवा एक विशेष वाक्य, जो आरलोवा ने एक विशेष अवसर पर बोला था। उसकी भाव-व्यञ्जना भी उसी तरह टूटी-टूटी-सी होती है—उदाहरणतः किसी को बाँह पर चश्मा रगड़ने के लिए लाचार होना, इवानोफ के कमरे की दीवार पर के वर्गाकार धब्बे को छू लेने की भावना, ओंठों का स्वतः ही हिलने लगना, जिनसे ऐसे अर्थहीन वाक्य निकलें, जैसे 'मैं अदा करूँगा' या 'मैं भुगतूंगा', और प्रमत्त-दशा में किसी को बीते जीवन की घटनाओं के दिवा-स्वप्नों का देखना।

रुबाशोफ ने कोठरी में चक्कर काटते हुए इस नई खोज की सत्यता को जाँचने की कोशिश की। और ऐसा करते समय उसने पार्टी पर 'प्रथम पुरुष-एक वचन' को लागू करने की धृष्ठता की। उसने इस संज्ञा को नाम दिया 'व्याकरण-सम्बन्ध कल्पना'। सम्भवतः चन्द हफ्ते ही उसके जीने के रह गए थे और 'तर्कपूर्ण निर्णय' पर विचार करने की उसमें सहज प्रेरणा जागी। किन्तु 'व्याकरण-सम्बन्धी कल्पना' का आखिरी हिस्सा ठीक वहीं से शुरू होता था कि जहाँ 'तर्कपूर्ण निर्णय' की इतिश्री होती थी। यह

स्पष्टतः उसके अस्तित्व का एक अंग था, जो तर्कपूर्ण मनन की पहुँच से बाहर रह जाता था, और तब जैसे कोई किसी पर छिपकर हमला कर देता हो—और उस हमले का रूप दंत-पीड़ा और दिवा-स्वप्नों का बन जाता हो। इस प्रकार, रुबाशोफ ने अपनी कैद का सातवां दिन बिताया, यानी पहली पेशी के बाद का तीसरा दिन, जिसमें उसे अपने बीते काल के अस्तित्व की याद हुई, अर्थात् उसका बेचारी आरलोवा के साथ सम्बन्ध, जिसे गोली का निशाना बना दिया गया था।

अपने विचारों की ओर इतना स्थिर होने पर भी, यह बता सकना कि वह किस सही क्षण में दिवा-स्वप्न देखने लग जाता था, उसी तरह असम्भव है कि जैसे किसी के सो जाने का क्षण बता सकना। इस सातवें दिन की सुबह के वक्त वह लिखता रहा था। फिर वह अपनी टाँगों को सीधा करने के लिए खड़ा हुआ था; और जब उसने ताले में खन-खन करती चाबियों के घूमने की आवाज़ सुनी, तभी वह जान सका कि दोपहर हो चुकी थी, और घंटों से वह कोठरी में इधर-उधर घूम रहा था। सम्भवतः, कई घंटों से उसने अपने कंधों पर कम्बल भी डाल रखा था। एक ही तरह की जूड़ियों के आते रहने के कारण वह काफ़ी निढाल हो चुका था और उस वक्त उसे महसूस होता था कि उसके दाँत की जड़ मसूड़े में दर्द करने जा रही है। उसने खोई-सी दशा में वह प्याला भी साफ़ कर दिया था, जो अर्दली उसके लिए लाये थे। उसने टहलना जारी रखा। रह-रहकर जो वार्डर उसे छेद में से देखता था, उसने देखा कि कँपकँपी के कारण उसके कंधे सिमटे-से हैं और उसके ओंठ हिल रहे हैं।

एक बार पुनः रुबाशोफ जैसे ट्रेड डैलिगेशन के अपने पुराने दफ्तर में जा पहुँचा। उसे लगा जैसे उसका कमरा आरलोवा के बड़े और ढीले-ढाले शरीर की अजीब-सी परिचित सुगन्ध से भरा हो। एक बार उसने फिर देखा, उसकी गरदन झुकी हुई थी और जो वह लिख रहा था, उसे वह झुकी-झुकी लिख रही थी। उसने सफेद ब्लाऊज़ पहन रखा था। उसकी गोल-गोल आँखें उस समय उसके पीछे-पीछे चलने लगती थीं, जबकि लिखाता-लिखाता

वह रुक जाता था। वह हमेशा ही सफेद ब्लाऊज़ पहनती थी—ठीक वैसे ही गले पर कढ़े फूलों वाला, जैसे रुबाशोफ की बहनें घर में पहने रहतीं। वह हमेशा घटिया-सी किस्म के बुन्दे पहनती थी और जब वह झुककर लिख रही होती, तो वह समानान्तर रूप से उसकी गालों पर लटके रहते थे। वह चंचल तो न थी, किन्तु स्थिर-सी थी, जैसे वह इसी काम के लिए ही पैदा हुई थी। और जब कभी रुबाशोफ काम की ज़्यादती से थक जाता तो आरलोवा की सूरत को देखकर जैसे वह हरा-हरा हो जाता। उसने लुई की घटना के एकाएक बाद ही में ट्रेड डैलिगेशन के लीडर के नये पद को ग्रहण किया था। मुस्तैदी से वह काम में जुट गया था और सी० सी० का आभार मान रहा था कि जिसने उसे ऐसा काम सौंप दिया। ऐसा बहुत ही कम होता था कि अन्तर्राष्ट्र के मुख्य आदमियों को दूतावासों में भेजा जाय। और नं० १ की ऐसा करने की एक खास मन्शा होती थी। वह नहीं चाहता था कि दो मुखिये कहीं एक ही स्थान पर इकट्ठे हो जायँ। अक्सर वह ऐसे दो को सदा जुदा-जुदा रखता था। और जबकि इकट्ठे होने का मौका हो ही जाता, तो वह दो विरोधी नीतियों के लोगों को बाहर भेजता।

इस नये ढंग की जिन्दगी को बना लेने के लिए रुबाशोफ को कुछ वक्त चाहिए ही था। उसे बड़ी खुशी थी कि अब उसके पास डिप्लोमैटिक (दूत सम्बन्धी) पासपोर्ट था, जो विशुद्ध रूप से उसी के नाम का था। उसे इस बात की भी खुशी थी कि अब वह स्वागत-जलसों में सादी पोशाक में जा सकता था और पुलिस के आदमी अटेन्शन करके खड़े होते थे और अब उसकी हिफाजत के लिए चलने वालों का लाव-लश्कर भी उसके साथ नहीं रहता। दूतावास से जुड़े हुए ट्रेड डैलिगेशन के कमरों का वातावरण पहले-पहल तो उसे कुछ अजीब-सा लगा। किन्तु उसे मालूम हुआ कि यहाँ की संकुचित दुनिया में हर-किसी को प्रतिनिधित्व रखना ही पड़ता है और उसे अपना खेल करना ही होता है, इसलिए वास्तविकता से मुँह मोड़े रहना असम्भव ही होता। जब दूतावास के प्रथम सैक्रेटरी ने रुबाशोफ के रहन-सहन के ढंग और उसकी पोशाक में परिवर्तन की ज़रूरत जतलाई, तो उसने साथीपन

या मज़ाकिया तौर पर नहीं कहा था, बल्कि उसके कहने का कुछ ऐसा छिपा-सा ढंग था कि उसके कारण रुबाशोफ हैरान-सा हो गया। उसे लगा जैसे उसकी धारणा रुबाशोफ के लिए अवरोधी-सी है। इसी प्रथम सैक्रेटरी ने क्रान्ति से पहले पार्टी की नौकरी में कुछ रुपया भी ग़बन कर लिया था।

रुबाशोफ के दफ्तर में बारह आदमी थे; हर एक का अलग-अलग दरजा था। वहाँ थे पहला और दूसरा असिस्टैंट, पहला और दूसरा हिसाब रखने वाला, सैक्रेटरी और असिस्टैंट सैक्रेटरी। रुबाशोफ का ख्याल था कि ये सब उसे डाकुओं के सरदार और राष्ट्रीय-वीर के बीच-बीच का सम्मान देते हैं। वे लोग उसके प्रति जरूरत से ज्यादा मान प्रदर्शित करते थे और उसे बहुत ऊँचा देखते थे। जब कभी दूतावास के सैक्रेटरी को किसी दस्तावेज़ की बाबत रिपोर्ट करनी होती थी, तो वह अपने को ऐसी सादी भाषा में व्यक्त करने की चेष्टा करता था, जैसे कोई किसी बच्चे अथवा अनजान को समझा रहा हो। रुबाशोफ की प्राइवेट सैक्रेटरी, आरलोवा ही एक थी, जो उसके लिए ऐसी परेशानी का कारण न थी, लेकिन आरलोवा की ओर वह एक बात जरूरी सोचता था—कि क्यों वह अपने अच्छे और सादे-से ब्लाऊज और स्कर्ट के साथ भद्दे-से ऊँची-ऊँची एड़ी के जूते पहनने लगी है।

यह बात लगभग तब से एक मास पहले की है, जबकि वह चर्चा करने के लहजे में पहले-पहल उससे बोला था। वह लिखा-लिखाकर और टहल-टहलकर थक चुका था, और तब एकाएक जैसे उसे लगा हो कि कमरे में सन्नाटा-सा छा गया था। "तुम कभी कुछ नहीं कहतीं, कामरेड आरलोवा?" उसने पूछा, और मेज के पीछे रखी आराम-कुरसी पर बैठ गया।

"यदि आप पसन्द करें," उसने सोये-से स्वर में उत्तर दिया, "तो मैं आपके वाक्य के आखिरी शब्द को सदा दोहरा दिया करूँगी।"

प्रतिदिन वह मेज के सामने की कुरसी पर बैठती थी। नित्य वह कढ़ा हुआ ब्लाऊज पहने रहती; उसका भारी, किन्तु आकर्षक ऊपरी धड़ नोट-बुक पर झुका होता और गरदन के झुकाव के कारण उसके बुंदे गालों से सटकर लटक रहे होते। उसकी केवल एक ही बात बुरी थी कि वह पेटेंट लेदर के

नुकीली एड़ी वाले जूते पहनती थी। आरलोवा कई औरतों की तरह, जिन्हें रुबाशोफ जानता था, टाँग-पर-टाँग रखकर भी कभी नहीं बैठती थी। जिस वक्त वह टहल-टहलकर लिखा रहा होता था, अक्सर वह उसे पीठ की ओर से देखता था या बग़ल से, और इस देखने में उसे जो बात खास याद रही, वह उसकी गरदन के मोड़ का झुकाव था। उसकी गरदन के पीछे की ओर न तो घने बाल ही थे और न ही एकदम सफाई; चमड़ी सफेद थी और रीढ़ के ऊपर तनी हुई; जिसके ज़रा नीचे उसका सफेद ब्लाऊज़ होता था, जिसके किनारे फूलों से कढ़े रहते।

अपनी जवानी के दिनों में रुबाशोफ औरतों के संसर्ग से दूर-सा ही रहा था। जो उसके सम्पर्क में आईं भी, वह लगभग हमेशा कामरेड के ही रूप में थीं। और जब भी कभी किसी के यहाँ जाकर प्रेम-चर्चा हो ही जाती, तो वह बहस इतनी लम्बी पड़ जाती कि दोनों में जो भी दूसरे के घर गया होता, उसे अपने घर लौटने को ट्राम से हाथ धोना पड़ता।

उस असफल-से वार्तालाप के बाद पन्द्रह दिन और बीत गए। शुरू-शुरू में आरलोवा अपनी खोई-सी आवाज में लिखाये वाक्य के अन्तिम शब्द को बोलती रही, किन्तु बाद में वह फिर चुप रहने लगी। लिखाते-लिखाते जब रुबाशोफ रुक जाता, तो कमरे में फिर सन्नाटा छा जाता और उसे लगता जैसे बहन की-सी सुगन्धि से वह भर गया हो। एक दिन दोपहर बाद, अजीब-सी बात हुई; रुबाशोफ आरलोवा की कुरसी के पीछे रुका, उसने धीरे-से उसके कंधों पर हाथ रख लिये और पूछा कि क्या वह शाम को उस के साथ घूमने चलेगी। वह मुड़ी नहीं, हिली नहीं और उसके कंधे अभी उसके हाथों में ही थे; उसने मौन रहते हुए स्वीकृतिसूचक सिर हिला दिया और ज्यों-की-त्यों बैठी रही। रुबाशोफ को व्यंग्यात्मक मज़ाक करने की भी आदत न थी, किन्तु उसी रात को मुस्कराते हुए वह यह कहना न रोक सका—"कोई सोचेगा, जैसे तुम अब भी लिखाई ही कर रही हो।" कमरे के अन्धेरे के मुकाबिल उसकी बड़ी और सधी हुई छाती की रूप रेखा परिचित-सी जान पड़ती थी, जैसे वह सदा से ही यहीं थी। केवल उसके बुन्दे तकिये पर

सपाट पड़े थे। उसकी आँखों का भाव भी ठीक वैसा ही था, जबकि उसने एक वाक्य बोला था; और जिसे रुबाशोफ मरियम के आलिंगन के कर-बद्ध चित्र की भाँति, और बन्दरगाह के समुद्र पानी की गन्ध की तरह अपने दिमाग से नहीं निकाल सकता—"आप जैसा भी चाहें, हमेशा मेरे साथ कर सकेंगे।"

"लेकिन क्यों?" रुबाशोफ ने पूछा था—हैरान होकर और चौंककर।

उसने उत्तर नहीं दिया था। सम्भवतः वह सो चुकी थी। सोते हुए भी, जगने की तरह ही उसकी साँस की आवाज नहीं हो रही थी। रुबाशोफ ने उसे साँस लेते कभी नहीं देखा था। उसने उसे बन्द आँखों से कभी नहीं देखा था। ऐसा चेहरा देखकर उसे बड़ी हैरानी-सी हुई। खुली आँखों की अपेक्षा बन्द आँखों में उसकी आकृति अधिक भावपूर्ण थी। उसकी बगलों की गहरी छाया, उसकी ठोड़ी, जो और वक्त छाती की ओर झुकी रहती थी मरी हुई औरत की तरह ऊपर को उठी हुई थी। किन्तु उसके शरीर की हल्की-सी गन्ध से वह परिचित था, चाहे भले ही वह सो रही थी।

अगले दिन और उससे आगे के दिनों में, वह मेज़ पर झुकी हुई सफेद ब्लाऊज़ पहने फिर-फिर बैठती थी। अगली रात और उससे आगे की रातों में उसकी छाती की प्रतिच्छाया सोने के अंधियारे कमरे के परदे के पीछे बन-बन जाती थी। रुबाशोफ उसकी बड़ी-सी और अलसाई देह के वातावरण में दिन-दिन और रात-रात रहने लगा। काम के वक्त उसके व्यवहार में तनिक भी अन्तर न आया, उसका स्वर और उसकी आँखों का भाव वही था; उन में किसी प्रकार के रहस्य का संकेत-मात्र भी नहीं था। समय-समय पर, जब कभी रुबाशोफ लिखाते-लिखाते थक जाता तो वह उसकी कुरसी की पीठ पर रुक जाता और उसके कन्धों का सहारा ले लेता। वह मौन रहता, और उस के ब्लाऊज़ के नीचे होते उष्ण-से कन्धे, जो हिलते तक न थे; और तब, जैसे वह खोया वाक्य पा जाता, और, कमरे में टहलना शुरू करके फिर से लिखाना शुरू कर देता।

कभी-कभी वह अपने लिखाये हुए पर ही व्यंग्य-भरी आलोचना करने

लगता, और उस समय वह लिखना छोड़कर हाथ में पेन्सिल लिये रुक जाती, और इन्तज़ार करती कि वह उस आलोचना को खत्म कर ले। आरलोवा उसके व्यंग्य पर न तो कभी मुस्कराई और न ही रुबाशोफ ने कभी यह आँका कि वह उनके बारे में क्या सोचती है। केवल एक बार, जबकि रुबाशोफ ने नं १ की किसी आदत को लेकर बहुत चुभता-सा मज़ाक किया था, तब आरलोवा फौरन ही अपनी खोई-सी आवाज़ में बोली थी—"आप को दूसरे लोगों के सामने ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए; आपको सब तरह से अधिक सावधान रहना चाहिए।" किन्तु समय-समय पर, खासकर उस वक्त कि जब ऊपर से सर्कुलर और हिदायतें आती थीं, तो वह विरोधी हँसी-मज़ाक को प्रकट किये बिना नहीं रह सकता था।

यह वह समय था, जबकि विरोधी दल के दूसरे मुकदमे की तैयारियाँ हो रही थीं। दूतावास का वातावरण कुछ अजीब-सा शक्की हो गया था। एक ही रात में दीवारों पर से फोटो और तैल-चित्र ग़ायब हो गए थे। बरसों से वे वहाँ टँगे थे, और कोई उन्हें देखता भी न था, किन्तु अब दीवार पर के धब्बे आँखों को बरबस अपनी ओर खींच लेते थे। सब लोग दफ्तरी मामलों के अलावा कोई बात नहीं करते थे। आपस में बातें करते तो बहुत एहतियात और हिफाजत के साथ ही करते। दूतावास की भोजनशाला में, जहाँ बातें करना रुक ही नहीं सकता, वहाँ भी केवल अफसरी लहजे-मुलाहजों तक ही बातें सीमित रह जातीं। यहां तक कि यदि किसी को नमक या मिर्च ही चाहिए होती, तो वह भी कांग्रेस की ताज़ा घोषणा में आये शब्दों के आधार पर ही उन्हें माँगता। बहुधा ऐसा हो जाता कि कोई विरोध भी कर डालता और पड़ोसी को गवाह बनाते हुए बोलने वाला कहता—'मैंने तो वैसा नहीं कहा था' या 'मेरे कहने का वैसा तो अर्थ नहीं था।' यह सब देखकर रुबाशोफ को लगता जैसे पुतली का नाच हो रहा हो, जैसे हरेक तार के बल पर नाच रहा हो और जैसे नचाने वाला उसे तरह-तरह से नचा रहा हो। अकेली आरलोवा ही थी, जो चुप-सी, खोई-सी, अचल-सी थी। उसमें कोई परिवर्तन नहीं था।

दीवारों पर के चित्र ही नहीं, बल्कि लायब्रेरी के खाने तक हलके पड़ गए थे। कई-एक किताबें और विज्ञप्तियाँ, जैसे-जैसे ऊपर से नये-नये संदेशे आते, धीरे-धीरे निकल रही थीं। रुबाशोफ आरलोवा को लिखाते समय इस घटना पर व्यंग्य कसता, किन्तु वह चुपचाप सुन लेती। विदेशी व्यापार और मुद्रा के विषय में लिखी अधिकांश पुस्तकें खानों में से निकल गई थीं। उनका लेखक, अर्थ-विभाग का पीपल्ज़ कमिस्सार अभी हाल ही गिरफ्तार कर लिया गया था। इन किताबों के अलावा पार्टी की सब रिपोर्टें, क्रान्ति से पूर्व के इतिहास की पुस्तकें, आध्यात्मिक विषय सम्बन्धी पुस्तकें, गर्भ-निरोध विषयक छोटे-छोटे पैम्फ़लैट, लोक-सेना सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएं, जन-संघ में मज़दूरों की हड़ताल के अधिकारों के विवरण-पत्र, आदि-आदि कई पुस्तकें और यहाँ तक कि विश्व कोष भी लायब्रेरी में से हटा लिया गया था।

साथ ही बदले में नई किताबें आई थीं—सामाजिक विज्ञान की, नये इतिहास की, मरे हुए क्रान्तिकारियों की सचित्र जीवनियों के बदले नये चरित्रों की। रुबाशोफ ने मज़ाक करते हुए आरलोवा से कहा था, 'अब तो एक ही बात बाकी रह गई है कि पुराने सब समाचार-पत्रों के संशोधित संस्करण फिर से छापे जायँ।'

कुछ सप्ताह बीते 'ऊपर' से एक हुक्म आया था कि दूतावास की लायब्रेरी के लिए एक लायब्रेरियन रखा जाय। उन्होंने आरलोवा को इस पद पर नियत किया था। पहले तो रुबाशोफ ने इसे केवल बच्चों का खेल समझा था और सोचा था कि उन लोगों ने अपने दिल की कमजोरी के कारण ऐसा किया है, किन्तु दूतावास की साप्ताहिक मीटिंग के वक्त जो-कुछ उसने देखा, वह अनहोनी थी। आरलोवा के विरुद्ध कई-कई इलज़ाम लगाये गए। तीन या चार वक्ता थे। उनमें से प्रथम सैक्रेटरी भी एक था। वह उठा और उसने शिकायत की कि नं० १ की महत्वपूर्ण भाषणों की कई किताबें लायब्रेरी में नहीं हैं। इसके विपरीत अलमारियों के खानों में विरोधी दल की किताबों की भरमार है; जो नीतिज्ञ भेदिये, देशद्रोही और विदेशी

सरकारों के एजेण्ट जाहिर हो चुके हैं, उनकी रचनाएँ खानों में प्रमुख रूप से रखी गई हैं। वक्ताओं ने गिने-चुने वाक्यों में निर्दिष्ट आरोप लगाये थे। ऐसा जान पड़ता था कि पहले-से ही वाक्यों का निर्माण हो चुका था। सब वक्ताओं ने अन्त में यही कहा था कि पार्टी का मुख्य कर्तव्य यह है कि वह सावधान हो जाय, और जिसने ऐसा किया है, उसकी कड़ी निन्दा की जाय और जो कोई इस कर्तव्य का पालन नहीं करता, वह अपने को नीच और पातकी समझेगा। इसके बाद आरलोवा को सफ़ाई देने के लिए बुलाया गया। वह सदा की भाँति धीरे-धीरे बोली। उसने कहा कि मैंने कोई भी काम बुरी नीयत से नही किया। जैसी-जैसी हिदायत मुझे मिलती रही, मैं वैसा ही करती रही। इस बोलने में उसने अधिकांश समय अपनी नज़र रुबाशोफ पर ही रखी। इससे पूर्व, दूसरों की उपस्थिति में उसने ऐसा कभी नहीं किया था। अन्त में मीटिंग में प्रस्ताव हुआ कि आरलोवा को 'कड़ी चेतावनी' दी जाय।

रुबाशोफ पार्टी के इन तौर-तरीकों को भली प्रकार जानता था। इस घटना से वह अनमना हो गया। उसने महसूस किया कि आरलोवा के खिलाफ जिहाद होने जा रहा है, किन्तु उसने अपने को असहाय देखा, क्योंकि जाहिरा कोई बात नहीं थी कि जिसके विरुद्ध लड़ा जाता।

इस घटना से दूतावास का वायुमण्डल और भी गड़बड़ा गया। लिखाते समय उसने व्यक्तिगत टिप्पणियाँ करना भी छोड़ दिया। और इससे उसे अपने को एकपक्षी अपराधी समझना पड़ा। आरलोवा के साथ उसके सम्बन्धों में भी कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं दीख रहा था, किन्तु अपने को अपराधी महसूस करने की भावना ने उसे उसकी कुरसी के पीछे खड़ा होकर कंधों पर हाथ रखने से रोक दिया। और उसमें जो अपराधी भावना पैदा हो गई थी, उसका एक-मात्र कारण यही तो था कि अब वह अपने को लिखाते समय टिप्पणी करने के अयोग्य समझता था। एक हफ्ते बाद, एक शाम को आरलोवा उसके यहाँ न पहुँची और बाद में भी उसने वहाँ पहुँचना छोड़ दिया। रुबाशोफ तीन दिन तक सोचता रहा और तब जाकर उसने

उससे इसका कारण पूछा। उत्तर में आरलोवा ने केवल यही कहा कि मैं दूसरी जगह चली गई हूँ; और रुबाशोफ ने भी इससे आगे और कुछ न पूछा। तब से लेकर एक दिन को छोड़, वह फिर वहाँ कभी नहीं गई।

वह बात 'कड़ी चेतावनी' से तीन सप्ताह बाद की थी। उसका व्यवहार पहले-सा ही था, किन्तु सारी शाम रुबाशोफ यह महसूस करता रहता कि वह मेरी ओर से किसी निश्चित बात को सुन लेने की प्रतीक्षा में रहती। जो भी हो, उसने केवल यही कहा कि उसे खुशी थी कि वह लौट आई और इन दिनों उसे बहुत काम है और वह थका भी है। रात को उसे बार-बार ख्याल आया कि वह जाग रहा था और टीस से भी पिंड न छुड़ा सका और इसके साथ उसके दाँत में पुनः दर्द शुरू हो गया था। यही थी उसकी उसके यहाँ आखिरी भेंट।

अगले दिन, आरलोवा के दफ्तर में पहुँचने से पहले ही सैक्रेटरी ने रुबाशोफ को गुप्त-से ढंग के साथ, किन्तु प्रत्येक वाक्य को सावधानी से घड़कर बताया कि आरलोवा के भाई और भाभी को 'वहाँ' एक सप्ताह पहले गिरफ्तार किया जा चुका है। आरलोवा के भाई ने एक विदेशी के साथ व्याह किया था; और वे राजद्रोही सम्बन्धों के कारण अभियुक्त हैं।

चन्द मिनट बाद आरलोवा अपने काम पर आ गई। सदा की तरह, वह सामने बैठ गई। उसने कढ़ा हुआ ब्लाऊज़ पहन रखा था और थोड़ी-सी आगे को झुकी हुई थी। रुबाशोफ उसकी पीठ के पीछे टहल रहा था और इस सारे वक्त में उसकी नज़र उसकी झुकी गरदन पर जमी रही। इस गरदन पर से वह अपनी निगाह न हटा सका। वह विमग्न-सा हो गया और अन्त में जैसे उसका सारा शरीर ही सन्न होने लगा। उसे यह विचार नहीं छोड़ रहा था कि 'वहाँ' जिन्हें अपराधी ठहरा लिया जाता, उन्हें गरदन के पीछे गोली मार दी जाती है।

पार्टी की अगली मीटिंग में प्रथम सैक्रेटरी के प्रस्ताव पर राजनीतिक अविश्वास के कारण आरलोवा को लायब्रेरियनपद से बरखास्त कर दिया गया। कोई टिप्पणी या बहस नहीं हुई। रुबाशोफ के दाँत में बहुत दर्द

था, इसलिए उसने मीटिंग में शामिल न होने की माफ़ी माँग ली थी। कुछ दिनों बाद आरलोवा और स्टाफ के एक दूसरे आदमी को पकड़ लिया गया। इसके बाद, पुराने साथी जैसे उन्हें हमेशा को भूल गए, किन्तु रुबा-शोफ जब तक दूतावास में रहा और जब तक कि स्वयं वह भी पकड़ा नहीं गया, उसे उसके बड़े किन्तु ढीले-ढाले शरीर की बहन-सरीखी सुगन्ध कमरे की दीवारों में चिपकी-सी लगती और जैसे वह सदा को वहाँ रह गई।

: ४ :

रुबाशोफ की गिरफ्तारी के दसवें दिन की सुबह, उसके बांयें पड़ोसी नं० ४०६ ने टकटकाया—"ओ, धरती के नीच, जाग !"

नं० ४०६ इसी वाक्य को रुक-रुककर टकटकाया करता। कई बार रुबाशोफ ने उसके साथ बातचीत करनी चाही। जितनी देर रुबाशोफ टक-टकाता, उसका नया पड़ोसी चुपचाप सुनता रहता, किन्तु जब भी कभी उसे उत्तर मिला, तो महज़ टूटे-फूटे शब्दों का ही मिला, जिनका कोई अर्थ ही न होता। लेकिन उनके अन्त में वह ज़रूर टकटकाता—"ओ, धरती के नीच जाग !"

नया पड़ोसी एक रात पहले ही तो वहाँ पहुँचा था। रुबाशोफ की नींद खुल गई थी, किन्तु उसने तालियों की झन-झन और कोठरी नं० ४०६ के बन्द होने की आवाज़ के सिवा कुछ नहीं सुना था। सुबह सवेरे, जब बिगुल बजा था, तो नं० ४०६ ने टकटकाना शुरू किया था—"ओ धरती के नीच जाग !" वह इतनी तेज़ और चतुराई से टकटकाता था कि उसकी अशुद्धियों और अर्थहीन बातों का और अर्थ न लगाकर यही समझा जाय कि उसका दिमाग़ सही नहीं है। और शायद, इस नये पड़ोसी का दिमाग़ खराब ही था।

प्रातराश के बाद नं० ४०२ के नौजवान अफसर ने बातचीत करने का संकेत किया। रुबाशोफ और उसमें एक तरह की दोस्ती हो गई थी। चश्मा पहने और उठी हुई मूँछों वाला यह अफसर जैसे कोठरी में पड़ा थक गया था। उसे बोलने की बीमारी-सी थी, लेकिन बोलने वाला कोई न था।

रुबाशोफ की तनिक-सी बातचीत से ही वह खुश हो जाता था, और उसका आभार मानता था। दिन में कम-से-कम ५-६ बार वह रुबाशोफ को नम्रता-पूर्वक कहता—"कृपाकर मुझसे बातें करो।……"

रुबाशोफ कभी-कभी ही बातें करने के मूड में होता था। अक्सर उसे यही सोच हो जाती थी कि नं० ४०२ के साथ किस बारे में बातें करूँ। और नं० ४०२ प्रायः ऐसी बातों की चर्चा करने लगता था जैसी अफसरों की भोजनशाला में हुआ करती हैं। जब सारी बात हो जाती तो जैसे दर्द-भरा सन्नाटा छा जाता। भोजनशाला की चर्चा में बेढंगी और गन्दी बातों का समावेश होता था और आश्चर्य था कि नं० ४०२ क्योंकर उन्हें टकटका जाता था, किन्तु यह करके वह सफेद-सी गूँगी दीवार के परे भारी अट्टहास की प्रतीक्षा करने लगता था। सहानुभूति और उदारता के नाते रुबाशोफ कभी-कभी टकटका देता—"बहुत हँसी आई।" तब तो नं० ४०२ आपे से बाहर हो जाता और वह अपनी खुशी को जाहिर करने के लिए मुट्ठियों और जूतों से दीवार को भड़भड़ाता—"बहुत-बहुत हँसी! हा-हा-हा!" और रुक-रुक जाता, ताकि उसे विश्वास हो सके कि रुबाशोफ भी इस हँसी में शामिल है। अगर रुबाशोफ चुप रह जाता, तो वह पूछता—"तुम हँसे नहीं।" और तब यदि रुबाशोफ को उससे पीछा छुड़ाना होता तो वह एक-दो बार टकटकाता—"हा-हा!" और नं० ४०२ उत्तर देता—"भई, खूब मज़ाक रहा। बहुत अच्छे रहे!"

कभी-कभी वह रुबाशोफ को गालियाँ भी देता। जब कभी उसे उत्तर नहीं मिलता था, तो वह लम्बा-सा फौजी गीत टकटका देता। पर यह तभी होता जब कि रुबाशोफ इधर-उधर टहल रहा होता और दिवा-स्वप्न में डूबा होता।

और इतने पर भी ४०२ बड़ा काम का आदमी था। उसे वहाँ रहते दो बरस हो चुके थे। उसे सब रास्ते पता थे। वह कई पड़ोसियों से बातें किया करता था। उस इमारत में जो-कुछ होता था, उसे उसकी इत्तिला हो ही जाती थी।

नं० ४०६ जिस दिन पहुँचा था, उससे अगली सुबह बातचीत के सिल-सिले में रुबाशोफ ने नं० ४०२ से पूछा था कि क्या तुम मेरे नये पड़ोसी को जानते हो। उसने उत्तर दिया था—"रिप वान विंकल।"

नं० ४०२ पहेलियों में बातें करने का शौकीन था। उसकी मंशा रहती कि बातचीत में कुछ तेजी की पुट भी रहनी चाहिए। रुबाशोफ ने नाम सुना तो याद करने लगा। उसे उस आदमी की कहानी याद आई, जो २५ बरस तक सोता रहा, और जब वह जागा, तो उसने वह दुनिया देखी, जिसे वह पहचानता तक न था।

"क्या उसका दिमाग खराब हो चुका है?" रुबाशोफ ने पूछा।

नं० ४०२ को संतोष हुआ कि उसकी पहेली का असर तो हुआ। उसने अपनी जानकारी के मुताबिक रुबाशोफ को बताया। नं० ४०६ किसी समय यूरोप के दक्षिण-पूर्वी भाग की छोटी-सी रियासत में सामाजिक-शास्त्र का अध्यापक था। पिछली लड़ाई के खत्म होने पर उसने क्रान्ति में भाग लिया, जो उसके देश में हो गई थी। एक संस्था (कम्यून) बनाई गई थी, जो चन्द हफ्ते ही जिन्दा रही। क्रान्ति के नेता तो सच्चे थे, किन्तु क्रान्ति को दबाने वाले खासे घिसे हुए थे। नं० ४०६ इस संस्था का जन-जागरण-विभाग का मंत्री था। उसे तब फाँसी की सजा हुई थी। एक बरस तक उसने फाँसी की इन्तजार की और बाद में वह सजा घटाकर आजीवन-कैद कर दी गई। उसने २० साल कैद भुगत ली।

बील साल की कैद के अधिकांश समय में वह तनहाई और अँधेरी कोठरियों में रहा। बाहर की दुनिया के साथ कोई वास्ता नहीं, किसी के साथ कभी बात नहीं और न ही उसने कभी अखबार पढ़े। वह तो दुनिया को भूला ही था, लेकिन दुनिया भी उसे भूल गई। एक महीना हुआ कि आम-रिहाई के समय एकाएक वह छोड़ दिया गया—रिप वान विंकल, जो बीस साल से ज्यादा की नींद और अँधियारी के बाद, अपने को फिर से इस धरती पर देख रहा है।

उसने इस ओर की पहली गाड़ी पकड़ी, यानी अपने सपनों की धरती।

वहाँ पहुँचने के चौदह दिन बाद वह गिरफ्तार हो गया। शायद, बीस साल की तनहाई कैद के कारण वह बकवादी बहुत हो गया था। शायद, उसने लोगों को बताया होगा कि उसने अपनी अन्धेरी कोठरी में रात और दिन कैसे और क्योंकर बिताये। शायद उसने अपने पुराने मित्रों के पते पूछे होंगे, जो क्रान्ति के नायक थे। उसे यह क्या पता था कि वे गद्दार और भेदियों से अधिक कुछ भी नहीं थे। शायद, उसने ग़लत कब्र पर फूल चढ़ा दिये होंगे अथवा उसने इच्छा की होगी अपने सम्मानित पड़ोसी, कामरेड रुबाशोफ से भेंट करने की।

अब वह अपने-आप से पूछ सकता है कि इन दो में से क्या अच्छा था : बीस बरस काल-कोठरी में रहना या चौदह दिन की रोशनी। शायद, अब उसका दिमाग खराब हो गया है। यह है कहानी रिप वान विंकल की।

नं० ४०२ की लम्बी बातचीत के बाद रिप वान विंकल ने ५ या ६ बार टकटकाया—"ओ, धरती के नीच, जाग!" और तब एकाएक चुप हो गया।

रुबाशोफ अपनी खड्डी पर आँखें बन्द किये लेटा था। उसे 'व्याकरण-सम्बन्ध कल्पना' का आभास हो रहा था। वह कल्पना शब्दों के रूप में न होकर अजीब-सी आकुलता पैदा कर रही थी, जिसके मानी थे—

'उस किये का फल तुम्हें भोगना ही होगा, क्योंकि उस काम के लिए भी तुम ही जिम्मेदार हो, इस कारण कि जिस वक्त वह सपनों में था, तो तुम क्रियावान थे।'

उसी दोपहर बाद रुबाशोफ को हजामत के लिए ले जाया गया। इस बार के जलूस में बूढ़ा वार्डर और एक बावर्दी अफसर था। वार्डर दो कदम आगे था और अफ़सर दो कदम रुबाशोफ के पीछे। वे लोग नं० ४०६ के सामने से निकले, लेकिन किवाड़ पर अभी कार्ड नहीं लगा था। नाई की दुकान में दो कैदी काम करते थे, किन्तु इस समय तो एक ही था। इस बात

का ज़ाहिरा तौर पर ध्यान रखा जाता कि रुबाशोफ ज्यादा लोगों से न मिल सके।

वह कुरसी पर बैठ गया। दुकान काफ़ी साफ़-सुथरी थी और वहाँ एक आईना भी था। उसने चश्मा उतारकर आईने में अपना चेहरा देखा। गालों पर बढ़े हुए बालों के सिवा उसे कोई फ़र्क नज़र न आया।

नाई ने चुपचाप, जल्दी और बहुत एहतियात से काम किया। कमरे का किवाड़ खुला रहा, वार्डर ज़रा परे हट गया था और बावर्दी सन्तरी किवाड़ की चौखट के सहारे खड़ा देखता रहा। चेहरे पर हल्की-हल्की गरम कूँची से रुबाशोफ को सुख लगा और इस पल-भर के सुख के हटते ही जैसे उसने बुरा महसूस किया। वह नाई से बात करना चाहता था, किन्तु उसे मालूम था कि बोलना मना है। चेहरे को देखकर नाई उसे भला-सा आदमी लगा भी, किन्तु वह उसके लिए क्लेश का कारण नहीं बनना चाहता था। सो चुप ही रहा। पहली बार साबुन लगाकर जब नाई ने उस्तरे से सफाई कर दी, तो नाई ने 'नागरिक रुबाशोफ' नाम लेकर पूछा कि उस्तरे ने छीला तो नहीं।

जब से रुबाशोफ कमरे में आया था, यह पहला ही वाक्य बोला गया था; और नाई के बोलने के असली लहजे को छोड़कर, इस वाक्य की ख़ास महत्ता न थी। इसके बाद फिर चुप्पी-सी हो गई; किवाड़ में खड़े सन्तरी ने सिगरेट जलाई और नाई रुबाशोफ की ठुड्डी और सिर की मालिश करने लगा। जिस वक्त वह रुबाशोफ पर झुका हुआ खड़ा था, तो रुबाशोफ ने उसकी आँख को जैसे भाँप लिया हो और उसी क्षण में नाई ने भी रुबाशोफ की कमीज़ के कालर में दो अँगुलियाँ डालीं, जैसे वह अँगुलियों को गरदन की राह सिर के बालों में ले जा रहा हो। ज्यों ही उसने अँगुलियाँ बाहर खींचीं, त्योंही रुबाशोफ जान गया कि उसके कालर तले छोटा-सा काग़ज़ का पुर्ज़ा रखा गया है। चन्द मिनट में हजामत हो चुकने पर रुबाशोफ को पुनः कोठरी में पहुँचा दिया गया। वह बिस्तर पर बैठ गया और छेद में से देखने लगा कि उसे झाँका तो नहीं जा रहा। उसने काग़ज़ का पुर्ज़ा

निकाला, उसे खोला और पढ़ा। उसमें केवल दो ही शब्द लिखे थे—बहुत जल्दी में—'चुपचाप मरना।'

रुबाशोफ ने काग़ज़ का टुकड़ा बाल्टी में फेंक दिया और टहलने लगा। यह पहला ही सन्देशा था, जो उसे बाहर से मिला था। शत्रु-देशों की जेलों में तो कई बार उसे चोरी से सन्देशे पहुँचे थे। उन सन्देशों में कहा जाता था कि वह मुकाबला करे और इलजाम लगाने वालों पर ही इलजाम थोपने की कोशिश करे। क्या इतिहास में ऐसे भी मौके हुए हैं, जब कि क्रान्तिकारी को चुप रहना पड़ा हो? क्या इतिहास के बदलते युगों में केवल एक ही बात सच थी; और क्या एक ही बात क्रान्तिकारी से चाही गई थी, कि वह चुप-चाप मरे?

रुबाशोफ की विचार-धारा रुक गई, क्योंकि नं० ४०२ ने एकाएक टकटकाना शुरू कर दिया था। उसे यह जानने की भारी ख्वाहिश हो रही थी कि रुबाशोफ को कहाँ ले जाया गया था।

"हजामत के लिए," रुबाशोफ ने बताया।

"मुझे भय था कि कहीं आफ़त ही तो नहीं आ गई," ४०२ ने भावुकता से टकटकाया।

"तुम्हारे बाद," रुबाशोफ ने जवाब दिया।

हमेशा की तरह ४०२ को बातचीत का सिलसिला बड़ा अच्छा लगा और उसने 'हा-हा' टकटकाया। "तुम बड़े उस्ताद हो।'......"

इस आश्चर्य-भरी पुरानी तारीफ से रुबाशोफ ने एक तरह का सन्तोष महसूस किया। उसे नं० ४०२ से ईर्ष्या-सी हुई, जो सम्मान से जीने और मरने के लिए अपना ही दृढ़ विश्वास रखता है। इन विश्वासों से ऐसे लोग चिपटे रह सकते हैं। रुबाशोफ ने सोचा कि उसके अपने जैसे व्यक्तियों को हर मौके पर नये ही निर्णय करने होते हैं, क्योंकि उन्होंने कोई दृढ़ विश्वास नहीं बना रखा होता।

मरने के लिए किसी खास चलन की भी जरूरत नहीं। ज्यादा सम्मान

की क्या बात है : चुपचाप मरना, या अपने मक़सदों का पीछा करने लायक बनने के लिए अपने को जनता के सामने बेइज्ज़त करना ? उसने आरलोवा को कुरबान कर दिया, क्योंकि क्रान्ति के लिए उसकी अपनी ज़िन्दगी ज्यादा कीमती थी। उसके मित्र उसको यही युक्ति देकर मनाया करते थे कि मूर्खों की घटिया-सी नैतिकता की बजाय किसी को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना अधिक आवश्यक है। उनके लिए, जिन्होंने इतिहास की काया ही पलट दी थी, यही एक सबसे बड़ा फर्ज़ था कि वे जिन्दा रहें और तैयार रहें। "आप मेरे साथ जो चाहें, करें," आरलोवा ने कहा था, और वही उसने किया भी। अब वह अपने विषय में इतना सतर्क क्यों रहे ? "आने वाले दस वर्षों में हमारी किस्मत के उदय का फैसला होगा," इवानोफ ने संकेत किया था। क्या वह निजी निराशा, थकावट और झूठे अभिमान से छुटकारा पा सकता है ? और तब क्या होगा, यदि नं० १ ही ठीक हुआ; यदि यहाँ धूल, खून और झूठ की विद्यमानता में भी बड़प्पन की ख़ातिर भविष्य की नींव रखी जा रही है ? क्या इतिहास हमेशा ही बेरहम नहीं रहा, और क्या झूठ, खून और कीचड़ की मिलावट से ही उसका निर्माण नहीं होता ?

चुपचाप मरना—यानी बिना कुछ कहे-सुने अँधेरे में घुल-मिल जाना ! कहना ही आसान है !······

रुबाशोफ खिड़की से परे तीसरे काले टाइल पर एकाएक रुक गया; 'चुपचाप मरना,' इन शब्दों को अनजाने ऊँचे स्वर में वह कई बार दोहरा गया था। वह इन शब्दों को कुछ ऐसे तिरस्कृत लहजे में कह रहा था कि जैसे वह उनकी व्यर्थता पर पूरा-पूरा ज़ोर डाल रहा हो।······

और महज़, अब ही उसे पता चला कि इवानोफ की तजवीज़ को ठुकराना कितना मुश्किल होगा। अब तो उसे अपने ही से प्रश्न करना पड़ रहा था कि क्या कभी उसने गम्भीरता से उसे रद्द कर देने की मंशा की भी थी, और क्या वह एक भी शब्द कहे-सुने बिना इस रंगमंच से चलता बनेगा।

: ५ .

रुबाशोफ के रहन-सहन के ढंग में और तरक्की हुई। ग्यारहवें दिन की सुबह को पहली बार उसे सेहन में कसरत के लिए ले जाया गया। प्रातराश के बाद ही उसे बाहर लाया गया था। उसके साथ एक बूढ़ा जेलर था और दूसरा वही पहला वार्डर। वार्डर ने उसे बताया कि आज से उसे नित्य प्रातः २० मिनट टहलने के लिए सेहन में जाने की इजाजत हो गई है। रुबाशोफ को पहले ही दल में प्रातराश के बाद निकलना था। चलने के पहले वार्डर ने उसे इस सिलसिले में कई नियम बताये—किसी दूसरे कैदी से बोलना नहीं, किसी को लिख कर कुछ नही देना, किसी को कोई इशारा नहीं करना, कतार से बाहर भी नही रहना, आदि। इनमें से किसी एक को तोड़ने पर चार हफ्तों की तनहाई कैद की सज़ा मिल सकती है। तब वार्डर ने उसकी कोठरी का किवाड़ बन्द किया और तीनों चलने लगे। चन्द कदमों के बाद वार्डर रुका और उसने नं० ४०६ का किवाड़ खोला।

रुबाशोफ बावर्दी सन्तरी के साथ किवाड़ से कुछ दूर खड़ा था। उसे रिप वान विंकल की टाँगें दीखीं, जो खट्टी पर लेटा था। उसने काला बूट और धारीदार पाजामा पहन रखा था। वार्डर ने एक बार फिर यहाँ भी टहलने के नियम बताये; रिप वान की लड़खड़ाती टांगें खट्टी से नीचे हुईं और एक ठिगना-सा बूढ़ा आदमी किवाड़ तक आया—कुछ झुका-सा। उसका चेहरा सफेद बालों से ढका था। वह धारीदार पाजामे के साथ काली वास्कट और काला कोट पहने था। वास्कट पर घड़ी की चेन लगी थी। वह किवाड़ पर खड़ा हो गया और रुबाशोफ को चकित हो-होकर देखने लगा। उसने मित्रभाव में धीरे-से सिर हिलाया और चारों चल पड़े। रुबाशोफ को आशा थी कि वह पागल-सा होगा, लेकिन अब उसे अपनी राय बदलनी पड़ी। बरसों अँधेरी कोठरी में पड़े रहने के कारण, शायद उसकी आखें चुँधिया-सी गई थीं; तिसपर भी रिप वान की आँखें साफ थीं और उनमें बच्चों की-सी दोस्ती के भाव झलकते थे। छोटे-छोटे कदमों से काफ़ी मेहनत करके वह चल सका। कभी-कभी वह रुबाशोफ पर दोस्ती

की नज़र डालता ही रहा। सीढ़ी से उतरते हुए बेचारा बूढ़ा एकाएक लड़-खड़ा गया और अगर वार्डर उसे थाम न लेता तो वह गिर ही जाता। रिप वान ने धीरे-धीरे कुछ शब्द कहे, जिन्हें रुबाशोफ तो सुन न सका, लेकिन इतना स्पष्ट ही था कि उसने कृतज्ञता से उसकी ओर देखा। उसके बाद एक फाटक की राह वे सेहन में दाखिल हुए। वहाँ दूसरे कैदी पहले से ही जोड़े-जोड़े में तैयार खड़े थे। सेहन के मध्य में सन्तरी खड़े थे। दो सीटियाँ बजीं और चक्कर लगाने का सिलसिला शुरू हो गया।

आकाश साफ़ था—हल्का-सा नीला रंग लिये। हवा ठंडी थी और उसमें जैसे कण-कण होकर बर्फ़ घुल-मिल गई थी। रुबाशोफ अपना कम्बल लाना भूल गया था और उसे शीत लगगे लगा। रिप वान के कन्धे पर भूरे-से रंग का फटा ओढ़ना था, जो सेहन में पहुँचते ही वार्डर ने उसे दिया था। वह रुबाशोफ की बगल में चुपचाप चल रहा था—छोटे-छोटे लेकिन स्थिर डगों के साथ। रह-रहकर वह हल्के-नीले आस्मान को देख जाता, जो उनके सिरों पर दूर-दूर तक छाया हुआ था। भूरे रंग का कम्बल उसके घुटनों तक लटक रहा था और उसके छोर घुटनों से टकरा रहे थे। रुबाशोफ कोशिश कर रहा था अपनी खिड़की पहचान लेने की, किन्तु सभी खिड़कियाँ एक ही-सी थीं, जिनके पीछे गहरा अँधेरा था और धूल थी। इनकी राह कोई भी कुछ नहीं देख सकता था। उसने नं० ४०२ की खिड़की पर लहमे-भर को नज़र गड़ाई, लेकिन वहाँ भी अन्धकार और खिड़की के काले शीशे के सिवा कुछ नज़र न आया। नं० ४०२ को टहलने की आज्ञा नहीं थी; न तो उसे नाई की दुकान पर ले जाया जाता था और न ही उसकी पेशी होती थी। मतलब यह कि रुबाशोफ ने उसकी कोठरी से बाहर जाना कभी नहीं सुना था।

वे धीरे-धीरे चुपचाप सेहन में चक्कर लगा रहे थे। रिप वान अपनी सफ़ेद दाढ़ी में छिपे ओंठों से अपने-आप से कुछ बड़बड़ा रहा था। पहले तो रुबाशोफ कुछ भी समझ न सका, लेकिन बाद में उसने जान लिया कि बेचारा बूढ़ा अपना वही पुराना गीत-सा गा रहा है—'ओ, धरती के नीच,

जाग !' पागल तो वह हरगिज़ नहीं था; लेकिन क़ैद के सात हज़ार दिन और रातों ने उसकी कुछ अजीब-सी हालत बना दी थी। रुबाशोफ़ ने उसे बाहरी तौर पर झाँका और वह सोचने लगा कि दुनिया से बीस बरस तक जुदा कर दिये जाने पर क्या हालत होती होगी। बीस बरस पहले तो मोटरें भी नहीं थीं, और जो थी उनकी शक्ल-सूरत भद्दी-सी थी। बेतार के तार भी नहीं थे और आज, जिन राजनीतिक नेताओं के नाम चमक रहे हैं, उन्हे भी कोई नहीं जानता था। इन नये-नये जन-आन्दोलनों का भी किसी को पता न था, न ही किसी को इतने बड़े राजनीतिक टीलों और उसके टेढ़े-मेढ़े रास्तों का ख्याल था। इतना बड़ा क्रान्तिकारी साम्राज्य बन ही जायगा, यह किसे पता था। उस समय तो इतना ही विश्वास था कि सामाजिक उन्नति के द्वार खुले पड़े थे और मानव उसकी दहलीज पर खड़ा था।...

रुबाशोफ़ को लगा कि वह अपनी कल्पना की लम्बी डोरी से भी अपने पड़ोसी के दिल की सही हालत की तस्वीर नहीं उतार सकता, भले ही 'दूसरों के दिल की राह सोचने' जैसी कला का उसे अभ्यास भी था। बिना किसी ख़ास कोशिश के वह ऐसा कर सकता था, जहाँ तक इवानोफ़ या नं० १ का सम्बन्ध था; और वह चश्मा पहने उस अफ़सर के दिल की तस्वीर भी उतार सकता था, लेकिन रिप वान के मामले में वह सफल न हो सका। उसने उसे बग़ल से देखा और ठीक उसी वक्त बूढ़े आदमी ने भी उसकी ओर मुँह किया। वह मुस्करा रहा था। उसने दोनों हाथों से कम्बल थाम रखा था और वह छोटे-छोटे कदम उठाकर चल रहा था। उसके ओंठ हिल रहे थे और उनमें से वही मद्धम-से शब्द निकल रहे थे—'ओ, धरती के नीच जाग !'

जब उन्हें इमारत में लौटा लाया गया, तो अपनी कोठड़ी के किवाड़ पर, बूढ़े आदमी ने फिरकर रुबाशोफ़ की ओर सिर किया। उसकी आँखों का भाव एकाएक बदल गया, जैसे बहुत डरावना और नाउम्मीदी का हो। रुबाशोफ़ को लगा कि वह उसे बुलाना ही चाहता था, किन्तु तभी वार्डर ने ४०६ के किवाड़ को खटाक-से बन्द कर दिया। जब रुबाशोफ़ अपनी कोठरी

में बन्द हो गया तो वह फौरन ही दीवार तक गया। उसने टकटकाया, लेकिन रिप वान ने कोई जवाब न दिया और चुप रहा।

दूसरी ओर, नं० ४०२ ने उन्हें अपनी खिड़की से देख लिया था और वह चाहता था कि इस टहलने की बाबत उसे विस्तार से सब-कुछ बताया जाय। वह रुबाशोफ से जानना चाहता था कि बाहर की हवा कैसी थी, बहुत ठंडी या महज़ ठंडी ही; क्या बरामदे में वह किसी कैदी से मिला था, और न सही, तो क्या रिप वान से मिलने पर कोई बातचीत भी वह कर सका या नहीं। रुबाशोफ ने धीरज से सब प्रश्नों का जवाब दिया। नं० ४०२ के साथ अपनी हालत का मुकाबला किया। उसे लगा कि वह खास रियायतों वाला आदमी है और उसे अफसोस था ४०२ के लिए, जिसे बाहर निकलने की स्वीकृति तक न थी; और उसे यह सब बहुत ही बुरा लगा था।

अगले दिन और उससे भी अगले दिन इसी समय रुबाशोफ को प्रातराश के बाद टहलने ले जाया गया। इस टहलाई के चक्कर में रिप वान सदा उसका साथी था। वे धीरे-धीरे अग़ल-बग़ल रहते हुए चक्कर काटते। हरेक के कंधों पर अपने-अपने कम्बल रहते। दोनों चुपचाप टहलते। रुबाशोफ विचारों में डूब जाता। वह अपने चश्मे की राह दूसरे कैदियों पर निगाह डालता। बूढ़ा आदमी, जिसके चेहरे पर सफेद दाढ़ी उगी हुई थी, बच्चों-सी मुस्कराहट के साथ मन्द-मन्द स्वर में अपना गीत गाता—'ओ, धरती के नीच, जाग!'

इस तरह तीन दिन वे साथ-साथ टहल चुके थे, और एक भी शब्द उनके मुंह से नहीं निकला था। रुबाशोफ ने देखा था कि अफसर इस चुप रहने के नियम की ओर बहुत सख्ती भी नहीं करते। दूसरे कैदी, जो चक्कर में टहल रहे होते थे, दबे-दबे ओंठों में बोल ही लेते थे। और जेल में जिस ढंग से बोला जाता था, रुबाशोफ को उसका भली प्रकार ज्ञान था ही।

तीसरे दिन, रुबाशोफ अपनी नोट-बुक और पैन्सिल लाया था। नोट-बुक उसकी बांईं जेब में रखी थी, जो कुछ-कुछ बाहर निकली हुई थी।

दस मिनट बाद बूढ़े आदमी ने उसे देख लिया और उसकी आँखें जैसे चमक उठीं। उसने चक्र के मध्य में खड़े वार्डरों को छिपी आँखों से देखा। वे आपस में बातचीत कर रहे थे और कैदियों की ओर से जैसे बेखबर थे। और तब, एकाएक रिप वान ने रुबाशोफ की जेब से नोट-बुक और पैन्सिल खींच ली। अपने लटकते कम्बल के नीचे छिपाकर कुछ वह लिखने-सा लगा। फौरन ही उसने लिख लिया और सफ़ा फाड़कर रुबाशोफ को थमा दिया। नोट-बुक और पैन्सिल उसी के पास रही और वह जैसे लिखता-सा रहा। रुबाशोफ ने भी जब जान लिया कि वार्डरों का ध्यान उस ओर नहीं तो उसने कागज़ को देखा। उस पर लिखा तो था नहीं; हाँ, एक मान-चित्र ज़रूर बना हुआ था। यह भौगोलिक मान-चित्र उसी देश का था, जिसमें वे रह रहे थे। हैरानी की बात तो यही थी कि वह लगभग ठीक ही खिंचा था। इसमें बड़े-बड़े नगर, पहाड़ और दरिया दिखाये गए थे। इसके ठीक मध्य में एक झण्डा था, जिस पर क्रान्ति का चिह्न था।

फिर एक और चक्कर में ४०६ ने दूसरा सफ़ा फाड़कर रुबाशोफ को दिया। इसमें क्रान्ति के देश का मान-चित्र बना हुआ था। ४०६ ने मुस्कराते हुए उसकी ओर देखा और रुबाशोफ ने भी उसकी ओर कुछ ऐसे ढंग से देखा कि वह उसकी कला की तारीफ कर रहा हो। रिप वान ने आँख झपकाते हुए कहा—"मैं अपनी आँखें बन्द रखकर भी यह कर सकता हूँ।" और रुबाशोफ ने सिर हिला दिया।

"तुम्हें यकीन नहीं होगा," उसने कहा, "मैं तो बीस बरस से इसका अभ्यास कर रहा हूँ।"

इतना कह, उसने फौरन संतरियों की ओर देखा, आँखें बन्द कर लीं और अपने कदमों को बदले बिना ही, कम्बल के नीचे फिर मान-चित्र बनाने लगा। उसकी आँखें बन्द थीं, ठुड्डी ऊपर को थी, जैसे अन्धे आदमी किये रहते हैं। रुबाशोफ को डर था कि कहीं रिप वान गिर न पड़े या कतार से बाहर न हो जाय। किन्तु आधे ही चक्कर में मान-चित्र पूरा हो गया। बिलकुल वैसा ही, केवल इतना ही अन्तर था कि क्रान्ति का चिह्न अपेक्षाकृत बड़ा हो गया था।

"अब तो तुम्हें यकीन हो गया," ४०६ फुसफुसाया और खुशी से मुस्करा उठा। रुबाशोफ ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया। इसके बाद, बूढ़े आदमी का चेहरा जैसे काला पड़ गया। रुबाशोफ ने देखा, उसके मुँह पर डर की रेखा-सी खिंच गई है; यह रेखा जब-जब उसे कोठरी में बन्द किया जाता था, तब-तब उसके चेहरे पर दृष्टिगोचर हुई थी।

"अब क्या हो सकता है," उसने धीरे से रुबाशोफ को कहा। "मुझे ग़लत रेल में बिठा दिया गया था।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" रुबाशोफ ने पूछा।

रिप वान विंकल जैसे अफ़सोस के साथ मुस्कराता हुआ बोला—"जब मैं रवाना हुआ तो वे मुझे ग़लत रेलवे स्टेशन पर ले गए और वे समझते थे कि मुझे पता नहीं चला।" फिर रुककर और संतरियों की ओर आँख का इशारा करते हुए कहने लगा, "किसी को यह न बताना कि मैं जानता हूँ।"

रुबाशोफ ने सिर हिलाया। और उसके थोड़ी ही देर बाद टहलने की समाप्ति की सीटी बज गई। फाटक से निकलते हुए एक बार फिर दोनों को मौका मिल गया। और रिप वान ने सहानुभूति के साथ रुबाशोफ से पूछा, "शायद, तुम्हारे साथ भी यही घटना घटी है?" रुबाशोफ ने फिर सिर हिला दिया।

"किसी को आशा नहीं छोड़नी चाहिए। एक दिन ऐसा आयेगा ही, जब कि हम वहाँ पहुँच जायँगे," रिप वान ने रुबाशोफ के हाथ में दबे नक्शे की ओर इशारा करते हुए कहा।

अब उसने नोट-बुक और पैन्सिल रुबाशोफ की जेब में डाल दी। सीढ़ियों पर वह अपना गीत मन्द-मन्द स्वर में गुनगुना रहा था—"ओह, धरती के नीच, जाग!"

: ६ :

इवानोफ ने जो अवधि नियत की थी, इसका एक दिन ही बाकी था। रात के खाने के बाद, रुबाशोफ को लगा कि कोई अनहोनी बात होने जा

रही है। वह यह तो नहीं बता सकता था कि क्यों; हालांकि नियमपूर्वक खाना बाँटा गया था और नियत समय पर ही बिगुल भी बजा था; फिर भी रुबाशोफ को महसूस हो रहा था कि भीतरी दीवारों का वातावरण जैसे गंभीर हो गया हो। उसने सोचा, शायद तभी तो आज एक अर्दली ने कुछ अजीब-सी नज़र के साथ उसे देखा था; शायद तभी तो बूढ़े वार्डर के स्वर में भी अजीब-सा परिवर्तन था। रुबाशोफ कुछ नहीं जानता था, और जान भी नहीं सकता था। उसे अपनी नसों में कुछ खिंचाव-सा महसूस हुआ, जैसे गठिया से पीड़ित लोग महसूस करते हैं।

आखिरी आदमी के पाँव की आवाज़ भी जब लोप हो गई, तो उसने छेद की राह बरामदे में झाँका। वहाँ बिजली की रोशनी जल रही थी, लेकिन अधूरा-सा प्रकाश था। फर्श पर हल्की-हल्की रोशनी की छाया पड़ रही थी और बरामदा एकदम सुनसान था। बरामदे के सन्नाटे को देखकर तो उसे और भी पुष्टि मिली। रुबाशोफ अपनी खड्डी पर बैठ गया, फिर खड़ा हुआ, कुछ लिखने की कोशिश की, एक सिगरेट बुझाकर दूसरी नई सुलगाई। उसने सेहन में देखा—बर्फ पिघल रही थी, धूल में सनकर मैली हो रही थी; आकाश में बादल थे, सामने दीवार पर संतरी अपनी बन्दूक के साथ इधर-उधर आ-जा रहा था। एक बार फिर रुबाशोफ ने छेद से झाँका —वहाँ सन्नाटा था, सुनसान था और बिजली की अधूरी रोशनी थी।

अपने चलन के विपरीत और काफी देर हो जाने पर भी उसने नं० ४०२ के साथ बातचीत शुरू की। "क्या तुम सो गए हो?" उसने टकटकाया।

कुछ समय तक तो कोई जवाब न मिला और रुबाशोफ को निराशा भी हुई। लेकिन, थोड़ी देर बाद बहुत ही शान्त और धीमे से टक-टक हुई— "नहीं। क्या तुम्हें भी ऐसा ही लग रहा है?"

"ऐसा लगना क्या?" रुबाशोफ ने पूछा। उसने गहरी साँस ली। वह खड्डी पर लेटा हुआ था और चश्मे से टकटका रहा था।

नं० ४०२ फिर कुछ देर को चुप हो गया, उसने धीरे-से टकटकाया, कि

जैसे कोई कान में फुसफुसाता हो—"तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम सो जाओ।"

रुबाशोफ अब भी खड्डी पर पड़ा था और नं० ४०२ के पितृभाव को सुनकर उसे शर्म-सी भी लगी। वह लेटा हुआ था और उसकी पीठ अन्धेरे की ओर थी। उसने अपने चश्मे को देखा, जो आधे उठे हाथ में दीवार के पास रुका हुआ था। बाहर इतनी गहरी चुप्पी थी कि उसने सुना, जैसे वह उसके कानों में घुसी-घुसी जा रही है। एकाएक, तब फिर टक-टक हुई—"आश्चर्य है कि तुम फौरन ही भाँप गए।"

"क्या भाँप गया ? जरा समझाओ !" रुबाशोफ ने खड्डी पर बैठे-बैठे टकटकाया।

ऐसा लगा कि नं० ४०२ सोच रहा हो। कुछ रुककर उसने टक-टकाया—"आज रात को राजनीतिक मत-भेदों का फैसला होने जा रहा है।"

रुबाशोफ समझ गया। वह अन्धेरे में दीवार का सहारा लेकर बैठ गया और आगे सुनने की प्रतीक्षा करने लगा। किन्तु ४०२ आगे न बोला। कुछ देर में रुबाशोफ ने टकटकाया—"फाँसियाँ ?"

"हाँ," ४०२ ने कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?" रुबाशोफ ने पूछा।

"ओंठ-फटे से।"

"कितने बजे ?"

"पता नहीं," और थोड़ा रुककर, "जल्दी ही।"

"क्या नामों का पता है ?" रुबाशोफ ने पूछा।

"नहीं," जवाब मिला। फिर कुछ रुककर ४०२ ने टकटकाया—"तुम जैसों को; राजनीतिक मत-भेदों के कारण।"

रुबाशोफ फिर लेट गया और इन्तज़ार करने लगा। उसने चश्मा पहन लिया और चुपचाप पड़ा रहा। बाहर से कुछ भी सुनाई नहीं देता था। जेल की सारी इमारत की हलचल जैसे अन्धेरे में घुल-मिल गई थी।

रुबाशोफ ने फाँसी का दृश्य कभी नहीं देखा था। हां, उसे इसका सिविलवार के दिनों में निजी अनुभव हुआ था, जब कि लगभग उसे फाँसी दी ही जाने वाली थी। किन्तु आम हालतों में उसकी क्या तस्वीर होती होगी, वह अपने अनुभव से उसे उतार नहीं सकता था। उसे महज़ यही पता था कि रात के समय तहखानों में फांसियाँ दी जाती थीं और अपराधी की गरदन में गोली लगाकर मार डाला जाता था। इससे सम्बन्धित सारे विवरण का उसे पता नहीं था। पार्टी में मृत्यु न तो कोई भेद-भरी बात थी और न ही आश्चर्यजनक। यह तो एक युक्ति का परिणाम-मात्र था, एक ऐसा खंड था, जिससे किसी का नाश हो जाता था। इसके अतिरिक्त मृत्यु के विषय में बहुत कम चर्चा होती थी और 'फाँसी' शब्द का तो प्रयोग ही नहीं होता था और जिस शब्द का चलन था, वह था 'शारीरिक ह्रास'। इस शब्द से भी केवल एक ठोस बात निकलती थी—राजनीतिक कार्यवाहियों का अन्त।

रुबाशोफ ने अपने चश्मे की राह अँधेरे में ही जैसे झाँका। उसने अपने आपसे प्रश्न किया—क्या शुरू के इन्तज़ाम होने लग गए हैं? अथवा अभी होने को हैं? उसने जूते और जुराबें उतार रखी थीं। उसके नंगे पाँव अँधेरे में कम्बल में लिपटे पड़े थे। वहाँ का सन्नाटा और भी अप्राकृतिक लगने लगा। अक्सर शोर के अभाव में जो सुख होता है, वह इस सन्नाटे में नहीं था। यह ऐसा सन्नाटा था, जो सारे कोलाहल को हड़प गया था और जिसने उसका गला घोंट दिया था। यह ऐसा सन्नाटा था, जो कटे हुए ढोल की गूँज से छा-छाकर फैल जाता था। रुबाशोफ ने अपने नंगे पाँवों को देखा और धीरे-से अँगूठों को हिलाया। वह अपने शरीर के लिए असाधारण रूप से चिन्ता करने लगा। उसे सोच हुआ—'शारीरिक ह्रास' किस स्थान पर किया जाता है? उसे कुछ धुँधला-सा ख्याल था कि नीचे ही वह जगह है। सीढ़ियों से नीचे जाकर नाई के कमरे से परे वह स्थान है। उसे ग्लैटकिन के रिवाल्वर की पेटी के चमड़े की गन्ध आई और उसने उसकी वर्दी की सर-सर की आवाज़ सुनी। उसने अपने शिकार से क्या

कहा था ? 'अपना मुँह दीवार की ओर करके खड़े हो जाओ।' क्या उसने 'कृपा कर' भी उसके साथ जोड़ा था ? क्या उसने कहा था—'डरो नहीं। इससे तुम्हें कष्ट नहीं होगा······?' शायद उसने चेतावनी दिये बिना ही पीछे से गोली मार दी हो, जबकि वे साथ-साथ जा रहे थे। लेकिन उसका शिकार तो रह-रहकर घूमकर देख रहा था। शायद उसने अपना रिवाल्वर कमीज़ की बाँह में छिपा लिया था, जैसे कि दाँतों का डाक्टर चिमटी को छिपा लेता है। शायद, दूसरे भी वहीं मौजूद थे। उसकी कैसी हालत होगी ? वह आदमी मुँह के बल गिरा या पीठ के बल ? क्या वह बोला था ? शायद, उसका ख़ात्मा करने के लिए दूसरी गोली दागने की आवश्यकता भी रही हो।

रुबाशोफ ने सिगरेट का कश लगाया और अपने पंजों को देखा। इतनी चुप्पी थी वहाँ कि सिगरेट के काग़ज़ के जलने तक की आवाज़ आ रही थी। उसने जोर से सिगरेट का कश लगाया। 'क्या बेवकूफी है,' उसने अपने आपसे कहा। वास्तविकता तो यह थी कि उसने 'शारीरिक ह्रास' की कला में कभी यकीन ही नहीं किया था। मृत्यु का दूसरा नाम चेतना-रहित हो जाना है—यानी अपने ही तक। सम्भवतः अब तो सब कुछ हो भी चुका था, और जो बात भूतकाल की हो जाती है, उसमें असलियत नहीं होती। सब ओर अँधेरा और शान्ति का राज्य था, और नं० ४०२ ने भी टकटकाना बन्द कर दिया था।

वह चाहता था कि इस अप्राकृतिक चुप्पी को चीर डालने के लिए कोई बाहर से चिल्ला उठे। उसे लगा कि उसके नसुनों में कुछ समय से आर-लोवा की सुगन्ध घुसी जा रही थी। यहाँ तक कि उसके सिगरेटों में भी उसी की गन्ध थी। उसने बैग में चमड़े का सिगरेट केस रखा हुआ था और उसके प्रत्येक सिगरेट में से उसी के पाऊडर की गन्ध आ रही थी।···सन्नाटा अब भी स्थिर था। केवल जब वह हिलता-डुलता था, उसकी खड्डी चरचरा जाती थी।

रुबाशोफ उठकर सिगरेट जलाने की सोच ही रहा था कि टक-टक शुरू हुई। "वे आ रहे हैं," टक-टक हुई थी।

रुबाशोफ सुनने लगा। उसने सुना, उसकी नसें कनपटियों पर हथौड़े चला रही हैं, और बाकी कुछ नहीं। उसने इन्तजार की। सन्नाटे ने और भी गहरा रूप धारण कर लिया। उसने चश्मा उतारा और टकटकाया—"मैंने तो कुछ नहीं सुना।"

काफ़ी देर तक ४०२ ने कोई जवाब नही दिया। एकाएक उसने टक-टकाया—ऊँचे और तेज़ी के साथ—"नं० ३८०; इस खबर को आगे की ओर पहुँचा दो।"

रुबाशोफ फौरन उठ बैठा। वह समझ गया, यह खबर ग्यारह कोठ-रियों से होती हुई, नं० ३८० के पड़ोसियों ने यहाँ तक टकटकाई है। ३८० और ४०२ के बीच की कोठरियों के रहने वालों ने अँधेरे और सन्नाटे में खबरों को सहज ही भेजने का ढंग बना रखा था। वे समर्थहीन थे, अपनी चहारदीवारी में बन्द थे, और यही एक बात थी जिसमें उनका साँझापन था। रुबाशोफ खड्डी से जैसे उछल पड़ा और दीवार तक नंगे पाँव गया। बाल्टी से आगे की ओर बैठकर उसने ४०६ को टकटकाया—"सावधान! नं० ३८० को अब गोली मारी जायगी। इस खबर को आगे चला दो।"

वह देखने लगा। बाल्टी में बदबू थी। लेकिन वह दुर्गन्ध भी आर-लोवा की सुगन्धि में बदल गई थी। उधर से कोई जवाब न मिला। रुबाशोफ जल्दी से अपनी खड्डी पर चला गया। इस बार उसने चश्मे से नहीं, बल्कि पाँव से टकटकाया—"नं० ३८० कौन है?"

यहाँ से भी कोई जवाब न मिला। रुबाशोफ ने अन्दाजा किया कि नं० ४०२ भी उसी की तरह अपनी कोठरी की दोनों दीवारों के बीच घड़ी के लटकन की भाँति हिल-डुल रहा है। उससे परे ग्यारह कोठरियों में रहने वाले भी अपनी-अपनी दीवारों के बीच में चुपचाप, किन्तु तेज़ी से कभी इधर जाते हैं, कभी उधर। अब नं० ४०२ इधर की दीवार के पास फिर

आ गया था। उसने खबर दी, "वे उसे सज़ा पढ़कर सुना रहे हैं। खबर को आगे चला दो।"

रुबाशोफ ने पहला ही सवाल फिर किया—"वह है कौन ?"

लेकिन ४०२ फिर जा चुका था। रिप वान विंकल को खबर देने का कोई लाभ नहीं था, फिर भी रुबाशोफ ने कर्तव्यवश टकटकाया ही। और तिस पर वह नहीं चाहता था कि उसके हाथों से कड़ी टूटे। और बाल्टी की दुर्गन्धि के कारण तो उसकी तबियत ही ख़राब हो गई थी। वह लौट कर बिस्तर पर जा बैठा। अभी भी बाहर से कोई आवाज़ या शोर सुनाई न दिया। केवल दीवार पर टक-टक हो रही थी—"वह सहायता के लिए चिल्ला रहा है।"

"वह सहायता के लिए चिल्ला रहा है," रुबाशोफ ने ४०६ को टकटकाया। वह सुनने बैठा। लेकिन कुछ भी न सुन सका। रुबाशोफ को डर लगा कि यदि अब वह बाल्टी के पास गया तो बीमार ही हो जायगा।

"वे उसे ला रहे हैं—चीख़ते और हाथ पटकते हुए। इस खबर को आगे चला दो," नं० ४०२ ने टकटकाया।

"उसका नाम क्या है ?" रुबाशोफ ने जल्दी-जल्दी टकटकाया। इस बार उसे उत्तर मिला—"बोगरोफ; विरोधी दल का। खबर को आगे चला दो।"

रुबाशोफ की टाँगें एकाएक भारी हो गईं। वह दीवार का सहारा लेकर ४०६ को टकटकाने लगा—"माईकल बोगरोफ पोटैमकिन नाम के युद्ध-जहाज का भूतपूर्व नाविक, पूर्वी जंगी-बेड़े का कमाण्डर और पहले क्रान्तिकारी आदेश का वाहक, फाँसी के लिए जा रहा है।"

उसने अपने माथे से पसीना पोंछा। बाल्टी की दुर्गन्धि के कारण वह बीमार-सा हो रहा था। उसने इन शब्दों के साथ वाक्य पूरा किया—"ख़बर को आगे चला दो।"

वह बोगरोफ की मूर्ति को अपने दिमाग़ में सही-सही तो उतार न सका, किन्तु उसकी विशाल देह की रूपरेखा उसकी आँखों में नाच गई। १९०५ के

ाद देश-निकाले में वे दोनों एक ही कमरे में रहते थे। रुबाशोफ ने उसे लिखना-पढ़ना सिखाया था और ऐतिहासिक विचार-धारा का ज्ञान कराया था। तब से लेकर, रुबाशोफ चाहे जहाँ भी हो, उसे बोगरोफ के बरस में दो पत्र आते, जिनके अन्त में ये शब्द अवश्य ही लिखे रहते—"आपका कामरेड, मृत्यु-पर्यन्त सच्चा साथी, बोगरोफ।"

"वे आ रहे हैं," नं० ४०२ ने जल्दी-जल्दी टकटकाया, और इतने ज़ोर से कि रुबाशोफ, जो अब तक बाल्टी से आगे की ओर दीवार का सहारा लिये बैठा था, उस आवाज़ को कोठरी के आर-पार तक सुन गया। "झाँकने के छेद पर खड़े हो जाओ। ढोल। ख़बर को आगे चला दो।"

रुबाशोफ ज़रा और कठोर बना। उसने नं० ४०६ को सन्देश दिया—"झाँकने के छेद पर खड़े हो जाओ। ढोल। खबर को आगे चला दो।" वह अँधेरे में जल्दी-जल्दी से कोठरी के किवाड़ तक गया और इन्तजार करने लगा। वहाँ पहले की तरह ही सुनसान था।

चन्द सैकिण्ड में दीवार पर फिर टक-टक हुई—"अब"

इसके बाद बरामदे में जैसे ढोलों के बजने की आवाज़ आई, और उनका शब्द बहुत ही मन्द-स्वर में जैसे विलीन होता सुनाई दे रहा था। यह न तो थपथपाना था और न ही भड़भड़ाना—३०२ से ४०२ तक की कोठरियों के आदमी कानों की श्रृङ्खला-सी बाँधे अपने-अपने किवाड़ों के पीछे ऐसे खड़े थे, मानो अन्धकार में सम्मान देने के लिए कतार बाँधे खड़े हों। इस सम्मान-प्रदर्शन में बहुत दूर से, जैसे हवा में बल खाती हुई ढोलों की प्रतिध्वनि ढकी-सी चली आ रही थी। रुबाशोफ छेद में अपनी आँख लगाये खड़ा था। वह इस सम्मिलित संगीत में साथ देने के लिए दोनों हाथों से कंकरीट के किवाड़ को सुरताल के साथ बजाने लगा। तब तो वह बहुत ही हैरान हुआ, जबकि यह घुटी-सी लहर नं० ४०६ के उस पार की ओर ले जाई जाने लगी। रिप वान विंकल भी सारी बात समझ ही गया होगा और इसी कारण वह भी ध्वनि कर रहा था। उसी वक्त रुबाशोफ ने अपनी बांईं ओर सुना। कुछ फासले पर जहाँ उसकी नज़र नहीं जा सकती थी, लोहे के

किवाड़ सरकाये जा रहे हैं। उसकी बांई ओर ढोलों की आवाज कुछ ऊँची हो गई थी। रुबाशोफ जानता था कि लोहे का किवाड़ खोल दिया गया था और वह किवाड़ आम कोठरियों को तनहाइयों से जुदा करता था। पल-भर में तालियों का गुच्छा झनझनाया, और किवाड़ फिर बन्द हो गया। अब उसने टाइलों पर फिसलने और घिसने तथा पाँव-पाँव चलकर पहुँचने की आवाज सुनी। बांई ओर की ढोलों की ध्वनि लहर-सी बनकर धीरे-धीरे ढकी-सी ऊँची-ऊँची होने लगी। रुबाशोफ की नजर नं० ४०१ और ४०७ के कारण रुकी हुई थी और वह कुछ भी नहीं देख सकता था। सरकने और सिसकने की आवाजें तेजी से पास-पास आने लगीं। अब वह बच्चों की तरह रिरियाने और कराहने के भेद को भी पहचान गया था। कदम-कदम चलने में तेजी आई, ढोलों की आवाज बांई ओर को हल्की पड़ने लगी, और दांई ओर को बढ़ने लगी।

रुबाशोफ भी जैसे ढोल पीटने लगा। समय और स्थान का ज्ञान धीरे-धीरे जैसे लोप हो चुका था। उसने सुना महज जंगली नगाड़ों का खाली-खाली पीटा जाना। उसे लगा, जैसे बन्दर अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे खड़े हों और अपनी छातियों और नगाड़ों को पीट रहे हों। उसने छेद पर अपनी आँख जमाई और जैसे-जैसे वह ढोल बजा रहा था, तैसे-तैसे सुरताल के साथ उसके पंजे कभी ऊपर उठते और कभी नीचे गिरते। छेद में से उसे दीखा पहले-सा ही दृश्य। उसने बरामदे में केवल बिजली की फीकी और पीली-सी रोशनी को देखा। उसे ४०१ से ४०७ तक के लोहे के किवाड़ों में से भी कुछ न दीखा। उसे तो केवल यही लग रहा था कि ढोलों की आवाज आ रही थी और, सिसकना और रिरियाना पास-ही-पास आता जा रहा था। तभी एकाएक, उसकी दृष्टि में झिलमिल-झिलमिल शक्लें आईं; वे लोग आ गए थे। रुबाशोफ ने बजाना बन्द कर दिया और देखने लगा; दूसरे ही क्षण वे लोग सामने से निकल गए।

इन कुछ ही क्षणों में जो कुछ उसने देखा, उसके मस्तिष्क में जैसे गड़ गया। दो झिलमिलाती शक्लें निकल जा चुकी थीं; दोनों बावर्दी, बड़ी-बड़ी,

किन्तु अस्पष्ट। उनके बीच एक तीसरी शक्ल भी थी, जिसे उन्होंने बाँहों से पकड़ा हुआ था और जिसे वे धकेलते ले जा रहे थे। तीसरी शक्ल झटकी और लटकी हुई थी, लेकिन उनकी पकड़ में वह ऐसी लग रही थी, जैसे निर्जीव गुड़िया। फैला हुआ-सा उसका मुँह धरती की ओर झुका था और पेट नीचे को मुड़ा हुआ था। उसकी टाँगें घिसटती-सी चल रही थीं और जूते पंजों के बल सरक रहे थे। उसके जूतों के सरकने से जो आवाज़ हो रही थी, रुबाशोफ ने उसे दूर से सुना था। उसके सफेद बालों की लटें चेहरे पर से लटक रही थी जो फर्श की ओर झुका हुआ था और उसने मुँह बाहर रखा था। चेहरे पर पसीने की बूँदें चमक रही थी और मुँह में से पतली-पतली झाग टपक रही थी, जो ठोड़ी तक ढलक रही थी। जब वे उसे रुबाशोफ की नज़रों से परे दाईं ओर नीचे बरामदे में धकेल कर ले गए तो सिसकने और रिरियाने की आवाज़ धीरे-धीरे लोप हो गई। उसे दूर से केवल गूँज-सी आती सुनाई दी और उसमें तीन ही स्वर थे, 'ऊ-आ-ओ!' लेकिन जब वे नाई की दुकान के पास बरामदे के आख़िरी कोने पर मुड़े तो बोगरोफ दो बार ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और इस बार रुबाशोफ ने महज़ स्वरों को ही नहीं सुना, बल्कि पूरा शब्द सुना। यह उसका अपना नाम था; उसने साफ़-साफ़ सुना था—"रु-बा-शोफ!"

तब जैसे एकाएक किसी के आदेश से सन्नाटा-सा छा गया—एकदम चुप! बिजली की बत्तियाँ सदा की तरह जल रही थीं। बरामदा हमेशा की तरह खाली था। केवल नं० ४०६ दीवार पर टकटका रहा था—"ओ, धरती के नीच, जाग।"

रुबाशोफ फिर अपनी खड्डी पर लेट गया था। उसे पता भी न हुआ कि कब वह वहाँ चला गया था। उसके कानों में अब भी ढोलों की आवाज़ आ रही थी। लेकिन इस वक्त की चुप्पी असली चुप्पी थी—खाली-खाली और थकी-थकी-सी। नं० ४०२ शायद सो गया था। बोगरोफ या उसका अवशेष शायद अब तक मर चुका था।

'रुबाशोफ, रुबाशोफ······' यह आखिरी चीखें उसकी स्मृति की

शृङ्खला में बुरी तरह घर कर गई थीं। किन्तु उसकी आँखों में बसी हुई मूर्ति अब भी अस्पष्ट थी। उसके लिए, अब भी बोगरोफ के साथ उसे मिलाना कठिन हो रहा था। उसने देखी थी चन्द ही मिनट पहले, गुड़िया-सी मूर्ति, जिसका चेहरा पसीने से तर था और कठोर था; जिसकी टाँगें घिस रही थीं। अब उसे केवल सफेद बालों की ही याद आ गई थी। बोगरोफ का उन्होंने क्या किया? उन्होंने इस दबंग नाविक का क्या किया? उन्होंने उसके गले से रिरियाने को कैसे दबाया? क्या आरलोवा भी इसी तरह रिरियाई थी, जबकि उसे बरामदे की राह धकेला गया था?

रुबाशोफ बैठ गया और उसने उस दीवार पर माथे को सहारा दे लिया जिसकी दूसरी ओर नं० ४०२ सो रहा था। उसे डर हुआ कि वह फिर बीमार होने जा रहा है। अब तक, उसने आरलोवा की मृत्यु के बारे में इतने विस्तार के साथ कभी नहीं सोचा था। उसने हमेशा ही इसे एक ठोस-सी घटना-मात्र समझा था। उसकी मृत्यु से उसने पर्याप्त व्याकुलता तो ज़रूर महसूस की थी, लेकिन उसे अपने व्यवहार को युक्ति-संगत ठहराने की ओर सन्देह कभी नहीं हुआ था। अब उसे कै हो रही थी। उसका पेट जैसे उलट गया था। उसके माथे पर पसीना आ गया। उसका सोचने का पुराना ढंग भी जैसे पागलपन में बदल गया था। बोगरोफ के रिरियाने ने उसकी युक्ति-विषयक साम्यता को नष्ट कर दिया था। अब तक आरलोवा इस समीकरण का अंश बनी हुई थी, और लगी हुई बाज़ी के मुकाबले में वह अंश बहुत छोटा था। ऊँची एड़ी के जूते पहने आरलोवा की टाँगों का बरामदे में घिसटना, इसके अनुमान ने उसकी गणित-सम्बन्ध समता को नष्ट कर दिया। एक महत्वहीन-सा अंश एकाएक बहुत बड़ा रूप धारण कर गया; बोगरोफ की दर्द-भरी आवाज़, जिसमें उसका नाम लिया गया था, और ढोलों की खोई-खोई-सी ध्वनि उसके कानों में भर-सी गई। इन आवाज़ों ने उसकी युक्ति के स्वर को ऐसे ढक लिया, जैसे डूबते हुए की 'बड़-बड़' को पानी अपने अन्दर ढकेलता है।

थका हुआ, रुबाशोफ बैठा-बैठा सो गया—दीवार का सहारा लिये और बन्द आँखों पर चश्मा पहने-ही-पहने।

: ७ :

नींद में वह कराहने लगा। उसकी पहली गिरफ्तारी का उसे सपना आ गया था। उसका हाथ बिस्तर पर से लटक रहा था और जो, चोगे की बाँह में जाने के लिए फैला हुआ था। वह इंतजार में था उस प्रहार की, जो उस पर आखिरी बार होने को था; लेकिन वह न हुआ।

तब एकाएक उसकी कोठरी की बिजली जगी और उसकी नींद टूट गई। उसके बिस्तर से आगे की ओर एक आदमी खड़ा था, जो उसे देख रह था। रुबाशोफ अभी कुल मिलाकर पन्द्रह ही मिनट सोया होगा, लेकिन उस सपने के बाद उसे होश में आने के लिए कई मिनटों की जरूरत होती थी। वह तेज रोशनी में आँखें झपका रहा था। उसका मन जबरदस्ती जैसे कल्पना करने लगा था और उसकी हालत ऐसी थी, जैसे बेहोशी की हालत में कुछ तलाश कर रहा हो। क्या वह कोठरी में था, शत्रु-देश में नहीं? यह तो केवल सपना था। वह आजाद था, किन्तु नं० १ का रंगीन चित्र, जो उसके बिस्तर पर टँगा था, गायब था, और वहाँ बाल्टी खड़ी थी। इसके अतिरिक्त, इवानोफ उसके बिस्तर के पास खड़ा था और उसके मुँह पर सिगरेट का धुँआ छोड़ रहा था। क्या यह भी सपना ही था? नहीं, इवानोफ सही था, और बाल्टी भी सही थी। वह अपने ही देश में था, किन्तु यह शत्रु-देश बन गया था। और इवानोफ जो उसका मित्र था, अब वह भी दुश्मन बन गया था। किन्तु आरलोवा का सिसकना तो किसी भी दशा में सपना नहीं था। लेकिन नहीं, यह आरलोवा नहीं थी, बल्कि बोगरोफ था, जिसे मोम के खिलौने की तरह धकेला गया था—वही कामरेड बोगरोफ जिसने मृत्यु तक सच्चा रहना था, और जिसने उसका नाम पुकारा था। वह सपना नहीं था।

"क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं?" इवानोफ ने पूछा।

रुबाशोफ ने आँखें झपझपाईं, जैसे रोशनी से उसकी आँखों में अँधेरा छा गया हो। "मेरा चोग़ा मुझे दे दो," उसने कहा।

इवानोफ उसे देख रहा था। रुबाशोफ के चेहरे का दांया हिस्सा सूजा हुआ था। "क्या थोड़ी-सी ब्रांडी पियोगे?" इवानोफ ने पूछा। जवाब की इंतज़ार किये बिना ही उसने छेद में से झाँककर बरामदे में किसी से कुछ कहा। रुबाशोफ की आँखें उसका पीछा कर रही थीं। उसकी खुमारी गई नहीं थी। वह जागता था, लेकिन उसने खोई-सी दशा में देखा, सुना और सोचा।

"क्या तुम भी गिरफ्तार हो गए हो?" उसने पूछा।

"नहीं," इवानोफ ने शान्ति से कहा, "केवल तुम्हीं से मिलने आया था। मैं समझता हूँ, तुम्हें बुखार हो रहा है।"

"मुझे एक सिगरेट दो," रुबाशोफ ने कहा। उसने एक या दो बार गहरी साँस ली तब उसका दृष्टिकोण जैसे साफ़ हो गया। वह फिर लेट गया। सिगरेट पीता हुआ वह छत को देखने लगा। कोठरी का किवाड़ खुला। वार्डर ब्रांडी की एक बोतल और एक गिलास लाया था। इस बार वह बूढ़ा आदमी नहीं था, बल्कि पतला-सा नौजवान था, जिसने पतले फ्रेम वाला चश्मा पहन रखा था। उसने इवानोफ को सैल्यूट किया और ब्रांडी तथा गिलास उसे सौंपकर किवाड़ बन्द कर दिया। बरामदे में नीचे की ओर जाते हुए कदमों की आवाज़ सहज ही सुनाई दे रही थी।

इवानोफ रुबाशोफ की खड्डी के किनारे पर बैठ गया और उसने ब्रांडी से गिलास भरा। "पियो," उसने कहा। रुबाशोफ ने गिलास खाली कर दिया। उसके दिमाग में जो धुँधलापन छा गया था, वह साफ़ हो गया। घटनाएँ और व्यक्ति—उसकी पहली और दूसरी कैद, आरलोवा, बोगरोफ, इवानोफ—सब समय और स्थान के अनुसार तरतीब में आ गए।

"क्या तुम्हें कोई तकलीफ है?" इवानोफ ने पूछा।

"नहीं," रुबाशोफ ने कहा। जो बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी, वह यही थी कि इस समय इवानोफ उसकी कोठरी में क्या करने आया था।

"तुम्हारा गाल बुरी तरह सूज रहा है। शायद तुम्हें बुखार भी है।" रुबाशोफ खट्टी से उतर खड़ा हो गया। उसने छेद की राह बरामदे में झाँका। बरामदा खाली था। उसने एक या दो चक्कर कोठरी में लगाए। उसका दिमाग जैसे साफ हो गया हो। तब वह इवानोफ के सामने खड़ा हो गया, जो खट्टी पर बैठा शान्ति से धुँए के गोले बना रहा था।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने पूछा।

"मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ," इवानोफ ने कहा, "तुम फिर लेट जाओ और कुछ ब्रांडी और पी लो।"

रुबाशोफ ने जैसे ताने के साथ उसकी ओर देखा। "अभी तक," उसने कहा, "मैं तुम्हें सच्चा समझने की कोशिश में लगा हुआ था। और अब मैं देखता हूँ कि तुम पाजी हो। निकल जाओ यहाँ से।"

इवानोफ अचल रहा। "ऐसी धारणा बनाने का कारण तो बता दो," उसने कहा।

रुबाशोफ नं० ४०६ की दीवार के सहारे खड़ा हो गया और इवानोफ की ओर देखने लगा। इवानोफ पहले की तरह ही सिगरेट पी रहा था।

"पहली बात," रुबाशोफ बोला, "बोगरोफ के साथ मेरी मित्रता को तुम जानते थे। इसलिए तुमने यह चतुराई की कि बोगरोफ, या जिसका मुर्दा ही बाकी था, आखिरी यात्रा के समय मेरी कोठरी के सामने से निकाला जाय, ताकि मैं भी सावधान हो जाऊँ। इस बात का यकीन कर लेने के लिए कि मैं इस नजारे को देखने से चूका नहीं, बोगरोफ की फाँसी की खबर चुपके-चुपके इस ख्याल से पहले ही घोषित कर दी जाती है कि मेरे पास-पड़ोसी इस खबर को मुझ तक टकटका देंगे, और दरअसल, ऐसा हुआ भी। इस जाल को बिछाने वाले ने एक खूबसूरती यह भी की कि बोगरोफ को मेरे यहाँ होने की ठीक उसी वक्त सूचना दी कि जब वह फाँसी के लिए धकेला जा रहा था। और यह भी इस ख्याल से किया गया कि यह आखिरी धक्का उसे बकने पर मजबूर करेगा, और यह हुआ भी। मतलब यह कि जो-कुछ भी

हुआ, वह मुझ पर दबाव डालने के ख्याल से किया गया। और तभी, इस अँधियारी घड़ी में, इवानोफ मेरा राही बनकर हाजिर होता है—बग़ल में ब्रांडी की बोतल दबाये हुए। इसके बाद मेल-मिलाप के हृदय-स्पर्शी दृश्य आते हैं, हम एक-दूसरे के साथ बगलगीर होते हैं, पिछली लड़ाइयों की बातें एक-दूसरे को सुनाते हैं, और उसी बीच, घटनावश, मैं अपनी खुशी के साथ दिये हुए बयान पर हस्ताक्षर कर देता हूँ। और तब कैदी, जैसे कोमल-सी नींद की झपकियाँ लेते हुए डूबने लगता है, कामरेड इवानोफ अपनी जेब में बयान को रखकर दबे पंजों से निकल जाता है और चन्द दिनों बाद उसकी तरक्की हो जाती है।······सो अब यहाँ से तशरीफ ले जाने की कृपा कीजिये।"

इवानोफ अचल रहा। उसने हवा में धुँआ छोड़ा, मुस्कराया और अपने सुनहरी दाँतों को दिखाता हुआ बोला, "क्या तुम सच ही समझते हो कि मैं ऐसे हल्के दिल का आदमी हूँ? या तुम यह यकीन करते हो कि मैं ऐसा भद्दा मनोवैज्ञानिक हूँ?"

रुबाशोफ जैसे काँप गया। "तुम्हारी चालों से मैं निराश हो गया हूँ," उसने कहा। "मैं तुम्हें बाहर नहीं निकाल सकता। यदि तुममें रत्ती-भर भी अच्छाई बाकी है, तो तुम्हें, अब मुझे अकेला छोड़ देना चाहिए। तुम अन्दाज़ा नहीं कर सकते कि मैं तुम लोगों से कितना तंग आ चुका हूँ।"

इवानोफ ने फर्श से गिलास उठाया, भरा और उसे पी गया। "इस सम्बन्ध में मैं एक तजवीज़ पेश करता हूँ," उसने कहा। "तुम मुझे टोके बिना पाँच मिनट तक बोलने दो और जो-कुछ मैं कहूँ, उसे साफ़ दिमाग़ से समझो। यदि उसके बाद भी तुम मुझे निकल जाने को कहोगे तो मैं चला जाऊँगा।"

"मैं सुन रहा हूँ," रुबाशोफ ने कहा। वह इवानोफ के सामने की दीवार के सहारे खड़ा था और उसकी घड़ी देख रहा था।

"पहली बात तो यह है," इवानोफ ने कहा, "कि तुम्हारी शंका दूर करने के लिए बता दूँ, बोगरोफ को दरअसल ही गोली मार दी गई है।

दूसरे यह कि वह कई महीनों से जेल में था, और अन्त में कई दिनों तक उसे बुरी तरह तंग भी किया जाता रहा। अगर तुम सार्वजनिक पेशी के वक्त इसका ज़िक्र भी करोगे अथवा अपने पड़ोसियों को इस बाबत टकटकाओगे, तो मेरा अन्त समझ लो। बोगरोफ के साथ ऐसा क्यों किया गया, इसकी बाबत हम बाद में चर्चा कर लेंगे। तीसरी बात, तुम्हारी कोठरी के सामने से उसे ले जाना जान-बूझकर ही किया गया और जान-बूझकर ही उसे तुम्हारी यहाँ मौजूदगी भी बताई गई। चौथी बात, यह भद्दी चालाकी, जैसा कि तुम कहते हो, मैंने नहीं की, बल्कि मेरे साथी ग्लैटकिन ने, मेरी हिदायतों के विपरीत की।"

वह रुका। रुबाशोफ दीवार के सहारे टिका रहा और बोला नहीं।

इवानोफ आगे बोला—"मैं ऐसी ग़लती कभी नहीं करने वाला था। यह इसलिए नहीं कि मेरे दिल में तुम्हारे लिए कोई जगह है, बल्कि इस कारण कि यह मेरे तरीकों और मनोवैज्ञानिक ज्ञान के विपरीत है। तुमने, हाल ही, मानवीय-शंकाओं और वैसी ही अनेक बातों का ज़िक्र किया है। इसके अतिरिक्त, आरलोवा की कहानी तुम्हारे दिल पर छाई हुई है। बोगरोफ का नजारा तुम्हारी बेबसी और नैतिक धारणाओं को और कड़ा ही करेगा, यह मैं भली प्रकार जानता हूँ। मनोविज्ञान का अधूरा ज्ञानी ग्लैटकिन मेरे कान खा रहा है कि हमें तुम्हारे साथ कठोरता करनी चाहिए। एक बात तो यह कि जिसके कारण तुम्हें वह पसन्द नहीं करता कि तुमने उसे जुराबों के छेद दिखाये थे, और दूसरे, वह किसानों के साथ पेश आने का अभ्यस्त है।··· बोगरोफ के मामले के सम्बन्ध में मेरी इतनी ही सफाई है। और हाँ, ब्रांडी बेशक मैंने मँगाई है, क्योंकि जिस समय मैं भीतर आया था, तो तुम अपने काबू में नहीं थे। यह मेरे हित में नहीं कि मैं तुम्हें शराब पिलाऊँ। यह भी मेरे हित के विपरीत है कि तुम्हें दिमागी भय से कँपाता रहूँ। मेरा हित तो इसी में है कि तुम शान्तिपूर्वक सोचते हुए अपना फैसला दो। क्योंकि जब तुम विचारपूर्वक नतीजे पर पहुँचोगे, महज़ तब ही तो आत्म-समर्पण कर सकोगे······।"

रुबाशोफ ने अपने कन्धे उमेटे, लेकिन उसके कुछ बोलने से पहले ही इवानोफ कहने लगा—"मैं जानता हूँ तुम्हारी इस धारणा को कि तुम समर्पण नहीं करोगे। मुझे तो केवल एक बात का जवाब दो, यदि तुम्हें समर्पण की सत्यता और उसकी युक्ति-संगत आवश्यकता का यकीन हो जाय, तब क्या तुम समर्पण करोगे?"

रुबाशोफ ने एकाएक जवाब न दिया। उसने महसूस किया कि उसे इस चर्चा को इतना नहीं बढ़ने देना चाहिए था। पाँच मिनट हो चुके थे, और वह इवानोफ को बाहर नहीं कर सका। उसे महसूस हुआ, केवल यही तो मेरा विश्वासघात है—बोगरोफ और आरलोवा से और रिचर्ड और लिटल लुई से।

"चले जाओ," उसने इवानोफ से कहा, "ये सब फिजूल की बातें हैं।" उसी वक्त उसने देखा कि वह इवानोफ के सामने अपनी कोठरी में इधर-उधर चक्कर काट रहा था।

इवानोफ खड्डी पर बैठा था। "तुम्हारे बोलने के लहजे से मैंने जान लिया है," उसने कहा, "कि बोगरोफ के मामले में मेरी बाबत जो तुम्हें ग़लतफहमी थी, उसे तुम मानते हो। तो फिर तुम मुझे जाने को क्यों कहते हो? क्यों नहीं मेरे पूछे प्रश्न का जवाब देते?······" वह कुछ आगे की ओर झुका और उसने मजाकिया तौर पर रुबाशोफ की ओर देखा। तब धीरे-से बोला, एक-एक शब्द पर ज़ोर देता हुआ, "क्योंकि तुम मुझसे डरते हो। क्योंकि मेरा विचार करने और युक्ति करने का वही तरीका है, जो तुम्हारा अपना है, और तुम उसी गूँज से तो भयभीत हो, जो तुम्हारे अपने दिमाग़ में उठ रही है। एक ही क्षण बाद तुम कहते नज़र आओगे—"ओ शैतान, तू मेरे पीछे रह।""

रुबाशोफ ने जवाब न दिया। वह इवानोफ के सामने से चक्कर काट रहा था—इधर-उधर। वह अपने को असहाय और सही-सही युक्ति देने के अयोग्य महसूस कर रहा था। उसकी दोषी होने की चेतनता, जिसे इवानोफ ने 'नैतिक उन्नति' का नाम दिया था, किन्हीं तर्कों से प्रकट नहीं की

जा सकती थी, वह तो 'व्याकरण-सम्बन्धी कल्पना' के लोक में पड़ी हुई थी। इसके अलावा, इवानोफ का कहा हुआ एक-एक वाक्य, वास्तव में ही, उसके अपने अन्दर से गूँज पैदा कर रहा था। उसे महसूस हुआ कि उसे इस बहस में हरगिज नहीं पड़ना चाहिए था। उसे लगा, जैसे वह सपाट और तिरछी-सी नीची जगह पर खड़ा है, जहाँ से वह बेरोक-टोक फिसल सकता है।

"ओ शैतान, तू मेरे पीछे रह," इवानोफ ने दोहराया और अपने लिए एक गिलास और भरा। "पुराने दिनों में शारीरिक ढंग के प्रलोभन हुआ करते थे; लेकिन अब ये युक्ति की शक्ल में हो गए हैं। अब इनके मूल्य भी बदल गए हैं। मैं एक भाव-प्रधान नाटक लिखना चाहूँगा, जिसमें खुदा और शैतान भक्त रुबाशोफ की आत्मा को पाने के लिए लड़ते हैं। गुनाहों की जिन्दगी बिताने के बाद वह खुदा की ओर झुका—उस खुदा की ओर, जो औद्योगिक आजादी और दया का रूप था। इसके विपरीत शैतान दुबला, तपस्वी और तर्क का अन्धा भक्त है। वह मैचीवली, मार्क्स और हेगल को पढ़ता है; मनुष्यता के प्रति कोरा और बेरहम है। उसकी दया का ढंग जैसे गणित-सा हो। उसे सदा वही करने पर विवश होना पड़ता है, जो स्वभावतः वह घृणित समझता हो। वह हत्यारा बन जाता है, हत्या को मिटाने के लिए; वह भेड़ों को कुरबान करता है ताकि और भेड़ों की हत्या बन्द हो जाय; वह लोगों को कोड़े मारता है, ताकि लोग कोड़ों की मार से बचना सीख सकें; और वह मनुष्यता की घृणा को चुनौती देता है, क्योंकि उसे उससे स्नेह है—अनिश्चित रेखा-गणित-सा प्यार। ओ शैतान, तू मेरे पीछे रह। रुबाशोफ शहीद होना बेहतर समझता है। नरम-दली अखबार, जो जीवन-काल में उससे घृणा करते रहे थे, उसकी तारीफ में कालम-के-कालम काले करेंगे। उसने एक चेतनता की खोज की है, और वह चेतनता किसी को भी क्रान्ति के अयोग्य बना देती है। यह चेतनता नासूर की तरह दिमाग़ को चाट जाती है। शैतान हार तो गया है, किन्तु यह न समझो कि वह दाँत पीसता है और अपना गुस्सा दिखाता है। वह तो अपने कन्धे उमेठता है;

वह दुबला है और तपी है; उसने कइयों को आडम्बरपूर्ण ढंग से कमज़ोर पड़ते और अपनी कतार से निकलते देखा है।······"

इवानोफ रुका और उसने अपने लिए ब्रांडी का एक और गिलास भरा। रुबाशोफ खिड़की के सामने इधर-उधर चक्कर लगा रहा था। कुछ ठहर कर बोला—"तुमने बोगरोफ को फांसी क्यों दी?"

"क्यों? पनडुब्बियों के प्रश्न पर," इवानोफ ने कहा। "इसका सम्बन्ध भारी-भारी पनडुब्बियाँ बनाने से था। यह एक पुराना झगड़ा था, जिसके आरम्भ से तुम परिचित ही होगे।"

"बोगरोफ इस बात का हामी था कि बड़ी-बड़ी भारी वज़न की पनडुब्बियाँ बनें और लड़ाई के लिए दूर-दूर तक उनका फैलाव हो जाय। पार्टी की राय थी कि छोटी-छोटी पनडुब्बियाँ हों और उनका फैलाव भी थोड़ा ही हो। एक बड़ी पनडुब्बी पर जितना पैसा लगेगा, उससे तीन छोटी-छोटी बन सकती हैं। दोनों दलों के पास अपनी-अपनी युक्तियाँ थीं। दोनों दलों के विशेषज्ञों ने अपनी-अपनी पुष्टि में स्कैच बनाये और अपने पक्ष को गणित से सिद्ध करने की कोशिश की, लेकिन जो असली प्रश्न था, वह इन बातों से बिलकुल जुदा था। बड़ी पनडुब्बियों का मतलब था, आक्रान्ता की नीति ग्रहण करना, यानी हमलावर बनना, जिससे कि दुनिया में क्रान्ति बढ़े। छोटी पनडुब्बियों का मतलब था, अपने समुद्र-तट की रक्षा, यानी अपनी हिफाज़त और दुनिया की क्रान्ति को मुल्तवी बनाये रखना। यह जो दूसरा नज़रिया यानी दृष्टिकोण है, वह नं० १ और पार्टी का है।

"समुद्री सेना में बोगरोफ का बहुत मान था और अफ़सर और पुराने सिपाही उसके भक्त थे। ऐसी हालत में, यही काफ़ी नहीं था कि उसे राह से हटाया जाय, बल्कि उसे बदनाम भी करना ज़रूरी था। आख़िर में, बड़ी पनडुब्बियों के हामियों को छिपे-छिपे हानि पहुँचाने और देशद्रोही के रूप में प्रदर्शित करने के लिए एक मुकदमा चलाया गया। हमने बहुत-से छोटे-मोटे इंजीनियरों को यह मना लिया था कि हम उनसे आम लोगों के सामने जो चाहें मनवा लेंगे। लेकिन बोगरोफ इस बात में आने वाला नहीं था।

वह आख़िरी वक्त तक भारी-बोझल पनडुब्बियों और विश्व-क्रान्ति की सार्व-जनिक रूप में घोषणा करता रहा। वह समय से २० बरस पीछे जा रहा था। वह समझता नहीं था कि वक्त हमारे ख़िलाफ है और यूरोप एक प्रति-क्रिया-काल में से निकल रहा है, और हम एक छोटी-सी लहर पर जो खड़े हैं हमें एक नई लहर की इन्तज़ार करनी चाहिए, जो हमें भंवर से ऊपर उठा सके। कानूनी तौर पर उसका ख़ात्मा कर दिया जाय, इसके सिवा और कोई चारा सम्भव ही न था। अगर तुम भी हमारी ही स्थिति में होते तो क्या तुम भी वही न करते, जो हमने किया?"

रुबाशोफ ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने चलना बन्द कर दिया था और नं० ४०६ की दीवार के सहारे खड़ा था। उसने अपना चश्मा उतारा और लाल-लाल पलकों से इवानोफ को देखा।

"तुमने उसका रिरियाना नहीं सुना," उसने कहा।

इवानोफ ने पहली सिगरेट के सिरे से नई सिगरेट जलाई। बाल्टी की दुर्गन्ध उसे भी जैसे हावी करने लगी थी।

"नही," उसने कहा, "मैंने वह नहीं सुना। लेकिन मैंने ऐसी ही बातें देखी और सुनी भी हैं। यह कौन बड़ी थी?"

रुबाशोफ चुप था। किसी बात को समझना या उसकी कोशिश सब व्यर्थ थी। एक बार फिर गूंज की तरह उसके कानों को रिरियाने और बन्द-बन्द-से ढोलों की ध्वनि छेदने-सी लगी। इस गूँज को कोई भी प्रकट नहीं कर सकता, आरलोवा की झुकी हुई छाती भी नहीं; कोई भी कुछ नहीं जाहिर कर सकता। 'चुपचाप मरना,' यह लिखा हुआ सन्देश नाई ने उसे दिया था।

"यही कौन बड़ी थी?" इवानोफ ने दोहराया। उसने अपनी टाँग फैलाई और जवाब का इंतजार करने लगा। लेकिन जब जवाब न मिला, तो वह आगे बोला—"काश, मेरे दिल में तुम्हारे लिए दया का एक कण भी होता! अब मैं तुम्हें अकेला ही छोड़ दूंगा। लेकिन मुझमें दया का एक कण भी नहीं। मैं कुछ समय से पीता हूं, जैसा कि तुम जानते हो। लेकिन इस समय

तक मैंने अपने को दया की बुराई से छुटकारा दिये रखा है। इसकी न्यूनतम मात्रा तुम्हारा खातमा कर सकती है। मनुष्यता के लिए रोना और विलाप करना, इस विषय में हमारी नई विचारधारा को तो तुम जानते ही हो। इसी ज़हर से हमारे बड़े-बड़े कवियों ने अपना नाश कर लिया था। ४०-५० की आयु तक वे क्रांतिकारी थे और तब दया ने उनका खातमा किया और दुनिया ने उन्हें धर्मात्मा घोषित किया। तुम्हारी इच्छा भी वैसी ही बनने की जान पड़ती है और तुम समझते हो कि यह निजी तरीका है, एकदम निजी, और कुछ-कुछ अनहोना।...'' वह कुछ ऊंचा बोला था और उसने सिगरेट के धुँए का जैसा अम्बार छोड़ा हो। ''इस पागलपन से होशियार रहो,'' उसने कहा, ''नशे की हर बोतल में एक उन्माद भरा रहता है। बदकिस्मती से, चंद ही लोग ऐसे हैं, खासकर हमारे देशवासियों में से, जो यह समझ सकें कि नम्रता और तकलीफें सहने का नशा भी शराब के नशे की तरह ही सस्ता और भद्दा है। उस वक्त, जब कि मैं बेहोशी की दवा पीने के बाद जगा था और मुझे लगा था कि मेरा शरीर बायें घुटने पर खड़ा था, मैंने एक उन्माद-भरी उदासी का भी अनुभव किया था। उस वक्त तुमने मुझे जो लेक्चर दिये थे, तुम्हें याद होंगे?'' उसने एक और गिलास भरा और खाली कर दिया।

''मेरा कहना यह है,'' उसने कहा, ''कि किसी को भी इस दुनिया को अपने आवेगों की शान्ति के लिए आध्यात्मिक चकले का रूप नहीं देना चाहिए। यही है हमारे लिए याद रखने लायक पहली बात। सहानुभूति, चेतनता, निराशा, नफ़रत, पछतावा, और प्रायश्चित्त हमारे लिए विरोधी वासनाएं हैं। किसी के सामने स्वयं बैठकर उसके वश में आ जाना, किसी की आँखें घुमाकर और नम्रतापूर्वक किसी की गरदन को ग्लैटकिन के रिवाल्वर का निशाना बनने देना, यह आसान है। किन्तु सबसे बड़ा प्रलोभन, जो हममें होता है, वह है हिंसा को छोड़ना, पछताना या अपनी आत्मा से ही सुलह करना। दुनिया के बड़े-बड़े क्रान्तिकारी इसी प्रलोभन के आगे गिरे और यही क्रान्ति के प्रति उनका सबसे बड़ा विश्वासघात है। जब तक दुनिया

में अशान्ति का राज्य रहेगा, तब तक दुनिया खुदा के भ्रमजाल में फँसी ही रहेगी, और वह हर समझौता, जो कोई अपनी आत्मा के साथ करता है, धोखा होगा। जब तुम्हारी अन्तरात्मा की आवाज तुम्हें शाप देती है, तो तुम्हें अपने हाथ अपने कानों पर रख लेने चाहिए।......"

उसे फिर पीने की इच्छा हुई और उसने एक और गिलास भरा। रुबाशोफ ने देखा कि आधी बोतल खाली हो चुकी थी। उसने सोचा, तुम भी उससे कुछ धीरज तो पा ही सकते हो।

"इतिहास मे सबसे बड़ा अपराधी," इवानोफ कह रहा था, "नीरो और फाऊशे जैसे लोग नही, बल्कि वे लोग हैं जिन्होंने अन्तरात्मा की आवाज को सुनने के बहाने मानवता की प्रगति को रोका। किसी का चाँदी के तीस टुकड़ों के लिए बिक जाना तो ईमानदारी का सौदा है, लेकिन किसी का अपनी आत्मा के हाथों बिकना, मनुष्यता को त्यागना हो जाता है। इतिहास एक संत्र जरूर है, लेकिन न तो उसमें नैतिकता है और न ही उसमें आत्मा जैसी वस्तु है। इतिहास को स्कूलों के सिद्धान्तों के मुताबिक चलाने का मतलब होगा, हर बात को ज्यो-का-त्यों रहने देना। इस खेल में जो दाँव लगा हुआ है, उसे तुम जानते हो, और तुम हो कि यहाँ बोगरोफ के रिरियाने के टंटे को ले बैठे हो।......" उसने अपना गिलास खाली किया और बोला—"तुम्हें अपनी आरलोवा का भी वैसा ही महसूस हो रहा है न?"

रुबाशोफ पहले से ही जानता था कि इवानोफ के दिल में चाहे कुछ भी भरा हो, लेकिन उसके चलन में परिवर्तन नहीं आ सकता। ऐसे वक्त पर इतना तो जरूर होता है कि उसकी बोल-चाल में अपेक्षाकृत तेजी आ जाती है। रुबाशोफ ने फिर सोचा, मेरी अपेक्षा तुम्हें सान्त्वना की अधिक जरूरत है। वह इवानोफ के सामने एक छोटे-से स्टूल पर बैठ गया। यह सब उसके लिए नया नहीं था; उसने इन्हीं या मिलते-जुलते शब्दों में इसी दृष्टिकोण का बरसों से समर्थन किया था। बस फर्क यही था कि उस समय तो वह स्वयं उन भीतरी तौर-तरीकों को जानता था जिनकी बाबत इवानोफ संकेत-मात्र में बोल रहा था। फिर उसे 'व्याकरण-सम्बन्धी कल्पना' का अनुभव हुआ,

जो उसकी निजी शारीरिक वास्तविकता का रूप धारण कर गई थी। लेकिन बेढंगे तौर-तरीके क्या महज़ इसीलिए मानने योग्य हो गए हैं कि उसे उनकी निजी रूप में जानकारी हासिल है? जब एक साल पहले उसने आरलोवा को मृत्यु के मुँह में धकेला था, तब तो उसमें इतनी बारीकी के साथ फाँसी की तस्वीर उतारने की कल्पना नहीं थी। अब क्या उसका रवैया इसीलिए बदल गया है कि उसे उसके कुछ पहलुओं की जानकारी हो गई है? जो भी कुछ हो, सोचने की तो यह बात है कि रिचर्ड को, आरलोवा को और लुई को कुरबान कर देना सही था या ग़लत। किन्तु स्वतः उपाय की बाहरी सत्यता या असत्यता का रिचर्ड के हकलाने, आरलोवा की छाती की बनावट या बोगरोफ के रिरियाने के साथ क्या सम्बन्ध था?

रुबाशोफ फिर अपनी कोठरी में चक्कर काटने लगा। उसे महसूस हुआ कि गिरफ्तारी के समय से लेकर आज तक जो अनुभव उसने किये हैं, वह केवल भूमिका-मात्र हैं, और उसके विचारों ने उसे जीवनहीन अन्त तक पहुँचा दिया है, यानी उस अन्त की दहलीज पर, जिसे इवानोफ ने 'आध्यात्मिक चकले' की संज्ञा दी है। और ऐसी दशा में उसे फिर से आदि से आरम्भ करना चाहिए। वह रुका; उसने इवानोफ़ के हाथ से गिलास लिया और उसे भरा। इवानोफ देखता रहा।

"यही बेहतर है," इवानोफ मुस्कराते हुए कह रहा था, "संवाद के रूप में स्वतः-सम्भाषण बहुत फायदेमन्द बात है। मुझे आशा है, मैंने बुराई करने वाले की आवाज़ को सही-सही अदा किया था। अफसोस यही है कि विरोधी पक्ष मौजूद नहीं। लेकिन यही तो उसकी चालाकी है कि वह अपने को बहस में नहीं डालता। विरोधी पक्ष तो सदा ही अरक्षित घड़ियों में उस हालत में आदमी पर हमला करता है जब कि वह अकेला हो और सिढ़ीपन की दशा में हो। नैतिकता हाँकने वालों के तरीके काफ़ी भद्दे और नाटकीय के होते हैं।......"

रुबाशोफ सब सुन नहीं रहा था। वह इधर-उधर टहल रहा था। वह हैरान हो रहा था कि यदि आज आरलोवा ज़िन्दा हो, तो क्या वह फिर

उसकी बलि चढ़ा देगा। यह समस्या जैसे उसे भली-सी लगी; उसे लगा, इसी में अन्य सब प्रश्नों का उत्तर रखा हुआ है।......वह इवानोफ के सामने रुका और उससे पूछा—"क्या तुम्हें रसकोल निकोफ की याद है?"

इवानोफ मुस्कराया और व्यंग्य करते हुए बोला, "यह आशा ही थी कि तुम जल्दी या देरी में इस मसले पर आओगे ही। अपराध और दण्ड... या तो तुम बच्चे बन रहे हो और या तुम सठिया गए हो।......"

"ज़रा रुको, रुको," रुबाशोफ ने कहा—तेज़ी-तेज़ी में इधर-उधर जाते हुए, "यह महज़ चर्चा होती है, लेकिन हम मक़सद के नज़दीक होते जा रहे हैं। जहाँ तक मुझे याद है, प्रश्न यह है कि विद्यार्थी रसकोल निकोफ को बुढ़िया औरत को मार डालने का हक था या नहीं। रसकोल एक नौजवान है, उसके जीवन का उदय होने वाला है, दूसरी ओर वह औरत बुढ़िया है, जो दुनिया के लिए एकदम बेफ़ायदा है। इन दोनों में कोई समता नहीं है। पहली तो यह बात है कि हालात ने मजबूर किया कि वह दूसरे की हत्या कर दे; यह एक साधारणतया युक्तियुक्त दीखने वाली कार्यवाही का अनावश्यक और अविवेकपूर्ण परिणाम है। दूसरे यह समता यूँ भी समाप्त हो जाती है जब रसकोल यह खोज कर लेता है कि दो दूना उस समय सदा चार ही नहीं होते जब कि हिसाब की इकाइयाँ जीवधारी मानव होते हैं।......"

इवानोफ ने कहा—"सच ही, यदि तुम मेरी राय सुनना चाहते हो, तो ऐसी किताब की प्रत्येक प्रति जला दी जानी चाहिए। अगर हम मनुष्य-सम्बन्धी इस धुँधली-सी फिलासफी पर अक्षरशः चलें; अगर हम इस धारणा को पकड़ बैठें कि व्यक्ति एकदम पाक है, और हमें गणित के नियमों के अनुसार मानव-जीवन के प्रति व्यवहार नहीं करना चाहिए, तो सोचो तो सही कि क्या हालत होगी! इसके मतलब यह होंगे कि एक रैजीमेंट की रक्षा के लिए बटालियन कमांडर यदि गश्ती दस्ते को कुरबान करना चाहे, तो वह भी न कर सके। और कि हम बोगरोफ जैसे बेवकूफों की भी बलि न चढ़ा सकते और अपने नगरों के समुद्र-तट को कुछ ही बरसों में तहस-नहस करा लेने का खतरा लेकर ही रहते।......"

• "रुबाशोफ ने सिर हिलाते हुए कहा—"तुम तो लड़ाई की ही मिसालें देते हो; लड़ाई एक असाधारण स्थिति होती है।"

"स्टीम इंजन की खोज हो जाने के बाद से," इवानोफ ने उत्तर दिया, "दुनिया में सदा के लिए एक असाधारण स्थिति पैदा हो गई है; ये लड़ाइयाँ और क्रान्तियाँ उसी स्थिति की जाहिरा भावनाएँ हैं; तुम्हारा रसकोल तो सच ही बेवकूफ और अपराधी है; इसलिए नहीं कि उसने बुढ़िया की जान लेने के लिए तर्क से काम लिया, बल्कि इसलिए कि उसने उसकी हत्या अपने व्यक्तिगत हित के लिए की। इस प्रकार एक ही सिद्धान्त सही ठहराया जा सकता है कि केवल परिणामों से ही साधनों को परखा जा सकता है; और यही राजनीतिक नैतिकता का एक-मात्र नियम भी है।... अगर रसकोल ने पार्टी के आदेश पर बुढ़िया की हत्या की होती—मिसाल के तौर पर, हड़ताल के फँड को बढ़ाने के लिए या गुप्त अखबार निकालने के लिए—तब तो समता का प्रश्न स्थिर रहता, और इस प्रकार ग़लत मार्ग पर ले जाने वाली समस्या को लेकर उपन्यास न लिखा जाता और यही मनुष्य-जाति के लिए बेहतर ही होता।"

रुबाशोफ ने जवाब न दिया। वह अब भी उसी समस्या पर विचार कर रहा था कि इतने दिनों के अनुभव के बाद क्या वह आज आरलोवा को मृत्यु के मुँह में फिर भेज सकेगा; वह कुछ पक्का नहीं कह सकता था। इवानोफ जो भी कहता है, तर्क से वह सब ठीक है। अदृश्य विरोधी चुप था और परेशानी की भद्दी-सी भावना ही केवल उसकी मौजूदगी को जाहिर-सी करती थी। और इस 'अदृश्य विरोधी' के बारे में इवानोफ का कहना सही ही था।

इवानोफ ने बोलना जारी रखते हुए कहा, "मैं आदर्शों को मिला-जुलाकर कहना पसन्द नहीं करता। देखो, मानवी-नैतिकता की केवल दो ही मान्यताएँ हैं, और वे दोनों ही आपस में विरोधी हैं। उनमें से एक धार्मिक और मानवी है; उसकी दृष्टि में व्यक्ति पवित्र है और उसका कहना है कि मानव इकाइयों पर गणित का नियम लागू नहीं होना चाहिए। और दूसरी का आधार इस मूल सिद्धान्त से आरम्भ होता है कि सामूहिक ध्येय ही

सब साधनों को न्यायानुकूल ठहराता है, और ऐसा करते समय वह केवल मंजूरी ही नहीं देता, बल्कि माँग करता है कि व्यक्ति हर हालत में समाज के अधीन है और समाज की खातिर उसकी कुरबानी की जा सकती है—यह कुरबानी चाहे तज़रबे के चूहों की तरह या बलि के बकरों की तरह की जाय। दोनों मान्यताएँ परस्पर विरोधी हैं। बेवकूफ और नौसिखिए इन दोनों मान्यताओं को मिला देने की चेष्टा करते हैं, लेकिन कार्यरूप में यह असम्भव है। जिस किसी पर भी शक्ति और जिम्मेदारी का बोझा पड़ेगा उसे सर्वप्रथम दोनों में से एक मार्ग चुन लेना होगा; और सच तो यह है कि उसे दूसरी मान्यता का आश्रय लेना ही पड़ेगा। जब से ईसाइयत को राज-धर्म बना लिया गया है, तब से लेकर एक भी राज्य की मिसाल बता दो, जो पूरी-पूरी तरह ईसाई-धर्म का पालन करता हो? तुम एक भी नहीं बता सकते। जरूरत के वक्त—और राजनीति जरूरत के वक्त पलटती ही है—शासक 'विशेष अवस्थाओं' को बताकर क्या कुछ नहीं कर लेते! और वह 'विशेष अवस्थाएँ' ही रक्षा के लिए विशेष उपायों को जन्म देने वाली होती हैं।······"

रुबाशोफ ने खिड़की की राह देखा। पिघली हुई बर्फ फिर जम गई थी और चमक रही थी। संतरी कन्धे पर बन्दूक रखे दीवार पर जा-आ रहा था। आसमान साफ था, किन्तु चन्द्रमा के बिना मशीन-गन वाली बुरजी के ऊपर आकाश-गंगा की खिंची हुई रेखा लहरा रही थी।

रुबाशोफ ने अपने कंधे उमेठे। "मैं मानता हूँ," उसने कहा, "कि समाज और व्यक्ति की उन्नति के लिए मानव-धर्म और राजनीति का महत्व जरा बेमेल-सा है। मैं मानता हूँ कि साधनों के खोज की पवित्रता राज-नीतिक नपुंसकता पैदा करने वाली है। हम विपरीत दशाओं में समझौता कर लेते हैं। लेकिन देखो तो सही कि दूसरे साधन ने हमें कहाँ ला पटका है।···"

"ठीक," इवानोफ ने पूछा, "कहाँ?"

रुबाशोफ ने अपनी बाँह पर चश्मा रगड़ते हुए उसकी ओर तिरछी

नजर से देखा। "कितनी जहालत है," उसने कहा, "कितनी जहालत हमने अपने सुनहरी-काल में भर दी है!"

इवानोफ मुस्कराया। "सम्भव है," उसने खुशी से कहा, "देखो, अब तक सभी क्रान्तियाँ नैतिकतापूर्ण कला-प्रेम से ही तो बन सकी थीं। वे सच्ची भावनाओं से ही पैदा हुई थीं, लेकिन नैतिकतापूर्ण युक्तियों से ही उनका नाश हुआ। केवल अब हम ही हैं, जो पहली बार स्थायी रूप लेने जा रहे हैं।......"

"हाँ," रुबाशोफ ने कहा, "ऐसा स्थायी रूप कि भूमि को बाँटने की खातिर हमने जान-बूझकर एक ही बरस में पचास लाख किसानों और उनके परिवारों को भूखों मरने दिया। हम ऐसे स्थायी बने कि हमने औद्योगिक लूट-खसोट से मनुष्य-जाति को आजाद कराने के लिए लगभग एक करोड़ मनुष्यों को आरक्टिक क्षेत्र और पूर्वी जंगलों में गुलामों की तरह बेगार के लिए भेज दिया। हम ऐसे स्थायी बने कि किसी भी मतभेद का निर्णय करने के लिए, हम एक ही युक्ति को जानते हैं—मृत्यु, चाहे पन-डुब्बियों का मामला हो या इंडो-चीन में पार्टी से सम्बन्धित काम। हमारे इंजीनियर इस बात को दिमाग़ में रखते हुए काम करते हैं कि उनकी एक भी ग़लती उन्हें जेल में पहुँचा सकती है अथवा फाँसी की डोरी में झुला सकती है। हमारे शासन में बड़े-बड़े अफसर अपने से छोटों को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि उनकी तनिक-सी भूल के लिए वही जिम्मेदार ठहराये जायँगे और उसके कारण खुद उनका नाश हो जायगा। हमारे कवि भी जासूसी पुलिस से आँख बचाकर वादविवाद करते हैं, क्योंकि उन्हें कविता का स्वाभाविक ढंग क्रान्ति-विरोधी दिखाई देता है। हमने आने वाली पीढ़ियों की खातिर वर्तमान पीढ़ी पर ऐसे कड़े प्रतिबन्ध लगा दिये हैं कि उसकी आयु एक-चौथाई रह गई है। देश की रक्षा के नाम पर हमने ऐसे-ऐसे कानून बना दिये हैं, जो क्रान्ति के मकसदों के सर्वथा विपरीत हैं। लोगों की जिन्दगी का स्तर क्रान्ति से पहले की निस्बत नीचे आ गया है; मजदूरों को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है और नियंत्रण का ढंग भी ज्यादा कठोर

है। हमने उम्र-कैद को घटाकर बारह बरस कर दिया है; हमारे यौन सम्बन्धी कानून इंग्लैंड की अपेक्षा अधिक तंग-दिली के हैं; हमारी वीर-पूजा प्रतिक्रियावादी तानाशाहियों की अपेक्षा कहीं रद्दी और पुरानी है। हमारे अखबारों और हमारे स्कूलों में दूसरे देशों के प्रति नफ़रत पैदा करने की प्रेरणा होती है। उनमें केवल फौजीपन की ही तालीम दी जाती है; उनको हठी बनने की शिक्षा दी जाती है, और बाहरी दुनिया से उन्हें बेख़बर रखा जाता है। गवर्नमैंट की फैसला देने की ताकत सीमा-रहित है, यहाँ तक कि इतिहास में इसकी एक भी मिसाल नहीं। अखबारों को लिखथे की आजादी नहीं; कोई भी निजी तौर पर अपनी राय नहीं दे सकता। यह सारी हालत ऐसी है कि जैसे 'नागरिक के अधिकारों' जैसी कोई बात ही यहाँ नहीं रखी गई। हमने पुलिस का ढाँचा ऐसा भयानक बना रखा है कि सूचना देने वालों की जैसे एक राष्ट्रीय संस्था ही बन गई है और वह शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं से ही काम लेती है। हम देश की सिसकती जनता को कोड़ों की मार से भविष्य की खुशियों की ओर धकेलते हैं। वर्तमान पीढ़ी का साहस ख़त्म हो चुका है; क्रान्ति में वह सब-कुछ दे चुकी है और अब तो वह सिसकते-से माँस की लोथ की तरह सन्न होने जा रही है।······ये हैं नतीजे हमारे स्थायी बनने के। मुझे तो दीखता है कि जैसे चीरा-फाड़ी का अनुभव करते हुए चमड़ी हटा दी जाती है, और तब एक अवस्था यह आ जाती है कि श्वेत-श्वेत नाड़ियाँ और माँस-पेशियाँ ही दीखने लगती हैं, ठीक वही हालत आज हमारी नई नैतिकता की है।······"

"ठीक ही तो है, और होता भी क्या?" इवानोफ ने कहा, "क्या तुम्हें ये आश्चर्यजनक नहीं लगता? क्या कभी इतिहास में इससे ज्यादा आश्चर्यजनक कुछ हुआ भी है? हम मानव पर से पुरानी चमड़ी फाड़ दे रहे हैं और बदले में नई दे रहे हैं। यह करना कमज़ोर आदमियों का काम नहीं; और एक वक्त था, जब तुम में भी इससे शक्ति भर गई थी। वह कौन-सी बात है जिसके कारण अब तुम बुढ़िया की तरह बक-झक कर रहे हो?"

रुबाशोफ इसका जवाब देना चाहता था: कि 'उसके बाद मैंने बोगरोफ

को अपना नाम पुकारते हुए सुना है,' लेकिन इस जवाब में कोई तथ्य नहीं था, सो उसने यह उत्तर दिया—"तुम्हारे ही कहे मुताबिक मैं इस पीढ़ी के शरीर पर से उतरी हुई खाल देखता हूँ, लेकिन मुझे नई खाल का तो चिह्न भी कहीं नहीं दीखता। सब सोचते थे कि चिकित्सा-शास्त्र की तरह ही किसी को इतिहास का भी अनुभव करना चाहिए। अन्तर यही है कि चिकित्सा-शास्त्र में कोई भी एक ही अनुभव को हजार बार कर सकता है, लेकिन इतिहास फाँसी की डोरी में झुलाया जाता है। मान लो कहीं फिर हमारी यह धारणा बन जाय कि बड़ी-बड़ी पनडुब्बियाँ ही ठीक हैं तो क्या कामरेड बोगरोफ को फिर से जिन्दा किया जा सकता है?"

"और इसके बाद क्या होता है?" इवानोफ ने कहा। "क्या हमें इसलिए हाथ-पर-हाथ रखकर बैठ रहना चाहिए कि चूंकि हम किसी एक बात के नतीजे को सही-सही नहीं देख सकते, और इस कारण हम जो भी करेंगे, वह बुरा ही होगा? हम अपनी प्रत्येक क्रिया को दिमाग़ की कसौटी पर कस लेते हैं; और इससे अधिक हमें अपने से आशा भी नहीं करनी चाहिए। विरोधी पक्ष के लोग तो ऐसे सचेत भी नहीं हैं। कोई भी बूढ़ा जनरल हजारों की जिन्दगियों के साथ खिलवाड़ कर सकता है; और अगर कहीं उससे भूल ही हो गई, तो अधिक-से-अधिक उसे छुट्टी दे दी जायगी। प्रतिक्रिया और क्रान्ति-विरोधी शक्तियों के सामने कोई नैतिकता या विवेकपूर्ण झिझक नहीं है। जरा अन्दाजा लगाओ कि रसकोल निकोफ को हमारी आम जनता पढ़ती हो तो क्या असर हो। तुम-जैसे विचित्र पंछी तो महज क्रान्ति के वृक्ष पर ही मिलते हैं।"

उसने अपनी घड़ी देखी। कोठरी की खिड़की में से धुंधली-सी सफेदी दीख रही थी। टूटे हुए शीशे की जगह जो अखबार का काग़ज लगा था, वह भी सुबह की ठंडी हवा से खड़खड़ा रहा था। सामने, परले सिरे पर सन्तरी अब भी गश्त कर रहा था।

इवानोफ कह रहा था, "तुम सरीखे आदमी में नये अनुभवों के प्रति इतनी उदासीनता मुझे कुछ जँची नहीं। हर साल लाखों आदमी महामारियों

और अन्य उत्पातों के कारण बिना चूं-चड़ाक के मर जाते हैं। तब हमें इतिहास का एक रुपहला पहलू देखने के लिए कुछेक हजारों की कुरबानी से क्यों डर जाना चाहिए? उनका तो जिक्र ही नहीं है, जो अधपेट रहने के कारण मर जाते हैं और तपेदिक, कोयले की खानों, चावलों और कपास की खेतियों में जिनका जीवन नष्ट हो जाता है। कोई भी उनकी ओर ध्यान नहीं देता, कोई भी उनके सम्बन्ध में क्यों और क्या नहीं कहता। लेकिन अगर हम निश्चित रूप से हानिकर चन्द हजार लोगों को गोली का निशाना बनाते हैं, तो संसार-भर के मानव-धर्मियों के मुँह से झाग निकलने लगती है। हाँ, यह ठीक है, हमने किसानों के एक पर-आश्रयी भाग का नाश किया और उसे भूखों मरने दिया। यह तो एक बार नश्तर चुभोना ही था और चुभोया ही गया। लेकिन क्रान्ति से पूर्व भी बरसात के अभाव में इससे भी बड़ी तादाद नष्ट होती ही रही है। चीन के 'येलो रिवर' की बाढ़ में तो कभी-कभी लाखों तक के मरने की नौबत आ जाती है। यदि प्रकृति मनुष्य जाति के प्रति हृदयहीन अनुभव करने में उदार है, तो क्या मनुष्य जाति को अपने ही ऊपर भी तजरुबा करने का अधिकार नहीं?"

वह रुका। उसने बाकी बोतल को खाली कर दिया। वह खिड़की पर खड़े रुबाशोफ पर झुका। "अब दिन निकल रहा है," उसने कहा। "बेवकूफ न बनो, रुबाशोफ! रात-भर में जो कुछ भी मैंने कहा है, वह तो केवल प्रारम्भिक ज्ञान है। इसे तुम भी जानते हो और मैं भी। रात को तुम मानसिक पीड़ा के कारण जैसे खो गए थे, लेकिन अब वैसी हालत नहीं।" वह रुबाशोफ से आगे की ओर खिड़की के पास खड़ा था। उसकी बाँह रुबाशोफ के कन्धे पर थी और उसकी आवाज में कोमलता थी। "जाओ अब सो जाओ। कल मियाद भी खत्म हो जायगी, और हम दोनों को साफ दिमाग से मिलना होगा—तुम्हारे बयान को दर्ज करने के लिए। अपने कन्धे नहीं उमेठो। आधे-आधे तो तुम खुद ही दस्तखत करने को तैयार हो। अगर तुम इनकार करोगे, तो यह तुम्हारी नैतिक कायरता होगी। नैतिक कायरता ने अनेकों को कुरबानी का बकरा बना दिया है।"

"मैं इस पर फिर विचार करूंगा," रुबाशोफ ने कुछ रुककर जवाब दिया।

इवानोफ के चले जाने पर जब किवाड़ बन्द हो गया, तो रुबाशोफ जानता था कि आधा तो वह समर्पण कर ही चुका था। वह खट्टी पर लेट गया, थका हुआ और जैसे दुख से छुटकारा पाया-सा। उसे ऐसे लग रहा था, जैसे कोई बोझा उस पर से हटा दिया गया हो। उसका गला सूख रहा था और उसे हलका-हलका-सा महसूस हो रहा था। उसके दिमाग़ से बोगरोफ की करुणा-भरी अपील खो चुकी थी। इसे कौन विश्वासघात कह सकता था यदि वह मरे हुओं का त्याग करके जिन्दा मनुष्यों का विश्वासपात्र बना रहे!

रुबाशोफ शान्ति से सो रहा था और उसे सपना भी नहीं आ रहा था। उसकी दाँत का दर्द भी शान्त हो गया था। इवानोफ अपने कमरे में जाते हुए ग्लैटकिन के यहाँ चला गया। वह फाइलों को उलट-पलट रहा था। सप्ताह में दो-तीन रात वह काम करने का आदी हो गया था। इवानोफ को देखते ही तनकर खड़ा हो गया।

"सब ठीक ही है," इवानोफ ने कहा। "कल वह दस्तख़त कर देगा। लेकिन तुम्हारा पागलपन तो मुझे नष्ट करना ही होगा।"

ग्लैटकिन चुप रहा। वह अपनी मेज पर खड़ा रहा। रुबाशोफ की कोठरी में जाने से पहले जो-कुछ ग्लैटकिन के साथ कहा-सुनी हुई थी, इवानोफ उसे भूला नहीं था। उसने ग्लैटकिन के मुँह पर धुँआ छोड़ते हुए कहा, "मूर्ख नहीं बनो। अब भी तुम उससे ईर्षा करते जान पड़ रहे हो। यदि तुम उसकी जगह होते, तो तुम उससे भी ज्यादा कठोर होते।"

"मेरे तो रीढ़ की हड्डी है, लेकिन उसके है ही नहीं," ग्लैटकिन ने कहा।

"तुम बड़े बेहूदा हो," इवानोफ ने कहा। "इस जवाब के लिए तुम्हें उसके सामने गोली दाग़ देनी चाहिए।"

और इवानोफ लपककर बाहर चला गया। ग्लैटकिन फिर मेज पर काम

करने बैठ गया। उसे यकीन नही था कि इवानोफ कामयाब हो सकेगा। साथ ही उसे डर भी लगा। इवानोफ का आखिरी वाक्य एक तरह की चुनौती थी; और उसके साथ बातें करते हुए कोई यह नहीं कह सकता था कि कहाँ तो वह मज़ाक कर रहा है और कहाँ वह गम्भीर हो जाता है। शायद वह अपने को भी नहीं समझता कि वह है क्या ?

ग्लैटकिन ठीक-ठाक होकर फिर बैठ गया और काग़ज़ों के ढेरों में खो गया।

तीसरी पेशी

एन. एस. रुबाशोफ की डायरी का संक्षेप : : जेल का बीसवां दिन

: १ :

....व्लाडीमीर बोगरोफ फाँसी के झूले से अलग हो चुका है। डेढ़ सौ साल पहले, यूरोप के एक किले की जेल में भी ऐसी ही घटना हुई थी, और आन्दोलन के कारण काफी अरसे तक शान्ति रहने के बाद, अब फिर इसका आरम्भ हो गया है। इस आन्दोलन ने आतंक को धकेलकर जिस आनन्द की लहर जागृत की थी, उसमें जाहिरा तौर पर इतनी गति थी कि मानो वह स्वतन्त्र नीले आकाश तक उमड़ उठी हो। एक सौ बरस तक यह लहर आज़ादी और जन-तन्त्र के क्षेत्रों में उत्तरोत्तर विस्तार पाती रही। लेकिन ज्यों ही वह अपनी आखिरी हद तक पहुँचती, और क्षण-भर को वहाँ स्थिर रहने के बाद ज्यों ही इसने अपना रुख बदला, तो वह उतनी ही तेज रफ्तार के साथ नीचे की ओर आने लगी। और तब आज़ादी और जन-तन्त्र की इस नीचे आती हुई लहर ने आज़ादी की जगह फिर आतंक का राज्य कायम कर दिया। जो कोई इससे छिप के रहने के बजाय ऊपर की ओर झांकता रहा, वह बेहोश हो गया और गिर पड़ा।

जो कोई इस बेहोशी से बचे रहने की कोशिश करना चाहता है,

उसे इस लहर की गति के नियमों को भी जान लेना चाहिए। ऐसा जान पड़ता है कि आज हमारा इतिहास के एक नये राजनीतिक दौर से सामना हो रहा है—यानी एक-छत्र राज्य से जन-तन्त्र की ओर जाना, और उसके बाद फिर जन-तन्त्र से पूर्णतः तानाशाही की ओर गिरना।

व्यक्तिगत आज़ादी को कोई समाज कितनी मात्रा में जीत सकता है और उसे संजोकर रख सकता है, यह उसकी राजनीतिक प्रौढ़ता पर ही निर्भर करता है। ऊपर कही राजनीतिक हलचल से यह ज़ाहिर ही है कि व्यक्ति की तरह जनता भी राजनीतिक प्रौढ़ता में निरन्तर बढ़ती नहीं रह सकती, लेकिन जिन नियमों से वह शासित होती है वह ज्यादा जटिल होते हैं।

जनता की प्रौढ़ता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अधिक-से-अधिक अपने हितों को पहचाने। इस प्रौढ़ता के लिए, जैसे भी हो, चीजों की पैदावार और उसके बटवारे के ढंग के सम्बन्ध में पहले से ही एक तजवीज कर लेनी होती है। इस प्रकार जनतंत्री ढंग से शासित होने की लोगों की योग्यता सामाजिक संगठन और उसकी क्रियाशीलता के अनुरूप हो जाती है।

अब इस उन्नति के दौर में होता यह है कि प्रत्येक टेक्निकल उन्नति एक नई ही आर्थिक जटिलता पैदा कर देती है, जिसके कारण नये झगड़े खड़े हो जाते हैं, और जनता तो एकाएक उनमें से पार हो नहीं सकती। इस टेक्निकल उन्नति का प्रत्येक बढ़ता हुआ पग जनता को पीछे छोड़ता जाता है, जिसके फलरूप जनता राजनीतिक प्रौढ़ता से भी पिछड़ती जाती है जब ऐसा होने लग जाता है, तो कई बरसों में, और कभी-कभी तो पीढ़ियों बाद जनता उन बदले हुए हालात को समझने योग्य बन पाती है; और यह भी तभी हो पाता है, जब कि वह स्वशासित होने की योग्यता को फिर से पहचान जाती है, जैसा कि उसने सभ्यता की प्रारम्भिक दशा में सीख पाया था। मतलब यह कि

जनता की राजनीतिक प्रौढ़ता को एक निश्चित शक्ल से नहीं आंका जा सकता, उसे तो उस वक्त की सभ्यता के दरजे के अनुपात से ही मापना चाहिए।

जब जन-चेतना का दरजा मकसद की ऊंचाई तक पहुँच जाता है, तब ही जनतंत्र की विजय होती है, चाहे वह शांति से हो या अशांति से। इसी बीच, तभी, एक खास किस्म की सभ्यता का नया दौर शुरू होता है, जैसे मान लो मशीनी करघों की ईजाद से, जो जनता को फिर से अपरिपक्वता की ओर ले जाता है। इसके कारण एक अनिवार्य आवश्यकता पैदा हो जाती है—एक प्रकार के सम्पूर्ण नेता की।

स्टीम इंजन की खोज से जो नया दौर शुरू हुआ था, उसमें बहुत तेज़ी के साथ बाहरी उन्नति हुई, और उसी के फलस्वरूप, उतनी ही तेज़ी के साथ, भीतरी राजनीतिक पतन भी हुआ। इतिहास में औद्योगिक काल अभी अपनी बाल्यावस्था में ही है, और इसकी आर्थिक जटिलता में जो भेद छिपा हुआ है, वह जनता की समझ से बाहर है। साम्यवादी कल्पना की गलती यह यकीन कर लेने में थी कि जन-चेतनता का दरजा लगातार और धीरे-धीरे ऊपर उठता रहता है। इसी का नतीजा है कि वह वर्तमान राजनीतिक हलचल के सामने अपने को असहाय समझ रहा है, यानी जनता उस आदर्शवादिता को खुद ही छिन्न-भिन्न कर दे रही है। हमारा विश्वास था कि जनता दुनिया की इस बदली हुई हालत को चन्द ही बरसों में अपना लेगी, लेकिन इतिहास दिखाता है कि अक्सर यह सदियों में हो पाता है। यूरोप के लोगों ने भी अभी स्टीम इंजन के परिणामों को दिमागी तौर पर हज़म नहीं किया। ज्यों ही वहाँ की जनता इसे समझ लेगी, त्यों ही पूँजीवाद के तरीकों का अन्त हो जायगा।

जहाँ तक पितृ-भूमि की क्रान्ति का सम्बन्ध है, वहाँ की जनता भी विचार के उन्हीं नियमों से शासित होती है, जैसे कि अन्यत्र। पुराने की जगह, जो नया आर्थिक तरीका चालू किया गया है, वह भी

जनता के लिए समझ सकना कठिन हो रहा है। सम्भवतः, नये आर्थिक दौर को पूरी-पूरी तरह समझ लेने के लिए तो अभी कई पीढ़ियाँ बीत जायँगी, हालांकि यह दौर उसी की क्रान्ति के कारण हुआ है।

तब तक, जनतन्त्री सरकार भी असम्भव ही है और उसके साथ ही व्यक्ति की स्वतन्त्रता भी। तब तक तो हमारे नेताओं को जैसे रिक्त जगह में ही शासन चलाना होगा। प्राचीन उदारता की दृष्टि से झाँकने पर यह भला भी नहीं दीखता। इस अयोग्यता के काल में विरोधी पक्ष का यह कर्तव्य होना चाहिए कि व ह जनता को अपील करे। इसी काल में जनता की दिमागी अपरिपक्वता को ऊपर उठाया जा सकता है। ऐसी स्थितियों में विरोधी-पक्ष के सामने दो ही मार्ग होते हैं—पहला, जनता के समर्थन के बिना ही ताकत को छीन लेना; और दूसरा, बेहद निराशा की हालत में इस हलचल में कूद पड़ना—'चुपचाप मरने के लिए।'

एक तीसरा मार्ग और भी है, और इस मार्ग ने हमारे देश में एक खास तरीके का रूप धारण कर लिया है। जब कोई किसी बात को क्रियान्वित न कर सके, तो उसे अपनी मान्यता से इनकारी हो जाना चाहिए और उसे दबा लेना चाहिए, क्योंकि किसी प्रकार के निराशा-जनक संघर्ष में लगे रहने की बजाय पार्टी में बना रहना अधिक सम्मा-नित समझा जाता है। और पार्टी में विपरीत विचारों वाला तभी तो रह सकता है, जबकि वह सार्वजनिक रूप में अपने विचारों को तिलांजलि दे दे।

इस हालत में व्यक्तिगत स्वाभिमान जैसी चीज़ को आमूल नष्ट करना ही होगा, बस तभी········।

: २ :

जिस रात बोगरोफ को फाँसी दी गई और जिस रात इवानोफ उसकी कोठरी में आया, उसी रात की सुबह होते ही बिगुल बजा। इस

बिगुल की पहली आवाज के साथ ही रुबाशोफ ने इस 'लहर' के बारे में अपने विचारों का लिखना शुरू कर दिया। जब उसका प्रातराश लाया गया तो उसने कॉफी का एक बड़ा-सा घूंट पी लिया और बाकी ठंडी हो जाने दी। पिछले कुछ दिनों से उसकी लिखाई कुछ भद्दी और बेढंगी-सी हो गई थी, लेकिन अब वह फिर सही-सही ढंग से लिखने लगा। हर अक्षर जैसे मोती की तरह पिरोकर रखा हो। जब वह अपने लिखने को पढ़ने बैठा, तो सहज ही इस परिवर्तन का उसे पता लग गया।

हमेशा की तरह ग्यारह बजे सुबह वह टहलने के लिए निकाला गया। सेहन में पहुँचकर, टहलने के वक्त उसे रिप वान विंकल की जगह एक नया साथी दिया गया। और यह था एक दुबला-सा किसान, जिसने मोटे-मोटे तले के जूते पहने हुए थे। रिप वान आज सेहन में नहीं था, और तभी उसे याद आया कि प्रातराश के वक्त उसने उसकी टक-टक भी नहीं सुनी जिसमें अपनी आदत के मुताबिक वह टकटकाया करता था—'ओ, धरती के नीच जाग!' साफ ही था कि उस बूढ़े को यहाँ से हटा दिया गया था—और खुदा जाने कहाँ!

पहले तो किसान रुबाशोफ के साथ-साथ चुपचाप डग बढ़ाता रहा, और बगल से उसकी ओर झाँकता भी रहा। इस पहले चक्कर के दौरान में उसने कई बार अपना गला साफ करने के लिए खखारा और जब दूसरा चक्कर पूरा हुआ तो बोला—

"मैं 'ड' नामक प्रान्त का रहने वाला हूँ। क्या जनाब कभी वहाँ गये हैं?"

रुबाशोफ ने 'न' में जवाब दिया। 'ड' प्रान्त पूर्व में कुछ अलग-सा हटकर था और उसे उसकी कुछ धुँधली-सी याद थी।

"बेशक, वहाँ जाना बहुत मुश्किल है," किसान ने कहा। "वहाँ जाने के लिए आपको ऊँटों पर चढ़ना होता है। क्या आप राजनीतिक महानुभाव हैं?"

रुबाशोफ ने 'हाँ' में सिर हिलाया। किसान के जूते के तले फटे हुए

थे। उसके पंजे नंगे थे और वह जमी हुई बर्फ पर चल रहा था। पतली-सी उसकी गरदन थी, और जब वह बोलता था, तो साथ-साथ ही सिर भी हिलाता, जैसे वह गिरजे में खड़ा हो और 'आमीन-आमीन' दोहरा रहा हो।

"मैं भी राजनीतिक हूँ," उसने कहा, "मैं प्रतिक्रियावादी हूँ। वे कहते हैं कि सब प्रतिक्रियावादियों को दस साल के लिए देश-निकाला दिया जायगा। क्या आप समझते हैं कि वे मुझे दस साल का देश-निकाला दे देंगे?"

उसने सिर हिलाया और चक्कर के मध्य में खड़े वार्डरों की ओर देखा, जो अपनी गप-शप में लगे हुए थे और कैदियों की ओर से बेखबर थे।

"तुमने क्या अपराध किया?" रुबाशोफ ने पूछा।

"मुझे बच्चों को सुइयाँ लगाते समय प्रतिक्रियावादी ठहराया गया था," किसान ने कहा। "हर साल गवर्नमेंट हमारे यहाँ एक कमीशन भेजती है। दो साल पहले सरकार ने हमारे पढ़ने के लिए कुछ इश्तिहार भेजे थे और उनमें केवल अपने ही गीत गा रखे थे। पिछले साल उसने दाँत साफ करने के ब्रुश और दाने निकालने की एक मशीन भेजी थी। इस साल उसने छोटी-छोटी शीशे की नलियाँ और सुइयाँ भेजीं, ताकि बच्चों को छेदा जाय। एक पैंट पहने औरत थी, जो बारी-बारी से सब बच्चों को सुइयों से छेदना चाहती थी। जब वह मेरे घर आई तो मैंने और मेरी पत्नी ने किवाड़ बन्द कर दिया और अपने को प्रतिक्रियावादी जाहिर किया। तब हम सबने इश्तिहारों को जला दिया और मशीन को तोड़ दिया। एक महीने बाद वे हमें गिरफ्तार करने को आये।"

रुबाशोफ कुछ बड़बड़ाया और उसे अपने लिखे एक निबन्ध की याद आ गई। उसे ख्याल आया, 'न्यू गिनी' की बाबत उसने एक बार पढ़ा था, जहाँ के लोग इसी किसान जैसे थे। उनका सामाजिक जीवन बहुत सुधरा हुआ था और उनकी जनतन्त्री ढंग की अनेक संस्थाएँ भी थीं।

किसान ने रुबाशोफ की चुप को समझा कि वह हमारी चर्चा को पसन्द नहीं करता, और वह जैसे अपने में ही सिमर गया। उसके पंजे ठंड से नीले पड़ गए थे; वह रह-रहकर लम्बी सासें ले रहा था और अपनी किस्मत के

अधीन-सा वह रुबाशोफ के साथ-साथ पग बढ़ा रहा था।

ज्योंही रुबाशोफ अपनी कोठरी में पहुँचा, त्योंही उसने लिखना शुरू कर दिया। उसे विश्वास था कि उसने 'आनुपातिक प्रौढ़ता सम्बन्धी नियम' की खोज कर ली है; और वह अबाध गति से लिख रहा था। जब दोपहर का खाना आया, तभी उसने लिखना खत्म किया था। उसने अपना हिस्सा खाया और सन्तोष के साथ अपनी खड्डी पर लेट गया।

वह एक घंटा सोया—शान्ति से और सपनों के बिना। जब वह उठा तो उसमें ताजगी थी। नं० ४०२ दीवार को टकटका रहा था, क्योंकि उसे लग रहा था कि रुबाशोफ उसकी ओर से लापरवाही जता रहा है। उसने रुबा-शोफ से नये साथी की बाबत पूछा जिसे उसने टहलने के समय खिड़की से देख लिया था। लेकिन रुबाशोफ ने रुकावट डालते हुए और आप-से-आप मुस्कराते हुए टकटकाया—"मैं समर्पण कर रहा हूँ।"

वह चकित-सा होकर इसका असर जानने की इन्तजार करने लगा। काफी देर तक जवाब न आया; नं० ४०२ चुप रहा। तब एकाएक जवाब मिला—"इससे बेहतर मैं............"

रुबाशोफ मुस्कराया और उसने टकटकाया—" हर कोई अपने-अपने तरीके के अनुसार।"

उसे आशा थी कि इससे नं० ४०२ नाराज हो जायगा। लेकिन नं० ४०२ ने धीरे-धीरे टकटकाया, जैसे वह अधीन-सा हो गया हो—"मैं तुम्हें असाधारण व्यक्ति समझता था। क्या तुममें जरा भी सम्मान की मात्रा बाकी नहीं है?" रुबाशोफ पीठ के बल लेटा था, और शान्ति और सन्तोष महसूस कर रहा था।

उसने टकटकाया—"सम्मान के विषय में हमारे विचार मिलते नहीं।"

नं० ४०२ ने तेजी और दृढ़ता से टकटकाया—"किसी का अपने विश्वास के लिए जीना और मरना ही सम्मान है।"

रुबाशोफ ने भी उतनी ही जल्दी में जवाब दिया—"झूठे अभिमान के बिना समाज के लिए हितकर बनने में ही सम्मान है।"

इस बार ४०२ ने और भी ऊँचे और तेज़ी से जवाब दिया—"सम्मान मर्यादा में रहने से है, न कि हितकर बनने में।"

"मर्यादा क्या है?" रुबाशोफ ने शान्ति से एक-एक अक्षर करके टकटकाते हुए पूछा। जितनी ही शान्ति से वह टकटका रहा था, उतनी ही तेज़ी से दूसरी ओर से उगलता-सा जवाब आया—"तुम-सरीखा आदमी कभी नहीं समझ सकता।"

"हमने तर्क को मर्यादा का स्थान दे दिया है," रुबाशोफ ने टक-टकाया।

नं० ४०२ इसके आगे चुप हो गया।

रात के खाने से पहले रुबाशोफ ने अपने लिखे को फिर पढ़ा। उसने एक-दो सुधार किये और रिपब्लिक के सरकारी वकील के नाम उसे चिट्ठी के रूप में लिख दिया। उसने आखिरी पैरे को लकीरों से अंकित कर दिया। इस पैरे में उसने विरोधी पक्ष के लिए कुछेक उपाय बताने की चेष्टा की थी। और नीचे लिखे वाक्य के साथ उसने पत्र समाप्त किया था—

"मैं, जिसने नीचे दस्तखत किये हैं, एन० एस० रुबाशोफ, पार्टी की सैंट्रल कमेटी का भूतपूर्व सदस्य, भूतपूर्व कमिस्सार, रैवोल्यूश्नरी फौज के दूसरे डिवीज़न का भूतपूर्व कमांडर, निर्भयता के लिए रैवोल्यूश्नरी आर्डर का वाहक, ऊपर लिखे तर्कों को विचार में रखते हुए फैसला करता हूँ कि मैं विरोधी तौर-तरीकों को पूरी-पूरी तरह छोड़ता हूँ, और अपनी भूलों की सार्वजनिक रूप में निन्दा करता हूँ।"

: ३ :

रुबाशोफ इवानोफ के सामने पेश होने के लिए दो दिन तक इन्तज़ार करता रहा। उसे ख्याल था कि बूढ़े वार्डर के हाथों में समर्पण का घोषणा-पत्र देते ही फौरन उसकी पेशी हो जायगी। और इवानोफ ने भी वही दिन नियत किया था। लेकिन उसे लगा कि अब किसी को भी उसके विषय में

कोई जल्दी नहीं। उसने सोचा, शायद इवानोफ उसकी 'आनुपातिक प्रौढ़ता के नियम' का अध्ययन कर रहा होगा; और यह भी सम्भव था कि उच्च-अधिकारियों के सामने वह पेश कर दिया गया हो।

वह मुस्कराया—उस व्याकुलता को सोचकर, जो सैंट्रल कमेटी के 'सिद्धान्तशास्त्रियों' में इसके कारण पैदा हुई होगी। क्रान्ति से पहले और थोड़े वक्त बाद तक भी, और बूढ़े नेता के जीवन-काल में भी, 'सिद्धान्तशास्त्रियों' और 'राजनीतिज्ञों' में कोई भेद नहीं माना जाता था। क्रान्तिकारी सिद्धान्तों, गृहयुद्ध की फौजी हलचलों, अनाज हस्तगत करने, भूमि का बँटवारा, नये सिक्कों का चलन, कारखानों का पुनः संगठन, आदि सभी शासन-सम्बन्धी विषयों पर तर्कपूर्ण ढंग से खुले आम बहस होती थी। वह पुराना फोटो, जो कभी इवानोफ की दीवार की सजावट था, और उसमें का हर आदमी यूरोप की यूनिवर्सिटियों के विशेषज्ञों के मुकाबले में कानून, अर्थशास्त्र और राज-नीति का ज्यादा जानकार था। गृहयुद्ध के दिनों में कांग्रेस के जो अधिवेशन होते थे, उनमें जिस ऊँचे दरजे की राजनीतिक बहस होती थी, उसकी मिसाल इतिहास में खो जाने पर भी नहीं मिल सकती। वैज्ञानिक-पत्रों की रिपोर्टों से उनका मेल खाता था; अन्तर केवल यही होता था कि इन बहसों के नतीजे पर लाखों की जिन्दगी और क्रान्ति का भविष्य निर्भर करता था।

अब तो जैसे पुराने संतरियों का खात्मा हो चुका था; इतिहास का तर्क कहता था कि शासन में सुचारु रूप से तभी सुधार हो सकता है जब वह साथ-ही-साथ उतना ही कठोर भी हो जाय। ऐसा करने का उद्देश्य यह था कि क्रान्ति के कारण जो भीतरी शक्तियाँ पैदा हो गई थीं और जो क्रान्ति को नष्ट कर देना चाहती थीं, उन्हें रोका जाय। कांग्रेस अधिवेशनों में तर्कपूर्ण बहस का समय जाता रहा था; उसकी जगह अधिवेशनों में पुराने चित्रों की भरमार होने लगी थी। तर्कपूर्ण घरेलू झगड़ों ने व्यर्थता की जगह ले ली थी। क्रान्तिकारी कल्पना का नाश हो चुका था और तानाशाही का जन्म हो गया था। नं० १ को ईसाई-धर्म के बड़े पादरी का रूप दे दिया गया था। वह जन-साधारण को मोटी भाषा में समझाता। उसके भाषणों और लेखों का

ढंग प्रश्न-उत्तरों में बँटा होता था। वह वास्तविक समस्याओं और प्रश्नों को इतने सरल ढंग से तरतीब में पेश करता था कि आश्चर्य होता था। निःसंदेह, नं० १ में 'आनुपातिक जन-प्रौढ़ता सम्बन्धी नियम' को लागू करने की क्षमता थी।......पहले नौसिखिये आतंक से अपने आदेश पर लोगों को चलाते थे; अब नं० १ ने अपने आदेश पर उन्हें सोचना-विचारना भी सिखा दिया।

रुबाशोफ इस ख्याल से ही बहस कर रहा था कि पार्टी के वर्तमान 'सिद्धांतशास्त्री' उसके पत्र के बारे में क्या कहेंगे। असली हालतों में देखा जाय तो उसमें कटुतापूर्ण ढंग से नास्तिकता को पेश किया गया था; उन सिद्धान्त-शास्त्रियों की भी आलोचना की गई थी जिनका शब्द पत्थर की लकीर माना जाता था; और यहाँ तक कि नं० १ के पवित्र व्यक्तित्व को भी ऐतेहासिक आधार पर विचारा गया था। आज के वे अभागे सिद्धान्तशास्त्री तो बेशक गुस्से से लाल हो जायँगे जिन्होंने नं० १ की भाव-भंगियों के परिवर्तन को ही आधुनिक दार्शनिकता का रूप देने का ठेका ले रखा होगा।

नं० १ कभी-कभी सिद्धान्त बनाने वालों के साथ भी अजीब-सी चालें चलता है। एक बार उसने पार्टी के अर्थ-सम्बन्धी पत्र की सम्पादक मंडली से अमरीका के औद्योगिक संकट के बारे में पूरी-पूरी खोज की माँग की। इस काम को पूरा करने में कई महीने लग गए। आखिर में एक तीन-सौ सफे का विशेषांक निकला। इस अंक का आधार था नं० १ का वह भाषण, जो उसने पिछले कांग्रेस अधिवेशन में दिया था। उसमें दरशाया गया था कि अमरीका का औद्योगिक अन्त होने ही वाला है। जिस दिन यह विशेषांक निकला था, ठीक उसी दिन नं० १ से एक अमरीकन पत्रकार ने भेंट की। अमरीकी पत्रकार के इस एक वाक्य से ही उसका सोने का महल ढह गया: "अमरीका में जो संकट आया था, वह खत्म हो चुका है और कारोबार फिर आम तरीके से चलने लगा है।"

विशेषज्ञों की कमेटी के सदस्यों ने बरखास्त होने और गिरफ्तार होने की सम्भावना में उसी रात को पत्र लिखे। उन पत्रों में उन्होंने अपनी भूल को माना और पश्चाताप के साथ सार्वजनिक रूप में माफी माँगने का वादा

किया। 'रुबाशोफ का समकालीन, केवल इसाकोविच ही सम्पादक-मंडल में एक ऐसा था, जो पुराने लोगों में से था, और जिसने गोली खाना ही बेहतर समझा। बाद की घटनाओं से यह भेद खुला कि नं० १ ने इसाकोविच को नष्ट करने के लिए ही यह सारा पाखंड किया था, क्योंकि वह उसे विरोधी विचारों वाला समझता था।

रुबाशोफ ने सोचा—यह सब है अजीब-सी सुखान्त घटना, क्योंकि 'क्रान्तिकारी दार्शनिकता' की इस धोखेबाज़ी की तह में तानाशाही को मजबूत बनाना ही तो एकमात्र उद्देश्य है। बात तो कितनी छिछोरी-सी है, लेकिन इसे भी ऐतिहासिक रूप देने की जरूरत महसूस की गई थी। जो लोग इन घटनाओं के प्रत्यक्ष रूप को ही देखते हैं, और पीछे की मशीनरी को नहीं समझते, उनके लिए तो यह बहुत ही बुरी है। इससे पहले, क्रान्तिकारी नीतियों का फैसला खुले कांग्रेस अधिवेशनों में होता था; और अब वही परदे के पीछे होता है। यह भी आनुपातिक जन-प्रौढ़ता सम्बन्धी नियम का तर्कपूर्ण नतीजा ही तो है।······

रुबाशोफ को इच्छा हुई कि वह हरी-हरी बत्तियों की रोशनी में दफ्तर में बैठकर फिर पढ़ने-लिखने का काम करे। उसने ऐतिहासिक आधार पर नई कल्पना का निर्माण करना चाहा। क्रान्तिकारी दार्शनिकता के निर्माण का सबसे बढ़िया वक्त तो हमेशा देश-निकाला ही रहा है। वह अपनी कोठरी में इधर-से-उधर टहलने लगा। अगले दो बरसों को बिताने की कल्पना करने लगा जब वह राजनीति से दूर हो जायगा और जबकि सार्वजनिक तौर पर खंडन के बाद वह सुख की साँस लेने लग जायगा। समर्पण का बाहरी रूप तो कुछ मतलब नहीं रखता। जिसे सही जानकर पेश किया जाय, वह सोने की तरह चमकना चाहिए और जो ग़लत हो, उसे काले धब्बे की तरह ही पेश करना चाहिए।

कुछ ऐसे भी प्रश्न थे, जिन्हें नं० ४०२ नहीं समझता था, रुबाशोफ ने सोचा। सम्मान के विषय में उसकी संकुचित-सी धारणा उसी के दिल की गूँज थी। मर्यादा क्या है? एक तरह की परम्परा ही तो, जो रीति-

रिवाजों से घिरी-घिरी हो। लेकिन वर्तमान में सम्मान की धारणा भिन्न ढंग की होगी—अहंकार के बिना सेवा करना और अंतिम उद्देश्य तक······

'आत्म-सम्मान खोने की अपेक्षा मरना बेहतर है,' नं० ४०२ ने कहा था। यह तो पुराने ढंग की अहंकारी भावना है। इस समय जो प्रश्न है, वह तो यही है कि वह शान्ति से लायब्रेरी में लिख-पढ़ सके और अपने नये आदर्शों का निर्माण कर सके। इस काम के लिए चाहिएँ तो बरसों ही, लेकिन यह एक पहला काम होगा जिससे जनतन्त्री संस्थाओं के इतिहास के विषय में जानकारी मिल सकेगी। इसी के द्वारा जनता के मनोविज्ञान और राजनीतिक हलचलों पर रोशनी पड़ सकेगी।

रुबाशोफ इधर-उधर टहल रहा था—अपने-आप मुस्कराता हुआ। अपने नये सिद्धान्त की रचना के लिए जब तक उसे समय दिया जाता रहा था, उसमें जैसे नई चेतना भर गई थी और वह साहसी और उतावला-सा हो गया था। दो दिन बीत चुके हैं—इवानोफ के साथ रात्रि में चर्चा किये हुए और घोषणा-पत्र को भेजे हुए, लेकिन कुछ हुआ ही नहीं। कैद के पहले दो हफ्ते तो बात-की-बात में हवा हो गए थे, लेकिन अब पल-पल भारी हो रहा है। घंटे मिनटों और सैकिंडों में छितरे जा रहे हैं। उसने बहुत मुस्तैदी के साथ काम किया था, लेकिन जैसे अब वह एकाएक रुक-सा गया है। पन्द्रह मिनट तक वह छेद पर खड़ा झाँकता रहा। उसे आशा थी कि कोई वार्डर नजर पड़ जायगा, जो उसे इवानोफ के पास ले जायगा। लेकिन बरामदा खाली था। बिजली जल रही थी—सदा की तरह।

फिर, रह-रहकर वह आशा करता कि इवानोफ खुद ही आयगा और घोषणा-पत्र की बाबत जो कार्यवाही करनी होगी, वह कोठरी में ही हो जायगी, और यह तो और भी अच्छा ही होगा। इस बार, यदि वह ब्रांडी की बोतल भी ला देगा तो उसे एतराज न होगा। उसने उस बातचीत का नक्शा-सा खींचा, जो उन दोनों में उस 'स्वीकार-पत्र' के बारे में होगी, और कैसे-कैसे वे उसे पूरा कर पायँगे। मुस्कराता हुआ रुबाशोफ अपनी कोठरी में चक्कर काट रहा था। हर दस मिनट बाद वह घड़ी देख लेता

था । क्या इवानोफ ने उस रात को वादा नहीं किया था कि अगले ही दिन उसे बुला लिया जायगा ?

रुबाशोफ को उतावली का जैसे बुखार-सा हो गया था। इवानोफ के साथ बातचीत हुए तीन दिन हो चुके; और तीसरी रात तो वह सो भी नहीं सका। वह अंधेरे में खट्टी पर लेटा हुआ सुन रहा था—भयावनी-सी इमारत से उठती हुई साँय-साँय। वह रह-रहकर करवटें ले रहा था और गिरफ्तारी के दिन से लेकर आज ही उसमें इच्छा जागी थी—'कोमल-कोमल शरीर वाली औरत पास हो।' वह अपने को सुलाने की कोशिश में लगा रहा, लेकिन वह जागता-ही-जागता गया। उसने ४०२ के साथ बातचीत शुरू करनी चाही, लेकिन 'मर्यादा क्या है,' इस प्रश्न के बाद से उसके साथ बात नहीं हुई।

आधी रात के करीब, जबकि उसे जागते हुए तीन घंटे हो चुके थे, तो वह अपने को काबू में न रख सका और उसने अँगुलियों के जोड़ों से दीवार को टकटकाया। बहुत उत्सुकता से इन्तजार करने पर भी दीवार चुप रही। उसने फिर टकटकाया, पर ४०२ ने अब भी जवाब न दिया। और सच तो यह था कि वह भी दीवार की दूसरी ओर आँखें खोले पड़ा था—अँधेरे में और पुरानी-पुरानी बातों की याद में समय का गला घोंट रहा था। उसने रुबाशोफ को बता रखा था कि वह एक या दो बजे से पहले सो नहीं सकता और उसमें लड़कपन के वक्त की आदतें लौट आई हैं।

रुबाशोफ चित्त लेटा हुआ अँधेरे मे से झाँक रहा था। नीचे सपाट गद्दा था और ऊपर गरम-गरम कम्बल, जिनसे उसे पसीना-सा आ रहा था, लेकिन उन्हें हटाते ही उसे कँपीकँपी हो जाती। वह एक के बाद एक करके सातवाँ या आठवाँ सिगरेट पी रहा था। फर्श पर आसपास टुकड़े बिखरे पड़े थे। आवाज़ जैसे मर चुकी थी; वक्त अचल हो गया था और जैसे वह आकारहीन अँधेरे में घुल-मिल गया था। रुबाशोफ ने अपनी आँखें बन्द कीं और ख्याल किया कि आरलोवा उसके बगल में लेटी है; उसकी छाती का परिचित-सा तनाव अँधेरे में उभर-सा गया है। वह भूल गया कि

बोगरोफ की तरह जैसे सब-कुछ गुम-सा गया हो। शहद के छत्ते-सी कोठरियों की दीवारों में बन्द दो हज़ार आदमी क्या कर रहे थे? उनकी ध्वनिरहित साँसों, उनके अदृश्य सपनों और उनकी इच्छाओं तथा दिल की धड़कनों से सन्नाटा फैला जा रहा था। यदि इतिहास का सम्बन्ध गिनती से था, तो दो हज़ार कुसपनों का तोल और दो हजार की बेबसी और लाचारी का कितना दबाव होगा? अब उसे आरलोवा की वास्तविक बहन-की-सी सुगन्धि का अनुभव हो रहा था। ऊनी कम्बल के नीचे उसके शरीर में पसीना आ रहा था।······कोठरी का दरवाजा भड़भड़ाता हुआ खुला; और बरामदे की रोशनी ने उसकी आँखों में जैसे छुरा घोंप दिया।

उसने दो बावर्दी अफसरों को रिवाल्वर-पेटियाँ पहने दाखिल होते देखा। उसके लिए वे अनजान थे। एक उनमें से खड्डी के पास पहुँचा; वह लम्बा था, खूँखार-सा उसका चेहरा था और मोटी-मोटी-सी उसकी आवाज़ थी। रुबाशोफ को लगा कि वह बहुत ऊँचे-ऊँचे बोल रहा था। उसने रुबाशोफ को अपने पीछे-पीछे चलने का हुक्म दिया, और यह नहीं बताया कि कहाँ जाना होगा।

रुबाशोफ ने कम्बल के नीचे से चश्मा निकाला, पहना और खड्डी से नीचे खड़ा हो गया। बावर्दी राक्षस-सरीखे अफसर के साथ जब वह बरामदे में से जा रहा था, तो उसे लगा कि उसके पाँव मन-मन-भर के हो गए थे। वह थक भी गया था। दूसरा आदमी उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

रुबाशोफ ने अपनी घड़ी देखी। दो बजे थे। इस वक्त तो उसे सोना ही था। वे चले, उसी राह, जो नाई की दुकान को जाती थी; उसी रास्ते जिससे बोगरोफ को ले जाया गया था। दूसरा अफसर रुबाशोफ से तीन कदम पीछे चल रहा था। रुबाशोफ के गले के पिछले भाग पर खाज-सी महसूस हुई और उसने चाहा कि वह अपना सिर घुमा ले, लेकिन उसने ज़ब्त किया। उसने सोचा, ऐसे ही तो मुझे ये धर पटकेंगे नहीं। इस वक्त तो मुझे और कुछ सोच भी नहीं, वह जल्दी-से-जल्दी इस समस्या से पार पाना चाहता था। उसने यह जानने की कोशिश की कि वह डर रहा था या नहीं।

जब वे नाई की दुकान के उस पार के कोने से मुड़े तो तंग-सी सीढ़ी नजर आई। रुबाशोफ ने साथ खड़े राक्षस की ओर देखा कि क्योंकर हम सीढ़ी से उतर सकेंगे। वह डर नहीं रहा था, केवल हैरान-सा और बुरा-सा महसूस कर रहा था, लेकिन जब वे सीढ़ी पार कर गए तो उसे लगा कि उसकी टाँगें लड़खड़ा गई हैं—उनके साथ-साथ कदम मिलाये रहने में। तभी उसने भाँपा कि वह अपने चश्मे को बाँह पर रगड़ रहा था और यह जाहिर ही था कि नाई की दुकान के पास पहुँचने से पहले ही उसने चश्मा उतारा होगा। उसने सोचा, यह सब धोखा-सा है। अगर इस वक्त उन्होंने मुझे पीटा, तो मैं, जो वे चाहेंगे उस पर दस्तखत कर दूँगा; लेकिन कल मैं उससे फिर जाऊँगा।······

कुछ और आगे जाकर 'प्रौढ़ता-सम्बन्धी नियम' का उसे ध्यान हो आया। तथ्य तो यह था कि वह सब-कुछ बता देने और दस्तखत करने का फैसला कर चुका हुआ था। इससे बहुत तसल्ली-सी उसे महसूस हुई; लेकिन साथ ही उसने अपने से सवाल किया कि पिछले चन्द दिनों में उसने जो फैसले किये थे, उन्हें पूरी-पूरी तरह भूल सकना सम्भव हुआ तो कैसे! वह लम्बा राक्षस-सा रुका। उसने किवाड़ खोला और एक ओर खड़ा हो गया। रुबाशोफ के सामने कमरा था—इवानोफ के कमरे जैसा, लेकिन उसमें रोशनी इतनी तेज थी कि अच्छी नहीं लग रही थी। कमरे की रोशनी ने जैसे उसकी आँखों में छुरी भोंक दी हो। किवाड़ के सामने, मेज के पीछे, ग्लैटकिन बैठा था।

रुबाशोफ के पीठ-पीछे किवाड़ बन्द हुआ और ग्लैटकिन ने फाइलों की ढेरी से ऊपर को देखा। "कृपा कर बैठ जाओ," उसने रूखे से लहजे में कहा। रुबाशोफ को उसका यह लहजा कोठरी की घटना के कारण याद था। ग्लैटकिन की खोपड़ी पर जो बड़ा-सा घाव था, उसे भी वह पहचान गया। उसका चेहरा छाया में था, क्योंकि कमरे में जो रोशनी आ रही थी, वह एक खड़े लैम्प से आ रही थी, और वह ग्लैटकिन की कुरसी के पीछे रखा था। यह सफेद रोशनी बहुत ताकत के बल्ब में से आ रही थी। कुछ देर बाद ही उसे

ज्ञान हुआ कि यहाँ एक तीसरा व्यक्ति भी है—यानी एक सैक्रेटरी पंरदे के पीछे छोटी-सी मेज़ पर बैठी हुई है और कमरे की ओर उसकी पीठ है।

रुबाशोफ ग्लैटकिन के सामने बैठ गया, जहाँ कि केवल एक ही कुरसी थी। कुरसी की बाँहें भी नहीं थीं और बैठने का आराम भी कुछ कम ही था।

"कमिस्सार इवानोफ की गैरहाजिरी में तुम्हारी जाँच का काम मुझे सौंपा गया है," ग्लैटकिन ने कहा। लैम्प की रोशनी रुबाशोफ की आँखों को घायल कर रही थी। इधर-उधर होकर बात करना भी उचित जान नहीं पड़ता था।

"मैं इवानोफ से जाँच कराना बेहतर समझता हूँ," रुबाशोफ ने कहा।

"अधिकारी ही जाँच मैजिस्ट्रेट को तैनात करते हैं," ग्लैटकिन ने कहा। "तुम्हें बयान देने या बयान देने से इनकार करने का हक है। तुम्हारे मामले में इनकारी के ये मतलब होंगे कि तुम अपराधों को मानने की जो घोषणा कर चुके हो, उससे फिर रहे हो। दो दिन पहले ही तो यह लिखकर तुम दे चुके हो; और इसके साथ जाँच का प्रश्न भी आप-से-आप खत्म हो जायगा। ऐसा होने की हालत में मुझे हुक्म है कि मैं तुम्हारा मामला उचित अधि-कारी को लौटा दूँ, और वह सरकारी तौर पर तुम्हारी सज़ा का ऐलान कर दे।"

रुबाशोफ ने पल ही भर में सोच लिया। निश्चय ही इवानोफ किसी गड़बड़ में फँस गया है; एकाएक छुट्टी चला गया, या बरखास्त हो गया अथवा गिरफ्तार हो गया है—शायद, इसलिए कि वह रुबाशोफ का पुराना मित्र था, शायद इसलिए कि वह विवेकी भी था और रसिक भी, और ऐसा होने के कारण नं० १ की ओर उसका भक्ति का आधार तर्कपूर्ण विवेक था और वह अन्ध-विश्वासी नहीं था। वह बहुत ही चतुर था; वह पुरानी परम्परा का था; नई परम्परा का तो ग्लेटकिन था और उसके तरीके थे।... इवानोफ तुम्हें चिर-शान्ति मिले! रुबाशोफ के पास दया दिखाने का समय नहीं; उसे फौरन निश्चय करना है, और रोशनी की दमक उसके लिए बाधा बन रही है। उसने चश्मा उतारा और आँखें झपझपाईं; वह जानता था

कि चश्मे के बिना वह नंगा-नंगा और असहाय दीखता था। ग्लैटकिन की भावहीन आँखें उसके चेहरे के हर उतार-चढ़ाव को जाहिर करती थीं। यदि अब वह चुप रहा तो वह कहीं का न रहेगा; अब तो कही बात से फिरने का क्त नहीं। ग्लैटकिन बदला लेने वाला आदमी है। वह नई पीढ़ी का है; पुरानों से तो समझौता किया जा सकता था, नई पीढ़ी वालों से नहीं। फौरन ही रुबाशोफ को बूढ़ापे का ध्यान हो आया; अब तक उसने कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। उसने महसूस नहीं किया था कि वह पचास से ऊपर हो चुका था। उसने फिर चश्मा पहन लिया और कोशिश की कि ग्लैटकिन से नजर मिलाये, लेकिन तेज रोशनी से उसकी आँखों में पानी भर आया; उसने फिर से चश्मा उतार लिया।

"मैं बयान देने को तैयार हूँ," उसने कहा और आवाज की तेजी पर काबू पाने की कोशिश की। "लेकिन इस शर्त पर कि तुम अपनी चालों को छोड़ दोगे। उस दमकती रोशनी को बुझा दो, और इन तरीकों को किसानों और क्रान्ति-विरोधियों के लिए ही रखो।"

"तुम शर्तें लगाने की हालत में नहीं हो," ग्लैटकिन ने धीरज से कहा। "मैं तुम्हारे लिए अपने कमरे की रोशनी नहीं बदल सकता। ऐसा जान पड़ता है कि तुम खुद ही अपनी स्थिति को नहीं पहचानते, जबकि असलियत यह है कि तुम खुद ही क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों के मुजरिम हो। और पिछले दोबरसों में तुमने दो बार सार्वजनिक रूप में इस बात को माना भो है। यह तुम्हारी भूल है, अगर तुम यह यकीन करो कि इस बार भी तुम सस्ते ही छूट जाओगे।"

बड़ा सूअर है, रुबाशोफ मन-ही-मन सोचने लगा। वह गुस्से से लाल हो गया। उसे अपनी हालत का ज्ञान भी हुआ और वह जान गया कि ग्लैटकिन ने भी भाँप लिया है। कितनी उमर होगी, इस ग्लैटकिन की? छत्तीस या सैंतीस, ज्यादा-से ज्यादा; उसने जवानी में गृहयुद्ध में हिस्सा लिया होगा; और जब क्रान्ति हुई थी, तब तो इसका लड़कपन ही रहा होगा। यही वह पीढ़ी थी, जिसने उस बाढ़ के बाद सोचना शुरू किया था। इस

पीढ़ी की न तो कोई परम्परा है और न ही इसे कुछ ऐसा याद है, जिससे पुरानों के साथ इनका कोई बन्धन हो; इनकी तो दुनिया ही जैसे बदली हुई थी। इसका जन्म तो जैसे नाड़ू के बिना ही हुआ था।···और तिस पर भी इसे अपने पर अभिमान है। इस नाड़ू सम्बन्ध को तोड़कर पुरानी दुनिया की मर्यादा और झूठी-सी सम्मान की धारणा को क्यों नहीं कोई छिन्न-भिन्न कर देता? बिना अहंकार के आखिरी हद तक सेवा करना ही तो असली सम्मान है!

रुबाशोफ का गुस्सा धीरे-धीरे शान्त हो गया। हाथ में चश्मा रखे हुए उसने ग्लैटकिन की ओर मुँह किया। चूँकि उसे आँखें बन्द रखनी पड़ती थीं, इसलिए वह और भी अपने को नंगा-सा महसूस करता था, लेकिन अब वह स्थिर था। उसकी बन्द पलकों पर लाल-लाल रोशनी पड़ रही थी। ऐसी खो जाने की यानी समाधिस्थ अवस्था का तो उसने कभी अनुभव नहीं किया था।

"मैं वह सब करूँगा, जिससे पार्टी का हित होता हो," उसने कहा। उसकी आवाज़ की कठोरता जाती रही थी; उसने आँखें बन्द कर रखी थीं। "मेरा निवेदन है कि मुझे इलज़ाम विस्तारपूर्वक बताया जाय। अब तक यह नहीं किया गया।"

देखने की बजाय उसने सुना कि ग्लैटकिन की कठोर-सी मूर्ति हिलने लगी है। और उसे लगा कि ग्लैटकिन जैसे जीवन की सबसे बड़ी विजय को मन-ही-मन महसूस कर रहा हो। रुबाशोफ को झुका लेने के मतलब थे उसके जीवन की महत्ता का आरम्भ; और एक मिनट पहले यह सब अधर में ही लटक रहा था—यहां तक कि इवानोफ की किस्मत भी।

फिर एकाएक रुबाशोफ के मन में आया कि मुझमें भी तो उतनी ही ताकत है, जितनी इस ग्लैटकिन में। अगर मैं इसे गले से पकड़ लूँ, और हम दोनों ने ही एक-दूसरे को गले से पकड़ा हो, और अगर मैं अपने को फाँसी के झूले की तरह झटका लूँ, तो इसे भी तो साथ ही खींच लूंगा। क्षण ही भर को रुबाशोफ के मन में यह बात आई और चली गई।

ग्लैटकिन अपने कागज तलाश कर रहा था। उसने अपनी आँखों को बन्द कर लिया। अहंकार आत्म-हत्या का ही एक रूप है, और इससे बचना ही चाहिए। बेशक, ग्लैटकिन यह सोचता है कि रुबाशोफ का समर्पण करना उसी की चालों का फल है, न कि इवानोफ के तर्कों का, जिनकी प्रेरणा से उसे समर्पण करना पड़ा। और इसी आधार पर, शायद ग्लैटकिन उच्च अधिकारियों को प्रेरणा भी कर सका है कि वे जाँच का काम उसे सौंप दें। जान पड़ता है, इसी तरह इसने इवानोफ को नीचा दिखाया होगा। 'नीच,' रुबाशोफ ने मन-ही-मन कहा—लेकिन इस बार गुस्से में नहीं। हमने जिस पीढ़ी का निर्माण किया था वह इस नये युग में जंगलीपन से शुरू हो रही है। तुम समस्या को समझते तो हो नहीं; लेकिन, तुम समझते भी क्या, हमारे लिए तो तुम व्यर्थ ही होते।....उसे लगा कि लैंप की रोशनी और तेज कर दी गई है। रुबाशोफ को पता था कि जाँच के समय ऐसे लैम्पों की रोशनी को घटाया या बढ़ाया जा सकता था। उसे लाचार होकर सिर दूसरी ओर करना पड़ता कि वह आँखों को पोंछ सके। 'जंगली कहीं का,' उसने फिर सोचा, 'यही वह जंगली पीढ़ी है, जिसकी हमें अब जरूरत होनी थी?......'

ग्लैटकिन ने अपराध पढ़ने शुरू कर दिये थे। उसकी अखरती-सी आवाज तेजी पैदा करने वाली थी। रुबाशोफ झुके सिर और बन्द आँखों से सुन रहा था। उसने 'अपराधों को मानना' केवल एक चलन-सा समझा था, लेकिन ग्लैटकिन जो पढ़ रहा था, उसकी वाहियाती की तो हद ही हो गई थी। क्या ग्लैटकिन सच ही यकीन करता था कि रुबाशोफ ने बच्चों की तरह ये साजिशें की होंगी? और, कि बरसों से और कुछ न सोचकर क्या वह यही सोचता रहा कि जिस इमारत की नींव उसने और बड़े-बूढ़े ने रखी, उसी को वह ढाह दे? और, सबसे बढ़कर, उन अंकित सिरों वाले आदमियों ने, जो ग्लैटकिन के बचपन में वीर थे, क्या यही ख्वाहिश बाकी रख छोड़ी थी कि क्रान्ति को नष्ट कर दिया जाय? और, कि उन उपायों से

जो इन बड़े राजनीतिज्ञों ने थोथी-सी जासूसी कहानी से उधार लिये जान पड़ते हैं ?

ग्लैटकिन उसी स्वर से पढ़ रहा था। अब वह उस कथित बातचीत का सिलसिला पढ़ रहा था कि जो एक विदेशी सरकार के प्रतिनिधि के साथ हुई थी। इसमें कहा गया था कि रुबाशोफ ने 'ब' में रहते हुए यह चर्चा इसलिए शुरू की थी कि पुराने शासन के तरीके को बलपूर्वक फिर से कायम किया जाय। विदेशी दूत का नाम, समय और स्थान का भी उल्लेख किया गया था। रुबाशोफ अब बहुत सावधान होकर सुन रहा था। उसे एक महत्वहीन-सी बात याद हो आई कि जिसे वह तब तो भूल गया था और जिसकी फिर कभी याद नहीं हुई थी। उसने फौरन ही तारीख का अन्दाजा किया; और वह यही लगी। यही वह डोरी बनेगी कि जिससे उसे फाँसी दी जायगी ? रुबाशोफ मुस्कराया और उसने अपनी रोती आँखों को रुमाल से पोंछा।...

ग्लैटकिन पढ़ता जा रहा था—बिना रुके हुए। जो वह पढ़ रहा था, क्या उस पर उसे यकीन था ? क्या वह इन बेवकूफी से भरी अजीब-सी बातों को नहीं समझता ? अब वह रुबाशोफ के उस काल तक पहुँच गया था कि जब वह अलमोनिम ट्रस्ट का नेता था। उसने आँकड़े पढ़े, जिनसे जाहिर होता था इस उद्योग की यह शाखा किस प्रकार असंगठित थी; कितने मज़दूरों को दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ा था और रद्दी सामान के कारण कई एक हवाई जहाज गिर गए थे और नष्ट हो गए थे। यह सब उसी के कारण हुआ था, यानी रुबाशोफ की नीचतापूर्ण छिपे तौर पर विनाश की नीति के कारण। 'नीचतापूर्ण' यह शब्द कई बार उसने दोहराया था। कुछ क्षणों के लिए रुबाशोफ ने सोचा कि ग्लैटकिन पागल तो नहीं हो गया; लेकिन इस अपराध-तालिका को बनाने वाला ग्लैटकिन तो था नहीं; वह तो केवल पढ़कर सुना रहा था।......

रुबाशोफ ने कोने में हलकी-सी रोशनी में बैठी स्टैनो की ओर देखा। वह छोटी, पतली और चश्मा पहने थी। वह अपनी पैंसिल की नोक बना रही थी और एक बार भी उसने रुबाशोफ की ओर नहीं देखा था। जाहिर

ही था, कि ग्लैटकिन जिन खतरनाक बातों को पढ़ रहा था, वह उन्हें सही समझती थी। वह अभी जवान ही थी—शायद २५ या २६ की रही होगी; क्रान्ति की बाढ़ के बाद ही समझने लायक हुई होगी। इस पीढ़ी के लोगों को रुबाशोफ के नाम से क्या मतलब—वही रुबाशोफ जो अन्धा कर देने वाली रोशनी के सामने बैठा था, जो रोती आँखों के कारण उन्हें खुला नहीं रख सकता था। वे उसे अखरते-से स्वर में पढ़कर सुना रहे थे और भाव-हीन आँखों से देख रहे थे, जैसे वह चीराफाड़ी की मेज पर चीरफाड़ के लिए रखा गया हो।

ग्लैटकिन अब अपराध-तालिका का आखिरी पैरा पढ़ रहा था। इसी में दर्ज था सबसे बड़ा अपराध—नं० १ को मार डालने की साजिश। इवानोफ ने जिस भेद-भरे 'अ' का पहली पेशी के वक्त जिक्र किया था वह 'अ' उस विश्रान्तिगृह का सहायक प्रबन्धक था जिसके यहाँ से नं० १ के लिए खाने-पीने का सामान आता था। रुबाशोफ के उकसाने पर, इस खानपान में जहर मिलाकर नं० १ का खातमा करने की साजिश की गई थी। रुबाशोफ बन्द आँखों से मुस्कराया। जब उसने आँखें खोलीं तो ग्लैटकिन ने पढ़ना बन्द कर दिया था और वह उसके चेहरे को देख रहा था। कुछ देर चुप रहने के बाद ग्लैटकिन ने समान-से स्वर में कहा—"तुमने अपराध-तालिका सुन ली है; तुम अपराधी हो न?"

रुबाशोफ ने उसके चेहरे को देख जाने की कोशिश की, लेकिन न देख सका और उसे फिर आँखें बन्द करनी पड़ीं। उसकी जीभ के सिरे पर चुभता-सा जवाब आया तो, लेकिन उसके बदले, उसने इतने धीरज और धीमे स्वर में जवाब दिया कि स्टैनो को भी सुनने के लिए अपना सिर आगे को करना पड़ा—

"मैं अपने को दोषी मानता हूँ, सरकार की नीति के पीछे छिपे हुए, घातक दबाव को न समझ सकने और इसी के कारण विरोधी दृष्टिकोण बना लेने के लिए। मैं अपने को अपराधी मानता हूँ उस भावुकता का अनुसरण करने के लिए जिसके कारण ऐतिहासिक आवश्यकता की ओर मुझे विरोध

करना पड़ा। मैंने क़ुरबान हो चुके लोगों का रोना सुनने में तो कानों को लगाया पर उन युक्तियों को सुनने के लिए बहरा बन गया जो उनकी क़ुरबानी की जरूरत को साबित करती थीं। मैं अपने को दोषी मानता हूँ, मैंने दोष और निर्दोषिता के प्रश्न को उपयोगिता और नुकसान देने वाली वस्तुओं के प्रश्न से अधिक महत्व दिया। और आखिर में, मैं अपने को दोषी मानता हूँ कि मैंने मनुष्यता के आदर्श से ऊपर मनुष्य को देखने का विचार किया।"

रुबाशोफ रुका और उसने आँखें खोलने की कोशिश की। उसने स्टैनो के कोने की ओर सिर घुमाया और इससे उसके चेहरे पर से रोशनी हट गई। स्टैनो ने, जो-कुछ वह बोला था, उसे लिखना अभी बन्द ही किया था। जैसे वह अपने लिखे पर खुश-खुश-सी थी।

"मैं जानता हूँ," रुबाशोफ ने आगे कहा, "कि मेरी विचार-धारा को यदि कार्यरूप में लाया जाय, तो इससे क्रान्ति को भारी खतरे का सामना करना पड़ जायगा। इतिहास के बदलते हुए दौर के वक्त प्रत्येक विरोध पार्टी में फूट पैदा कर सकता है, और यह फूट गृहयुद्ध का रूप भी ले सकती है। मानवता की कमजोरी और उदार जनतन्त्र, जबकि जन-साधारण अपरिपक्व हों, क्रान्ति के लिए घातक हैं। फिर भी मेरा विरोधी नजरिया इन्हीं उपायों के आधार पर टिका हुआ था, जो जाहिरा तो भले ही लगते थे, किन्तु वास्तविकता में घातक थे। तानाशाही में उदारतापूर्वक सुधार करने, आतंक को हटाने के लिए जनतन्त्र की माँग और पार्टी के अंकुश से मुक्ति,—मैं मानता हूँ कि ये माँगें, वर्तमान स्थिति में हानिकारक हैं और इसीलिए क्रान्ति-विरोधी रूप लिये हुए हैं।......"

"इस अर्थ में, और केवल इसी अर्थ में, तुम मुझे क्रान्ति-विरोधी कह सकते हो। अभियोग-तालिका में जो और बेवकूफी से भरे अपराध मुझ पर लगाये गए हैं, उनकी बाबत मुझे कुछ नहीं कहना।"

"क्या तुम सब कह चुके?" ग्लैटकिन ने पूछा।

उसके पूछने का ऐसा जंगली-सा तरीका था कि रुबाशोफ हैरानी से उसकी ओर देखने लगा। रुबाशोफ ने ग्लैटकिन का अध्ययन करके उसे 'पूरा-

पूरा जंगली' की संज्ञा दे रखी थी। इस समय वह उसे वैसा ही दीखा।

"तुम्हारा बयान कोई नया नहीं," ग्लैटकिन ने रूखे स्वर में कहा। "इससे पहले दो बार तुम जो 'स्वीकार-पत्र' दे चुके हो, उनमें से पहला तो दो बरस हुए और दूसरा बारह मास हुए, तुमने सार्वजनिक रूप में माना था कि तुम्हारा नजरिया 'निश्चयात्मक क्रान्ति-विरोधी है और जनता के हितों के विपरीत है।' दोनों बार तुमने पार्टी से माफी माँगी थी और नेता की नीति के प्रति भक्ति दरशाई थी। जो बयान तुमने इस वक्त दिया है, वह केवल आँसू पोंछने वाली बात है। तुम 'विरोधी नजरिये' को तो मानते हो, लेकिन उन कार्यवाहियों से इनकार करते हो, जो उसके फलरूप हुई। मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूँ कि इस बार आसानी से छूट नहीं सकोगे।"

ग्लैटकिन एकाएक चुप हो गया। इस सन्नाटे में रुबाशोफ ने लैम्प में बिजली के जलने की हल्की-सी आवाज को सुना। और उसी वक्त बिजली की तेजी का दरजा बढ़ा दिया गया।

"उस वक्त मैंने जो ऐलान किये थे," रुबाशोफ ने धीमे स्वर में कहा, "उनका खास मतलब था। तुम यह भली प्रकार जानते ही हो कि सब विरोधी राजनीतिज्ञों को पार्टी में बने रहने की खातिर ऐसे ऐलान करने ही पड़ते थे। और मैंने भी किये, लेकिन इस बार मेरा मतलब उससे सर्वथा भिन्न है।......"

"यूँ कहो कि इस बार तुम ईमानदार बन रहे हो?" ग्लैटकिन ने पूछा।

"हाँ," रुबाशोफ ने शान्ति से कहा।

"और पहले तुमने झूठ बोला था?"

"ऐसा ही कह लो," रुबाशोफ ने कहा।

"अपनी गरदन बचाने के लिए?"

"काम करते रहने के लायक बना रहने के लिए।"

"गरदन के बिना तो कोई काम नहीं कर सकता। इसलिए गरदन को ही बचाने के लिए?"

"ऐसा ही कह लो।"

ग्लैटकिन के प्रश्नों और अपने उत्तरों के बीच के खाली क्षणों में रुबा-शोफ स्टैनो के पैंसिल बनाने और लैम्प के जलने की आवाज सुन रहा था। लैम्प से बहुत तेज गरमी निकलकर रुबाशोफ के माथे पर पड़ रही थी और उसे रह-रहकर पसीना पोंछना पड़ता था। वह आँखों को खोले रहने की कोशिश में थक गया और उसकी आँखें नींद से घुट-घुट जा रही थीं। और जब ग्लैटकिन नया सवाल करने के लिए काफी अन्तर डाल देता, तो उसे लगता कि उसकी ठोड़ी छाती की ओर झुकी जा रही थी। और जब ग्लैटकिन ने अगले सवाल से एकाएक उसे झटका-सा दिया तो उसे लगा कि वह इस बीच सो गया था।

"मैं दोहराता हूँ," ग्लैटकिन बोला, "तुम्हारे पहले ऐलानों का मकसद अपनी सही राय को छिपाते हुए पार्टी को धोखा देना था और अपनी गर-दन को बचाना था?"

"मैं यह पहले ही मान चुका हूँ," रुबाशोफ ने कहा।

"और अपनी सैक्रेटरी आरलोवा के विषय में सार्वजनिक रूप से इनकारी होना, क्या उसका भी यही मकसद था?"

रुबाशोफ ने गूंगे की तरह सिर हिलाया। उसकी आँखों की राह बिजली की गरमी सब नसों पर दबाव डाल रही थी और खास कर चेहरे के दाएँ हिस्से पर। उसे लगा कि उसके दाँत का दर्द फिर शुरू हो गया है।

"तुम जानते हो कि आरलोवा अपनी सफाई के लिए लगातार तुम्हें गवाही के लिए बुलाती रही?"

"मुझे इसकी सूचना दी गई थी," रुबाशोफ ने कहा। उसके दाँत का दर्द और भी तेज हो गया था।

"तुम यह भी जानते थे कि तुमने इस वक्त जो ऐलान किया था, जिसे अभी तुमने झूठा बताया है, वह आरलोवा को फाँसी की सजा देने के लिए फैसला कर देने वाला होगा?"

"मुझे इसकी भी खबर मिली थी।"

रुबाशोफ को लगा कि उसके चेहरे का दांया भाग ऐंठ-सा गया था। उसका सिर सन्न और भारी हो गया था। बड़ी मुश्किल से उसे वह सीधा किये बैठा रहा। और तब ग्लैटकिन की आवाज उसके कानों में पड़ी—

"तो यह सम्भव है कि आरलोवा निर्दोष थी?"

"हो सकता है," रुबाशोफ ने कहा।

"...और तुम्हारे झूठे ऐलान के कारण फांसी चढ़ गई, इस मकसद से कि तुम्हारी गरदन बच जाय?"

"यह भी हो सकता है," रुबाशोफ ने कहा। फिर गुस्से में उसने सोचा, 'नीच कहीं का। बेशक, जो तुम कहते हो वह नग्न सत्य है। कोई भी यह जानना चाहेगा कि हम दोनों में से कौन बड़ा नीच है। फिर भी वह मेरे गले पर बैठा है, और मैं अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता। काश, वह मुझे सो ही लेने दे। अगर मुझे वह लगातार तंग ही करता रहा, तो मैं सब बातें वापिस ले लूँगा, और बोलने से भी इनकार कर दूँगा। तब मैं समाप्त हो जाऊँगा, और शायद वह भी...'

"......और इस सब के बाद, तुम बेहतर सलूक की माँग करते हो?" ग्लैटकिन ने कहा। "अब भी तुम अपनी अपराधी कार्यवाहियों से इनकारी होने का साहस करते हो? और तिस पर तुम यह माँग करते हो कि हमें तुम पर विश्वास कर लेना चाहिए?"

रुबाशोफ ने सिर को सीधा बनाये रहने की कोशिश छोड़ दी। बेशक, ग्लैटकिन उस पर यकीन न करने में सही भी था। और इधर उसकी खुद की हालत भी यह हो रही थी कि वह सच और झूठ की भूलभुलैयाँ में खोया जा रहा था। आखिरी सच तो हमेशा एक कदम पीछे-सा हटकर रहता है और प्रत्यक्ष होता है वह झूठ, जिसकी एक ही तह उस सत्य पर छायी रहती है। वह ग्लैटकिन को क्योंकर यकीन दिला सकता है कि इस बार वास्तव में ही वह ईमानदार है, और यह कि वह अपने अन्तिम ध्येय तक भी पहुँच गया है। किसी को यक़ीन दिलाने के लिए बोलना भी पड़ता है, तर्क भी करना पड़ता है चाहे उस बोलने वाले की महज़ यही इच्छा

क्यों न हो कि काश, मैं सो सकूँ और खो जाऊँ।······

"मुझे कुछ नहीं चाहिए," रुबाशोफ ने कहा, और जैसे भारी दर्द के साथ ग्लैटकिन की ओर रुख किया हो, "सिवा इसके कि मैं एक बार फिर पार्टी की ओर वफ़ादारी का सबूत देना चाहता हूँ।"

"तुम केवल एक ही सबूत दे सकते हो," ग्लैटकिन ने कहा, "पूरी-पूरी तरह अपराधों की स्वीकृति। हमने तुम्हारे 'विरोधी विचारों' और तुम्हारे ऊँचे-ऊँचे उद्देश्यों की बाबत बहुत-कुछ सुन रखा है। जो हमें चाहिए वह तो केवल इतना ही है कि तुम सार्वजनिक रूप से अपने अपराधों को स्वीकार करो। उन विचारों का वैसे भी आवश्यकीय फल भी यही तो होना था। अब भी तुम पार्टी की सेवा कर सकते हो और इसका एकमात्र आदर्श उपाय यही है कि तुम जनता को अपने व्यक्तित्व से प्रकट कर दो कि पार्टी की नीति के विरुद्ध जाने का यही परिणाम होता है।"

रुबाशोफ ने नं० १ के खान-पान का ख्याल किया। उसके चेहरे की नसें दर्द के मारे फूल गई थीं, लेकिन ये पीढ़ा ज्यादा नहीं थी। फिर यह मन्द-सी हो गई थी और उसके आघात भी शून्य होते जा रहे थे। उसे नं० १ के खान-पान का फिर ख्याल आया और उसके चेहरे की माँस-पेशियों ने ऐंठन का रूप धारण कर लिया।

"जो अपराध मैंने नहीं किये, उन्हे मैं मान नहीं सकता," उसने साफ़-साफ़ कहा।

"नहीं," ग्लैटकिन बोला, "हरगिज़ तुम ऐसा नहीं कर सकते।" और रुबाशोफ को लगा कि पहली बार जैसे वह कुछ धोखा-सा उस आवाज़ में सुन रहा हो।

इस क्षण के बाद से रुबाशोफ पेशी की कार्यवाही को ठीक-ठीक याद न रख सका। इस वाक्य के बाद कि 'हरगिज़ तुम ऐसा नहीं कर सकते,' उसके कानों में एक अजीब-सा व्यंग्य भर गया था, और इसी कारण उसकी स्मृति में अनजाना-सा अन्तर भी आ गया था। बाद में उसे महसूस हुआ कि वह सो गया था और यहाँ तक कि उसे एक सुखद स्वप्न की-सी याद भी रह गई

थी। यह सपना चन्द ही सैकिण्ड तो रह पाया था—एक अस्पष्ट-सा अधूरा चित्र जिसमें खास किस्म के सफेद बादलों के नीचे उसे चिनार के पेड़ों की कतारें दिखाई दीं—ठीक वैसी ही, जैसी कि उसके पिता की ज़मीनों पर थीं और जिन्हें वह बचपन में कभी-कभी देखा करता था।

इससे आगे की जो बात उसे याद थी, वह थी एक तीसरे व्यक्ति का कमरे में आना। ग्लैटकिन की आवाज़ उसके कानों में भनभना रही थी; ग्लैटकिन निश्चय ही उसके पास आ गया था और उसकी मेज़ पर झुक गया था—

"कृपा कर कार्यवाही की ओर ध्यान दो।⋯⋯क्या तुम इस आदमी को पहचानते हो?"

रुबाशोफ ने सिर हिलाया। वह फौरन ही ओंठ-फटे को पहचान गया था, हालांकि उसने अपने कन्धों और गले को लपेटा नहीं हुआ था, जैसे वह सेहन में घूमते समय किया करता था। अंकों की परिचित-सी पंक्ति रुबाशोफ के दिल में आई: '२-३, १-१, ४-३, १-५, ३-२, २-४⋯⋯ ओंठ-फटा तुम्हें अभिवादन करता है।' किस अवसर पर नं० ४०२ ने उसे यह सन्देश दिया था?

"कब और कहाँ तुमने इसे देखा था?"

इसका जवाब देने के लिए रुबाशोफ को काफ़ी जोर लगाना पड़ा—"इसे मैंने अपनी खिड़की में से कई बार देखा है, सेहन में टहलते वक्त।"

"और इससे पहले इसे कभी नहीं देखा?"

ओंठ-फटा किवाड़ में खड़ा था, रुबाशोफ की कुरसी के पीछे की ओर चंद कदम हटकर; और लैंप की चमकती रोशनी उस पर पूरी-पूरी तरह पड़ रही थी। उसका चेहरा, सदा की तरह पीला-सा और सफ़ेद था। उसका ऊपर का ओंठ फटा हुआ था, जिसकी राह उसके मसूड़े का मांस दीख रहा था। उसके हाथ घुटनों तक लटक रहे थे। रुबाशोफ ने अब लैंप की ओर पीठ कर ली थी। उसने देखा, जैसे वह रंगमंच की चमकती रोशनी में प्रेत की तरह उतर आया हो। अंकों की एक नई पंक्ति रुबाशोफ के दिमाग़ में आ गई:

'४-५; ४-३…कल पीड़ा पहुँचाई गई थी।' और एकाएक फ़ौरन ही छाया की तरह उसके दिमाग़ में आया कि इस नं० ४०४ की कोठरी में दाख़िल होने के बहुत पहले उसने इस अस्थि-पिंजर को जीवित दशा में देखा तो जरूर था कहीं।

"मैं ठीक-ठीक तो कह नहीं सकता," उसने रुक-रुककर जवाब दिया, "लेकिन अब पास से देखता हूँ, तो लगता है कि मैंने पहले भी इसे कहीं देख रखा है।"

इस वाक्य को पूरा कह जाने से पहले ही उसे महसूस हुआ कि यदि न बोलता तो अच्छा ही था। उसकी तीव्र इच्छा थी कि ग्लैटकिन उसे कुछ मिनटों के लिए छोड़ दे ताकि वह अपने को स्थिर कर ले। ग्लैटकिन के जल्दी-जल्दी सवाल करने और जवाब लेने के ढंग की बाबत सोचते हुए उसे एक पक्षी की मूर्ति का ध्यान हो आया, जो अपनी चोंच को फैलाये अपने शिकार की ओर देख रहा था।

"आखिरी बार तुम इस आदमी से कहाँ मिले थे? एक समय था, पार्टी में तुम्हारी स्मरण-शक्ति उदाहरणीय मानी जाती थी।"

रुबाशोफ चुप था। उसने अपने दिमाग़ को जैसे झकझोरा भी, लेकिन इस प्रेत-से व्यक्ति की याद उसे न आ सकी। ओंठ-फटा अचल खड़ा था। उसने अपनी जीभ ओंठ-फटे पर फिराई; उसकी नज़र रुबाशोफ से ग्लैटकिन तक गई और फिर लौट गई।

स्टैनो ने लिखना बन्द कर दिया था। कमरे में केवल लैंप जलने और ग्लैटकिन की पोशाक की सर-सर की आवाज आ रही थी। तब वह कुरसी की बाँहों पर हाथ रखकर आगे को झुका, नया प्रश्न करने के लिए—

"मतलब यह है कि तुम जवाब देने से इनकार करते हो?"

"मुझे याद नहीं," रुबाशोफ ने कहा।

"अच्छी बात है," ग्लैटकिन ने कहा। वह कुछ और आगे बढ़ा और ओंठ-फटे की ओर झुकते हुए बोला—"क्या तुम रुबाशोफ को कुछ याद करा सकते हो, आख़िरी बार तुम उससे कहाँ मिले थे?"

'ओंठ-फटे का चेहरा जैसे और भी सफेद पड़ गया। उसकी आँखें स्टैनो पर जा टिकीं, जिसकी उपस्थिति अभी-अभी वह जान सका था, लेकिन फ़ौरन ही उसकी आँखें घूम-घूम जाने लगीं, जैसे वे आश्रय खोज रही हों। उसने फिर ओंठ पर जीभ फिराई और एक ही साँस में जल्दी-जल्दी कह गया—"रुबाशोफ ने पार्टी के लीडर को ज़हर देकर नष्ट करने के लिए मुझे उकसाया था।"

इस अस्थि-पिंजर से निकले इन रटे हुए शब्दों को सुन रुबाशोफ को एकाएक गहरा आश्चर्य हुआ। उसके स्वर से उसे लगा कि जैसे वह इन्हीं शब्दों को बोल जाने के लिए अचल-सा खड़ा था और इन्हीं के लिए जैसे वह जीवित-सा रह गया था! जो कुछ उसने कहा था, उसकी वास्तविकता को तो रुबाशोफ कुछ क्षण बाद ही जान सका था। लेकिन जब से ओंठ-फटा कमरे में आया था, उसे किसी अज्ञात शंका का भय तो हो ही गया था, और अब वही शंका साकार होकर अपराध-स्वरूप में सामने आ गई थी। पल ही भर बाद उसने ग्लैटकिन की आवाज़ फिर सुनी, क्योंकि उस वक्त रुबाशोफ ओंठ-फटे की ओर मुँह किये था। ग्लैटकिन कुछ नाराजी से कह रहा था—"मैंने अभी तुमसे यह नहीं पूछा। मैंने पूछा है, तुम आखिरी बार रुबाशोफ से कहाँ मिले थे?"

रुबाशोफ ने सोचा, 'यह तो ठीक नहीं। उसे इस बात पर जोर नहीं देना चाहिए था कि उसका जवाब गलत था। और मैं तो इसे जान भी न पाता।' उसे लगा कि अब उसका दिमाग साफ हो गया था और वह जाग-सा गया था। उसने मुकाबला करने की सोची। यह गवाह तो आप-से-आप चलने वाली बन्दूक जैसा है, और अभी-अभी वह गलती कर गया था। ओंठ-फटे का इस बार का जवाब जरा संभला हुआ था—"मैं 'ब' में ट्रेड डैलीगेशन के स्वागत के बाद रुबाशोफ से मिला था। वहाँ उसने मुझे पार्टी के नेता के विरुद्ध हिंसात्मक रचना की प्रेरणा की थी।"

जब वह बोल रहा था तो उसकी नज़र रुबाशोफ को छू-छू जा रही थी और वहीं टिकी हुई थी। रुबाशोफ ने चश्मा पहना और जिज्ञासु की भाँति

उसकी ओर देखा। लेकिन उसकी आँखें भावहीन और मरी-मरी-सी थीं। उनमे प्रायश्चित्त का कहीं लेश भी नहीं था। और तब, रुबाशोफ ने ही पहले अपनी नजर को उस पर से हटा लिया। उसकी पीठ पर ग्लैटकिन का स्थिर और बर्बरतापूर्ण स्वर पुनः जाग उठा—"क्या इस भेंट की तारीख़ तुम बता सकते हो?"

"मुझे अच्छी तरह याद है। क्रान्ति की बीसवीं वर्ष-गाँठ के समय स्वागत-उत्सव मनाने के बाद।"

अब भी उसकी नंगी-नंगी-सी नजर रुबाशोफ की आँखों पर टिकी थी। रुबाशोफ के दिमाग में झिल-मिल-सी याद आई, और फिर स्पष्ट हो गई। अब उसे याद आ गया कि यह ओंठ-फटा कौन है। लेकिन यह याद आकर उसे केवल टीस-सी महसूस हुई। उसने ग्लैटकिन की ओर मुँह किया और आँखें झपकते हुए शान्ति से बोला—

"तारीख़ सही है। मैं इससे पहले प्रोफेसर कीफ़र के पुत्र को पहचान नहीं सका, क्योंकि तुम्हारे हाथों में पड़ने से पहले एक ही बार तो मैंने उसे देखा था। अपनी कोशिश मे तुम सफल हुए—बधाई!"

"तो तुम मानते हो कि तुम इसे जानते हो और ऊपर कहे अवसर और दिन पर तुमसे इसकी भेंट हुई थी?"

"अभी तो कह चुका हूँ," रुबाशोफ ने थकावट के साथ कहा। उसकी जागरुकता जाती रही थी और उसके दिमाग़ में फिर से खोई-खोई-सी भनभन शुरू हो गई थी। "अगर तुम पहले ही मुझे बतला देते कि वह मेरे अभागे मित्र कीफ़र का पुत्र है, तो मैं इसे पहले ही पहचान जाता।"

"अभियोग में उसका पूरा नाम दिया गया है," ग्लैटकिन ने कहा।

"मैं सबकी तरह ही उन्हें प्रोफेसर कीफ़र के नाम से जानता हूँ।"

"यह तो महत्वहीन-सी बात है," ग्लेटकिन ने कहा, और ओंठ-फटे की ओर झुकते हुए बोला—"सारी बात कहो। हमें बताओ कि यह भेंट कैसे हुई।"

फिर ग़लत, रुबाशोफ ने जैसे सोते-सोते सोचा। वास्तव में यह महत्व-

हीन बात तो नहीं। यदि मैंने इस आदमी को इस षड्यन्त्र के लिए उकसाया होता, तो नाम के बिना भी मुझे पहली ही नजर में इसे पहचान जाना चाहिए था। लेकिन ऐसे विचार-विमर्श पर वह देर तक टिका नहीं रह सकता था, क्योंकि एक तो वह थका हुआ था और दूसरे उसे लैंप की ओर फिर मुँह करना पड़ा।

जिस समय वे उसकी पहचान के बारे में चर्चा कर रहे थे, उस समय ओंठ-फटा सिर झुकाये खड़ा था और सफ़ेद रोशनी में उसका ऊपर का ओंठ फड़फड़ा रहा था। रुबाशोफ ने अपने पुराने मित्र और कामरेड कीफ़र के बारे में विचार किया, जो क्रान्ति का इतिहासवेत्ता था। कांग्रेस की मेज़ पर जो विख्यात फोटो रखा रहता था, उसमें कीफ़र पुराने नेता के बायें बैठा था। प्रोफेसर कीफ़र शतरंज खेलने का साथी होने के अतिरिक्त उसका एकमात्र निजी मित्र भी था। उस 'बूढ़े नेता' की मृत्यु के बाद कीफ़र को उसका चरित्र लिखने पर नियत किया गया, क्योंकि कीफ़र से बढ़कर उसे कोई दूसरा नहीं जानता था। दस बरस तक कीफ़र इस काम में लगा रहा, लेकिन उसके प्रकाशन की बारी न आई। इन दस बरसों में सरकारी तौर पर क्रान्ति सम्बन्धी घटनाओं का रंग-रूप ही बदल दिया गया था; मुख्य-मुख्य नेताओं ने जो-जो किया था, उसे दोबारा लिखा जा चुका था; इनके महत्व को आँकने का नजरिया ही बदल गया था। लेकिन कीफ़र अचल और अडिग खड़ा था; वह नं० १ की छत्रछाया में उमड़ते हुए नये युग की भीतरी चालों को नहीं समझता था।···

"मेरे पिता और मैं," ओंठ-फटे ने कहा, "जब अन्तर्राष्ट्रीय मानव-विज्ञान कांग्रेस से लौट रहे थे, तो लौटते समय मेरे पिता 'ब' नामक स्थान के लिए रवाना हुए। मेरे पिता अपने पुराने मित्र नागरिक रुबाशोफ से मिलना चाहते थे।"

रुबाशोफ बहुत ध्यान से सुन रहा था। और यहाँ तक तो यह कहानी सत्य थी कि बूढ़े कीफ़र उसे मिलने आये थे। और सलाह भी करनी थी।

वह सन्ध्या, जो उस दिन दोनों ने साथ-साथ बिताई थी, सम्भवतः कीफ़र के जीवन की आखिरी सुखद घड़ी थी।

"हम एक ही दिन ठहर सके थे। वही दिन क्रान्ति-उत्सव का था, इसीलिए मुझे वह दिन खास याद है। नागरिक रुबाशोफ दिन-भर स्वागत-कार्य में व्यस्त रहे और चन्द ही मिनटों के लिए मेरे पिता से भी बात कर सके। लेकिन शाम को, जबकि दूतावास में उत्सव का काम खत्म हो चुका था, तो उसने मेरे पिता को अपने निजी स्थान पर निमन्त्रित किया। और तभी मेरे पिता ने मुझे साथ चलने की स्वीकृति दी। रुबाशोफ यद्यपि बहुत थका दीख रहा था और उसने चोग़ा पहन रखा था, लेकिन तो भी उसने खुले दिल से हमारा स्वागत किया। उसने मेज़ पर शराब और केक रखे हुए थे। वह मेरे पिता से छाती मिला और कहा—"आखिरी मोहीकनों का यह विदाई भोज है।"

और रुबाशोफ की पीठ पर ग्लैटकिन की आवाज गूँज उठी—"क्या तुम रुबाशोफ की इस इच्छा को जान गए थे कि वह तुम्हें बेहोश कर लेना चाहता था, ताकि तुम और भी आसानी से उसके वश में हो सको?"

रुबाशोफ को लगा कि ओंठ-फटे के चेहरे पर जैसे हल्की-सी मुस्कराहट दौड़ गई है। पहली बार उसे उस शक्ल की याद आई, जो उस सन्ध्या को उसने एक नौजवान की देखी थी, लेकिन यह भाव भी एकाएक विलीन हो गया। ओंठ-फटे ने अपने ओंठ साफ़ करते हुए कहा, "उसे देखकर मुझे शका तो ज़रूर हुई थी, लेकिन मैं उसकी स्कीम को एकाएक भाँप नहीं सका।"

'उल्लू कहीं के,' रुबाशोफ ने मन-ही-मन कहा, 'तुझे इन्होंने क्या बना दिया है?...'

"आगे कहो," ग्लैटकिन का स्वर गूँज उठा।

इस बाधा के बाद ओंठ-फटे को अपने विचारों को फिर से जोड़ने में कुछ समय लगा। इस बीच, पतली-सी स्टैनो के पैंसिल की नोक बनाने की आवाज आ रही थी।

रुबाशोफ और मेरे पिता बहुत देर तक पुरानी-पुरानी बातें करते रहे।

बरसों से उन्होंने एक-दूसरे को नहीं देख रखा था। वे क्रान्ति से पहले के समय की बातें करते रहे, पुरानी पीढ़ी के लोगों के विषय में चर्चा करते रहे, और गृहयुद्ध की बातें होती रहीं। दोनों कुछ ऐसे रहस्य से बातें कर रहे थे कि मैं उन्हें ठीक-ठीक समझ नहीं सकता था। पुरानी-पुरानी बातें करके जब वे हँसते थे, तो मैं मुँह ताकता रह जाता था।"

"क्या तुम्हारे पिता बहुत पी गए थे?" ग्लैटकिन ने पूछा।

ओंठ-फटा कुछ ऐसे हिला जैसे बड़ी असहाय अवस्था में हो। रुबाशोफ को ऐसा लगा जैसे वह बड़ी मुश्किल से अपने को खड़ा रखने में सफल हो रहा है।

"मुझे ख्याल है, बहुत ज्यादा; पिछले कुछ बरसों में मैंने अपने पिता को इतना खुश कभी नहीं देखा था।"

"यह बात तब से तीन मास पहले की है न, जब उनकी क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों का भेद खुल गया था; और इसी कारण तीन मास बाद उन्हें फाँसी दे दी गई थी?"

ओंठ-फटा अपने ओंठ साफ कर रहा था, खोई-सी हालत में रोशनी को देखता हुआ वह चुप रहा। रुबाशोफ एकाएक किसी ख्याल में ग्लैटकिन की ओर घूमा तो, लेकिन रोशनी में उसकी आँखें चुँधिया गईं। उसने आँखें बन्द कर लीं और धीरे-से फिर घूम गया और अपनी बाँह पर चश्मा रगड़ने लगा। स्टैनो की पैंसिल काग़ज़ पर खिस-खिस चलती हुई रुक गई थी। तब फिर ग्लैटकिन बोला—

"क्या तुम भी अपने पिता की क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों में उस समय शामिल थे?"

"हाँ," उसने कहा।

"और तुम जानते थे कि रुबाशोफ तुम्हारे पिता के विचारों से सहमत था?"

"हाँ"

"बातचीत की खास-खास बातें बताओ। सब महत्वहीन बातें छोड़ दो।"

ओंठ-फटे ने अपनी पीठ पर हाथों को जोड़ लिया था और कंधा लगाकर दीवार के सहारे खड़ा हो गया था।

"थोड़ी देर बाद, दोनों की बातचीत का सिलसिला वर्तमान पर आ गया। पार्टी की वर्तमान अवस्था और नेतागिरी के तरीकों पर उन्होंने तिरस्कृत ढंग से चर्चा की। रुबाशोफ और मेरे पिता पार्टी के लीडर को 'नं० १' कह-कहकर बात करते थे। रुबाशोफ का कहना था कि चूँकि नं० १ उत्तराधिकारी बनकर पार्टी पर छा गया है, इसलिए वहाँ दम घुट-घुट जाता है। यही एक कारण है कि वह विदेशी मिशनों पर ही रहना पसन्द करता है।"

ग्लैटकिन ने रुबाशोफ की ओर मुँह किया—"यह पार्टी के लीडर की ओर वफादारी की पहली घोषणा के कुछ ही पहले की बात है न?"

"ठीक ही होगा," उसने कहा।

"क्या रुबाशोफ ने शाम के वक्त ऐसी घोषणा करने की इच्छा प्रकट की थी?" ग्लैटकिन ने ओंठ-फटे से पूछा।

"हाँ," मेरे पिता ने इस बात पर रुबाशोफ को बुरा-भला कहा था और उन्होंने कहा था कि वह उससे निराश हो चुके हैं। रुबाशोफ हँसा था, और उसने मेरे पिता को बेवकूफ ठहराया था। उसका कहना था कि महत्वपूर्ण बात तो यह है कि तब तक जागे रहो, जब तक घात का मौका न आ जाय।"

"इस बात से उसका क्या मतलब था, 'जब तक मौका न आ जाय?'"

"यानी वह मौका, जब कि पार्टी के लीडर को उसकी जगह से हटा दिया जायगा।"

इस पर ग्लैटकिन ने रुबाशोफ को रूखे-से स्वर में कहा, "यही पुरानी-पुरानी बातें तुम्हारा मनोरंजन करती हैं न?"

"शायद," रुबाशोफ ने कहा और फिर अपनी आँखें बन्द कर लीं।

ग्लैटकिन ने अपनी बाहें चढ़ाते हुए ओंठ-फटे से आगे प्रश्न किया—

"तो रुबाशोफ ने उस मौके की चर्चा की जब कि पार्टी के लीडर को उसकी जगह से हटा दिया जाना था। लेकिन यह होना क्योंकर था ?"

"मेरे पिता का विचार था कि एक दिन प्याला भरकर आप ही छलक जायगा और पार्टी उसे छोड़ देगी या उसे त्याग-पत्र देने पर लाचार करेगी; और विरोधी पक्ष को इस विचार का प्रचार करना चाहिए।"

"और रुबाशोफ ?"

"रुबाशोफ मेरे पिता की बात पर हँसा था और उन्हें मूर्ख बताते हुए उसने कहा था, नं० १ कोई फरिश्ता तो है नहीं, वह भी हाड़-माँस का ही पुतला है; उसमें भी तो बने रहने और अपनी धारणा को विस्तार देने का भरोसा है। इसी भरोसे के बल पर वह शक्ति प्राप्त करता है। इस कारण वह अपने-आप त्याग-पत्र कदापि नहीं देता और उसे तो हिंसा से अलग करना होगा। पार्टी से ऐसी कोई आशा करना व्यर्थ ही है, क्योंकि नं० १ ने सब रासों को अपनी मुट्ठी में कर रखा है, और पार्टी की नौकरशाही को अपना साथी बना रखा है, जो हर मुश्किल में उसका साथ देगी।

अर्द्ध-मृतावस्था के बावजूद भी रुबाशोफ को लगा कि ओंठ-फटा बहुत ही सफाई के साथ एक-एक शब्द कह गया था और कहीं भी रुका नहीं। ऐसी बातचीत की खुद उसे तो कोई याद नहीं, लेकिन ओंठ-फटे ने जिस ईमानदारी से उसे दोहराया है, उसके विषय में उसे कोई सन्देह नहीं। उसने युवक कीफर को नई दिलचस्पी के साथ अपने चश्मे की राह से झाँका।

उधर ग्लैटकिन का स्वर गूँजा—"तो रुबाशोफ ने नं० १ के खिलाफ हिंसा के प्रयोग पर जोर दिया; नं० १ यानी पार्टी के लीडर के विरुद्ध।"

ओंठ-फटे ने सिर हिला दिया।

"और नशे की हालत में, उसकी युक्तियों का तुम पर बहुत गहरा असर हुआ ?"

युवक ने एकाएक उत्तर न दिया। और धीमी-सी आवाज में तब वह बोला—"मैंने कोई खास तो पी नहीं रखी थी, लेकिन जो-कुछ भी इसने कहा, उसका मुझ पर गहरा असर हुआ।"

रुबाशोफ ने अपना सिर झुका लिया। उसके मन में एक शंका जगी और इसने जैसे उसके सारे शरीर में दर्द कर दिया और उस दर्द ने जैसे सब-कुछ उसे भुला दिया। क्या यह सम्भव था कि इस अभागे युवक ने ही, खुद रुबाशोफ की विचार-धारा में से ही ऐसा परिणाम निकाला हो?

ग्लैटकिन ने उसे यह बात पूरी-पूरी सोचने न दी। उसका स्वर गूँज उठा—"...और इसी कल्पना के आधार पर हत्या के लिए उकसाने की बारी आई?"

ओंठ-फटा चुप था। उसने रोशनी में आँखें झपझपाईं। ग्लैटकिन ने पल-भर को जवाब की प्रतीक्षा की। रुबाशोफ ने अपना सिर उठाया—सुन लेने के लिए अचानक ही। कुछ समय और बीता और उस बीच लैम्प के जलते रहने की आवाज आ रही थी। तब, एकाएक ग्लैटकिन कुछ और साफ-साफ बोला—"क्या तुम चाहते हो कि इस याद को ताज़ा करने के लिए तुम्हारी मदद की जाय?"

ग्लैटकिन ने यह वाक्य खास ढंग से रुक-रुककर बोला था, लेकिन ओंठ-फटा ऐसा काँप-सा गया जैसे कोड़ा पड़ा हो। उसने ओंठों पर जीभ फेरी और उसकी आँखों में जंगली जानवरों जैसी खूँखारी-सी चमक उठी। और तब वह भरे रिकार्ड की तरह बोल उठा, "उसी शाम को उकसाने की बात नहीं हुई, बल्कि अगले दिन सुबह नागरिक रुबाशोफ और मेरे बीच गुप्त बातचीत हुई।"

रुबाशोफ मुस्कराया। इस काल्पनिक बातचीत को अगले दिन पर स्थगित करने में ग्लैटकिन की अक्लमंदी ज़ाहिर हो रही थी। इसके अतिरिक्त सोचने की यह बात थी कि बूढ़ा कीफ़र खुशी-खुशी यह सुनता रहा होगा कि उसके पुत्र को जहर देकर हत्या करने के लिए उकसाया जाय। यह सारी कहानी ग्लैटकिन की मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी असम्भव-सी जान पड़ रही थी।...रुबाशोफ उस धक्के को भूल गया था कि जो अभी उसे लगा था; वह ग्लैटकिन की ओर मुड़ा और उसने पूछा—

"मुझे विश्वास है कि आमना-सामना होने पर सफाई पक्ष को सवा करने का अधिकार होता है ?"

"तुम्हें अधिकार है," ग्लैटकिन ने कहा।

रुबाशोफ ओंठ-फटे की ओर मुड़ा। "जहाँ तक मुझे याद है," उसने उसकी ओर आँखें गड़ाते हुए कहा, "जब तुम और तुम्हारे पिता मेरे यहाँ आये थे, तो उन्हीं दिनों तुम युनिवर्सिटी से अपनी तालीम पूरी करके आये थे ?"

ओंठ-फटे ने सिर हिला दिया।

"तो यह ठीक है न," रुबाशोफ ने कहा, "अगर मुझे सही-सही यह भी याद है कि उस वक्त तुम्हारी मंशा यह थी कि तुम अपने पिता के साथ ही 'ऐतिहासिक-अनुसंधान' नामक संस्था में काम करने लगोगे। क्या तुमने वैसा किया था ?"

"हाँ," ओंठ-फटे ने कहा, और कुछ संकोच के साथ यह भी कहा, "अपने पिता की गिरफ्तारी तक।"

"मैं समझता हूँ," रुबाशोफ ने कहा, "इस घटना के कारण तुम्हारा उस संस्था में रहना असम्भव हो गया होगा और तुम्हें अपनी आजीविका के लिए कोई अन्य उपाय करना पड़ा होगा।..." वह रुका, ग्लैटकिन की ओर मुड़ा और बोलता गया—

"......इससे यह साबित होता है कि इस युवक के साथ उस वक्त की मुलाकात में न तो यह और न ही मैं उसकी भावी नौकरी का कोई अनुमान लगा सकते थे; इसलिए जहर देकर हत्या के लिए उकसाना, तर्क की दृष्टि से असम्भव जान पड़ता है।"

स्टैनो की पैन्सिल एक दम रुक गई। रुबाशोफ उसकी ओर देखे बिना ही इस बात को जानता था कि उसने लिखना बन्द कर दिया है। वह अपना चुहिया-सा मुँह उठाकर ग्लैटकिन की ओर देख रही थी। ओंठ-फटे ने ग्लैटकिन की ओर देखा और ओंठ चाटने लगा। उसकी आँखों में परेशानी और भय दीख रहा था। और तब, एकाएक रुबाशोफ को लगा कि उसकी

क्षणिक विजय का अन्त हो गया था; उसने सोचा कि उसने उस पवित्र-कार्य में बाधा क्यों डाली जो बहुत सरलता के साथ अदा किया जा रहा था। तब ग्लैटकिन ने पहले की अपेक्षा शान्ति से कहा—"तुम्हें और भी कुछ कहना है?"

"इस वक्त तो इतना ही पूछना था।"

"किसी का भी यह मत नहीं कि तुम्हारी हिदायतों में हत्या के लिए जहर तक ही सीमा रख दी गई थी," ग्लैटकिन ने कहा। "तुमने हत्या का आदेश किया था; और वह कैसे की जाय, यह सोचना तो हत्या करने वाले पर छोड़ा गया था।" वह ओंठ-फटे की ओर मुड़ा—"क्या यह ठीक है?"

"हाँ," ओंठ-फटे ने कहा।

रुबाशोफ को यह बात सही-सही याद थी कि अभियोग में यह स्पष्ट कहा गया था, 'जहर के द्वारा हत्या की उकसाहट।' लेकिन अब तो सारी बात ही पलटा दी गई थी। उसने सोचा, इस युवक माईकेल ने वास्तव में ही ऐसी मूर्खतापूर्ण चेष्टा की भी थी अथवा कुछ ऐसा विचार ही किया था, अथवा बनावटी ढंग से इस सारी या आंशिक रूप में साजिश की कहानी को इसमें ठूंसा गया था। अब तो इस सबका उसके अपराध की ओर कोई अन्तर नहीं होता। वह तो इस बात को महत्व दे रहा था कि यह गंदगी की वह मूर्ति है, जो उसी के दार्शनिक विचारों का प्रतिनिधित्व कर रही है। रूप-परिवर्तन हो चुका था। अब ग्लैटकिन नहीं, स्वयं वह, रुबाशोफ ही था जिसने सफाई से चलने वाले मामले को गंदला कर दिया था। अब तक उसे लग रहा था कि यह अभियोग सरासर बनावटी-सा है, लेकिन अब उसने सोचा कि इसकी जुदा-जुदा कड़ियों को बहुत सावधानी के साथ जोड़ा गया हुआ है। और तब भी, एक बात में उसे लग रहा था कि उसकी ओर यह अन्याय हो रहा है। लेकिन वह इतना थक चुका था कि वह अन्याय को शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता था।

"तुम्हें और भी कोई प्रश्न करना है?" ग्लैटकिन ने पूछा।

रुबाशोफ ने सिर हिलाकर 'न' कह दी।

"तुम जा सकते हो," ग्लैटकिन ने ओंठ-फटे से कहा। उसने घंटी बजाई। एक वार्डर आया और उसने युवक कीफर को हथकड़ियाँ पहना दीं। ले जाये जाने से पूर्व, किवाड़ पर ही ओंठ-फटे ने एक बार फिर रुबाशोफ को देखा। अक्सर वह सेहन में टहलने के बाद ऐसा किया करता था। लेकिन रुबाशोफ को उसकी यह नज़र पहाड़ जैसी बोझल लगी। उसने चश्मा उतारा और बाँह पर रगड़ा; और अपनी आँखों को दूसरी ओर कर लिया।

जब ओंठ-फटा चला गया, तो उसे जैसे उसकी ओर ईर्ष्या हुई। तभी ग्लैटकिन की आवाज़ उसके कानों में पड़ी—"अब तो तुम मानते हो कि कीफ़र की स्वीकृति महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित है?"

रुबाशोफ को अब पुनः लैंप की ओर मुँह करना पड़ा। उसके कानों में साँय-साँय हो रही थी और गरम-गरम रोशनी उसकी पतली चमड़ी के छिद्रों में धँसी जा रही थी। इतना होने पर भी 'महत्वपूर्ण घटनाओं,' यह शब्द उसके कानों में ठीक से सुनाई दिये। इसी वाक्य के आधार पर ग्लैटकिन अभियोग को पूरा पाट लेना चाहता था और उसे सम्भव जान पड़ रहा था कि वह 'ज़हर द्वारा हत्या के लिए उकसाहट' शब्दों को 'हत्या के लिए उकसाहट' में बदल ले सकेगा।

"महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित—हाँ," रुबाशोफ ने कहा।

ग्लैटकिन की पोशाक सर-सर कर रही थी, और स्टैनो भी अब अपनी कुरसी पर इधर-उधर हो रही थी। रुबाशोफ जान गया था कि अब वह निर्णीत वाक्य तो बोल ही चुका था और इस तरह उसने अपने अपराध की स्वीकृति पर मोहर भी लगा दी थी। भला ग्लैटकिन जैसे लोग रुबाशोफ की तरह अपराध की परिभाषा क्या कर सकेंगे और जिसे सच कहा जाता है, वह क्या है, उसे उसके दृष्टिकोण से भला वे क्या बता सकेंगे!

"क्या रोशनी से तुम्हें कष्ट हो रहा है?" ग्लैटकिन ने फौरन ही पूछा।

रुबाशोफ मुस्कराया; ग्लैटकिन ने जैसे बदला दे दिया था। ऐसे लोगों

की यही भावना होती है। और इतने पर भी, जब लैप की रोशनी से रुबाशोफ को कुछ शान्ति मिली तो मन-ही-मन उसमें कृतज्ञता की भावना जागी। वह बोला—"‥‥‥सिवाय एक ही बात में, जिसे मैं महत्वपूर्ण समझता हूँ।"

"क्या?" ग्लैटकिन ने कहा—जरा अकड़ते हुए।

"जो बात मेरी समझ में आई है," उसने ऊँचे-से कहा, "वह यह है। यह ठीक है कि उस समय जो मेरी धारणाएँ थी, उनके बल पर मैंने हिंसात्मक कार्यवाहियों की आवश्यकता पर कहा जरूर था। लेकिन इसमे मेरा तात्पर्य राजनीतिक कार्यवाही था और व्यक्तिगत आतंक नही।"

"तो तुम गृहयुद्ध पसन्द करते थे?" ग्लैटकिन ने कहा।

"नहीं, जन-आन्दोलन," रुबाशोफ ने कहा।

"जो, जैसा कि तुम खुद भी जानते हो, अन्त में गृहयुद्ध तक ले जाता। क्या यह वही खास बात है, जिसे तुम इतना महत्वपूर्ण समझते हो?"

रुबाशोफ ने कोई उत्तर नही दिया। पर असल में यही वह बात थी, जिसे पल-भर पहले वह इतना महत्वपूर्ण समझता था, और अब वह बेमानी-सी हो गई थी। वास्तव में, अगर विरोधी पक्ष केवल गृहयुद्ध से ही नौकरशाही पार्टी पर विजय पा सकता, तो फिर नं० १ को खान-पान में जहर देने की अपेक्षा यह विकल्प क्योंकर बेहतर हो सकता था, जबकि हत्या के कारण जल्दी ही शासन भी नष्ट हो सकता था और इससे रक्तपात भी कम ही होता? राजनीतिक जन-संहार की अपेक्षा राजनीतिक हत्या क्योंकर कम सम्मानित थी? इस अभागे युवक ने निश्चय ही उसके मतलब को ग़लत समझा था। लेकिन पिछले चन्द वर्षों के उसके अपने ही चलन की अपेक्षा क्या इस युवक के ग़लत समझने में अधिक अनुकूलता नहीं थी?

जो भी तानाशाही का विरोधी है, उसे साधन-मात्र के लिए गृहयुद्ध को मंजूर करना ही चाहिए। जो भी गृहयुद्ध से हिचकिचाता है, उसे विरोधी पक्ष छोड़ देना चाहिए और तानाशाही को स्वीकार कर लेना चाहिए।

इन साधारण वाक्यों में, जो बहुत पहले उसने नरम-दल के विरोध में लिखे थे, अब उसकी अपनी ही निन्दा थी। ग्लैटकिन के साथ और ज्यादा

बहस करने की भी उसकी इच्छा नष्ट हो गई थी। उसकी हार की सजगता ने एक प्रकार से उसे हलका कर दिया था; इस तर्क को जारी रखने की जिम्मेदारी भी अब उसमें से जा चुकी थी; और पहली ही खुमारी उसमें लौट आई थी। उसे लग रहा था कि हल्की-हल्की गूँज की तरह उसके सिर पर आघात हो रहे थे और चन्द लहमों के लिए उसने महसूस किया कि मेज के सामने ग्लैटकिन नहीं, नं० १ बैठा था। वह उसकी ओर उसी लौह दृष्टि से देख रहा था, जिससे उसने रुबाशोफ को तब देखा जब वह आखिरी बार हाथ मिलाकर उससे जुदा हो रहा था। उसके दिमाग में एक शब्द की याद आई, जो उसने उस श्मशान भूमि के मुख्य-द्वार पर पढ़ा था, जहाँ उसके अनेक शहीद साथी दबाये गए थे। वह एक शब्द था: 'चिर-निद्रा में।'

इस क्षण के बाद से रुबाशोफ की याद फिर मद्धम पड़ गई। वह सम्भवतः दूसरी बार चन्द मिनटों या सैकिन्डों के लिए सो गया था। लेकिन इस बार उसे कोई सपना नहीं दीखा। ग्लैटकिन ने ही उसे बयान पर दस्तखत करने के लिए जगाया होगा। ग्लैटकिन ने उसे अपना कलम दिया था और रुबाशोफ ने निराशा से उसकी ओर देखा था। स्टैनो लिखना बन्द कर चुकी थी। कमरे में एकदम चुप्पी थी—सन्नाटा था। लैंप भी अब भभक-भभककर नहीं जल रहा था; उसकी रोशनी फीकी हुई जा रही थी, क्योंकि खिड़की में से सुबह होती दिखाई दे रही थी।

रुबाशोफ ने दस्तखत कर दिये।

आराम और गैर-जिम्मेदारी की भावना अभी वह महसूस कर रहा था, लेकिन उसका कारण उसे याद नहीं रह सका था। और तब, नींद की गहरी खुमारी में, उसने वह बयान पढ़ा, जिसमें उसने युवक कीफर को पार्टी-लीडर की हत्या करने के लिए उकसाना स्वीकार किया था। कुछ ही क्षणों के लिए उसे महसूस हुआ कि यह सब एक अजीब-सी गलत-फहमी है। उसके दिमाग में आया कि वह अपने दस्तखतों को काट दे और इस दस्तावेज को फाड़ डाले; लेकिन तभी ही फिर वह अपनी जगह पर आ गया। उसने अपनी

बाँह पर चश्मा रगड़ा और कागज ग्लैटकिन को सौंप दिये।

इससे अगली बात जो वह याद रख सका, वह यह थी कि वह फिर बरामदे मे से ले जाया जा रहा था और उसके साथ वही बावर्दी राक्षस-सा आदमी था, जो उसे ग्लैटकिन के कमरे में काफी देर पहले ले गया था। अर्द्ध-निद्रित-सा वह नाई की दुकान के पास से निकल गया; सीढ़ियाँ भी चढ़ गया। मार्ग में, उसके दिल मे एकाएक डर-सा पैदा हो गया। अपने ऊपर उसे कुछ आश्चर्य-सा हुआ और वह मुस्कराया—शून्य मे। उसके बाद उसने सुना कि किवाड़ खटाक-से बन्द हो गया था, और वह अपनी खड्डी में शारीरिक सुख को पाने के लिए जैसे डूब गया हो। उसने खिड़की के शीशों की राह सबेरे का मद्धम-सा प्रकाश देखा, और गहरी नींद में सो गया।

जब उसकी कोठरी का किवाड़ फिर खुला तो अभी पूरी तरह दिन का प्रकाश नही हो पाया था। एक ही घंटे के लिए तो वह सो सका था। पहले तो उसने सोचा कि प्रातराश लाया गया होगा, लेकिन बाहर, वार्डर की जगह फिर वही बावर्दी राक्षस खड़ा था। रुबाशोफ समझ गया कि उसे फिर ग्लैटकिन के पास जाना होगा और वहाँ फिर जिरह शुरू होगी।

उसने चिलमची में मुँह-हाथ धोया, चश्मा पहना और बरामदे की राह फिर चलना शुरू कर दिया। नाई की दुकान निकली, सीढ़ियाँ निकली—अनजाने ही।

: ४ :

इसके बाद से रुबाशोफ की स्मृति पर भी मोटा परदा पड़ गया था। ग्लैटकिन के साथ उसकी जो बातचीत होती, उसकी महज टूटी-फूटी याद ही उसे रह पाती थी। यह बातचीत कई दिन और कई राते होती रही—लेकिन बीच-बीच में एक-दो घंटे के लिए रुक जाती। वह यह भी नही बता सकता था कि कितने दिन और रातों यह जिरह होती रही। शायद, एक हफ्ता तो लगा ही होगा। रुबाशोफ ने अभियुक्त को इस प्रकार शारीरिक

रूप में पूरी-पूरी तरह पीस डालने की बाबत सुन रखा था। अक्सर ऐसे वक्त पर दो या तीन मैजिस्ट्रेट होते थे, जो बारी-बारी से एक-दूसरे को आराम के लिए समय देते थे। लेकिन ग्लैटकिन के तरीके में इतना ही भेद था कि वह अपने को कभी आराम नहीं देता था। जितनी वह खुद मेहनत करता था, उतनी की रुबाशोफ से भी आशा करता था। अड़तालीस घंटों के बाद तो रुबाशोफ दिन और रात पहचानने योग्य भी न रहा। जब एक घंटे की नींद के बाद वह राक्षस उसे जगाता, तो वह खिड़की की राह आने वाली रोशनी से यह भी नहीं पहचान सकता था कि यह रोशनी सुबह की थी या शाम की। बरामदे, नाई की दुकान तथा सीढ़ियों में वही बिजली की फीकी-सी रोशनी जला करती थी। अगर जिरह के दौरान में, खिड़की में जरा-सी रोशनी होती, और ग्लैटकिन लैंप बुझाता, तो वह समझता सुबह हो गई। और अगर, अँधेरा होने पर, ग्लैटकिन लैंप जलाता तो वह समझता शाम हो गई।

अगर जिरह के समय रुबाशोफ को भूख लगती, तो ग्लैटकिन उसके लिए चाय और टोस्ट मँगा देता। लेकिन उसे खाने की रुचि नहीं होती थी। उसकी हालत यह हो गई थी कि उसे भूख का दौरा-सा आता था, और जब खाने की चीजें आ जातीं, तो उसे कै होने लगती और दिल मिचलाता। ग्लैटकिन ने भी उसकी मौजूदगी में कभी नहीं खाया था। ग्लैटकिन की हालत यह थी कि न तो वह सिगरेट पीता था, न ही थकता था, न ही जंभाई लेता था। ऐसा मालूम होता था जैसे उसे भूख-प्यास लगती ही नहीं, और वह मेज़ पर बैठा काम करता रहता—ठीक एक ही हालत में, चुस्त वर्दी पहने हुए, जिसकी सिकुड़नें सर-सर करती रहती थीं। रुबाशोफ के लिए सबसे बेइज़्ज़ती की बात तब होती थी, जब उसे पेशाब-पाखाने की आज्ञा माँगनी होती थी। ग्लैटकिन उसे वार्डर या उस राक्षस की देख-रेख में पेशाब-घर में जाने की इजाजत देता था और तब वह प्रतीक्षा में बाहर खड़े रहते थे। एक बार पेशाब-घर में ही रुबाशोफ को नींद आ गई थी और किवाड़ बन्द होने के कारण कुछ देर में पता चला था। उसके

बाद से किवाड़ खुले ही रखे जाते। जिरह के वक्त वह खो-खो जाता था। यह बात इतनी बढ़ी कि उसे बेहोशी-सी आने लगी। लेकिन ऐसे अवसरों पर उसके स्वाभिमान ने अक्सर उसकी रक्षा की। वह सँभल जाता, सिगरेट जलाता, जरा आँखों को उघाड़ लेता, और जिरह जारी रहती।

कई बार उसे अपने ऊपर आश्चर्य हुआ कि क्योंकर वह इतनी सख्ती को सह गया है। लेकिन वह जानता था कि यह शारीरिक शक्ति पर ही निर्भर करता है। उसने ऐसे-ऐसे उदाहरण सुन रखे थे, जिनमें कैदियों को पन्द्रह-पन्द्रह और बीस-बीस दिन तक सोने नहीं दिया गया, और वह ऐसे ही रह भी गए।

ग्लैटकिन के सामने पहली पेशी के बाद, जब कि उसने अपनी स्वीकृति पर दस्तखत किये थे, उसने सोचा था कि चलो सारा मामला निबटा तो सही। दूसरी पेशी पर उसे स्पष्ट हुआ कि यह तो अभी शुरुआत ही थी। अभियोग में सात बातें दर्ज थी, और अभी तो उसने एक ही मानी थी। उसे यकीन था कि वह अपमान की कीच तक तो पी चुका था, यानी गिरने की हद को तो वह लाँघ ही चुका था। और अब तो उसे एक नई बात की खोज करनी थी, अर्थात् शक्ति की तरह ही शक्तिहीनता के भी कई-कई दरजे होते हैं, विजय की तरह ही हार भी पेचदार हो सकती है, और उसकी गहराइयाँ भी अथाह हैं। पग-पग करके ग्लैटकिन उसे सीढ़ी से बलपूर्वक नीचे उतार रहा था।

बेशक, वह इसे अपने लिए आसान बना सकता था। उसे तो केवल हर बात पर दस्तखत ही करना था। इससे उसे समष्टि रूप में शान्ति मिल जाती। लेकिन अजीब-सी कर्तव्य-भावना उसे ऐसा करने से रोकती थी। रुबाशोफ का जीवन केवल-मात्र इस एक विचार से भरा हुआ था कि वह 'प्रलोभन'-विषयक घटना को महज कल्पना की दृष्टि से ही जानता था। लेकिन अब प्रलोभन उसका एक संगी है, जिसके सहारे वह रातों और दिनों में बरामदे की राह से निकलकर ग्लैटकिन के लैंप की सफेद रोशनी में पहुँच जाता है; यह वही प्रलोभन है, जो केवल एक ही शब्द का बना हुआ

है, और जो हारे हुओं के श्मशान पर लिखा हुआ था—'चिर-निद्रा।'

इसका विरोध करना कठिन था, क्योंकि यह एकदम शान्तिप्रद प्रलोभन था—तड़क-भड़क भी उसमें नहीं थी और सांसारिक भी वह नहीं था। वह गूँगा था; तर्क नहीं कर सकता था। सब युक्तियाँ ग्लैटकिन के पक्ष में थीं; वह तो केवल उन शब्दों को दोहराने वाला था जो नाई ने अपने संदेशे में लिखे थे—'चुपचाप मरना।'

अक्सर, शून्यता के क्षणों में, जब कभी उसे प्रकाश-किरण का आभास हो जाता, तो उसके ओंठ हिलने लगते, लेकिन ग्लैटकिन उन शब्दों को सुन नहीं पाता था। तब ग्लैटकिन अपने गले को साफ करता और अपनी बाँहों को ठीक करता; और रुबाशोफ अपने चश्मे को बाँह पर रगड़ता और व्यर्थ ही सिर हिलाता, क्योंकि उसने उस गूँगे साझीदार को पहचान लिया था, जिसे वह समझता था कि वह भूल चुका था, और जिसका इस कमरे में कोई काम भी नहीं था—वही 'व्याकरण-विषयक कल्पना।'······

"तो तुम इस बात से इनकार करते हो कि तुमने विरोधी दल की ओर से विदेशी सरकार के प्रतिनिधियों से वर्तमान शासन-सूत्र को पलट देने के लिए सहायता माँगी? तुम इस अभियोग को भी नहीं मानते कि तुम इसके बदले अपने देश के कतिपय प्रान्तों की कुरबानी तक करने को तैयार थे?"

'हाँ,' रुबाशोफ इसे नहीं मानता था; और ग्लैटकिन ने विदेशी दूत के साथ बातचीत का दिन और मौका बार-बार याद कराया—और रुबाशोफ को उस महत्वहीन दृश्य की तब हल्की-सी याद आई थी, जबकि ग्लैटकिन अभियोग-पत्र पढ़ रहा था। निद्रा-आकुल और परेशानी में उसने ग्लैटकिन को देखा और उसने सोचा ग्लैटकिन को इस दृश्य की बाबत समझाने की कोशिश करना व्यर्थ-सा था। यह दृश्य दूतावास में एक भोज के बाद का था। रुबाशोफ इस भोज के वक्त मिला था हर वॉन 'श' को जो उस राज्य के दूतावास के सैकिंड कौंसिलर थे, जहाँ कुछ मास पहले रुबाशोफ ने अपना दाँत भी निकलवाया था। इस अवसर पर दोनों में एक दिलचस्प-सी बातचीत सूअर-पालन के विषय में हुई थी। एक खास किस्म के सूअर हर वॉन 'श' और रुबाशोफ के पिता के फार्मों पर पाले जाते थे। ऐसा सम्भव था कि

रुबाशोफ और वॉन 'श' के पिता ने अपने वक्त में आपस में उनका अदला-बदला भी किया हो।

"तुम्हारे पिता के उन ख़ास किस्म के सूअरों का अब क्या हुआ?" हर वॉन 'श' ने पूछा था।

"क्रान्ति-काल में वे मार डाले गए और उन्हे खा लिया गया," रुबाशोफ ने जवाब दिया।

"हमारे सूअरों को तो फौजी खुराक के लिए मोटा किया गया है," हर वॉन 'श' ने कहा। उसने अपने देश के शासन-सूत्र के विषय में चुटकी लेते हुए कुछ भी छिपाने की कोशिश नही की। और यह एक अनहोनी-सी घटना थी कि अभी तक उसे अपने पद से अलग नही कर दिया गया था।

"तुम और मै एक ही स्थिति मे हैं," उसने धीरज से कहा और शराब का गिलास खाली कर दिया। "हमारा समय बीत चुका है। सूअर-पालन का समय खत्म हो चुका है; और अब हम 'जनता के युग' में रह रहे हैं।"

"लेकिन यह मत भूलो कि मैं उस जनता के पक्ष मे हूँ," रुबाशोफ ने मुस्कराते हुए कहा।

"मेरा कहने का यह मतलब नहीं था," हर वॉन 'श' ने कहा। "यदि सही कहा जाय, तो मैं भी काली मूँछों वाले ठिगने-से आदमी के प्रोग्राम से सहमत हूँ; लेकिन उसे इतना चिल्लाना छोड़ देना चाहिए। आखिर, एक आदमी अपने विश्वास के लिए ही तो सूली पर चढ़ सकता है।" वे कुछ देर तक बैठे रहे, कॉफ़ी पीते रहे। कॉफ़ी का दूसरा प्याला पीते हुए हर वॉन 'श' ने कहा—"मि० रुबाशोफ, अगर तुम फिर एक बार अपने देश में क्रान्ति करो, और नं० १ को नीचा दिखा दो, तो सूअरों का ज़रा ठीक से ख्याल करना।"

"वैसा होना तो असम्भव ही है," रुबाशोफ ने कहा, और रुककर बोला, "......अगरचे तुम्हारे मित्र में यह सोचने की सम्भावना हो सकती है।"

"निश्चय ही," हर वॉन 'श' ने सहज-सा उत्तर दिया, "तुम्हारे पिछले

मुकदमों के बाद जो कुछ सुनने को मिला, उससे जाहिर होता था कि तुम्हारे देश में कुछ अजीब-सी बातें हो रही हैं।"

"तब तो तुम्हारे मित्रों ने भी उस अनहोनी घटना के घट जाने पर कुछ करने की सोच ही रखी होगी?" रुबाशोफ ने प्रश्न किया।

इस पर हर वॉन 'श' ने बहुत शान्ति से उत्तर दिया, और उसे जैसे इस प्रश्न की आशा ही हो रही थी—"अगर छिप-छिपकर इस ओर काम करो तो इसकी भी कीमत हो सकती है।"

वे दोनों मेज़ के पास प्याले उठाये खड़े थे। "तो, क्या कीमत का भी फैसला हो चुका है?" रुबाशोफ ने पूछा।

"बेशक," वॉन 'श' ने उत्तर दिया; और उसने एक गेहूँ उत्पादक प्रान्त का नाम लिया जहाँ एक अल्पसंख्यक जाति के लोग रहते थे। इसके बाद दोनों ने एक-दूसरे से छुट्टी ली।......

रुबाशोफ ने बरसों से इस घटना को भुला दिया था। कॉफ़ी और शराब पीते समय इस व्यर्थ-सी चर्चा के विषय में ग्लैटकिन जैसे मूढ़ बुद्धि को क्या समझाया जाय? रुबाशोफ की आँखें नींद से लबालब भरी हुई थीं और सामने चट्टान की तरह बैठा था ग्लैटकिन। यह आदमी सूअर-पालक की बात को क्या समझेगा, और क्यों यह चर्चा इसके साथ की जाय। उसने हर वॉन 'श' जैसों के साथ कॉफ़ी कभी नहीं पी। संकीर्ण-सा तो था ही वह। पढ़ना-लिखना भी उसने काफ़ी बड़ी उम्र में सीखा था, और अब भी उसे पढ़ना अच्छी तरह आता ही कब था। ऐसी दशा में वह हरगिज नहीं समझ सकता कि सूअर-पालन से शुरू हुई बात खुदा जाने कहाँ समाप्त हो सकेगी।

"तो तुम मानते हो कि बातचीत हुई थी?" ग्लैटकिन ने पूछा।

"वह बिलकुल सरसरी तौर पर की गई थी," रुबाशोफ ने थकी-सी आवाज में कहा, और उसे पता था कि ग्लैटकिन उसे एक और पग नीचे ले गया था।

"ऐसे ही सरसरी तौर पर," ग्लैटकिन ने कहा, "जैसे कि युवक कीफर को पार्टी-लीडर की हत्या के विषय में समझाई थी?"

रुबाशोफ ने अपनी बाँह पर चश्मा रगड़ा। काश, कि वह बातचीत उतनी ही हानि-हीन हो जाती, जैसी कि वह खुद यकीन कर लेने की कोशिश में था ? निश्चय ही उसने किसी प्रकार की 'बातचीत' भी नहीं की थी और न ही कोई समझौता किया था। तिस पर हर वॉन 'श' को ऐसा करने का सरकारी-तौर से हक भी नहीं था। राजदूती भाषा में ज्यादा-से-ज्यादा इसे 'टोह लेना' ही कहा जा सकता था। उस काल में यह 'टोह लेना' पार्टी की परम्पराओं से ठीक अनुकूल बैठता था। किन्तु यह भूली हुई और 'हानि-हीन' बातचीत आज कुछ ऐसी शृङ्खला में आ गई जान पड़ती थी कि रुबाशोफ उसे ग्लैटकिन की आँखों की तरह ही देखने में लाचार हो रहा था। जो भी हो, इस बातचीत के बारे में ग्लैटकिन को कैसे पता चला ? या तो किसी ने ये चर्चा सुन ली थी और हो सकता था कि हर वॉन 'श' खुफिया का ही पार्ट अदा कर रहा हो। खुदा ही जाने, इस सारे भेद को। ऐसी बातें पहले भी कई बार हो चुकी थीं। रुबाशोफ के लिए जाल बिछाया गया था; ग्लैटकिन और नं० १ की तजवीज के अनुसार जाल बिछ गया था, और वह, रुबाशोफ, विधिपूर्वक उसमें प्रविष्ट हो गया था।......

"हर वॉन 'श' के साथ मेरी बातचीत की सूचना होने के साथ ही तुम्हें यह भी तो पता होना चाहिए था कि उसके फलस्वरूप हुआ तो कुछ नहीं," रुबाशोफ ने कहा।

"बेशक," ग्लैटकिन ने कहा। "शुक्र है कि हमने तुम्हें समय पर गिरफ्तार कर लिया और देश भर में विरोधी-पक्ष का नाश कर डाला। इस देशद्रोहिता के नतीजे तो मिलते ही, अगर हम समय पर काम न करते तो!"

भला इसका वह क्या जवाब दे सकता था ? और उससे कोई मतलब की बात भी निकलने वाली न थी। तिस पर विरोधी-पक्ष की सारी कार्यवाहियाँ केवल बकवास ही थीं, क्योंकि पुरानी पीढ़ी के सभी लोग उसी की तरह जर्जरित हो चुके थे। बरसों के गैर-कानूनी संघर्ष ने उन्हें जर्जरित कर दिया था, घिरी हुई जेल की दीवारों ने उन्हें चाट लिया था, और इन दीवारों में उन्होंने अपनी जवानी के आधे दिन बिताये थे। शारीरिक भय के कारण

उनकी स्वाभाविक शक्तियों का ह्रास हो चुका था और उसी कारण उनकी आत्मिक शक्ति जैसे सदा के लिए सूख गई थी। इन शारीरिक भयों के विषय में वे कभी बोले तक नहीं; हर किसी को अकेले ही उनसे निपटना होता था। बरसों तक, यहाँ तक कि दसियों वर्ष वे पार्टी की भीतरी दलबन्दी की भीषणता के फलरूप बरसों के निर्वासन, और अनन्त हारों के कारण जर्जरित हो चुके थे। ऐसी हालत में क्या वह कह सकेगा कि नं० १ की तानाशाही के विरुद्ध दरअसल ही कभी कोई विरोध नहीं पैदा हुआ, और यह आग से खेलने की केवल एक ज़बानी बात थी। क्योंकि इस पुरानी पीढ़ी के सब बुज़ुर्गों ने वह सब-कुछ दे दिया था जो उसके पास था। उन्होंने अपनी आत्मिक शक्ति की आखिरी बूँद तक दे डाली थी, और श्मशान भूमि में मरे हुओं की भांति उनमें एक ही आशा बाकी रह गई थी—'चिर-निद्रा के लिए, और तब तक इंतज़ार करने के लिए जब तक भावी संतति उनके प्रति न्याय नहीं करती।'

इस ग्लैटकिन सरीखे ठूँट को वह क्या जवाब दे? क्या यह कहे कि वह सब बातों में ठीक ही था, किन्तु उसने मूलरूप में एक बड़ी भूल की थी, यह यकीन करने की कि यह सामने बैठा मनुष्य वही पुराना रुबाशोफ था, हालांकि वास्तव में यह तो उसकी छाया-मात्र ही था? यह सारा काँड उसे दंड देने की खातिर रचा गया था—उन कामों के लिए नहीं कि जो उसने किये थे, बल्कि उन कामों के लिए कि जिन्हें वह कर नहीं सका था? 'आखिर, एक आदमी अपने विश्वास के लिए ही तो सूली पर चढ़ सकता है,' हर वॉन 'श' ने कहा था।

रुबाशोफ ने बयान पर दस्तखत करने और कोठरी में ले जाये जाने से पूर्व ग्लैटकिन से एक सवाल किया था। मौजूदा चर्चा के साथ इसका कोई सम्बन्ध भी नहीं था, लेकिन रुबाशोफ जानता था कि हर बार नई स्वीकृति पर दस्तखत तो करने ही होते थे, और इसी कारण ग्लैटकिन कुछ नम्र भी हो गया था। रुबाशोफ का प्रश्न था इवानोफ के बारे में।

"नागरिक इवानोफ गिरफ्तार हो चुका है," ग्लैटकिन ने कहा।

"क्या कोई इसका कारण जान सकता है ?" रुबाशोफ ने पूछा।
"नागरिक इवानोफ ने तुम्हारे मामले की जाँच में लापरवाही की थी, और निजी बातचीत के दौरान में अभियोग के विषय में सन्देह जाहिर किया था।"
"अगर वह उसमें यकीन नहीं करता था तो क्या हुआ ?" रुबाशोफ ने पूछा। "शायद, मेरे विषय में वह बहुत ऊँची राय रखता था।"
"उस अवस्था में," ग्लैटकिन ने कहा, "उसे चाहिए था कि वह जाँच को स्थगित कर देता और उच्च अधिकारियों को सूचना देता कि उसकी राय में तुम निर्दोष हो।"
क्या ग्लैटकिन हँसी कर रहा था ? नहीं, वह तो बिलकुल सही कहता मालूम देता था—ऐसा भावहीन जैसे वह सदा रहता था।

अगली बार फिर जब रुबाशोफ दिन-भर के दर्ज किये बयान को हाथ में ग्लैटकिन का पैन लेकर खड़े-खड़े पढ़ रहा था—और स्टैनो कमरे से जा चुकी थी, तो उसने पूछा—"क्या एक और सवाल पूछूँ तुम से ?" बोलते वक्त उसकी नजर ग्लैटकिन के उस बड़े से घाव के निशान पर थी। "मुझे बताया गया था कि तुम 'कठोर उपायों' से बकाने के पक्षपाती हो। तो फिर तुमने मुझे वह शारीरिक कष्ट क्यों नहीं दिये ?"
"तुम्हारा मतलब शारीरिक पीड़ा से है," ग्लैटकिन ने बात की सफाई करते हुए कहा, "जैसा कि तुम जानते हो, फौजदारी कानून हमें इससे रोकता है।"
वह ज़रा रुका। इस बीच रुबाशोफ ने दस्तखत कर दिये थे।
"इसके अलावा," ग्लैटकिन ने कहा, "कोई खास किस्म के अभियुक्त होते हैं, जो सख्ती से ही बकते हैं, किन्तु आम पेशी के वक्त मुनकिर हो जाते हैं। और तुम उसी खास हठी किस्म के हो। मुकदमे के वक्त तुम्हारा स्वयमेव दिया गया बयान ज्यादा राजनीतिक महत्व रखता है।"
यह पहला ही मौका था, जबकि ग्लैटकिन ने आम-पेशी का जिक्र किया था। लेकिन बरामदे से सदा की भांति उस राक्षस के साथ थके-थके कदमों

से जाते हुए रुबाशोफ के दिमाग़ में यही एक वाक्य चक्कर काट रहा था—'तुम ख़ास हठी किस्म के हो।' उसकी इच्छा के विपरीत ही इस वाक्य ने जैसे उसमें आत्म-सन्तोष भर दिया था।

मैं भी क्या सठिया गया हूँ और बच्चों-सा हुआ जा रहा हूँ, खड्डी पर लेटते हुए वह सोचने लगा। लेकिन जब तक वह सो नहीं गया, तब तक उस पर यह ख़ुशी छायी-सी रही।

हर बार हठपूर्ण तर्कों के बाद, वह नये स्वीकृति-पत्र पर दस्तख़त करता और थका हुआ खड्डी पर जा लेटता। यह जानते हुए भी कि उसे एक-दो घंटे के बाद फिर से जगा दिया जायगा, वह तसल्ली-सी महसूस करता। इस 'हर बार' के वक्त रुबाशोफ की केवल एक ही इच्छा होती—काश, ग्लैटकिन मुझे एक बार सो लेने दे और वह अपने होश-हवाश में आ पाये। वह जानता था कि उसकी यह इच्छा तब तक पूरी नहीं हो सकती, जब तक कि आख़िरी कड़वा घूँट भी पूरी-पूरी तरह गले से उतार नहीं लिया जायगा। वह यह भी जानता था कि हर नये संघर्ष के अन्त में उसे हार भी माननी ही होगी। जो अन्तिम परिणाम होना था, उसके बारे में भी उसके दिल में कोई सन्देह बाकी नहीं था। तब, क्यों वह अपने को दुखी कर रहा था, और अपने को दुखी करने दे रहा था? इसके बदले वह उस आख़िरी संघर्ष को क्यों नहीं छोड़ देता, ताकि वह और अधिक जगाया तो न जाय? मृत्यु के विचार का आध्यात्मिक रूप तो वह कब का भूल चुका था—अब तो उसे उसका शारीरिक-सा प्रलोभन याद रह गया था, यानी 'चिर-निद्रा।' और तिस पर भी, एक अजीब-सी और पेचीदी-सी कर्तव्य-भावना के कारण वह जागरण को लाचार हो जाता और इस हारे हुए संघर्ष को अन्त तक जारी रखना चाहता—हालांकि यह संघर्ष एकदम बेमतलब-सा था। वह इस संघर्ष को तब तक जारी रखना चाहता था, जब तक ग्लैटकिन उसे अन्तिम निकृष्ट छोर तक नहीं पहुँचा देता, और जब तक अभियोग-तालिका के आख़िरी अक्षर पर भावहीन शून्य अंकित नहीं हो जाता। उसे तो सड़क के अन्तिम सिरे तक चले जाना था; और तब तक चलते जाना था,

जब तक कि वह खुली आँखों से अँधकार में प्रवेश नहीं कर जाता। तब ही तो वह 'चिर-निद्रा' के अधिकार को जीत सकेगा, और उसके बाद कभी भी जगाया नहीं जा सकेगा।

इस रात-दिन की क्रम-बद्ध शृंखला के कारण ग्लैटकिन में भी कुछ तब्दीली आ गई थी। कोई खास तो परिवर्तन नहीं था, लेकिन रुबाशोफ की पीड़ित आँखों से वह ओझल न रह सका। अक्सर ग्लैटकिन आखिर तक अचल-सी मुद्रा में अकड़कर बैठा रहता था। लेकिन क्रमशः जिस प्रकार वह लैंप की रोशनी को रत्ती-रत्ती करके सही हालत में ले आता था, उसी प्रकार रत्ती-रत्ती करके उसके स्वर में से उजड्डता भी जाती रही थी। वह कभी मुस्कराया तक न था, और रुबाशोफ को आश्चर्य होता कि जिस देश का वह रहने वाला है, क्या वहाँ के लोग मुस्कराना जानते ही नहीं। वह यह भी सोचता कि क्या वहाँ के लोगों में महसूस करने जैसी भी कोई भावना नहीं होती? लेकिन एक बार, कई घंटों तक बहस के बाद, जब रुबा-शोफ के सिगरेट खत्म हो गए, तो ग्लैटकिन ने अपनी जेब से सिगरेट निकालकर उसके सामने रख दिये थे, हालांकि वह खुद सिगरेट नहीं पीता था। इसके अलावा, एक नुक्ते पर तो रुबाशोफ ने भी विजय हासिल कर ली थी। यह था एलुमीनियम ट्रस्ट को छिपे-लुके हानि पहुँचाने का अभियोग। यह एक ऐसा अभियोग था, जिसका उन अपराधों के मुकाबिले में कोई महत्व भी नहीं था जिन्हें वह मान चुका था, किन्तु रुबाशोफ ने इसके बारे में भी डटकर संघर्ष किया था। इस नुक्ते पर वे दोनों आमने-सामने बैठे लगभग रात-भर बहस करते रहे। रुबाशोफ ने नुक्ता-नुक्ता करके आंकड़ों को दे-देकर हर गवाही का खंडन किया। अचानक ही उसकी खोई-सी याद में तारीखों और दिनों की याद आ गई; और इस सारी बहस के समय ग्लैटकिन वह नुक्ता न पकड़ सका जिसके सहारे वह इस तर्क की कड़ी को तोड़ दे सकता। इसका मुख्य कारण यह था कि पहली या दूसरी मुलाकात के समय, अनजाने और अनकथित रूप में जैसे उनमें समझौता हो गया था

—अगर ग्लैटकिन अपराध के मूल को सही साबित कर सके—चाहे भले ही इस भूल का आधार तर्क ही क्यों न हो, तो उसे उसके विषय में जी-चाहा कर लेने में रुबाशोफ को कोई उज्र न होगा। इस बात को जाने बिना ही, खेल के इन नियमों के वे आदी हो गए थे और दोनों में से किसी को भी यह भेद कर लेने की समर्थ नहीं रही थी कि रुबाशोफ ने वास्तव में अमुक अपराध किया था अथवा अपनी धारणाओं के फलस्वरूप वह केवल अपराध कर सकने की हालत में था। दोनों में से वास्तविकता और सम्भावना को समझने की शक्ति जाती रही थी। रुबाशोफ अक्सर उन कतिपय क्षणों में इसके प्रति सजग हो जाता, जब उसका दिमाग़ साफ़-सा होता; और उस समय एक अजीब-सी खुमारी से जागने की सनसनी उसे महसूस होती, लेकिन ग्लैटकिन इस बात को कभी नहीं जान सका था।

सुबह होने तक, जब रुबाशोफ ने एलूमीनियम ट्रस्ट के प्रश्न को अभी छोड़ा नहीं था, तो ग्लैटकिन के स्वर में वैसी ही तेज़ी आ गई थी, जैसी शुरू-शुरू में, ओंठ-फटे के सही उत्तर न देने पर आई थी। उसने रोशनी को फिर-से तेज किया, लेकिन रुबाशोफ की व्यंग्य-भरी मुस्कराहट को देखकर उसने फिर धीमा कर दिया। उसने कुछ और सवाल किये, लेकिन जब उनका कोई असर न हुआ तो उसने आखिरी रूप में कहा—"तो तुम उस सौंपे हुए उद्योग को छिपे-लुके हानि पहुँचाने के अभियोग का निश्चयात्मक रूप से इनकार करते हो; साथ ही ऐसी किसी प्रकार की मंत्रणा से भी।"

रुबाशोफ ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया—निंदियाई-सी दशा में सोचते हुए कि अब क्या होगा। और तभी ग्लैटकिन स्टैनो की ओर मुड़ा—"लिखो, जाँच करने वाला मैजिस्ट्रेट सिफारिश करता है कि गवाही के अभाव में इस अभियोग को रद्द कर दिया जाय।"

रुबाशोफ ने अपनी विजय की हलचल को छिपा लेने के लिए फौरन ही सिगरेट सुलगाई। इस विजय से जैसे वह अपने काबू से बाहर हो गया था। पहला ही मौका था, जब कि ग्लैटकिन पर उसने विजय पाई थी। निःसन्देह, हारे हुए संग्राम में यह एक छोटी-सी विजय थी, लेकिन थी तो

विजय ही; और महीनों, यहां तक कि बरसों हुए जब कि उसने पिछली बार ऐसा महसूस किया था।······ग्लैटकिन ने दिन-भर का दर्ज किया हुआ बयान स्टैनो से लिया, और सदा की तरह उसे छुट्टी दे दी।

जब वे अकेले थे, और रुबाशोफ अपने बयान पर दस्तखत करने के लिए खड़ा था, तो ग्लैटकिन ने उसे पैन देते हुए कहा—"अनुभव बतलाता है कि विरोधी पक्ष औद्योगिक-विनाश के जरिये सरकार के लिए भारी कठिनाइयाँ और मजदूरों में असन्तोष पैदा कर सकता है। तो फिर तुम इतनी सख्ती के साथ क्यों इस बात को पकड़े बैठे हो कि तुमने उस तरीके का प्रयोग ही नहीं किया; या करने की मंशा ही न थी?"

"क्योंकि यह तुम्हारा मूर्खतापूर्ण अनुमान है," रुबाशोफ ने कहा। "मैं समझता हूँ, तोड़-फोड़ का यह तरीका कहीं भी नहीं अपनाया जा रहा है।" चिरकाल से खोयी विजय की सनसनी का उसे आभास हो रहा था और हमेशा से कुछ ऊँचे स्वर में वह बोल रहा था।

"अगर यह केवल कल्पना ही है, तो तुम्हारी राय में हमारे उद्योगों की असन्तोषजनक हालत का असली कारण क्या है?"

"मजदूरों को बहुत ही कम मजदूरी देना, दास-प्रथा और नियंत्रण के उजड्डतापूर्ण तरीके," रुबाशोफ ने कहा। "अपने ट्रस्ट के मैं कई ऐसे मामले जानता हूँ, जिनमें मजदूरों को इस तोड़-फोड़ की नीति का पक्षपाती समझकर गोली मार दी गई थी, हालांकि ज्यादा काम की थकावट से मामूली-सी लापरवाही ही इसका कारण था। अगर एक आदमी घड़ी से दो मिनट भी लेट हो जाता तो उस पर कहर टूट पड़ता था, और उसके परिचय-पत्र पर मोहर लगा दी जाती थी, ताकि दूसरी जगह काम करना भी उसके लिए असम्भव हो जाय।"

ग्लैटकिन भावहीन आँखों से रुबाशोफ को देख रहा था और उसने उसी भावहीन स्वर में पूछा—"बचपन में क्या तुम्हें घड़ी दी गई थी?"

रुबाशोफ ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। ग्लैटकिन जैसे लोगों को मजाक तक भी नहीं करना आता था।

"क्या तुम मेरे सवाल का जवाब नहीं देना चाहते ?" ग्लैटकिन ने पूछा।

"क्यों नहीं," रुबाशोफ ने और आश्चर्य के साथ कहा।

"जब तुम्हें घड़ी दी गई थी, तब तुम्हारी क्या उम्र थी ?"

"ठीक तो याद नहीं, कोई आठ या नौ बरस रही होगी।"

"लेकिन मैं सोलह बरस का था जब मुझे यह ज्ञान हुआ था कि एक घंटा ६० मिनट का होता है। मेरे गाँव में तो यह हाल था कि जब किसानों को शहर जाना होता था तो वे सूर्य निकलते ही रेलवे स्टेशन पर पहुँच जाते थे; और वहाँ गाड़ी के पहुँचने तक मुसाफिरखाने में सोने के लिए पड़ जाते थे। अक्सर वह गाड़ी दोपहर को आती; कभी-कभी तो शाम को ही आ पाती अथवा अगले दिन सवेरे पहुँचती थी। यही वह किसान हैं, जो अब हमारे कारखानों में काम करते हैं। उदाहरण के लिए, मेरे गाँव में इस वक्त दुनिया में रेलों के इस्पात का सबसे बड़ा कारखाना है। शुरू में दो जलती हुई भट्टियों के बीच की जगह में कारीगर सो जाया करते थे, जब तक उन्हें गोली नहीं मार दी गई। अन्य सब देशों में, किसानों को औद्योगिक कार्यों में उन्नति करने और मशीनों पर ढंग से काम करने के लिए एक या दो सौ बरस लगे। लेकिन यहाँ तो उन्हें दस ही बरस मिले। अगर हम उनके साथ सख्ती न करें और इस तरह छोटी भूल के लिए उन्हें गोली न मारें, तो सारे देश का काम-काज रुक जाय, और किसान कारखानों के सेहनों में तब तक मौज से सोया करें, जब तक कि कारखानों की चिमनियों में घास नहीं उग जाय। तब पहले ही जैसी सारी हालत हो जायगी। पिछले साल हमारे देश में इंग्लैंड के मान्चैस्टर नामक स्थान से स्त्रियों का एक डेलीगेशन आया था। उन्हें सब-कुछ दिखाया गया था। उसके बाद उन्होंने इस विषय पर अखबारों में प्रशंसात्मक लेख लिखे थे। उनका कहना था कि मान्चैस्टर के कपड़े के मजदूरों के साथ भी ऐसा व्यवहार नहीं होता। मैंने पढ़ रखा है कि मान्चैस्टर में दो सौ वर्ष से वस्त्र-उद्योग चल रहा है। मैंने यह भी पढ़ रखा है कि दो सौ वर्ष पहले, जब कि शुरुआत ही थी, मजदूरों के साथ वहाँ कैसा व्यवहार होता था। कामरेड रुबाशोफ, तुमने भी अभी-अभी

वही युक्तियाँ दी थी, जो इस महिला डेलीगेशन ने दी थीं। तुम, निःसन्देह, उन औरतों से बेहतर जानते हो। सो इस कारण, कोई भी तुम्हे वही युक्तियाँ देते हुए देखकर हैरान हो सकता है, और सोच सकता है कि उनमें और तुममें कोई साँझापन ज़रूर है। यह साँझापन तो है ही कि तुम्हें भी बचपन में घड़ी दी गई थी।······"

रुबाशोफ चुप रहा और ग्लैटकिन की ओर एक नई दिलचस्पी के साथ देखता रहा। यह क्या माजरा था? क्या यह ग्लैटकिन कोई नई चाल चल रहा था? लेकिन ग्लैटकिन कुरसी पर पूर्ववत ही अचल और भावहीन होकर बैठा था।

"कुछ बातो में तुम सही हो सकते हो," रुबाशोफ ने कहा, "लेकिन तुम्ही थे जिसने मुझे इस प्रश्न में धर घसीटा। अभी हाल ही तो तुमने कठिनाइयों के स्वाभाविक कारणों की व्याख्या की है, तो फिर भला सत्य को मान लेने की बजाय व्यर्थ के बहाने ढूँढने से क्या लाभ?"

"अनुभव सिखाता है," ग्लैटकिन ने कहा, "कि जनता को सब कठिन और उलझे हुए प्रश्नों को सरल और सहज समझ में आने वाली व्याख्या दी जानी चाहिए। इतिहास की अपनी जानकारी के अनुसार, मेरा ख्याल है कि मनुष्य जाति बलि के बकरों के बिना जीवित नही रह सकती। मेरा विश्वास है कि सब वक्तों पर यह अनिवार्य संस्था मौजूद थी; तुम्हारे मित्र इवानोफ ने मुझे सिखाया था कि धर्म से ही इसकी उत्पत्ति हुई थी। जहाँ तक मुझे याद है, उसने व्याख्या की थी कि यह शब्द यहूदियों के चलन से निकला था। यहूदी लोग वर्ष में एक बार अपने देवता को बकरे की बलि चढ़ाते थे, और उनकी धारणा थी कि उनके सारे पाप उस पर लदे हुए होते थे।" ग्लैटकिन ज़रा रुका और उसने अपनी बांहें ऊपर को सरकाईं। "इसके अलावा, इतिहास में ऐसी भी मिसालें हैं, जिनमें लोग स्वयं अपनी इच्छा से बलि के बकरे बने हैं। जिस उम्र में तुम्हें घड़ी मिली थी, उसमें गाँव के पादरी ने मुझे पढ़ाया था कि ईसा अपने को मेमना कहते थे, जिसने सब पापों को अपने ऊपर लाद रखा था। मैं यह कभी नहीं समझ सका कि

अगर कोई इस बात का ऐलान करे कि वह मनुष्य जाति के लिए कुरबान किया जा रहा है, तो इससे मनुष्य जाति की क्या मदद हो सकती थी। लेकिन दो हज़ार वर्षों तक तो लोगों ने इसे स्वाभाविक ही समझा।"

रुबाशोफ ग्लैटकिन को देख रहा था। वह क्या कहना चाहता था? इस बातचीत का आखिर मक़सद क्या था? वह किस भूलभुलैयां में चक्कर खा रहा था?

रुबाशोफ ने कहा, "जो कुछ भी हो, हमें दुनिया को सच्ची बात बताना बेहतर होगा, बजाय इसके कि काल्पनिक तोड़-फोड़ करने वालों का अस्तित्व उनके सामने पेश करें।"

"अगर कोई मेरे गाँव के लोगों को बताये," ग्लैटकिन ने कहा, "कि वे क्रान्ति और कारखानों के बावजूद भी अभी तक पिछड़े हुए और मरियल-से हैं, तो इसका उन पर कोई असर न होगा। अगर कोई उन्हें यह बताये कि वे अपने काम में कमाल रखते हैं, दूसरी जातियों से भी ज्यादा चतुर हैं, लेकिन. उनकी सब तकलीफ़ों की जड़ कुछ मूर्ख और विनाशकारी लोग हैं, तो इसका ज़रूर कुछ असर हो सकता है। सच वही है जो मनुष्य जाति के लिए हितकर है; झूठ वह है, जो हानिकर है। प्रौढ़ शिक्षण की सन्ध्या-कालीन श्रेणियों के लिए पार्टी ने जो इतिहास की रूपरेखा प्रकाशित की थी, उसमें यह बताया गया था कि ईसाई धर्म अपनी पहली सदियों में मनुष्य जाति की उन्नति करने वाला था। इसमें किसी विचारशील व्यक्ति को दिल-चस्पी नहीं है कि ईसा का यह कहना कि वह खुदा का बेटा था और उसकी माँ कुमारी थी, सच था या नहीं। यह तो केवल प्रतीक-मात्र है, लेकिन किसान तो इसे अक्षरशः ग्रहण करते हैं। हमें भी लाभदायक प्रतीकों को खोजने का अधिकार है जिन्हें किसान अक्षरशः ग्रहण कर सकें।"

"तुम्हारी युक्तियाँ," रुबाशोफ ने कहा, "कभी-कभी मुझे इवानोफ की याद करा देती हैं।"

"नागरिक इवानोफ," ग्लैटकिन ने कहा, "भी तुम्हारी ही तरह पुराने दार्शनिकों में से था। उसके साथ बातचीत करके कुछ ऐसा ऐतिहासिक ज्ञान

प्राप्त हो सकता था, जिसका स्कूली पढ़ाई में अभाव होता है। अन्तर इतना ही है कि मैं उस ज्ञान को पार्टी की सेवा में लगाने की कोशिश करता; लेकिन नागरिक इवानोफ सनकी तबियत का था।"

"था······?" रुबाशोफ ने पूछा, चश्मा उतारते हुए।

"नागरिक इवानोफ को," ग्लैटकिन ने कहा, "कल रात सरकारी फैसले के अनुसार गोली दाग़कर मार डाला गया।"

इस बातचीत के बाद ग्लैटकिन ने रुबाशोफ को पूरे दो घंटे तक सोने दिया। कोठरी को वापिस जाते वक्त, रुबाशोफ को आश्चर्य हो रहा था कि इवानोफ की मृत्यु के संवाद ने उस पर गहरा असर क्यों नहीं किया। इस संवाद से केवल वह अपनी विजय की खुशी को ही भूल सका था। प्रकटतः, उसकी दशा ऐसी हो गई थी कि जैसे वह सर्वथा भावहीन हो गया हो। जो कुछ हो, वह अपनी भद्दी-सी विजय पर शर्मिन्दा तो जरूर ही था। उधर ग्लैटकिन का व्यक्तित्व उस पर इतना हावी हो गया था कि चाहे उसकी विजय भी हो, तो वह उसे हार लगने लगी थी। इन रुबाशोफों और इवानोफों के कारण ही जिस राज्य की निर्दय-रचना हुई थी, वहाँ ग्लैटकिन बैठा था—जड़-सा और भावहीन। वह उन्हीं के रक्त से पैदा हुआ था; अब स्वाधीन और उन्मत्त हो चुका था। क्या ग्लैटकिन ने अपने को इवानोफ और पुराने बुद्धिजीवियों का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी नहीं माना था? रुबाशोफ ने सौवीं बार अपने से दोहराया कि ग्लैटकिन उन इने-गिने व्यक्तियों की पहली पीढ़ी के काम को ही पूरा कर रहा था। स्थानान्तरित होने के कारण वही सिद्धान्त उनके मुँह से निकलने पर निर्दय बन गया था। जब इवानोफ ने भी वही युक्तियाँ दी थीं, तो उसके स्वर के तले एक भाव था, जो नष्ट हुई दुनिया की अतीत की याद से शेष रह गया था। कोई किसी के बचपन से तो इनकार कर सकता है, लेकिन उसे मिटा नहीं सकता। इवानोफ ने बहस के दौरान में उसके सारे भूतकाल पर पूरी नज़र दौड़ाई थी; इसी के कारण ग्लैटकिन उसे सनकी कहता था। ग्लैटकिन-जैसों को कुछ मिटाना भी

नहीं; उन्हें अपने अतीत से इनकारी होने की भी जरूरत नहीं, क्योंकि अतीत तो उनका था ही नहीं। वे लोग बिना नाड्र के, बिना ओछेपन के, बिना उदासी के पैदा हुए थे।

: ५ :

एन० एस० रुबाशोफ की डायरी का अंश

हम, जो दृश्य से ओझल हो रहे हैं, ग्लैटकिन जैसों को इतने तिरस्कार से देखने का क्या अधिकार रखते हैं? इस धरती पर जब पहले मनुष्य जाति जैसे जीव का जन्म हुआ होगा तो निश्चय ही बन्दरों ने भी खिल्ली उड़ाई होगी। बहुत सुसंस्कृत बन्दर शाखा से शाखा तक खूबसूरती के साथ फाँदता था; उक्त जीव भद्दा और रींगने वाला था। बन्दरों का जीवन शान्तिपूर्ण और पारस्परिक सहानुभूति से पूरित था; उनकी उछल-कूद और प्रसन्नता में दार्शनिकता थी; लेकिन यह मनुष्य दुनिया में छोटे-छोटे गिरोहों की शक्ल में अन्धेरे में धक्के खाते फिरते थे। इन मनुष्यों को बन्दर पेड़ों की चोटियों से तिरस्कार के साथ देखते थे; और उस पर गुठलियाँ फेंकते थे। कभी-कभी तो वे बड़े भयभीत हो जाते थे। बन्दर सफाई से कन्दमूल खाते थे, और उनकी यह हालत थी कि वे कच्चा मांस खाते थे—पशुओं और अपने साथियों की ही हत्या करके। वह पेड़ों को काट गिराते थे, बड़े-बड़े पत्थरों को हिला देते थे और जंगल के हर नियम और परम्परा को वह भंग करते थे। वह भद्दे थे, निर्दयी थे, उनमें पशु जैसा रोब भी नहीं था। सुसभ्य बन्दरों के दृष्टिकोण से उनमें इतिहास का भूला हुआ बेहद जंगलीपन फिर से नजर आता था। अब तक बचे-खुचे आखिरी वनमानुष तो अब भी मनुष्य को देखते ही अपनी नाक चढ़ा लेते हैं......।

: ६ :

पाँच या छः दिन के बाद एक घटना हुई। जिरह के वक्त रुबाशोफ

बेहोश हो गया। वे उसी वक्त अभियोग-तालिका के आखिरी नुक्ते पर पहुँचे थे—रुबाशोफ की कार्यवाहियों के मक़सद के प्रश्न पर। अभियोग में इस मक़सद को केवल 'क्रान्ति-विरोधी दृष्टिकोण' कहा गया था, और साधारण तौर पर उल्लेख किया गया था, जैसे कि वह शत्रु-देश की सरकार की नौकरी में था। रुबाशोफ ने इस अभियोग के विरुद्ध अपनी आखिरी लड़ाई लड़ी। वह इस पर सूर्योदय से लेकर दोपहर तक बहस करता रहा था, तब एकाएक, अचानक ही वह अपनी कुरसी से सरक कर गिर गया और धरती पर पड़ा रहा।

चंद मिनटों बाद जब उसे कुछ होश हुआ तो उसने छोटी-सी खोपड़ी वाले डाक्टर को अपने ऊपर देखा। वह एक बोतल में से उसके मुँह पर पानी के छींटे लगा रहा था और उसकी कनपटियों को सहला रहा था। रुबाशोफ को डाक्टर का साँस महसूस हो रहा था और उसमें से पीपरमेंट की गन्ध आ रही थी। डाक्टर ने राय दी कि रुबाशोफ कुछ देर के लिए खुली हवा में ले जाया जाय। ग्लैटकिन अपनी भावहीन-सी आँखों से इस दृश्य को देख रहा था। उसने घंटी बजाई और दरी को साफ करने की आज्ञा दी और उसके कुछ ही बाद बूढ़े वार्डर के साथ वह सेहन में टहलने के लिए ले जाया गया।

चूँकि वह टहलने का ही वक्त था, इसलिए चक्कर काटने के लिए उसे वही पतला-सा किसान साथी मिला। साथ-साथ चलते हुए वह रुबाशोफ को झाँक लेता। एक-दो बार गले को साफ करके वह बोला—"जनाब, कई दिन से आपको देखा ही नहीं। आप बीमार से नज़र आते हैं, जैसे कि आप बहुत दिन टिक न सकेंगे। वे कहते हैं कि लड़ाई होगी।"

रुबाशोफ ने कोई जवाब न दिया। रुबाशोफ थोड़ी-सी बर्फ लेकर एक गोला बना लेना चाहता था, लेकिन उसने इस प्रलोभन को रोक लिया। सेहन के इर्द-गिर्द चक्कर चल रहा था। बीस कदम आगे एक ही कद के दो आदमी कोट पहने घूम रहे थे और उनके मुँह के सामने भाप के बादल-से बन रहे थे।

"जल्दी ही बर्फ गिरेगी," किसान ने कहा। "बर्फ के पिघलने के बाद भेड़ें पहाड़ों पर जाती हैं। उनके ऊपर तक पहुँचने में तीन दिन लगते हैं। पहले, जिले के सब गाँवों के लोग एक ही दिन अपनी भेड़ों को इस यात्रा के लिए भेजा करते थे। सूर्योदय पर चलना होता था; एक जगह, सब रास्तों और खेतों में भेड़ें-ही-भेड़ें होती थीं। पहले दिन तो सारा गाँव उनके पीछे होता था। शायद, सारी जिंदगी में भी आपने इतनी भेड़ें न देखी होंगी। साथ ही ढेरों कुत्ते होते और धूल का तो कहना ही क्या। कुत्तों के भौंकने और भेड़ों के मिमियाने की बेहद आवाजें···कितनी मौज होती थी···!"

रुबाशोफ का मुँह सूर्य की ओर था और अभी वह पीला-सा ही था। हवा में हल्की-सी गरमी भी आ गई थी। बुर्ज के ऊपर आकाश में उड़ते हुए पक्षियों के खेलों को वह देख रहा था।

किसान फिर बोला—"आज ही जैसे एक दिन, जब हवा में बर्फ के पिघलने की गंध आ रही थी, मुझे पकड़ लिया जाता है। जनाब, हम में से कोई ज्यादा दिन नहीं टिक सकता। उन्होंने हमें पीस डाला, क्योंकि हम प्रतिक्रियावादी हैं, और पुराने दिन, जब कि हम खुश थे, कभी नहीं लौटेंगे।

"क्या सच ही तुम उन दिनों में इतने खुश थे?" रुबाशोफ ने पूछा। लेकिन किसान केवल कुछ फुसफुसाकर ही रह गया और उसके गले की हड्डी कई बार ऊपर-नीचे गई। रुबाशोफ ने उसे एक ओर से देखा; और कुछ क्षणों बाद बोला—"क्या बाईबिल का तुम्हें वह हिस्सा याद है, जहाँ रेगिस्तान में कबीलों वाले चिल्लाना शुरू करते हैं 'आओ, अपने में से एक को कप्तान बना लें, और चलो, मिश्र को लौट चलें?"

किसान ने उत्सुकता से सिर हिला दिया।···और उसी समय उन्हें इमारत में लौटा लाया गया।

ताजी हवा का असर जाता रहा था। मदहोशी, पागलपन, खुमारी और कै की हालत फिर से हो गई। फाटक पर रुबाशोफ झुका, थोड़ी-सी बर्फ उसने उठा ली, और उसे माथे और जलती हुई आँखों पर मला।

उसे आशा थी कि उसे उसकी कोठरी में ले जाया जायगा, लेकिन ले जाया गया सीधे ग्लैटकिन के कमरे में। ग्लैटकिन अपनी मेज पर उसी हालत में बैठा था, जिसमें रुबाशोफ उसे छोड़ गया था। कितनी देर हुए? वह ऐसे दीख रहा था कि रुबाशोफ की गैरहाजिरी में जैसे हिला-डुला तक नहीं। परदे पड़े हुए थे, लैम्प जल रहा था और इस कमरे में जैसे वक्त मचल खड़ा था। ग्लैटकिन के सामने फिर बैठते हुए, रुबाशोफ की नज़र दरी पर के गीले धब्बे पर पड़ी। उसे अपनी बीमारी की याद हो आई। एक घंटा पहले उसकी यह हालत हुई थी।

"मैं समझता हूँ, अब तुम कुछ बेहतर हो," ग्लैटकिन ने कहा। "हम उस वक्त जुदा हुए थे, जब कि तुम्हारी क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों के मकसद पर जिरह हो रही थी। यह आखिरी प्रश्न है, और इस पर दस्तखत करने के बाद मेरी-तुम्हारी बात ख़त्म हो जायगी।....अब तब तुम पूरी तरह आराम कर सकोगे।"

लैम्प अपेक्षाकृत कुछ तेजी के साथ जल रहा था। रुबाशोफ को लाचार आँखें बन्द करनी पड़ीं। उसने अपनी कनपटियों पर हाथ फेरा। बर्फ की ठंडक जा चुकी थी। ग्लैटकिन ने जो 'आराम' शब्द का प्रयोग किया था, वह इस सन्नाटे में जम-सा गया था। 'आराम करो और सो जाओ। आओ, हम अपने में से एक को कप्तान चुन लें, और मिश्र देश को लौट चलें....।' उसने चश्मे की राह ग्लैटकिन पर नज़र डाली।

"मेरे उद्देश्यों को तुम भी जानते हो, और मैं भी।" उसने कहा। "तुम जानते हो कि मैंने न तो 'क्रान्ति-विरोधी दृष्टिकोण' से कोई कार्य किया, और न ही मैं किसी विदेशी सरकार की नौकरी में था। जो मैंने सोचा और जो मैंने किया, मैंने अपनी धारणा और आत्मा के अनुसार सोचा और किया।"

ग्लैटकिन ने दराज़ खोली और एक डायरी निकाली। उसने कुछ सफे पलटे और एक जगह पर रुककर मोटी-सी आवाज़ में पढ़ने लगा—

"......'हमें आत्म-मूलक धारणा में कोई दिलचस्पी नहीं। जो कोई

ग़लत होगा उसे उसका फल मिलेगा; जो कोई सही होगा, वह मुक्त हो सकेगा। यही हमारा कानून था।........'अपनी गिरफ्तारी के कुछ ही बाद तुमने यह लिखा था।"

रुबाशोफ को पलकों में रोशनी की गरमी महसूस हुई। उसने जो सोचा और लिखा था, ग्लैटकिन की नजर में उसका नंगा-सा तो अर्थ था स्वीकृति; जैसे कि रुबाशोफ ने किसी अनुपस्थित पादरी के सम्मुख अपना अपराध माना था। साथ ही जैसे उसका ग्रामोफोन रिकार्ड भी भर दिया गया था, और जिसे अब एक फटी-सी आवाज़ दोहरा रही थी।

ग्लैटकिन ने एक और पन्ना पलटा और उसमें से केवल एक ही वाक्य पढ़ा। पढ़ते समय उसकी भावहीन नजर रुबाशोफ पर टिकी हुई थी—

"सम्मान इसमें है कि अहंकार बिना सेवा की जाय, और अन्तिम परिणाम तक।"

रुबाशोफ ने अपनी नजर को स्थिर रखने की कोशिश की।

"मैं नहीं समझ सकता," उसने कहा, "कि दुनिया की नज़रों में पार्टी के सदस्यों की गिरावट क्योंकर पार्टी के लिए हितकर हो सकती है। मैंने उस हर बात पर दस्तखत कर दिये हैं जिस पर तुम मुझसे कराना चाहते थे। मैंने यह कहकर अपने को अपराधी माना है कि मैंने झूठी और हानिपूर्ण नीति का अनुसरण किया है। क्या इतना तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं?"

उसने चश्मा पहन लिया और असहाय-सी दशा में लैम्प पर नजर डाली। थके-से स्वर में उसने अपनी बात को यूं समाप्त किया—"जो भी हो, एन० एस० रुबाशोफ का नाम ही स्वयं पार्टी के इतिहास का एक अंग है। इसे धूल में घिसटकर, तुम क्रान्ति के इतिहास को गन्दा करना चाहते हो।"

ग्लैटकिन ने डायरी के कुछ पन्ने पलटे—"इसका उत्तर मैं तुम्हारे अपने लिखे को सुनाकर दे सकता हूँ। तुमने लिखा था : 'यह आवश्यक है कि प्रत्येक वाक्य को जनता के दिमाग़ में बार-बार कहकर और उसे आसान करके ठूंसा जाय। जिसे सत्य का रूप दिया गया है, उसे सोने की तरह चम-

कना चाहिए; जो ग़लत है, उसे काला-सा-धब्बा जताना ही चाहिए। क्योंकि जिन्हें जनता ने अपनाना है, उन राजनीतिक तरीकों को रंगीन रूप देना ही होगा।' ''

रुबाशोफ चुप था। तब वह बोला—''तो तुम्हारे कहने का उद्देश्य यही है न, कि मैं तुम्हारे नाटक में शैतान का अभिनय करूँ, गुर्राऊँ, अपने दाँत पीसूँ और अपनी जीभ निकालूँ; और यह सब भी जान-बूझकर।''

ग्लैटकिन ने डायरी बन्द कर दी। वह कुछ थोड़ा आगे को झुका और नाक ठीक करते हुए बोला, ''मुकदमे की पेशी के समय तुम्हारी साक्षी ही पार्टी की आख़िरी सेवा हो सकती है।''

रुबाशोफ ने कोई जवाब न दिया। वह आँखें बन्द किये हुए और लैम्प की किरणों में सूर्य की धूप में सोने वाले की भाँति थका हुआ आराम कर रहा था; लेकिन ग्लैटकिन के स्वर से तो मुक्ति नहीं मिल सकती थी।

''जिस चीज़ की यहाँ बाज़ी लगी हुई है उसके मुकाबले में तुम्हारे यह नाटक बच्चों के सुन्दर खेल-से हैं। मैंने इस विषय पर किताबें पढ़ीं हैं। नाटक में लोगों की लच्छेदार चोटियाँ होती थीं और उन्हें व्यक्तिगत मान की चिन्ता नहीं होती थी। उनके लिए तो केवल यही बात महत्व रखती थी कि उनकी मृत्यु शान-शौकत की हो, चाहे भले ही इस शान-शौकत से लाभ हो या हानि।''

रुबाशोफ कुछ नहीं बोला। उसके कानों में सांय-सांय की आवाज़ हो रही थी; ग्लैटकिन के स्वर ने उसे ढक-सा रखा था; उसका स्वर सब ओर से उसे सुनाई दे रहा था और जैसे उसकी दुखती हुई खोपड़ी पर निर्दयतापूर्वक चोटें कर रहा था।

''तुम जानते हो कि यहाँ किस बात की बाज़ी लगी हुई है,'' ग्लैटकिन आगे कहने लगा। ''इतिहास में यह पहला ही मौका है, जब कि क्रान्ति ने न केवल सत्ता को जीता है, बल्कि उसकी रक्षा भी की है। उसने अपने देश को नये युग-दुर्ग का रूप दे दिया है। हमारा देश दुनिया का छठा भाग है और उसमें दुनिया की आबादी का दसवां भाग बसता है।''

ग्लैटकिन का स्वर अब रुबाशोफ की पीठ की ओर से आ रहा था। वह खड़ा हो गया था और कमरे में टहल रहा था। ऐसा मौका, यह पहला ही था। हर कदम पर उसके बूट चरचराते थे। उसकी माड़ी लगी पोशाक सर-सर कर रही थी और पेटी के चमड़े की गंध आ रही थी।

"जब हमारे देश में क्रान्ति सफल हो गई, तो हमारा विश्वास था कि बाकी की दुनिया भी हमारे पीछे चलेगी। इसके बदले, प्रतिक्रिया की एक लहर आई और उसने हम को ही बहा ले जाने का खतरा पैदा कर दिया। पार्टी में दो विचार-धाराएँ थीं। एक का कहना था कि हमने जो कुछ जीता है, उसकी बाज़ी लगाकर विदेशों में क्रान्ति की उन्नति करनी चाहिए। तुम उस विचार-धारा के थे। और हमने यह जान लिया था कि यह धारा खतरनाक होगी, और हमने उसका खात्मा कर दिया।"

रुबाशोफ अपना सिर उठाना चाहता था और कुछ कहना चाहता था। ग्लैटकिन के कदमों की गूँज उसकी खोपड़ी मे हो रही थी। वह बहुत थक गया था। उसने कुरसी से पीठ लगा ली, और अपनी आँखें बन्द रखीं।

"'पार्टी का नेता," ग्लैटकिन ने आगे कहा, "दृढ़-संकल्प और विस्तृत दृष्टिकोण रखता था। उसने जान लिया था कि दुनिया के प्रतिक्रिया-काल में ज़िन्दा रहने और दुर्ग को सुरक्षित बनाये रखने पर ही सब-कुछ निर्भर करता है। उसे इस बात का भी पता था कि इस काल की अवधि दस बरस हो सकती है, शायद बीस भी, और शायद पचास भी। यानी इसकी अवधि तब तक समझी जा सकती है जब तक दुनिया में क्रान्ति की नई लहर नहीं आ जाती। तब तक हम अकेले ही होंगे। उस समय तक हमारा एक ही कर्तव्य होगा : मारे नहीं जायं।"

तब अचानक ही रुबाशोफ के दिमाग़ में एक वाक्य आ गया : 'क्रान्तिकारी का यह कर्तव्य है कि वह अपनी जान की रक्षा करे।' यह किसने कहा था? खुद, उसी ने? इवानोफ ने? यह उसी सिद्धान्त के नाम पर था कि जिस पर उसने आरलोवा की बलि चढ़ाई थी। और यह सिद्धान्त उसी को कहाँ तक ले आया था?

"......मारे नहीं जायँ," ग्लैटकिन का स्वर गूँजा, "इसके लिए किसी भी कीमत और किसी भी कुरबानी पर सिद्धान्त को पकड़े ही रहना चाहिए। पार्टी के नेता ने इस सिद्धान्त को भी समझ लिया और उसने दृढ़ता से इसे लागू भी किया। हमारी राष्ट्रीय नीति के सामने अन्तर्राष्ट्रीय नीति का रूप गौण होना चाहिए था। जिसने भी इसकी महत्ता को नहीं समझा, उसे नष्ट होना ही था। यूरोप में जो भी हमारे अच्छे-से-अच्छे अधिकारी थे, उनका शारीरिक रूप मे ह्रास करना पड़ा। विदेशों में हमने अपने ही संगठन को नष्ट करने में भी संकोच नहीं किया, क्योंकि हमें अपने दुर्ग का हित करना था। हमने प्रतिक्रियावादी देशों की पुलिस के सहयोग से भी इनकार नही किया, केवल इस उद्देश्य के लिए कि उन क्रान्तिकारी आन्दोलनों को दबाया जा सके, जो ग़लत मौके पर उठे थे। हमने अपने मित्रों को धोखा देने और शत्रुओं के साथ समझौता करने में भी संकोच नही किया था, केवल इसलिए कि हम अपने दुर्ग को बनाये रहें। यही था वह काम जो इतिहास ने हमें, क्रान्ति की पहली जीत के प्रतिनिधियों को, सौंपा था। कमसमझ और अल्पदृष्टि लोगों ने इसे समझा नहीं था। लेकिन क्रान्ति के नेता ने समझ लिया था कि केवल एक ही बात पर यह सब निर्भर करता था : अचल रहना।"

ग्लैटकिन ने कमरे में चलना बन्द कर दिया था। वह रुबाशोफ की कुरसी के पीछे खड़ा था। उसकी घुटी हुई खोपड़ी पर पसीना चमक रहा था। उसने रूमाल से उसे साफ़ किया। अब वह फिर मेज़ के साथ पड़ी कुरसी पर जा बैठा था। उसने रोशनी कुछ मद्धम की और फिर भावहीन स्वर में बोलने लगा—

"पार्टी का मार्ग बिलकुल साफ़ और सीधा था। इसके तरीकों का निश्चय इसी सिद्धान्त से होता था कि साधनों का आखिरी नतीजा, किसी की रियायत किये बिना, कसौटी पर ठीक उतरता है या नही। इसी सिद्धान्त को नजर में रखते हुए, रुबाशोफ, सरकारी वकील तुम्हारे लिए मृत्यु-दण्ड की माँग करेगा।"

"नागरिक रुबाशोफ, तुम्हारा दल हार गया है और नष्ट हो गया है। तुम पार्टी में फूट डालना चाहते थे, अगरचे तुम यह भी जानते थे कि इस फूट का नतीजा गृह-युद्ध होगा। किसानों में जो असन्तोष है, उसे भी तुम जानते हो। क़ुरबानी की जो भावना उन्हें सौंपी गई है, अभी उसे वे समझना नहीं सीखे। उस लड़ाई में, जो चन्द ही महीनों में होने वाली है, ऐसी विचार-धाराओं से कितना भीषण परिणाम हो सकता था? इसलिए, एकमात्र यही आवश्यकता थी कि पार्टी संगठित हो। इसका रूप ऐसा होना चाहिए था, जैसे सब एक ही सांचे के ढले हों; उनमें अन्धविश्वास और नियंत्रण हो। नागरिक रुबाशोफ, तुम और तुम्हारे मित्रों ने पार्टी में छिद्र किया था। यदि वास्तव में ही तुम्हें इसका पछतावा है, तो तुम्हें इस छिद्र को पाटने में मदद करनी चाहिए। मैंने तुम्हें बताया है कि यह अन्तिम सेवा होगी, जो पार्टी तुमसे चाहेगी।"

"तुम्हारा काम सरल है। तुमने खुद ही उसका उल्लेख किया है—सही को चमकाना, और ग़लत को काला कर देना। विरोधी पक्ष की नीति ग़लत है, इसलिए तुम्हारा काम है कि तुम विरोधी पक्ष की निन्दा करो, ताकि जनता को समझाया जा सके कि विरोध करना अपराध है और विरोधी पक्ष के नेता अपराधी हैं। यही वह सरल भाषा है, जिसे जनता समझ सकती है। यदि तुम अपने पेचीदे मक़सदों की चर्चा करने लगोगे, तो वह गड़बड़ा जायगी। नागरिक रुबाशोफ, तुम्हारा काम है कि तुम सहानुभूति और दया की जागरूकता को रोको। विरोधी पक्ष के लिए सहानुभूति और दया दिखाना देश के लिए घातक है।"

"कामरेड रुबाशोफ, मुझे आशा है, तुमने वह काम समझ लिया है जो पार्टी ने तुम्हें सौंपा है।"

जब से दोनों का परिचय हुआ था, यह पहला ही मौका था कि ग्लैटकिन ने रुबाशोफ को 'कामरेड' कहकर पुकारा था। रुबाशोफ ने फौरन ही सिर उठाया। उसके अन्दर जैसे गरम-सी लहर दौड़ गई, लेकिन उसने

अपने को असहाय पाया। उसकी ठोड़ी धीरे-से झुकी, जब कि वह चश्मा पहन रहा था।

"मैं समझता हूँ।"

"देखो," ग्लैटकिन कहने लगा, "पार्टी तुम्हे कोई इनाम देने का वादा नही करती। कुछ अभियुक्त थे, जिन्होने शारीरिक दबाव से माना, कुछ रक्षा के वचन से मान गए। और तुम्हे, कामरेड रुबाशोफ, न तो हम कोई वचन देते है, और न ही तुमसे कोई सौदा करते हैं।"

"मैं समझता हूँ," रुबाशोफ ने दोबारा कहा।

ग्लैटकिन ने डायरी पर निगाह डाली—"तुमने एक बात लिख रखी है, जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया है। तुमने लिखा था, 'मैंने जो सोचा था उस सोचे के मुताबिक ही काम किया। अगर मैं सही था, तो मुझे कोई पछतावा नही; अगर ग़लत था, तो मै अदा करूँगा, यानी भुगतूँगा,"

उसने डायरी पर से निगाह उठाई और रुबाशोफ के चेहरे को पूरी-पूरी तरह देखा—"तुम ग़लत थे और तुम अदा करोगे, कामरेड रुबाशोफ! पार्टी एक ही वचन दे सकती है : विजय के बाद, एक दिन, जब कि इससे हानि की सम्भावना न रहेगी, तब यह सारा गुप्त साहित्य प्रकाशित किया जायगा। तब दुनिया जान जायगी कि इस नाटक के अभिनय की पृष्ठभूमि मे क्या था। और तब तुम्हारे और पुरानी पीढ़ी के कुछेक तुम्हारे मित्रों के प्रति सहानुभूति और दया दिखायी जायगी जिससे आज इनकार किया जा रहा है।"

जिस समय वह बोल रहा था, तो उसने तैयार किया हुआ बयान रुबाशोफ की ओर सरका दिया था और पास रखा था पैन। रुबाशोफ खड़ा हो गया और थकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला—"मुझे हमेशा यह सोचकर आश्चर्य हुआ था कि यदि ग्लैटकिन सरीखे भावुक हो जायँ, तो क्या हो। अब मैं जान गया हूँ।"

"मैं समझा नही," ग्लैटकिन ने कहा।

रुबाशोफ ने बयान पर दस्तखत कर दिये। उसने उसमें स्वीकार किया

था कि उसने क्रान्ति-विरोधी मकसदों द्वारा और विदेशी सरकार की नौकरी में अपराध किये हैं। ज्यों ही उसने सिर उठाया, तो उसकी नजर नं० १ के चित्र पर पड़ी, जो दीवार पर टंगा था। उसे अचानक ही उस लौह-दृष्टि की याद हो आई, जो उसने विदा होते समय और हाथ मिलाते हुए नं० १ की आँखों में आँकी थी।

"अगर तुम समझे नहीं, तो इससे कुछ लाभ भी नहीं," रुबाशोफ ने कहा। "ऐसी भी बातें हैं, जिन्हें इवानोफों, रुबाशोफों और कीफरों की पुरानी पीढ़ी ने ही समझा है। अब तो सब खत्म हुआ।"

"मैं हुक्म दे दूँगा कि मुकदमे तक तुम्हें तंग न किया जाय," ग्लैटकिन ने कहा। रुबाशोफ की मुस्कराहट से उसमें तेजी आ गई थी। "क्या और भी कोई तुम्हारी खास इच्छा है?"

"सोने की," रुबाशोफ ने कहा, वह किवाड़ में उस राक्षस के साथ खड़ा था—छोटा-सा कद, बूढ़ा-सा, चश्मा पहने और दाढ़ी वाला।

"मैं हुक्म दे दूँगा कि तुम्हारे सोने में बाधा न डाली जाय," ग्लैटकिन ने कहा।

रुबाशोफ के जाने पर जब किवाड़ बन्द हो गया तो वह फिर कुरसी पर जा बैठा। कुछ क्षणों के लिए वह चुपचाप बैठा रहा। तब उसने स्टैनो को बुलाने के लिए घंटी बजाई।

वह सदा की तरह कोने में अपनी जगह पर बैठ गई। "आपकी सफलता पर मैं आपको बधाई देती हूँ, कामरेड ग्लैटकिन," उसने कहा।

ग्लैटकिन ने लैम्प की रोशनी को सही कर दिया।

"वह तो जागरण और शारीरिक थकावट के कारण हुआ," ग्लैटकिन ने लैम्प पर नजर डालते हुए कहा, "यह सब शारीरिक शक्ति पर निर्भर करता है।"

व्याकरण-सम्बन्धी कल्पना

: १ :

"जब पूछा गया कि क्या वह अपने को अपराधी मानता था, अभियुक्त रुबाशोफ ने साफ़-साफ़ स्वर में उत्तर दिया, 'हाँ।' सरकारी वकील के अगले प्रश्न का कि क्या अभियुक्त ने क्रान्ति-विरोधी दल का प्रतिनिधि बनकर काम किया, तो उसने फिर नीची-सी आवाज़ मे जवाब दिया, 'हां'····।"

चौकीदार वैस्सिलिज की बेटी ने धीरे-धीरे एक-एक शब्द करके पढ़ा। उसने मेज़ पर अख़बार फैला रखी थी और अँगुली रख-रखकर पढ़ रही थी; रह-रहकर वह अपने सिर के फूलदार रूमाल को ठीक कर लेती थी।

"··· जब पूछा गया कि क्या उसे वकील चाहिए, तो अभियुक्त ने कहा कि वह अपने इस अधिकार को छोड़ता है। इसके बाद अदालत ने अभियोग-पत्र पढ़ना शुरू किया।······"

वैस्सिलिज दीवार की ओर मुँह किये बिस्तर पर लेटा हुआ था। वेरा वस्सिलिजोवना सही-सही तो यह जानती न थी कि उसका बूढ़ा पिता उसके पढ़ने को सुन रहा था या सो रहा था। कभी-कभी वह बड़बड़ाता ज़रूर था। वह सीख चुकी थी कि इस ओर ध्यान न दिया करे। हर संध्या के समय 'शिक्षा-सम्बन्धी कारणों से' ऊँचे-ऊँचे अख़बार पढ़ने की उसकी आदत बन गई थी। यह क्रम तब भी चलता था, जब कि कारखाने में काम करने के बाद उसे अपने दल की मीटिंग में जाना होता था और देर में घर लौटना होता था।

"........अभियोग की व्याख्या में बताया गया था कि अभियुक्त रुबाशोफ अभियोग-पत्र में कही सब बातों के लिए अपराधी साबित हुआ है। आरम्भिक जाँच के समय एक तो उसने खुद ही सब अपराधों को माना है और दूसरे दस्तावेज़ी गवाहियों ने भी यही साबित किया। अदालत के प्रधान ने उससे सवाल किया था कि आरम्भिक जाँच के विषय में तो उसे कोई शिकायत नहीं करनी है, तो अभियुक्त ने 'न' में उत्तर दिया; और इसके साथ ही यह भी कहा कि उसने क्रान्ति-विरोधी अपराधों की ओर ईमानदारी के साथ प्रायश्चित्त रूप में अपनी इच्छा से अपराधों को स्वीकार किया है।........"

वैस्सिलिज हिला नहीं। उसके बिस्तर के ऊपर, ठीक सिर की ओर नं० १ का चित्र टंगा था। उससे आगे दीवार में जंग लगी एक कील थी। कुछ ही समय पहले उस कील के सहारे पार्टिजन कमांडर के रूप में रुबाशोफ का फोटो टँगा था। वैस्सिलिज का हाथ अचानक गद्दे के उस छेद की ओर बढ़ा जहाँ वह अपनी बेटी से छिपाकर बाईबल रखता था। लेकिन रुबाशोफ़ की गिरफ्तारी के चन्द दिनों बाद बेटी को बाईबल मिल गई थी, और उसने उसे फेंक दिया था—'शिक्षा-सम्बन्धी कारणों से।'

"........सरकारी वकील के कहने पर अभियुक्त रुबाशोफ पार्टी के मक़सदों का विरोधी होने और प्रतिगामी-क्रान्तिकारी और पितृभूमि के प्रति देशद्रोही बनने के क्रमिक-विकास का विवरण देने लगा। खचाखच भीड़ की मौजूदगी में अभियुक्त रुबाशोफ ने इस प्रकार अपना बयान दिया—नागरिक न्यायाधीशो, जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट, और, अपने देश के न्याय के प्रतिनिधियो, आपको मैंने किन कारणों से समर्पण किया, उसकी मैं व्याख्या करूँगा। मेरी कहानी से आपको जाहिर होगा कि पार्टी के उसूलों से तनिक-सा सरकना भी अन्त में क्योंकर प्रतिगामी-क्रान्तिकारी बनना हो जाता है। हमारे विरोधी संघर्ष का अनिवार्य नतीजा यह हुआ कि हमें दलदल में नीचे-ही-नीचे धकेला गया। मैं आपको अपने पतन का विवरण दूंगा, और मेरा वह विवरण उन लोगों के लिए चेतावनी बन सकता है जो

अभी असमंजस में पड़े हुए हैं और जिनमें पार्टी की नेतागिरी और पार्टी की सचाई के विषय में छिपे-छिपे सन्देह है। लज्जा से ढका हुआ, धूल में सना हुआ, मरने के करीब होता हुआ, मैं आपको एक देशद्रोही दुःखद प्रगति का विवरण दूँगा, ताकि मेरा वह विवरण अपने देश के लाखों के लिए शिक्षा और कँपा देने वाली मिसाल का रूप धारण कर सके।....''

वैस्सिलिज़ बिस्तर पर उलटा लेट गया और उसने गद्दे में अपना मुँह छिपा लिया। उसकी आँखों में पार्टिज़न-कमांडर रुबाशोफ की तस्वीर थी, जो भीषण-से-भीषण स्थिति में भी सदा खुश ही नज़र आया करता था। 'धूल में सना हुआ, मरने के करीब होता हुआ...' वैस्सिलिज़ ने दाँत पीसे। बाईबल तो जा चुकी थी, लेकिन उसकी बहुत-सी आयतें ज़बानी याद थीं।

"......इसी स्थान पर सरकारी वकील ने अभियुक्त के बयान में रुकावट डाली और रुबाशोफ की भूतपूर्व सैक्रेटरी, नागरिक आरलोवा की किस्मत के बारे में कुछ सवाल करने चाहे जिसे विद्रोही कार्यवाहियों के अपराध में फाँसी दे दी गई थी। अभियुक्त रुबाशोफ के उत्तरों से जान पड़ता था कि पार्टी की उस समय की जागरुकता ने उसे जैसे एक कोने में धकेल दिया था और उसने अपने अपराधों की ज़िम्मेदारी आरलोवा पर डाल दी थी, ताकि वह अपनी गरदन को बचा सके और अपनी नीचतापूर्ण कार्यवाहियों को जारी रखने के योग्य बना रह सके। एन० एस० रुबाशोफ इस ज़हरीले अपराध को निहायत बेशर्मी और नीचतापूर्ण उदारता से स्वीकार करता है। सरकारी वकील के इस उल्लेख पर कि 'यह स्पष्ट ही है कि तुम में बिलकुल ही नैतिकता नहीं है,' अभियुक्त ताने-भरी मुस्कराहट के साथ उत्तर देता है—'प्रकट ही है।' उसके व्यवहार ने सुनने वालों को उत्तेजित कर दिया और वे बार-बार क्रोध और घृणा का प्रदर्शन करने लगे। इस पर अदालत के नागरिक प्रेसिडैंट ने श्रोताओं को फौरन शान्त कर दिया। इसी तरह, थोड़ी देर बाद एक मौके पर न्याय की वह क्रान्तिकारी भावना विनोद में बदल गई। उस समय रुबाशोफ के अपराधों का विवरण

दिया जा रहा था, तो उस बीच उसने अदालत से प्रार्थना की थी कि मुकदमे की कार्यवाही चन्द मिनटों के लिए स्थगित की जाय, क्योंकि उसके दाँत में 'असहनीय दर्द' हो रहा था। इस पर प्रेसिडेंट ने फौरन ही इस इच्छा को मंजूर किया और घृणा के साथ आज्ञा दी कि पाँच मिनट के लिए कार्यवाही रोक दी जाय।"

वैस्सिलिज चित्त लेट गया और उस वक्त की बाबत सोचने लगा, जब रुबाशोफ विदेशियों के हाथों से छुटकारा पाकर लौटा था और विजेता की तरह जलसों में उसका स्वागत किया जाता था। वह सोचने लगा, उस वक्त की बाबत, जब वह अपनी लकड़ियों के सहारे झंडों और सजावटों के तले मंच पर झुका-सा खड़ा था, और मुस्करा रहा था, और अपने चश्मे को बाँह पर रगड़ रहा था, जब कि खुशी के नारे और जिन्दाबाद की आवाजें रुकने का नाम ही नहीं लेती थीं।

वैस्सिलिज को बाईबल के ये शब्द याद आ गए—

'और सिपाही उसे ले गए, एक हाल में, जिसे प्रीटीरोयम कहा जाता था; और वहाँ फौजी बाजे को बुलाया गया। और उन्होंने उसे बैंगनी रंग के कपड़े पहनाये और उसके सिर पर तिनकों से प्रहार किया और उस पर थूका; तब घुटनों के बल बैठकर उसकी पूजा की।'

"तुम आप-से-आप क्या बड़बड़ा रहे हो?" बेटी ने पूछा।

"चिन्ता न करो," बूढ़े वैस्सिलिज ने कहा और दीवार की ओर मुँह कर लिया। उसने गद्दे के छेद में हाथ डाला, लेकिन वह खाली था। उसके सिर के ऊपर की ओर लगी कील भी खाली थी। जब बेटी ने रुबाशोफ के चित्र को दीवार से हटाया था और उसे कूड़े की टोकरी में फेंका था, तो उसने विरोध नहीं किया था—अब वह इतना बूढ़ा जो हो चुका था कि जेल के कष्ट उसकी ताकत से बाहर थे।

बेटी ने पढ़ना बन्द कर दिया था और स्टोव को मेज पर रखकर चाय बनाने की तैयारी करने लगी थी। वैस्सिलिज के कमरे में पैट्रोल की गंध फैल गई थी। "तुम मेरे पढ़े को सुन रहे थे?" बेटी ने पूछा।

वैस्सिलिज ने बालक की तरह उसकी ओर ध्यान किया। "मैंने सब सुना था," उसने कहा।

"अब देखो तो," वेरा वस्सिलजोवना ने स्टोव में पिचकारी लगाते हुए कहा, "वह खुद ही कहता है कि वह देशद्रोही है। अगर यह सच न होता, तो वह आप-से-आप यह न कहता। अपने कारखाने की मीटिंग में हम एक प्रस्ताव भी कर चुके हैं, और उस पर सबको दस्तखत करने होंगे।"

"तो तुम इस बारे में बहुत-कुछ समझती हो," वैस्सिलिज ने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

वेरा ने फौरन ही उस पर तिरछी नजर डाली और उसके कारण उसने अपना मुँह फिर दीवार की ओर कर लिया। जब-जब वह ऐसी नजर से वैस्सिलिज को देखती थी तो उसे याद हो जाता था कि उसे वेरा के तौर-तरीके पर ही चलना होगा। और वेरा चौकीदार के मकान को अपने लिए चाहती थी। तीन हफ्ते हुए, उसने और कारखाने के एक कारीगर ने विवाह के रजिस्टर में अपने नाम साथ-साथ दर्ज किये थे, लेकिन उनके पास मकान नहीं था। लड़का दो साथियों के साथ एक कमरे में रहता था और अब तो हाऊसिंग ट्रस्ट से किसी को मकान लेने में कई वर्ष लग जाते थे।

आखिर स्टोव जलने लगा, और वेरा ने चाय की केतली उस पर रख दी।

"सैक्रेटरी ने हमें प्रस्ताव पढ़कर सुनाया था। उसमें लिखा है कि देश-द्रोहियों को बेरहमी के साथ नष्ट किया जाना चाहिए। जो कोई भी उनके प्रति दया दिखाता है, वह खुद भी देशद्रोही है और उसकी निंदा होनी चाहिए।" उसने एक खास मतलब से यह बात कही थी। "मज़दूरों को सावधान रहना चाहिए। हम में से हर-एक को प्रस्ताव की एक-एक कापी मिली है, ताकि हम उस पर दस्तखत इकट्ठे कर सकें।

वेरा ने ब्लाऊज में से एक मुड़ा-तुड़ा काग़ज निकाला और उसे मेज़ पर फैला दिया। वैस्सिलिज अब चित लेटा था; जंग लगी कील ठीक उसके सिर

के ऊपर दीवार से निकली हुई थी। उसने स्टोव से आगे की ओर फैले काग़ज़ पर उड़ती-सी नज़र डाली। और तब एकाएक उसने करवट ले ली।

वैस्सिलिज को फिर बाईबल के शब्द याद आ गए—

'और उसने कहा पीटर, मैं तुम्हें कहता हूँ, मुर्गा आज के दिन नहीं बोलेगा जबतक तुम तीन बार इस बात से इनकार नहीं करोगे कि तुम मुझे जानते हो।....'

केतली में पानी उबलने लगा था। बूढ़े वैस्सिलिज ने चालाकी के साथ पूछा—"क्या उन्हें भी दस्तख़त करने होंगे, जो गृहयुद्ध में थे?"

बेटी केतली पर झुकी खड़ी थी और उसके सिर पर फूलदार रूमाल बंधा था। "कोई नहीं छोड़ा जायगा," उसने पहले जैसी अजीब-सी नज़र देखते हुए कहा। "कारखाने में वे जानते हैं कि वह इसी मकान में रहता था। मीटिंग ख़त्म होने पर सैक्रेटरी ने मुझे पूछा था कि क्या तुम अन्त तक उसके मित्र ही थे, और क्या तुम उससे बहुत ही मिल बैठते रहे हो।"

बूढ़ा वैस्सिलिज जैसे उछलकर गद्दे पर बैठ गया। इस झटके से उसे खांसी शुरू हो गई और उसके पतले और झुर्रीदार गले की नसें फूल आईं।

बेटी ने दो गिलास मेज़ पर रखे और उनमें लिफ़ाफ़े में से चाय की पत्ती डालते हुए कहा, "तुम फिर क्या बड़बड़ा रहे हो?"

"लाओ दो, मुझे वह काग़ज़," बूढ़े ने कहा।

बेटी ने उसे काग़ज़ देते हुए पूछा, "क्या मैं पढ़कर सुना दूँ, ताकि तुम्हें सही-सही मालूम हो सके कि उसमें लिखा क्या है?"

"नहीं," बूढ़े ने कहा और उसने अपना नाम लिख दिया, "मैं नहीं जानना चाहता। लाओ, अब मुझे चाय दो।"

बेटी ने चाय का गिलास दिया। उसके ओंठ हिल रहे थे; वह एक-एक घूँट पी रहा था, और अपने-आप से बड़बड़ा रहा था।

चाय पी लेने के बाद, बेटी फिर अख़बार पढ़ने लगी। अभियुक्त रुबाशोफ और कीफ़र का मुकदमा ख़त्म होने को था। पार्टी के नेता की हत्या के योजित षड्यन्त्र के अपराध की चर्चा से श्रोताओं में जैसे तूफ़ान

उठ खड़ा हुआ था; और बार-बार आवाजें आने लगी थीं—'इन पागल कुत्तों को गोली मार दो।' सरकार का आखिरी सवाल उसकी कार्यवाहियों के मक़सद के विषय में था। और अभियुक्त रुबाशोफ ने, जो टूट-सा चुका था, थकी और खिंची-सी आवाज़ में उसका जवाब दिया—'मैं केवल यही कह सकता हूँ कि हमने, विरोधी दल ने, एक बार पितृभूमि की क्रान्ति की सरकार को हटाने का अपराधी-लक्ष्य बनाया था। हमने उन उपायों का प्रयोग किया, जो हमें अपने मतलब के लिए ठीक जँचे, और जो उसी तरह निम्न और अर्थहीन थे, जैसा कि हमारा लक्ष्य था।

वेरा वस्सिलजोवना ने कुरसी से पीठ लगा ली। "कितना बेहूदा है यह," उसने कहा, "यूँ नाक रगड़ते देखकर तो दिल पागल-सा हो जाता है।"

उसने अख़बार को एक ओर रख दिया और स्टोव और गिलासों को खलबल-खलबल करती हुई साफ़ करने लगी। वैस्सिलिज उसे देखता रहा। गरम चाय से वह ताज़ा हो गया था। वह बिस्तर पर बैठ गया।

"क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम भी समझती हो," उसने कहा, "खुदा जाने उसके दिल में क्या था, जब कि उसने वैसा कहा था। पार्टी ने तुम सबको चालाक बनने की शिक्षा दी है, और जो कोई भी ज्यादा चालाक हो जाता है वह सभ्यता जैसी चीज़ से हाथ धो बैठता है। और अब तुम्हारे कंधों को उमेठने से कोई लाभ नहीं," वह गुस्से में कह रहा था। "अब हालत यह है कि दुनिया में चालाकी और सभ्यता का द्वन्द्व चल रहा है; जो कोई भी एक का साथ देगा, उसे दूसरी का साथ छोड़ना होगा। किसी भी बात में आदमी के लिए इतनी ज्यादती करना ठीक नहीं। इसीलिए लिखा गया है—'तुम्हारे शब्द केवल इतने ही होने चाहिएँ, हाँ, हाँ, नहीं, नहीं; क्योंकि जो-कुछ भी इससे आगे होता है वह केवल बुराई से पैदा होता है।'"

वह फिर गद्दे पर लेट गया और उसने करवट ले ली ताकि वह बेटी के चेहरे को न देख सके। बहुत दिनों से उसने सख्ती के साथ उसकी किसी बात का विरोध नहीं किया था। इसका नतीजा कुछ भी निकल सकता था,

क्योंकि लड़की के दिल में यह तो रहता ही था कि उसे यह कमरा अपने और अपने पति के लिए चाहिए। इस जीवन में हर किसी को चालाक तो होना ही चाहिए, और न होगा तो सम्भव है बड़ी उम्र में जेल जाना पड़े या पुलों के नीचे ठंडक में सोना पड़े। एक ही बात हो सकती थी; या तो कोई चालाकी से पेश आये और या सभ्यता से; दोनों बातें तो एक-साथ नहीं चल सकतीं।

"अब मैं तुम्हें आखिरी हिस्सा पढ़कर सुनाऊँगी," बेटी ने कहा। सरकारी वकील ने रुबाशोफ की जिरह खत्म कर दी थी। उसके बाद, अभियुक्त कीफ़र से एक बार फिर सवाल किये गए; उसने हत्या की चेष्टा के बारे में फिर पहले जैसा पूरा-पूरा बयान दिया। "प्रेसिडेंट के पूछने पर कि क्या वह कीफर को कुछ और पूछना चाहता है, जिसका उसे हक है, तो अभियुक्त रुबाशोफ ने उत्तर दिया कि वह इस अधिकार को छोड़ता है। तब गवाही की सुनवाई खत्म हुई और अदालत स्थगित हो गई। इसके बाद अदालत की दूसरी बैठक पर सरकारी वकील ने मुकदमे को खत्म करते हुए कहा—...."

बूढ़ा वैस्सिलिज सरकारी वकील की जिरह को नहीं सुन रहा था। उसने दीवार की ओर मुँह कर लिया था और सो गया था। उसके बाद उसे पता नहीं था कि कितनी देर वह सोया, कितनी बार उसकी बेटी ने लैंप में बार-बार तेल डाला, और कितनी बार उसकी अँगुली पेज के नीचे तक जा-जाकर फिर नये कालम के ऊपर चली गई थी। वह तो केवल तभी जागा था, जब सरकारी वकील ने अपनी अन्तिम बात कहते हुए मौत की सजा की माँग की थी। शायद बेटी ने भी आखिरी हिस्से पर पहुँचते-पहुँचते अपना स्वर बदल लिया था; शायद वह ठिठक गई थी। जो भी हो, वेस्सिलिज फिर जाग गया था, जब कि वह सरकारी वकील के मोटे-मोटे अक्षरों में छपे अन्तिम वाक्य को पढ़ रही थी—

"मैं माँग करता हूँ कि इन सब पागल कुत्तों को गोली मार दी जाय।"

उसके बाद अभियुक्तों को अन्तिम शब्द कहने की इजाजत दी गई।

"......अभियुक्त कीफ़र न्यायाधीशों की ओर मुड़ा और उसने विनय की कि उसकी जवानी को दृष्टि में रखते हुए उसे मृत्युदण्ड न दिया जाय। उसने एक बार फिर अपने अपराध की नीचता को स्वीकार किया और उसने उकसाने वाले रुबाशोफ पर ही सारी जिम्मेदारी को डालने की कोशिश की। ऐसा करते हुए, वह गुस्से के साथ हकलाने-सा लगा और उसके फल-रूप दर्शक मजाक-सा करने लगे। इस पर प्रेसिडेंट ने फौरन ही इस मजाक को दबा दिया। तब रुबाशोफ को बोलने की इजाजत दी गई।"

यहाँ सम्वाददाता ने खासतौर पर जाहिर किया था कि कैसे अभियुक्त रुबाशोफ ने श्रोताओं की ओर आशा-भरी आँखों से देखा था, और जब उसे एक भी चेहरा ऐसा न दीखा कि जिसमें उसके प्रति सहानुभूति हो, तो निराशा में उसका सिर झुकता गया।

रुबाशोफ का अन्तिम भाषण छोटा था। उसके व्यवहार से अदालत में जो नाराजी पैदा हो चुकी थी, इससे उसमें और भी बढ़ती ही हुई।

"नागरिक प्रैसिडेंट," अभियुक्त रुबाशोफ ने कहा, "मैं अपने जीवन में अन्तिम बार यहाँ बोलने लगा हूँ। विरोधी दल हार गया है और नष्ट हो गया है। अगर मैं अपने से आज पूछूँ, 'मैं किसलिए जान दे रहा हूं?' तो मेरे सामने शून्य के सिवा कुछ भी नहीं। अगर पश्चाताप किये बिना और पार्टी और आन्दोलन के साथ समझौता किये बिना कोई मरा, तो उसके लिए मरना अर्थहीन है। इसीलिए, मृत्यु के आखिरी चरण पर खड़ा हुआ मैं अपने देश के सामने, जनता के सामने और अपने लोगों के सामने घुटने टेकता हूँ। राजनीतिक जलसों, बहसों की ढोंगबाजियों और साजिशों का वक्त चला गया। हम तो सरकारी वकील की हमारे लिए मृत्युदंड की माँग से बहुत पहले राजनीतिक तौर पर मर चुके थे। उन हारे हुओं के लिए शोक होता है जिन्हें इतिहास धूल में मिला रहा है। मुझे केवल एक ही सफाई आपको देनी है, कि मैं मृत्यु अपने लिए सहज न बना सका। अहंकार और स्वाभिमान के आखिरी अवशेषों ने मेरे कानों में कहा था—चुपचाप मरना, कहना कुछ नहीं, अथवा बहादुरी के साथ मरना।

ओंठों पर मृत्यु-संगीत हो; अपने दिल को खोलकर रख देना और अपराध लगाने वालों को चुनौती देना। एक बूढ़े विद्रोही के लिए यह करना सहज होता, लेकिन इस प्रलोभन पर मैंने विजय पा ली थी। उसके साथ मेरे काम की समाप्ति हो जाती है। मैंने हिसाब चुका दिया है; इतिहास के साथ मेरे हिसाब का लेखा हो चुका है। आपको दया के लिए कहना केवल मज़ाक होगा। इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ नहीं कहना।"

"···थोड़े विचार के बाद प्रेसिडैंट ने सज़ा पढ़कर सुना दी। क्रांतिकारी न्याय की उच्चतम सत्ता की कौंसिल अभियुक्त को हर मामले में महानतम दंड देती है—गोली मार कर मृत्य-दंड और उसकी सारी निजी जायदाद की ज़ब्ती।"

बूढ़े वैस्सिलिज ने अपने सिर के ऊपर दीवार में लगे जंगदार कील की ओर झाँका। वह बड़बड़ाया :

'तेरी इच्छा पूर्ण हो। आमीन,' और उसने दीवार की ओर मुँह फेर लिया।

: २ :

इस प्रकार सब खेल खत्म हो चुका था। रुबाशोफ़ जानता था कि आधी रात से पहले ही वह इस दुनिया में नहीं होगा।

मुकदमे की गर्जना के बाद वह अपनी कोठरी में आ चुका था। वह साढ़े छः कदम इधर और साढ़े छः कदम उधर चक्कर लगा रहा था। जब वह खिड़की से हटे हुए तीसरे टाईल पर चुपचाप खड़ा था, तो उसे ऐसा लगा जैसे सफेद दीवारों के बीच छाया हुआ सन्नाटा उससे मिलने आ रहा हो, जैसे वह गहरे कुएँ में से निकल कर रहा हो। अभी भी, वह समझ नहीं सका था कि भीतर और बाहर, क्यों इतना गहरा सन्नाटा छा गया था। लेकिन इतना तो वह जानता था कि अब इस शान्ति को कोई भी वस्तु और ज्यादा भंग नहीं कर सकती।

अतीत को देखते हुए, वह उस क्षण की भी याद कर सका जब उसे

ऐसी शांति मिली थी, और वह उसमें डूब-सा गया था। यह क्षण था मुकदमे के वक्त का, यानी अपना अन्तिम भाषण शुरू करने से पहला क्षण। उसे विश्वास था कि वह अपनी आत्मा के अहंकार और आत्म-श्लाघा के आखिरी चिह्नों को सर्वथा जला चुका था, लेकिन उसी क्षण में जब कि उस की आँखों ने श्रोताओं के चेहरों की पढ़ने की कोशिश की थी और उसे मिला था उपहास और उपेक्षा, और अन्तिम बार उसमें भूख जगी थी दया की हड्डी को चूस लेने की; ठंडा-सा होता हुआ वह चाह रहा था कि उस के अपने ही शब्द उस में गरमी ला दें। इस प्रलोभन ने उसे अपने अतीत के विषय में बोलने के लिए लाचार किया; और लाचार किया एक बार उस जाल को छिन्न-भिन्न कर देने के लिए, जिसमें इवानोफ और ग्लैटकिन ने उसे फँसाया था; और लाचार किया उठकर ज़ोर से चिल्लाने के लिए—'तुम्हीं ने मेरी जान पर हाथ डाला है। अब यह उठकर तुम्हें चुनौती देते हैं।...' ओह, क्रान्तिकारी कौंसिल के सामने एक अभियुक्त का दिया यह भाषण उसे किस तरह याद था! वह उसे अक्षर-अक्षर दोहरा सकता था। बहुत पहले उसने उसे ज़बानी याद कर लिया था—'तुम गणतंत्र को लहू में सान लेना चाहते हो। स्वतन्त्रता के पद-चिह्नों को तुम कब तक श्मशान बनाते रहोगे? अत्याचार सीमा लाँघ चुका है, उसने अपना परदा फाड़ डाला है; उसने सिर ऊँचा कर लिया है, वह हमारी लाशों को रौंद रहा है।'

ये शब्द उस की जिह्वा पर फफोले-से बनकर रह गए। किन्तु यह प्रलोभन पल-भर ही टिक सका। तब, जब उसने अपना अन्तिम वक्तव्य आरम्भ कर दिया था तो सन्नाटे को तोड़ने वाली घंटी बज रही थी; उसे पता लगा कि अब तो वह चूक गया था।

अब बहुत देर हो चुकी थी। जब दुनिया के सामने उनके आखिरी बार खड़े होने का समय हुआ तो कोई भी उनमें से कठघरे को मंच न बना सका, कोई भी उनमें से दुनिया के सामने सचाई न रख सका, जिससे कि वह अपने न्यायाधीशों को ही अपराधी साबित कर सकता।

कुछ शारीरिक भय के कारण चुप हो गए—ओंठ-फटे की तरह; कुछ

को अपनी गरदन बचा लेने की आशा थी; बाकी और न सही, ग्लैटकिन जैसों के पंजों से अपनी स्त्रियों और बच्चों को ही बचा लेना चाहते थे। जो उनमें सबसे अच्छे थे, वह पार्टी की अन्तिम सेवा के रूप में चुप रहे, उन्होंने अपने को बलि के बकरे की भांति कुरबान कर दिया था—और, उनमें से हर अच्छे-से-अच्छे व्यक्ति पर भी किसी-न-किसी आरलोवा की आत्मा छायी हुई थी। वे अपने अतीत में बहुत गहरे घुल मिल चुके थे; अपने ही बुने हुए जाल में वे फंस गए थे; अपनी ही पेचीदी दलीलों और पेचीदी धाराओं के आधार पर बनाये नियमों के अनुसार वे सब अपराधी थे, लेकिन उन कर्मों से नहीं जिनके कारण खुद उन्होंने अपने को अभियुक्त ठहराया था। उनके लिए लौटने का कोई रास्ता न था। उनका रंगमंच से निकलना उनके खेल के बनाये अजीब-से नियमों के बिलकुल अनुकूल ही था। जनता उनसे मृत्यु-संगीत की आशा नहीं करती थी। उन्हें तो पाठ्य-पुस्तक के अनुसार ही चलन रखना था, और उनका अतीत रात में भेड़ियों के चिल्लाने-जैसा था।······

इस प्रकार अब तो सब-कुछ हो चुका था। अब उसे और कुछ करना भी बाकी नहीं था। उसे भेड़ियों के साथ भी चिल्लाना नहीं रह गया था। वह अदा कर चुका था; उसका हिसाब हो चुका था। वह एक ऐसा आदमी था, जो अपनी परछाईं भी खो चुका था, सभी बन्धनों से वह छुटकारा पा चुका था। वह प्रत्येक विचार को उसकी आखिरी तह तक सोच गया था, और अन्तिम नतीजे तक उसी के अनुसार उसने कर्म किया था; जो समय उसके पास बाकी रह गया था वह उस मौन साथी का था, जिसकी सीमा ठीक उसी जगह से शुरू होती थी जहाँ उसके दार्शनिकतापूर्ण विचार का अन्त होता था। पार्टी ने अपने अनुगामियों में जिस प्रथम पुरुष-एकवचन की ओर लज्जा का भाव भर दिया था, उसके कारण ही उसने इसका नाम 'व्याकरण सम्बन्धी कल्पना' रखा हुआ था।

रुबाशोफ़ उस दीवार के पास खड़ा हो गया, जो उसे नं० ४०६ से अलग करती थी। वान विंकल के चले जाने के बाद से वह कोठरी खाली

पड़ी थी। उसने चश्मा उतारा, कनखियों से इधर-उधर देखा और टकटकाया—"२-४..."

उसे कुछ लज्जा-सी महसूस हुई। वह सुनने लगा, और तब फिर टकटकाया—"२-४..."

वह सुनने लगा, और बार-बार उसने इन्ही संकेतो को टकटकाया। किन्तु दीवार चुप-की-चुप रही। उसने आज तक कभी 'मै' शब्द को नही टकटकाया था; संभवतः किसी भी समय नही। वह सुनने लगा। किन्तु टकटकाहट उत्तर के बिना ही मर गई थी।

वह कोठरी में फिर कदम-कदम चलने लगा। जब से चुप्पी की घंटी उस पर छा गई थी, वह कई एक प्रश्नों के बारे मे परेशान-सा हो रहा था और वह चाह रहा था कि बहुत देर हो जाने से पहले ही वह उनका उत्तर पा ले। वे थे अजीब ही प्रश्न; उनका सम्बन्ध बलिदान के मतलब से था, या, और भी सही कहें तो उस अन्तर से था, जो अर्थपूर्ण बलिदान और अर्थहीन बलिदान मे होता है। जाहिर ही है कि केवल उसी ढंग का बलिदान ही कुछ अर्थ रख सकता था जो अनिवार्य हो, जैसे शारीरिक मृत्यु मे। दूसरी ओर वे सब बलिदान जिनका सम्बन्ध मूलतः समाज से है, केवल आकस्मिक हैं, और इसी कारण अर्थहीन हैं। क्रान्ति का एकमात्र उद्देश्य बुद्धिहीन अथवा अचेतन बलिदान का अन्त करना था। लेकिन हुआ यह कि इस दूसरे प्रकार के बलिदान का अन्त केवल इसी तरह सम्भव हुआ कि अस्थायी तौर पर पहले प्रकार के बलिदानो की मात्रा बहुत बढ़ गई। इस तरह सवाल यह बना—'क्या ऐसा मार्ग सही था? यह ठीक था, अगर कोई 'मानवता' की भावना से ही इस पर बोलता; लेकिन जब एक वचन 'व्यक्ति' पर यह सिद्धान्त लागू किया जाय, उस 'व्यक्ति' पर जो हाड़, मांस, चर्बी और रक्त का बना हो, तो यह सिद्धान्त एक दम अर्थहीन बन जाता था। बचपन में उसे विश्वास था कि पार्टी का काम करने के दौरान में उसे इस प्रकार के सभी सवालों का जवाब मिल जायगा। चालीस वर्ष तक यह काम हुआ, किन्तु ठीक शुरू करते ही वह इस प्रश्न को भूल गया जिसके लिए वह इस काम में जुटा था। अब

चालीस साल हो चुके थे, और वह फिर बचपन जैसा आकुल हो उठा था। पार्टी ने वह तो सब ले लिया जो वह दे सकता था, किन्तु जो उत्तर उसे पा लेना था, वह न दिया। और न ही उसके मौन साथी ने उत्तर दिया, जिसका जादू-भरा नाम उसने खाली कोठरी की दीवार पर टकटकाया था। वह ऐसे सीधे प्रश्नों के लिए बहरा था, चाहे भले ही वे कितने ही आवश्यक और गम्भीर क्यों न हों।

और इस पर भी उस तक पहुँचने के कई मार्ग थे। कभी-कभी वह अचानक ही उस लय का, या उस लय की स्मृति-मात्र का, या मरियम के आलिंगन के जुड़े हाथों का, या बचपन के कतिपय दृश्यों का ही उत्तर देने लग जाता —वैसे ही जैसे किसी ने मिजराव से तारों को झनझना दिया हो, और उसमें से उत्तर रूप में लय-भरी गूँज उत्पन्न हो गई हो। एक बार यह क्रम जारी हो जाने पर जो भाव पैदा होता था, उसे आत्म-ज्ञानी लोग तो 'उन्माद' का नाम देते हैं और संत-जन 'गम्भीर चिन्तन' का। दुनिया के बड़े-से-बड़े और नयी विचार-धारा के मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था की आस्था को स्वीकार किया है और उन्होंने इसे 'समुद्र की भांति गहन भावों' का नाम दिया है। और दरअसल ही, इस दशा में होने पर किसी का भी व्यक्तित्व नमक के एक कण में असीम-समुद्र की मौजूदगी का भी अनुभव करता है। उस कण को समय और स्थान की सीमा में स्थिर नहीं रखा जा सकता। यह स्थिति वह होती है, जब कि विचार अपने दिशा-ज्ञान को खो देते हैं और चुम्बक की धुरी में लगी सुई की भांति गोलाकार में चक्कर लगाना शुरू कर देते हैं। यह सिलसिला तब तक जारी रहता है, जब तक कि वह अपनी धुरी से हट नहीं जाती और रात्रि के गहरे अंधेरे में रोशनी के एक पुंज की तरह मुक्त-दशा में स्वतः ही घूमने नहीं लगती। यह क्रम तब तक लगातार जारी रहता है, जब तक सब विचार और धारणाएँ, यहाँ तक कि सुख और दुख भी, अंधकार में रेखा-किरण की तरह शून्य का रूप धारण कर लेते हैं और आत्मा में लीन हो जाते हैं।

रुबाशोफ अपनी कोठरी में चक्कर काटने लगा। बीते दिनों में तो इस

प्रकार की शिशु-चपलता से वह शर्मिन्दा-सा हुआ भी करता था। लेकिन अब वह शर्मिन्दा नहीं। मृत्यु में ही अध्यात्म-विद्या का वास्तविक रूप प्रकट होता है। वह खिड़की पर रुक गया और शीशे पर माथे को टिका लिया। मशीन-गन के गुम्बद पर नीला-सा धब्बा देखा जा सकता था। वह हलका-सा था, और उसने उसे उस खास किस्म के नीले रंग की याद करा दी, जो वह बचपन में अपने पिता के बाग में घास पर लेटे-लेटे अपने सिर पर की चिनार की शाखाओं को देखते हुए ऊपर आसमान में धीरे-धीरे चलता सा देखता था। जाहिर ही था कि यह नीला-सा धब्बा भी 'समुद्र की भाँति गहरे भावों' की प्रेरणा का कारण बन सकता था। उसने पढ़ा था कि आकाश-विज्ञान की नवीनतम खोजों के अनुसार दुनिया सीमित है—यद्यपि इसके विस्तार की सीमाएँ नहीं हैं, वह स्वतः सम्पूर्ण है—आकाश के विस्तार की तरह। वह उसे कभी भी समझने योग्य नहीं हो पाया; लेकिन अब वह फौरन ही उसे समझ जाना चाहता था। अब उसे यह भी याद हो आया था कि जर्मनी में पहली गिरफ्तारी के समय उसने इसके बारे में पढ़ा था जब कि साथियों ने पार्टी की कानून विरुद्ध छपी पत्रिका का एक पन्ना चोरी से उसकी कोठरी में पहुँचा दिया था। ऊपर, सिरे पर सूत कातने की एक मिल में हड़ताल की बाबत तीन कालम भरे हुए थे और एक कालम के नीचे छोटे-छोटे अक्षरों में संसार की सीमा की खोज के बारे में इस खोज का विवरण छपा था। पेज का आधा हिस्सा फटा हुआ था, किन्तु आज तक वह नहीं जान सका कि उस आधे में क्या छपा था।

रुबाशोफ खिड़की के पास खड़ा था। उसने खाली दीवार पर अपने चश्मे से टकटकाया। लड़कपन में उसे ग्रह-विज्ञान को पढ़ने का शौक हुआ था। और अब? चालीस बरस तक वह कुछ और ही करता रहा। सरकारी वकील ने क्यों नहीं उससे पूछा, 'प्रतिवादी रुबाशोफ, उस असीम की बाबत क्या हुआ?' वह उसका हरगिज भी उत्तर न दे पाता; और वहीं, वहीं था उसके अपराध का मूल-स्रोत।······क्या इससे बड़ा अपराध भी कोई हो सकता था?

जब उसने वह पन्ना पढ़ा था, तब अपनी कोठरी के अकेलेपन में यातना के कारण जोड़ों में दर्द होने की दशा में वह थकावट से चूर होकर खो-सा गया था; तो उस समय भी 'समुद्र की भाँति गहरे भावों' ने उसे अपने में छिपा-सा लिया था। उसके बाद उसे अपने ऊपर लज्जा भी महसूस हुई थी। पार्टी ऐसे भावों को ठीक नहीं समझती थी। पार्टी ऐसे भावों को 'ओछेपन' का नाम देती थी और व्यर्थ समझती थी। उसकी नज़र में ये भाव 'कर्म करने से भागना' और 'श्रेणी-संघर्ष से गिरना' होते थे। 'समुद्र की भाँति गहन-भावना' प्रतिक्रियावादी भावना थी।

क्योंकि संघर्ष के समय हरेक को चाहिए कि वह अपनी टाँगों को निहायत मज़बूती से धरती पर टिका रखे, पार्टी ने ऐसा करना हर किसी को सिखा रखा था। असीम होना, राजनीतिक दृष्टि से एक संदिग्ध अंश का द्योतक था, और 'मैं' संदिग्ध होने का लक्षण था। पार्टी इन भावों का अस्तित्व स्वीकार नहीं करती थी। उसकी दृष्टि में व्यक्ति की परिभाषा थी—'दस लाख के समूह को दस लाख से विभाजित करना।'

पार्टी व्यक्ति की स्वतन्त्र इच्छा को मानने से इनकार करती थी; किन्तु उसके साथ ही उससे आत्म-बलिदान की बलपूर्वक माँग करती थी। पार्टी नहीं समझती थी कि व्यक्ति को दो विकल्पों में से किसी एक को चुनने की पूरी समझ है, किन्तु उसके साथ ही उसकी माँग थी कि उसे लगातार दाएँ मार्ग को ही चुनना चाहिए। वह अच्छे और बुरे में भेद को जानने का अधिकार तो देती नहीं थी, पर साथ ही वह अपराध और विश्वासघात के बारे में आँसू बहा-बहाकर ज़िक्र करती थी। हर व्यक्ति आर्थिक-संकट के ऐसे चक्र में पड़ा हुआ था, जैसे किसी ने अनन्त काल के लिए घड़ी को चाबी दे दी हो और वह रोकी न जा सकती हो। और पार्टी की माँग थी कि कड़ी को रोकने के लिए चाबी का चक्का विद्रोह करे और अपनी दिशा बदल ले। निश्चय ही, आँकड़ों में कहीं भूल रह गई थी; प्रश्न हल नहीं हो सक रहा था।

चालीस साल तक उसने आर्थिक संकट के विरुद्ध संघर्ष किया। यह

मनुष्यता की जड़ में ऐसा नासूर था जो उसकी अन्तड़ियों को खाये जा रहा था। केवल इसका किसी को आपरेशन करना चाहिए था और बाकी घावों के भरने का क्रम सहज ही होता रहता। इसके अलावा बाकी सब नौसिखिया-पन, धोखा और कपट था। संघातक घाव वाले व्यक्ति का कोई पवित्र उपदेशों से घाव पुर नहीं कर सकता। वह तो डाक्टर के नश्तर और उसके ठंडे दिमाग के साथ सोचने पर ही ठीक हो सकता था। लेकिन जहाँ कहीं भी नश्तर चुभोया गया, वहाँ पुराने की जगह एक नया घाव हो गया। और फिर भी सवाल का हल अधूरा ही रह गया।

चालीस साल तक सख्ती के साथ वह पार्टी के आदेशों के अनुसार चलता रहा। वह युक्ति-संगत नियमों के आधार पर स्थिर रहा। उसने तर्क के तेज़ाब से अपनी आत्मा के तर्कहीन नैतिकता के पुरातन अवशेषों को भस्म कर डाला था। वह मौन साथी के प्रलोभनों से भी विमुख हो गया था, और समुद्र-सी गहरी भावना के विरुद्ध शक्ति-भर लड़ता रहा था। किन्तु अब उसने उसे कहाँ ला पटका था? सचाई के दोषहीन उत्तर-पक्ष ने उसे उस नतीजे पर पहुँचा दिया था जो एकदम बेहूदा था; इवानोफ और ग्लैटकिन के लाजवाब तर्कों ने ही उसे सार्वजनिक मुकदमे के पेचीदे खेल में इस तरह ला घसीटा था। शायद किसी आदमी के लिए अपने हर विचार को युक्तिपूर्ण नतीजे तक सोच जाना उचित नहीं था।

रुबाशोफ़ ने खिड़की की सलाखों की राह मशीन-गन के गुम्बद के नीचे के धब्बे को देखा। अपने अतीत को देखते हुए, उसे अब महसूस हुआ कि वह चालीस साल तक अपनी तर्क-भावना के कारण दीवाना-सा दौड़ता रहा। शायद आदमी के लिए पुराने बन्धनों और विचारों से मुक्त होना उचित नहीं होता और न ही उसे इस बात की मंजूरी देना उचित होता है कि वह सीधा अपने ध्येय की ओर बढ़ता जाय।

नीला धब्बा गुलाबी होने लगा था; संध्या होने जा रही थी; गुम्बद के चारों ओर काले पंछियों का झुंड धीरे-धीरे पंख फड़फड़ाता आ रहा था। नहीं, सवाल हल नहीं हुआ था। निश्चय ही यह काफी नहीं था

कि आदमी की आँखें ध्येय पर जमी रहें और उसके हाथ में नश्तर रहे; नश्तर से अनुभव करना उसके लिए उचित नहीं था। शायद बाद में, एक दिन उचित हो। इस घड़ी तो वह अभी बहुत छोटा और अयोग्य था। कैसे वह पितृभूमि की क्रान्ति की विस्तृत भूमि में अनुभव के लिए कूद पड़ा था। जो कुछ भी हुआ था उसे ग्लैटकिन ने दुर्ग को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक कहकर सही सिद्ध करना चाहा था। लेकिन भीतर झांकने पर वह कैसी नज़र आती थी? नहीं, कोई भी कंकरों के साथ स्वर्ग नहीं बना सकता! दुर्ग को सुरक्षित रखा जायगा, लेकिन वह कोई संदेशा नहीं दे सकता, न ही वह दुनिया के सामने कोई मिसाल पेश पायेगा। नं० १ के शासन ने साम्यवादी सत्ता के आदर्श को उसी तरह गंदला कर दिया, जैसे कि मध्य-युग के पादरियों ने ईसाई-साम्राज्य के आदर्श को गंदा कर दिया था। क्रान्ति का झंडा मातम मना रहा था।

रुबाशोफ़ अपनी कोठरी में चक्कर काट रहा था। लगभग अन्धेरा होने को था। बहुत देर नहीं होगी, जब कि वे उसे लेने आयेंगे। सवाल में कहीं भूल ज़रूर रह गई थी—नहीं, गणित की दृष्टि से विचार करने के ढंग में ही भूल थी। बहुत दिन पहले से ही वह इसे महसूस कर रहा था, बल्कि रिचर्ड की कहानी के वक्त से ही; लेकिन अब तक इसे पूरी तरह मान लेने का उसने साहस नहीं किया था। शायद क्रान्ति ज़रूरत से पहले हो गई थी। शायद वक्त को पहचानने में ही भूल हुई हो। शायद, यह भी कि ईसा-पूर्व पहली सदी के आरम्भ में ही रोमन सभ्यता के विनाश का अनुभव होने लगा था; और उस वक्त विशेषज्ञों ने सोचा हो कि भारी परिवर्तन का समय हो गया, किन्तु असलियत यह थी कि पुरानी जर्जरित अवस्था अभी पांच सौ बरस और रहने को थी। इतिहास की नब्ज़ तो बहुत धीमी होती है; आदमी जिसे बरसों में गिनता है, इतिहास उसी को पीढ़ियों में। शायद अभी यह उत्पत्ति का दूसरा ही दिन था। कैसे वह जीने की इच्छा कर पायेगा और क्योंकर वह जनता की आनुपातिक प्रौढ़ता के सिद्धान्त का निर्माण करेगा।······

कोठरी में सन्नाटा था। रुबाशोफ़ केवल अपने ही पाँवों के चलने की आवाज़ सुन रहा था। साढ़े छः कदम किवाड़ की ओर, जिसके पीछे रात्रि का अन्धेरा बढ़ता ही जा रहा था। जल्दी ही यह सब खत्म हो जायगा। 'लेकिन कब,' उसने अपने-आप से पूछा, और किस असली मतलब से तुम मरने जा रहे हो? उसे कोई उत्तर न सूझा।

उस तरीके में ही कोई भूल थी; शायद उस मान्यता में ही भूल थी कि जिसे अब तक उसने निर्विवाद जाना था, और जिसके नाम पर उसने दूसरों की कुरबानी की थी और खुद भी कुरबान किया जा रहा था; और वह थी, कि 'अन्तिम परिणाम ही साधनों को न्यायानुसार ठहरा सकता है।' यही वह वाक्य था जिसने क्रान्ति के महान् बन्धुत्व की हत्या की थी और उन सबको दीवाना कर दिया था। उसने एक बार अपनी डायरी मे क्या लिखा था? 'हमने सब पुराने रीति-रिवाजों को नष्ट कर दिया है, युक्तियों द्वारा निखरा हुआ परिणाम ही हमारा एकमात्र राही-सिद्धान्त है; हम पाल डाले बिना ही समुद्र की लहरों में तिरने जा रहे हैं।'

शायद शैतान वहाँ मौजूद था। शायद पाल के बिना मानवता तिरने योग्य न थी। और शायद युक्ति ही एकमात्र बिगड़ी हुई चुम्बक की सुई थी, जो उन्हें ऐसे पेचीदा राह में ले गई थी कि अन्त में ध्येय कोहरे में ही खो गया।

शायद अब महान् अन्धकार का ही समय आ जायगा।

शायद बाद में, बहुत बाद में, एक नया आन्दोलन खड़ा होगा—नये झंडों के साथ, नये उत्साह के साथ, इन दोनों ही बातों को जानता हुआ: 'आर्थिक-संकट' और 'समुद्र-सी गहरी भावना' शायद नई पार्टी के सदस्य साधुओं जैसे कनटोपे पहने होंगे, और इस बात का उपदेश करेंगे कि साधनों की पवित्रता ही अन्तिम परिणाम को न्यायानुसार ठहरा सकती है। शायद वे उपदेश देंगे कि वह सिद्धान्त गलत है, जो यह कहता है कि दस लाख को दस लाख से विभाजित करने का भाज्यफल 'एक', यानी 'व्यक्ति' है। और वे एक नये ढंग का गणित जारी करेंगे, जिसका आधार गुणा करना होगा;

दस लाख व्यक्तियों को मिलाकर एक नयी सत्ता का निर्माण करने के लिए, जो आकारहीन जन-समूह न रहकर, एक ऐसी चेतनता और अपने ही ढंग के व्यक्तित्व को जन्म देगी, जिसमें लाखों गुणा 'समुद्र-सी गहन भावना की अनुभूति' की वृद्धि होगी और जो असीम होने पर भी स्वयं परिपूर्ण होगी।

रुबाशोफ ने चलना बन्द कर दिया और सुनने लगा। बरामदे में से ढोलों के बजने की दबी-सी आवाज़ आ रही थी।

: ३ :

ढोलों की आवाज़ ऐसे आ रही थी, जैसे हवा उसे बहुत दूर से ला रही हो, और वह पास-ही-पास आ रही थी। रुबाशोफ हिला नहीं। फर्श पर खड़ी उसकी टाँगों पर उसका कोई बस नहीं रह गया था, उसे महसूस हो रहा था कि पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति का बल धीरे-धीरे उनमें बढ़ रहा था। उसने छेद पर झाँके बिना गहरी साँस ली और एक सिगरेट जलाई। उसने खड्डी से आगे को ओर दीवार पर टक-टक की ध्वनि सुनी—"वे ओंठ-फटे को ले जा रहे हैं। उसने तुम्हें प्रणाम कहला भेजा है।"

उसकी टाँगों का भारीपन खत्म हो गया था। वह किवाड़ तक चला गया और तेजी के साथ दोनों हथेलियों से लयपूर्ण ढंग से लोहे की चादर को पीटने लगा। नं० ४०६ तक अब खबर पहुँचाना बेकार था। कोठरी खाली पड़ी थी; वहीं इस कड़ी का तांता टूट जाता था। उसने ढोलों की तरह बजाया और छेद में आँख लगाई।

बरामदे में हमेशा जैसी बिजली की हल्की रोशनी जल रही थी। उसने सदा की तरह ४०१ से ४०७ तक के लोहे के किवाड़ों को देखा। ढोलों की आवाज मोटी होने लगी थी। कदम बढ़ रहे थे—धीरे-धीरे और घिसटते हुए। कोई भी फ़र्श पर की घिसटन से उन्हें सहज ही सुन सकता था। एकाएक ओंठ-फटा छेद से झाँकने पर खड़ा दीख गया। वह वहाँ खड़ा था—काँपते-काँपते ओठों के साथ। ठीक वैसे ही वह खड़ा था, जैसे कि ग्लैटकिन के कमरे में रोशनी के सामने वह खड़ा हुआ था।

उसके दोनों हाथ हथकड़ियों में बंधे हुए अजीब-से ढंग के साथ मुड़े-तुड़े पीठ पर लटक रहे थे। वह छेद के पीछे रुबाशोफ की आँख को तो देख नहीं सकता था, पर देख रहा था ढूँढ़ती हुई निगाहों के साथ उसके किवाड़ को, जैसे उसी की ओट में उसकी मुक्ति की अन्तिम आशा छिपी बैठी हो। तब आदेश हुआ, और ओंठ-फटा आज्ञाकारी-सा चलने को घूम गया। उस के पीछे-पीछे वही राक्षस-सा व्यक्ति था और उसने रिवाल्वर की पेटी पहन रखी थी। एक के बाद एक करके वे सब रुबाशोफ की नज़र से ओझल हो गए।

ढोलों की आवाज़ जाती रही थी; फिर सब ओर सन्नाटा था। खड्डी से आगे की दीवार पर टक-टक की ध्वनि हुई—"वह बहुत अच्छे ढंग से मरने गया है।···"

जब से रुबाशोफ ने नं० ४०२ को अपने समर्पण की सूचना दी थी, वे दोनों आपस मे बोले नहीं थे। ४०२ ने आगे टक-टक किया—"तुम्हारे लिए तो अभी लगभग दस मिनट और हैं। तुम्हें कैसा लग रहा है?"

रुबाशोफ समझ गया कि ४०२ ने इसलिए बातचीत शुरू की है कि उसके लिए इन्तजार करना जरा आसान हो जाय। वह उसके लिए कृतज्ञ भी था। वह खड्डी पर बैठ गया और उसने टक-टक की—"मेरी इच्छा थी कि ये अब तक खत्म हो चुके होते।···"

"तुम कायरता नहीं दिखाओगे," नं० ४०२ ने टकटकाया, "हम जानते हैं, तुम शैतान के साथी हो···" वह रुका, तब तेजी से उसने अपने पिछले शब्दों को दोहराया, "शैतान के साथ···" जाहिर ही था कि वह बातचीत के सिलसिले को टूटने नहीं देना चाहता था। "क्या तुम्हें अब भी याद हैं सोने के उलटे कटोरों जैसी छातियाँ? हः हः हः! शैतान का साथी।"

रुबाशोफ ने बरामदे की आवाज को सुनना चाहा। कहीं कुछ न था। नं० ४०२ जैसे उसके विचारों का अंदाज़ कर रहा था; उसने फौरन ही फिर टकटकाया—"तुम न सुनो। मैं तुम्हें वक्त पर बता दूँगा, जब वे आ रहे होंगे।···अगर तुम्हें माफ़ी दे दी जाय, तो तुम क्या करोगे?"

रुबाशोफ ने सोचा और तब टकटकाया—"ज्योतिष पढ़ूँगा।"

"हः हः हः," ४०२ ने टकटक की। "मैं भी, शायद। लोगों का कहना है कि शायद और ग्रहों में भी लोग बसते हैं। मुझे इजाज़त दो कि मैं तुम्हें कुछ सलाह दे सकूँ।"

"बेशक," रुबाशोफ ने ज़वाब दिया।

"लेकिन तुम बुरा न मानना। एक सिपाही की मोटी तजवीज है। ऐसी हालत में पेट को खाली रखना हमेशा अच्छा होता है। आत्मा तो बलवान है, किन्तु मांस का बना शरीर कमजोर है। हः हः हः!"

रुबाशोफ मुस्कराया और संडास पर चला गया। इसके बाद फिर खड्डी पर बैठकर उसने टकटक की—"धन्यवाद! बहुत बढ़िया सलाह थी। और तुम्हारा भावी कार्यक्रम क्या है?"

कुछ क्षण तक ४०२ चुप रहा। तब उसने पहले की अपेक्षा धीरे-से टकटक की—"अठारह बरस और। यही नहीं, बल्कि ६५३० दिन।..." सोचो ६५३० दिन और रातें, बिना औरत के।"

रुबाशोफ़ ने इसका जवाब न दिया और टकटकाया—"लेकिन तुम पढ़ सकते हो, स्वाध्याय कर सकते हो।..."

"इसके लिए तो मेरा दिमाग़ ही नहीं," नं० ४०२ ने टकटकाया। और तब—ऊँचे और जल्दी में—"वे आ रहे हैं।..."

वह रुका, लेकिन कुछ ही देर बाद टकटकाने लगा—"कितना दुख है। अभी-अभी हम कैसी अच्छी-अच्छी बातें कर रहे थे।..."

रुबाशोफ़ खड्डी पर से खड़ा हो गया। उसने पल-भर को सोचा और टकटकाया—"तुमने मेरी बहुत मदद की है, धन्यवाद!"

ताले में चाबियाँ घूमीं। किवाड़ खुल गया। बाहर खड़ा था वही राक्षस और एक अदालती अफसर। अफसर ने रुबाशोफ़ का नाम लेकर सम्बोधन किया और उसे एक दस्तावेज पढ़कर सुनाया। जब वे उसकी बांहें पीठ पर घुमा रहे थे और हथकड़ियाँ पहना रहे थे तो नं० ४०२ तेजी से टकटका रहा था—"मुझे तुमसे ईर्ष्या है। मुझे तुमसे ईर्ष्या है। अन्तिम नमस्कार!"

बाहर बरामदे में ढोल फिर बजने लगे थे। नाई की दुकान तक ढोल उनके साथ-साथ गये। रुबाशोफ़ जानता था कि लोहे के हर किवाड़ के पीछे से छेद की राह एक आँख उसे देख रही थी, लेकिन उसने न तो बाएं देखा और न दाएँ। हथकड़ियों से उसकी कलाइयाँ छिल गई थीं, उस राक्षस ने उन्हें बहुत ही सख्ती के साथ कसा था। पीठ पर बाँहों के मोड़ते हुए भी उसने उसकी बाँहों को काफी ज़रब पहुँचाई थी; और वे दुख रही थीं।

तहखाना नज़र आने लगा था। रुबाशोफ़ ने अपने कदम धीमे कर लिये। अफसर सीढ़ियों के ऊपरी सिरे पर रुक गया। वह ठिगना था और उसकी मोटी-मोटी आँखें थीं। उसने पूछा—"क्या तुम्हारी कोई और ख़ाहिश है?"

"कोई नहीं," रुबाशोफ ने कहा और तहखाने की सीढ़ियों में उतरने लगा। अफसर ऊपर खड़ा रहा और मोटी-मोटी आँखों से उसे नीचे जाता देखता रहा।

सीढ़ियाँ तंग थीं और उनमें रोशनी भी नाम को ही थी। रुबाशोफ चौकन्ना-सा उतर रहा था, ताकि लड़खड़ा न जाय। सीढ़ियों के दोनों ओर हाथ रखने को सहारा भी नही था। उसने सुना कि एक आदमी उससे तीन कदम पीछे सीढ़ियों से उतर रहा था। वह वर्दी पहने था।

सीढ़ियाँ एक चक्कर में घूम गईं। रुबाशोफ झुका, ताकि अच्छी तरह देख सके। उसका चश्मा आप-से-आप उतर गया और दो कदम आगे उसके सामने जा गिरा। उसके शीशे टूट गए और वह लुढ़कता हुआ अन्तिम सीढ़ी पर जा पड़ा। रुबाशोफ एक सैकिण्ड के लिए ठिठका—संकोच के साथ; तब उसे नीचे उतरने के लिए बाकी सीढ़ियाँ दीख गईं। उसने सुन लिया था कि जो आदमी उसके पीछे था, वह झुका था और उसने टूटे चश्मे के टुकड़े जेब में डाल लिये थे। लेकिन उसने घूमकर उसे नहीं देखा।

अब वह लगभग अन्धा था, किन्तु उसके पाँव के तले कठोर धरती थी। एक लम्बे-से बरामदे में वह दाखिल हुआ, भद्दी-सी उसकी दीवारें थीं

और वह उनका अन्तिम छोर नहीं देख सकता था। बावर्दी आदमी हमेशा उससे तीन कदम पीछे रहता था। रुबाशोफ ने महसूस किया कि उसकी नजर का निशाना उसकी गरदन के पिछले हिस्से पर टिका हुआ था, किन्तु वह घूमा नहीं। चौकन्ना-सा एक-एक कदम वह उठा रहा था।

उसे लगा कि वे इस बरामदे में कई मिनटों से चल रहे थे। लेकिन अभी तक कुछ हुआ तो नहीं। शायद वह सुन लेगा, जबकि बावर्दी आदमी अपने खोल में से रिवाल्वर निकालेगा। पर अब तक तो वह सुरक्षित ही है। अथवा वह आदमी उस दाँत के डाक्टर की तरह पीछे-पीछे चल रहा है जिसने अपने रोगी पर झुकते समय के लिए बाँह में नश्तरों को छिपा रखा है? रुबाशोफ ने कुछ और ही सोचने की कोशिश की, लेकिन उसे अपनी सारी शक्ति इस पर केन्द्रित करनी पड़ी कि कहीं वह अपना सिर न घुमा ले।

आश्चर्य था कि मुकदमे के दौरान में, जबकि उस पर दैवी शान्ति छा गई थी, कैसे एक मिनट-भर में ही उसके दाँत का दर्द ठीक हो गया था। उसने उनसे क्या कहा था? "मैं अपने देश के सामने घुटने टेकता हूँ—जनता के सामने घुटने टेकता हूँ—सब लोगों के सामने घुटने टेकता हूँ।....." उसके बाद हुआ क्या? उस देश का क्या हुआ? उस जनता का क्या हुआ? चालीस बरस तक वह धमकियों और वचनों के साथ, अनुमानित अत्याचारों और अनुमानित इनामों के साथ रेतीले मैदानों में धकेली जाती रही थी। लेकिन वह भूमि कहाँ थी जिसका वायदा किया गया था?

क्या इस भटकती हुई मानवता के लिए ऐसा कोई निश्चित स्थान मौजूद भी था? यही एक प्रश्न था, जिसका वह फौरन ही जवाब पा लेना चाहता था। हजरत मूसा को भी अपनी मनचाही धरती में जाने की इजाजत नहीं हुई थी। लेकिन उन्हें पर्वत की चोटी पर से झाँकने की इजाजत तो मिली थी और वह प्रदेश उसके पाँवों तले था। इस प्रकार मरना आसान था—अपना ध्येय अपनी आँखों के सामने रखकर। वह, निकोलस सामनविच रुबाशोफ, पर्वत की चोटी पर नहीं ले जाया गया,

और जहाँ कहीं भी उसकी नजर दौड़ती थी, उसे मरुभूमि और रात्रि के अँधेरे के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

एक चोट उसके गले पर पड़ी। उसे बहुत पहले ही उसकी आशा तो थी, किन्तु उससे वह हैरान-सा रह गया। आश्चर्य के साथ उसने महसूस किया कि उसने घुटने टेक दिए हैं और उसका शरीर कमान की तरह मुड़ गया है। कैसा नाटकी ढंग यह हुआ, गिरते-गिरते वह सोच गया, और इतने पर भी मैं कुछ भी महसूस नहीं कर रहा। वह धरती पर सिकुड़ता हुआ पड़ा था, उसकी एक गाल ठंडे फ़र्श को छू रही थी। अँधेरा छा गया था, समुद्र उसे अपनी अँधेरी तल में लिये जा रहा था। पानी पर तैरते कोहरे की तरह अतीत की स्मृतियाँ उस मस्तिष्क में से निकलती हुई चली गईं।

बाहर, सामने के किवाड़ को कोई खटखटा रहा था, उसने सपना देखा कि वे उसे गिरफ्तार करने आ रहे हैं, लेकिन था वह किस देश में?

उसने चोगे में बाँह डाल लेने की कोशिश की। लेकिन किसका रंगीन चित्र उसके बिस्तर के ऊपर टंगा हुआ था जो उसे देख रहा था?

क्या यह नं० १ था, या कोई और था?

और तभी कोई झुका, उसकी शक्ल वह देख नहीं सका था, किन्तु उसे पेटी के चमड़े की ताजगी की गन्ध आ गई थी। उस शक्ल ने अपनी वर्दी पर क्या-क्या निशान पहन रखे थे, वह जान न सका। किसके नाम पर उस शक्ल ने पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया था?

दूसरी बार, दनदनाता-सा प्रहार उसके कान पर हुआ। और तब सब ओर सन्नाटा छा गया। समुद्र में, एक बार फिर जैसे तूफ़ान उठ गया हो। लहर आई और धीरे-से उसे बहा ले गई। बहुत-बहुत दूर से वह आई थी और शान्ति से वह लौट रही थी—अनन्त में सिमिट जाने के लिए।